राजभाषा भारती

अंक : 125 : वर्ष : 32 अप्रैल-जून, 2009

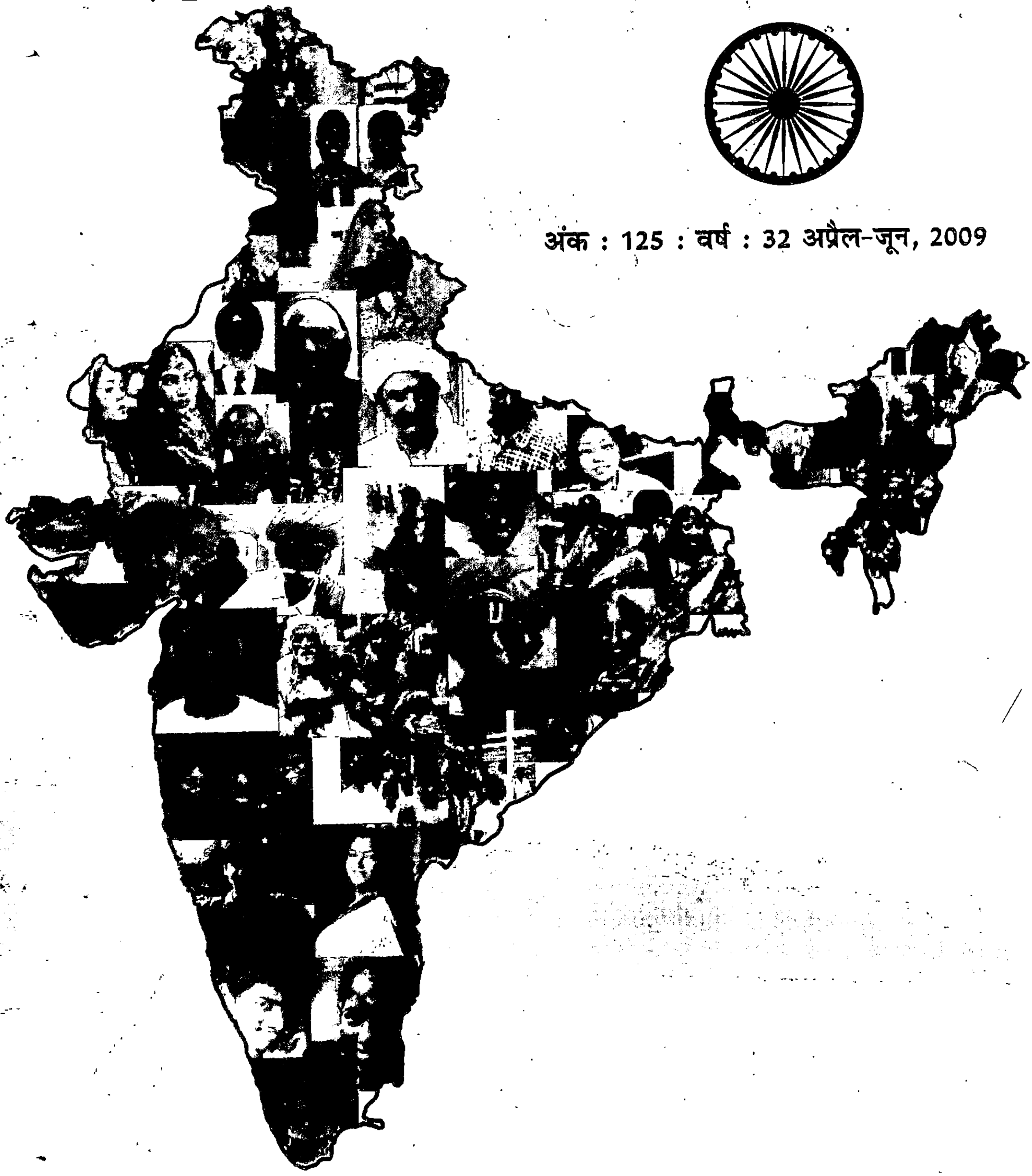

जन जन की भाषा है हिन्दी

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

राजभाषा विभाग द्वारा बड़ोदरा में आयोजित पश्चिम तथा मध्य क्षेत्रों का राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार समारोह में डॉ. प्रदीप कुमार, सचिव, भारत सरकार (बांए से तीसरे) पुरस्कार विजेताओं के साथ ।

इंडियन ऑयल उत्तरी क्षेत्र पाइपलाइन्स को 'रिफाइनरी राजभाषा शील्ड' प्रदान करते श्री डी. के. पाण्डेय, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, मध्यम में श्री आर. के. घोष, अध्यक्ष नराकास एवं कार्यकारी निदेशक, पानीपत रिफाइनरी ।

भारति जय विजय करे, कनक-शस्य-कमल धरे
—निराला

राजभाषा भारती

राजभाषा विभाग की त्रैमासिकी

वर्ष : 32

अंक : 125

अप्रैल—जून, 2009

❑ संपादक
बिजय चंद्र मंडल
निदेशक (अनुसंधान)
दूरभाष : 24619521

❑ सहायक संपादक
शांति कुमार स्याल
दूरभाष : 24698054

❑ नि:शुल्क वितरण के लिए

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

❑ पत्र-व्यवहार का पता :
संपादक, राजभाषा भारती,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
लोकनायक भवन (द्विवितीय तल),
खान मार्किट, नई दिल्ली-110003

ईमेल–ru-ol@mha.nic.in
patrika—ol@mha.nic.in
पोर्टल–www.rajbhasha.gov..in.

विषय-सूची — पृष्ठ

❑ संपादकीय (iii)

❑ चिंतन

1. शब्दों का जीवन परिवर्तनशील है —डॉ. माणिक मृगेश 1
2. बहुलवादी भारत एवं हिंदी —अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी 3
3. हिंदी का मानकीकरण रूप एवं कार्यालयी हिंदी —डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा 6
4. प्रयुक्त भेद और पारिभाषिक शब्द प्रयोग की संभावनाएं —ममता शर्मा 11

❑ साहित्यिकी

5. मधुशाला के अमर गायक : डॉ. हरिवंशराय बच्चन की काव्यानुभूति —डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव 14
6. पं. प्रताप नारायण मिश्र के काव्य में अध्यात्म-दर्शन —डॉ. दिनेश चमोला 18

❑ पुरानी यादें-नए परिप्रेक्ष्य

7. अमर शहीदों के अंतिम शब्द —प्रो. योगेश चंद्र शर्मा 23

❑ विश्व हिंदी दर्शन

8. प्रवासन की भारतीय संस्कृति और भारतीय महाकाव्य —नरेन्द्र नाथ त्रिपाठी 26

❑ विज्ञान

9. तारे : उद्भव, पालन, प्रलय कहानी —डॉ. विजय कुमार उपाध्याय 30
10 भारतीय वैज्ञानिक व इसरो की उपलब्धियां —डॉ. दिनेश मणि 32

❑ पत्रकारिता

11. जनतंत्र में पत्रकारिता की भूमिका —डॉ. मृत्युंजय उपाध्याय 35

❑ स्वास्थ्य

12. कोरोनरी धमनी रोग —डॉ. के. सी. गुप्ता 38

राजभाषा संबंधी गतिविधियां :

(क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें 40
पूर्व रेलवे, महानदी कोलफील्ड्स लि., संबलपुर, आयकर आयुक्त-लुधियाना, आकाशवाणी-अहमदाबाद, बैंक ऑफ बड़ौदा-गोवा, आयकर आयुक्त-अमृतसर, बिहार दूरसंचार परिमंडल-पटना, केंद्रीय लोक निर्माण

2787 HA/2009—1A

विभाग इलाहाबाद, दूरसंचार जिला-कटक, परमाणु ऊर्जा विभाग-जयपुर, रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक-देहरादून, आयकर आयुक्त-पंचकुला, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क आयुक्तालय-इंदौर, संपदा निदेशालय, एन. एच. पी. सी. लि., फरीदाबाद, बोकारो स्टील प्लांट-बोकारो, केन्द्रीय उत्पाद सीमा शुल्क एवं सेवाकर आयुक्तालय-कानपुर, आयुक्त, केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क-भोपाल, पूर्व मध्य रेल मुख्यालय-हाजीपुर ।

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति की बैठकें 51

भिलाई दुर्ग, रायपुर, पानीपत, नाजिरा ।

(ग) कार्यशालाएं 54

भारी पानी संयंत्र-तूतीकोरिन; महानिदेशालय असम राइफल्स-शिलांग, परमाणु ऊर्जा विभाग-हैदराबाद, एन. एच. पी. सी. लि.-कोलकाता, कर्मचारी राज्य बीमा निगम-हैदराबाद, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण-गुवाहाटी, आकाशवाणी-हैदराबाद, बैंक ऑफ बड़ौदा-गोवा, राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान-मोहाली, सैन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया-जलगांव, गोवा शिपयार्ड लि.-गोवा, एन. एच. पी. सी. लि.-चण्डीगढ़, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ कोल मैनेजमैंट-रांची, एन. एच. पी. सी. लि.-फरीदाबाद, आकाशवाणी-नागपुर, राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान-नई दिल्ली, केंद्रीय भूमि जल मुख्यालय-फरीदाबाद, गृह मंत्रालय, आकाशवाणी-बीकानेर, महानिदेशालय, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल-नई दिल्ली, परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय-जयपुर, आकाशवाणी-शिमला, बैंक ऑफ बड़ौदा-भोपाल ।

(घ) हिंदी दिवस 67

महालेखाकार-भुवनेश्वर, महालेखाकार-इम्फाल, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया-चैन्नेई, केनरा बैंक-कोलकाता, हैदराबाद विश्वविद्यालय-हैदराबाद, दूरदर्शन केंद्र-नागपुर, रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक-चण्डीगढ़, इलाहाबाद बैंक-नई दिल्ली, परमाणु ऊर्जा विभाग-जयपुर, क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केद्र-देहरादून, नराकास-कोटा, पूर्व मध्य रेल-हाजीपुर, पश्चिम रेलवे-दाहोद, आकाशवाणी-सागर, आकाशवाणी-पटना, कर्मचारी राज्य बीमा निगम-नोएडा, कर्मचारी राज्य बीमा निगम-फरीदाबाद, जयपुर हवाई अड्डा, केंद्रीय रेशम बोर्ड-नई दिल्ली, केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड-नई दिल्ली, भिलाई इस्पात संयंत्र-भिलाई ।

(ङ) विश्व हिंदी दिवस 75

परमाणु ऊर्जा विभाग-नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र-हैदराबाद ।

➡संगोष्ठी/सम्मेलन 76

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन, हिंदुस्तान लैटेक्स लि.-तिरुवनन्तपुरम, नराकास-गान्तोक, महानदी कोलफील्ड्स लि. दि न्यू इन्डिया एश्योरेंस कंपनी लि.-कोलकाता, कैगा बिजली उत्पादन केंद्र, भारी पानी संयंत्र-कोटा, भारतीय पेट्रोलियम संस्थान-देहरादून, एन० एच० पी० सी० लि०-फरीदाबाद, बैंक ऑफ इंडिया-नई दिल्ली, भारतीय कृषि अनुसंधान समिति-करनाल, भारतीय नागरी लिपि- अहमदाबाद, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल ।

➡पुरस्कार/प्रतियोगिताएं 85

बैंक ऑफ बड़ौदा-गोवा, इण्डियन ओवरसीज बैंक-कोयंबतूर, बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र-भंडारा, भारी पानी संयंत्र-तूतीकोरिन ।

➡प्रशिक्षण 88

केद्रीय भूमि जल बोर्ड-फरीदाबाद, नराकास (बैंक)-दिल्ली ।

➡आदेश-अनुदेश 89

➡पाठकों के पत्र 105

2787 HA/2009—1B

संपादकीय

आज का युग संचार क्रांति और कंप्यूटर का युग है । इसलिए यह और भी जरूरी हो जाता है कि हम अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में कंप्यूटर पर करें । चूंकि आज सूचना प्रौद्योगिकी और कंप्यूटर का प्रयोग हमारे जीवन में दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है । सभी कार्यालयों, विभागों, उपक्रमों, बैंकों आदि के अधिकारियों व कर्मचारियों से अपेक्षा है कि वे कंप्यूटर की जानकारी का उपयोग अपने दैनिक कार्यालयीन कार्य में करें और कंप्यूटर पर अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करें ।

हिंदी एक सहज और सरल भाषा है । हिंदी में अन्य भाषाओं के शब्द ग्रहण करने की शक्ति भी है और वैज्ञानिक दृष्टि से भी देवनागरी लिपि अत्यंत सटीक है । इसलिए कंप्यूटर पर कार्य करना अधिक सरल है । कार्यालय में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग हमारा नैतिक व सामाजिक दायित्व है । संघ की राजभाषा घोषित हो जाने के बाद यह शनैः शनैः अखिल भारतीय रूप ग्रहण कर रही है । देश के संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया है । हिंदी हमारी सांस्कृतिक विरासत है, प्रेम एवं एकता की भाषा है । संपूर्ण विश्व में वसुधैव कुटुंबकम की परिकल्पना को साकार करने की अपार शक्ति इस भाषा में है। हिंदी भाषा ऐसी विशाल प्रवाह है जिसमें देश की सभी नदियां समाहित हैं । हिंदी हजारों वर्षों से विशाल भूखण्ड की संस्कारों की भाषा रही है । हिंदी भाषा के संस्कारों में व्यक्ति से राष्ट्र और राष्ट्र से विश्व अभिव्यक्ति पाता है ।

आज हिंदी का आधार लगातार फैल रहा है । व्यापारियों, आचार्यों, गुरुओं, कृषकों के माध्यम से हिंदी आगे बढ़ी है और बढ़ रही है । इसके साथ ही साथ हिंदी के बल पर ही सभी आंचलिक भाषाएं भी बढ़ रही हैं । भाषा सामाजिक वस्तु है जो आदान-प्रदान से ही बढ़ती है । हिंदी जहां अन्य भारतीय भाषाओं में अग्रणी है वहीं इसका अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप भी बढ़ता दिखाई देता है। आज हिंदी प्रयोजन मूलक और व्यावहारिक हो गई है ।

विभिन्न विधाओं और विचारधाराओं के लेखकों/विद्वानों की साझेदारी से 'राजभाषा भारती' के प्रत्येक अंक की रौनक बढ़ाने की 'राजभाषा भारती परिवार' की कोशिश रही है ।

'राजभाषा भारती परिवार' सदैव की तरह अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अग्रसर रहते हुए प्रस्तुत अंक में 'चिंतन' स्तंभ के अंतर्गत डॉ. मणिक मृगेश ने अपने लेख 'शब्दों का जीवन परिवर्तनशील है' में संसार की नियति के अनुसार शब्द, भाषा और संस्कृति के काल, समय, स्थान व प्रसंगानुकूल अर्थ बदलने पर प्रकाश डाला है । अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी के लेख 'बहुलवादी भारत एवं हिंदी' में भारत की प्राकृतिक दशा और प्राचीन साहित्य के संदर्भ में चर्चा की गई है । 'हिंदी के मानकीकरण रूप एवं कार्यालयी हिंदी' पर डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा ने मानकीकरण का प्रयोग करने पर जोर दिया है । ममता शर्मा ने प्रयुक्ति भेद और परिभाषिक शब्द प्रयोग की संभावनाओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है । 'साहित्यिकी' स्तंभ में डा. हरिवंशराय बच्चन और पं. प्रताप नारायण मिश्र के काव्यानुभूति और आध्यात्म-दर्शन प्रस्तुत किया है । 'पुरानी यादें-नए परिप्रेक्ष्य' स्तंभ के अंतर्गत अमर शहीदों के अंतिम शब्द प्रस्तुत किए हैं प्रो० योगेश चंद्र शर्मा ने । 'विश्व हिंदी दर्शन' स्तंभ के अंतर्गत नरेन्द्र नाथ त्रिपाठी ने प्रवासन की भारतीय संस्कृति और भारतीय महाकाव्य पर प्रकाश डाला है 'विज्ञान' के अंतर्गत तारे : उद्भव, पालन, प्रलय कहानी प्रस्तुत की गई है । डॉ० विजय कुमार उपाध्याय ने । डॉ. दिनेश मणि ने भारतीय वैज्ञानिक व इसरो की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला है । जनतंत्र में पत्रकारिता की भूमिका को डॉ. मृत्युंजय उपाध्याय ने प्रस्तुत किया है । 'स्वस्थ्य' स्तंभ के अंतर्गत डॉ. के. सी. गुप्ता ने कारोनरी धमनी रोग के बारे में जानकारी दी है ।

इसके अतिरिक्त राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रति राजभाषा भारती की प्रतिबद्धता के अनुरूप राजभाषा संबंधी गतिविधियां तथा अन्य नियमित स्तंभ भी सदैव की भांति इस अंक में दिए जा रहे हैं ।

आशा है इस अंक को भी पाठकगण रुचिकर और उपयोगी पाएंगे । प्रबुद्ध पाठकों का सहयोग व उनकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी ।

—संपादक

चिंतन

शब्दों का जीवन परिवर्तनशील है

–डॉ. माणिक मृगेश*

शब्द, भाषा और संस्कृति समाज सापेक्ष होते हैं। समाज के अनुसार इनमें परिवर्तन होते रहते हैं। शब्द एक या एक से अधिक ध्वनियों के सार्थक समूह को कहते हैं जैसे **आ** (केवल एक ध्वनि) आ का अर्थ है आना (Come) दो ध्वनि **ख** यानी ख्+अ =खः आकाश। खग (पक्षी) चार ध्वनियाँ ख=आकाश यानी आकाश में जो गमन करता है वह **खग** है।

'भाषा' ध्वनि प्रतीकों की एक समाज द्वारा आपसी सहमति से बनाई गई व्यवस्था है। ध्वनि प्रतीक यानी शब्द, क्षेत्र व्यक्ति स्थान समाज के संपर्क में आकर अपना अर्थ बदलते रहते हैं। यथा **राजीनामा, मोटी, लहँगा**। गुजराती और मराठी में राजीनामा का अर्थ त्याग पत्र, संबंध विच्छेद या असहमति से है यानी कि गुजरात में पति पत्नी के बीच 'राजीनामा' हुआ है तो संबंध विच्छेद हो गए हैं और दिल्ली में राजीनामा हुआ है तो पति पत्नी के बीच समझौता हो गया है (पहले से मनमुटाव चल रहा था) गुजरात में **मोटी बेन** का अर्थ बड़ी बहन से है और यदि उत्तर प्रदेश में किसी महिला को मोटी कह दिया जाए तो लड़ बैठेगी। गुजराती में लहँगा का अर्थ **पायजामा** होता है। मराठी में **चेष्टा** का अर्थ मस्ती (मसकरी) करना होता है। शब्द लीजिए घासलेट। **घासलेट** का अर्थ उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब व हरियाणा में **वनस्पति घी** होता है। जबकि गुजरात, मध्यप्रदेश आदि में **मिट्टी के तेल** से अर्थ होता है। मूल शब्द **गैसलाइट** है यानी कि दीपक में मिट्टी का तेल भरकर बत्ती लगाकर आग जला दी। मिट्टी के तेल से जो लौ बनी वह **गैस लाइट** कहलाई जो कालांतर में अपभ्रंश होकर घासलेट हो गई। अंग्रेजी का शब्द है कॉर्न (Corn) **कॉर्न** का विस्तृत अर्थ अनाज है लेकिन अमरीका में इसका अर्थ **मक्का** होता है, ब्रिटेन में **गेहूँ** तथा स्कॉटलैंड में **बाजरा** होता है।

यह ध्वनि प्रतीक समय के हिसाब से अपना अर्थ बदलते रहते हैं। एक जमाने में **सुर** माने **देवता** और **असुर** माने **राक्षस**। जब असुर शक्तिशाली हो गए तो असुर शब्द देवता (ऋगवेद) का वाचक बन गया। कहा भी है कि **"यस्यास्ति वित्तं सःनरःकुलीनः"** **जंघा** का अर्थ संस्कृत में घुटने से नीचे का भाग होता है जबकि हिंदी में घुटने से ऊपर का भाग। **संगोष्ठी** का अर्थ संस्कृत में जहाँ गाएँ बांधी जाती थीं उस स्थान को गोष्ठी कहा जाता था आज उस स्थान पर विद्वान बांधे जाते हैं।

शब्द के शब्दशक्ति के अनुसार तीन अर्थ होते हैं। **अभिद्या, लक्षणा** और **व्यंजना**।

निम्न उदाहरण से बात स्पष्ट हो जाएगी।

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गयो न उबरो, मोती मानुष चून॥

पानी के तीन अर्थ **चमक, इज्जत** और **पानी**। मोती के संदर्भ में **चमक** (व्यंजना) मनुष्य के संदर्भ में इज्जत (लक्षणा) और चून (आटा) के संदर्भ में पानी (अभिद्या) समय के अनुसार शब्द चार तरह से अपने अर्थ बदलता है। **अर्थादेश, अर्थ विस्तार, अर्थोत्कर्ष व अर्थोपकर्ष**

अर्थादेश : अर्थादेश के अंतर्गत शब्द का एक निश्चित अर्थ सीमित कर दिया जाता है यथा **"मृग"** का अर्थ विस्तृत रूप में संसार के सभी प्राणियों से है। संस्कृत में मृग का अर्थ जंगल के जानवरों से है। **ते भुविभारभूता मृगाश्चरंति"**

मृगेश में यह अर्थ सुरक्षित है। मृग+ईश=मृगेश=सिंह, शेर। कालांतर में हिंदी में जब यह शब्द आया जो केवल 'हरिण' के लिए रूढ़ हो गया। **"तुम देखी कहुँ सीता मृगनैनी"**

*वरिष्ठ प्रशासन प्रबंधक, इंडियन आयल कार्पोरेशन लिमिटेड, स्कोप कंप्लेक्स, कोर-2, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

अर्थविस्तार : तेल, सब्जी, स्याही, कौशल और प्रवीण आदि शब्दों को लिया जा सकता है । **तेल** प्रारम्भ में केवल **तिल** से बने द्रव्य का नाम था । आज मूँगफली, सरसों और बिनोले का भी तेल है । जो हरे रंग की थी वह **सब्जी** थी जैसे करेला, घीया तोरई आदि । आज बैंगन, टमाटर, कद्दू भी सब्जियाँ हैं । **स्याही** (काले रंग से बनी) लेकिन अब नीली व लाल भी स्याही है । कुशल जो (नुकीले सिरे वाली घास =कुश) को अच्छी तरह से तोड़ लाए वह छात्र कुशल था लेकिन अब तो चोरी करने में भी माहिर को कुशल कहा जाता है । **प्रवीण** जो वीणा बजाने में सिद्धहस्त था वह प्रवीण था लेकिन अब अच्छे कर्मकार को भी प्रवीण कहा जाता है । **दुहिता** का अर्थ पहले उस पुत्री से था जो दूध दुहती थी । अब **दुहिता** का अर्थ विस्तार हो गया और पुत्री का पर्यायवाची बन गया । दुध दुहे या न दुहे प्रत्येक पुत्री अब दुहिता है । धेनु भी उस गाय को कहा जाता था जो दूध दे रही हो प्रत्येक गाय को नहीं । जैसे गुरु वशिष्ठ की नंदिनी गाय **"कामधेनु"** ।

अर्थोत्कर्ष : इस संदर्भ में कक्ष, मार्शल, क्रिकेट शब्दों को देखा जा सकता है । **कक्ष** उस स्थान को कहा जाता था जहाँ घोड़े (यास्क के अनुसार) बाँधे जाते थे । अब कक्ष में बड़े साहब विराजमान होते हैं । **मार्शल** का अर्थ घोड़े का नौकर था लेकिन अब सेना के बड़े अधिकारी होते हैं । **क्रिकेट** का अर्थ लकड़ी था लेकिन आज पूरा विश्व "क्रिकेट" का दीवाना है । तात्पर्य है कि कक्ष, मार्शल, क्रिकेट शब्दों का उत्कर्ष हो गया ।

अर्थोपकर्ष : जब शब्द के अर्थ में अवनति हो जाए तो अपकर्ष कहलाता है । आज हरिजन, दादा, ग्रामीण, गुरु, महाराज तथा नेता आदि शब्दों के अर्थ वह नहीं हैं जो पहले थे । हरिजन (सफाई मजदूर) दादा (गुंडा) ग्रामीण (गंवार) गुरु (चालाक) महाराज (रसोईया) नेता (अवसरवादी) आदि में अर्थ अपकर्ष हो गया है ।

शब्द के अर्थ बदलने के और भी बहुत से कारण हैं जिनमें ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व सामाजिक प्रमुख हैं । **विदेह** का अर्थ होता है बिना देह वाला । लेकिन यह अब राजा जनक का पर्यायवाची है । "वाल्मीकी" का अर्थ होता है जिस पर चींटियों ने अपना घर बना लिया हो । वह साधना में इतना रत रहा कि उसे पता ही नहीं पड़ा । वे बाद में कालजयी आदि महाकाव्य **"रामायण"** के प्रेणता महर्षि वाल्मीकी कहलाए । लेकिन अब वाल्मीकी एक जाति विशेष का वाचक बन गया है । शब्द **पटेल** यानी जिस के पास जमीन जोतने का पट्टा था वह गुजरात में पटेल कहलाया तथा महाराष्ट्र में वह पाटील हो गया । पटेल या पाटील का जाति समुदाय से बिल्कुल संबंध नहीं है अन्यथा अहमद पटेल अपने आगे पटेल नहीं लगाते ।

शब्द है **पटावाला :** गुजरात में यह चपरासी का वाचक है । मूलतः यह शब्द न्यायालय से जुड़ा है । न्यायालय में न्यायाधीश से संबंध जो नौकर होते थे और जिनकी बाँह में एक लाल हरे रंग का पट्टा बंधा होता था वह पट्टा वाला होता था । गुजरात में पट्टावाला (पटावाला)आज भी चपरासी का वाचक है और पट्टे की माप तोल करने वाला **"पटवारी"** हो गया । **द्विवेदी, त्रिवेदी** और **चतुर्वेदी** वेदों के ज्ञान के आधार पर होते थे जो चारों वेदों का ज्ञाता होता था, वही **'चतुर्वेदी'** होता था । कालांतर में यह जाति सूचक हो गया और अब चतुर्वेदी का बेटा जिसने वेद आँखों से भी नहीं देखे हों वह भी चतुर्वेदी कहलाने लगा । पंडित का अर्थ जिसमें पांडित्य हो लेकिन अब निरक्षर ब्राह्मण भी पंडित जी कहलाते हैं जबकि दलित के पीएचडी बेटे को भी कोई पंडित नहीं कहता ।

शब्द था **वाणिज्यकारक** यानी कि व्यापार करने वाला वाणिज्यकारक से **वणिक** बना तथा वाणिज्यकारक से ही **बनजारा** बना । आपने **"लाखा बनजारे"** का नाम सुना भी होगा । उसके पास एक लाख पशु थे जिनमें घोड़े, खच्चर, गधे तथा गाएं थीं । इन पशुओं पर सामान लाद कर आंध्रप्रदेश में बेचा करता था । **बनजारा** आज भी बेचारा घूमंतु है जंगल-जंगल भटक रहा है और वणिक स्थापित होकर सेठ (श्रेष्ठ) हो गए हैं ।

नए शब्दों का जन्म : परिस्थितियों/स्थितियों के अनुकूल नए शब्दों का जन्म होता रहता है । पुराने खत्म होते रहते हैं । तोला, माशा, रत्ती, मन, सेर, छटांक किताबों की चीज़ रह गए हैं । लीटर, मीटर आदि नए शब्द आ गए हैं । सुनामी, स्पुतनिक आदि बिल्कुल नए शब्द हैं ।

संकरीकरण : ऑस्ट्रेलिया में भेड़ और बकरे के संसर्ग से एक नया पशु बनाया जिसे नाम दिया "Geep" यानी कि "G "goat से लिया गया तथा eep-Sheep से लिया शब्द बन गया "Geep" । रूस में संकर कर के नया पौधा बनाया जिसकी नीचे जड़ में आलू और ऊपर टमाटर उत्पन्न किया गया । नए पौधे को नाम दिया पोमेटो यानी कि पोटेटो+टोमेटो=पोमेटो । होटलों में एक नया नाम आया है =ब्रंच=ब्रेकफास्ट+लंच=ब्रंच

सारांश यही है कि शब्द, भाषा और संस्कृति कूप जल नहीं हैं । बहते नीर हैं । काल, समय, स्थान व प्रसंगानुकूल अपने अर्थ बदलते रहते हैं । यही संसार की नियति है । ■

बहुलवादी भारत एवं हिंदी

–अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी*

शोचनीय गरीबी, दयनीय स्वास्थ्य एवं सफाई व्यवस्था और अपर्याप्त मूलभूत सुविधाओं आदि के बावजूद भारत विकासशील देशों के बीच अपनी पहचान बनाते हुए विश्वमंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है, अनेक अवसरों पर इसे नीचा दिखाने की चेष्टा की गई, आक्रमणकारियों ने, विदेशी शासकों ने, यहां तक कि इस देश के निवासियों ने भी, अपने व्यवहारों से देश की प्रतिष्ठा तथा अस्मिता को आंच पहुंचाई, इस सबके बावजूद अशिक्षितों, असहायों और लाचारों के देश भारत का विजय रथ आगे बढ़ रहा है ।

भारत की सफलता के इतिहास के अनेक कारक हैं, कुछ लोगों का मानना है कि भारत की दुर्दमनीय जीजीविषा इसकी सफलता का राज है, कुछ कहते हैं कि भारत के राष्ट्रीय चरित्र की नमनीयता ने इस देश की सुदीर्घ इतिहास की नींव रखी है, कुछ लोग बताते हैं कि भारत की राष्ट्रीय संस्कृति के उदात्त मूल्य ने इस देश को समय के झंझावतों से टकराने की क्षमता प्रदान की हैं, समाज शास्त्रीय दृष्टि से यदि भारत को समझाने का प्रयास किया जाए तो पता चलता है कि भारतीय चिंतन, चरित्र तथा पहचान में सर्वत्र बहुलवाद का दर्शन छिपा हुआ है, बहुलवाद के दर्शन का विकास प्रकृति के निकट साहचर्य में रहते हुए भारतीय मस्तिष्क ने इतिहास के उष: काल में ही कर लिया था ।

भारत का प्राकृतिक दशाएं विविधतामूलक रहीं हैं । परिवर्तनशील ऋतुचक्र, विविधतापूर्ण वंस्पतिजगत और असमान भू-आकृति के बीच पल्ल्वित यहां की विचारधारा में विपरीत तथा विरोधी मतों के प्रति समादर की भावना स्वाभाविक रूप से उपजी, यहां रहने वालों में इस बात के प्रति गहरा विश्वास रहा कि दुनिया में उनका मत ही आखिरी नहीं है । यह अनुभव ही भारत में जीओ तथा जीने दो के दर्शन का पहला पाठ बना, फलस्वरूप भारतीय दर्शन में आपातत: विरोधी विचारों का विकास संभव हो सका, विरोधी-से लगनेवाले ये विचार अंत में सामंजस्य के एक धरातल पर मिल सके ।

प्राचीन भारतीय साहित्य ने भारतीय चिंतन को एक मज़बूत आधार प्रदान किया । इस साहित्य का बहुत बड़ा भाग संस्कृत, प्राकृत तथा पालि में आज भी सुरक्षित है । दुख की बात है कि आगे चल कर यह भ्रम फैलाया गया कि संस्कृत पुरोहितों की भाषा है, प्राकृत व्यापारियों की तथा पालि बौद्ध धर्म की भाषा है । जब कि सचाई इसके विपरीत है । संस्कृत भाषा में निबद्ध अनेक ग्रंथों का संबंध चिकित्सा, शिल्प, राजनीति, गणित आदि विषयों से है, प्राकृत में भी अनेक ग्रंथों में सामाजिक जीवन के व्यवहारों का वर्णन तथा भाषाशास्त्र आदि की चर्चा मिलती है । यही बात पालि ग्रंथों के विषय में भी कही जा सकती है ।

भारत की परंपरा में विचारों तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की संकल्पना की गहरी जड़े पाई जाती हैं । ऋग्वेद में कहा गया है कि सत्य तो एक ही है पर जानकार लोग उसे अलग-अलग तरीके से अभिव्यक्त करते हैं । बौद्ध धर्म ग्रंथों में सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास करने के मनाही हैं । बुद्ध ने भिक्षुओं से कहा है कि वे परीक्षा कर के ही किसी पथ का अवलंबन करें, सिर्फ इस लिए ही नहीं कि वे बुद्ध के वचन हैं । भारतीय षड्दर्शन परस्पर विरोधी मान्यताओं का एक विलक्षण समन्वय है । इसमें आस्तिक भी हैं नास्तिक भी और अपोहवादी भी । यहां एक दूसरे की बखिया उधेडने पर नहीं एक दूसरे से भिन्न परिप्रेक्ष प्रस्तुत करने पर जोर रहा है ताकि इस क्रम में सत्य का साक्षात हो सके । इन

*उप मुख्य अधिकारी (राजभाषा) यूको बैंक, अंचल कार्यालय, गुवाहाटी-781003

विरोधी तथा पूरक विचारों के साथ जीते-जीते भारतीय मनीषा ने बहुलवाद का पाठ घुट्टी में ही पी लिया । यहां कहा गया :

मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना कुंडे कुंडे नवं पय:
जातौ जातौ नवचारा: नवा वाणी मुखे मुखे ।

(अर्थात, लोगों की सोच में भिन्नता होती है, कुंओं में अलग-अलग स्वाद का जल होता है, जातियां अलग-अलग तरीके से व्यवहार करती हैं तथा हर मुख अपने-अपने तरीके से उच्चारण करता है)

भारत की भौगोलिक, जलवायविक, नृतात्विक, भाषिक आदि विविधताओं ने यहां के निवासियों को यह बोध करा दिया कि जीवन की सफलता के लिए विविधता का आश्रय लेना ही होगा । यहां बात बहुत स्पष्ट तरीके से समझी गई कि विविधता ही जीवन का आधार और प्रगति का कारण है । इससे भारत में विरोधी विचारों के प्रति असहिष्णुता की जगह सहयोग का दर्शन विकसित हुआ । सामंजस्य तथा सवे। भवंतु सुखिन: सर्वे संतु निरमया: का भाव बहुलवाद की स्वीकृति के बिना संभव ही नहीं था । इन्हीं विशेषताओं से प्रभावित होकर इतिहास के विभिन्न काल खंडों में परिव्राजकों तथा व्यापारियों ने भारत की यात्रा की तथा उनमें से अनेक तो भारत के होकर ही रह गए ।

भारत की विविधता ने ही भारत को विनाश से बचाया है । यहां किसी एक जाति का वर्चस्व नहीं हो पाया, किसी एक विचारधारा का आधिपत्य नहीं हो पाया तथा किसी एक संप्रदाय ने अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने में सफलता नहीं पायी । यही वज़ह है यहां चरम पंथ फल-फूल ही नहीं पाया । अनेकता के बीच एकता का भारतीय आदर्श बहुत हद तक भारत की इसी समझ-बूझ के कारण ही स्थापित हो सका । एक राष्ट्र के रूप में भारत यदि आज प्रगति के सोपान चढ़ सका है तो इसमें भारत की इस समन्वय भावना का बहुत बड़ा योगदान है । समन्वय की इस भावना को संतों, सुधारकों, लोकवत्सल सम्राटों के प्रयासों से नहीं, भारतीय जन मानस की स्वाभाविक प्रवृत्ति से बल मिला है ।

भारत के विविधातामूलक समाज में सैकड़ों भाषाएं तथा बोलियां अस्तित्व में हैं । ऐतिहासिक कारणों से देश के विभिन्न भागों के लोगों के पारस्परिक संपर्क के लिए एक संपर्क भाषा की आवश्यता हर काल में अनुभव की जाती रही है । संपर्क भाषा से अपेक्षा रहती है कि वह विभिन्न भाषा-भाषी समुदाय को एक सांझी विरासत से परिचित कराने में अपनी सार्थकता सिद्ध करे । संपर्क भाषा के माध्यम से ही विविधतामूलक समाज को शक्ति मिलती है तथा वह अपनी समस्याओं से जूझ सकता है । भारत में विभिन्न कालखंडों में अलग-अलग भाषाओं ने राष्ट्रीय संपर्क भाषा की भूमिका निभाई । प्राचीन भारत में संस्कृत अखिल भारतीय संपर्क भाषा रही । यह विश्वासपूर्वक नहीं कहा जा सकता है कि संस्कृत कभी संपूर्ण भारत की संपर्क भाषा थी । पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि आसेतुहिमालय आठवीं सदी तक भारत यदि किसी एक भाषा के माध्यम से काम चला पाया तो वह भाषा संस्कृत ही थी । संस्कृत का उत्तराधिकार पालि तथा प्राकृत ने ग्रहण किया । भारत के अनेक भागों में अनेक प्राकृतों का विकास हुआ । इन प्राकृतों से अपभ्रंशों का प्रादुर्भाव हुआ । दसवीं सदी के बाद अखिल भारतीय संप्रेषण-कामना की अकुलाहट से जो भाषा स्वाभाविक रूप से विकसित होती चली गई उसी भाषा को आज हम हिंदी भाषा के नाम से जानते हैं । सांस्कृतिक रूप से एकात्मक परंतु भाषिक रूप से वैविध्यपूर्ण भारत को हिंदी ने एकसूत्र में बाधा ।

हिंदी भारत की भाषाई धरोहर से नि:सृत होकर विकसित हुई । यह प्राचीन ब्राह्मी लिपि से विकसित देवनागरी वर्णमाला में लिखी गई । इसने मध्यकालीन भारतीय समाज के सांस्कृतिक क्षितिज को छूने की कामना की । इसे हिंद की भाषा के रूप में पहचाना गया तथा हिंदवी के नाम से जाना गया । भारतीय शैली और फारसी शब्दावली के मिश्रण से तेरहवीं सदी में जन्मे संस्कृति-पुरुष अमीर खुसरो ने हिंदवी भाषा को समृद्ध किया । तत्कालीन भारत की वाणी के रूप में विकसित इस भाषा में लिखने तथा बात करने में उन्होंने गर्व का अनुभव किया । उनकी उक्ति प्रसिद्ध है ।

तुर्क हिंदुस्तानियम, मन हिंदवी गोयम जवाब ।
जो मन हिंदवी पुर्स ता नग्ज गोयम ।

सल्तनत काल में जिस भाषा ने हिंदवी के रूप में अपना दुलार भरा बचपन बिताया था आगे की पीढ़ियों ने उसे

भरपूर अपनापन दिया । इस भाषा को संतों, बैरागियों तथा दरवेशों ने भी अपनाया तथा भारत के स्वाधीनता संग्राम में इस भाषा ने साम्राज्यवाद के दर्प को दलने में अपनी क्षमता दिखाकर सारे देश की जनता का विश्वास जीता । यहां तक आते-आते इसे खड़ी बोली कहा जाने लगा । साम्राज्यवाद के विरुद्ध संग्राम के दौरान इस भाषा को राष्ट्रवाद के प्रतीक के रूप में देखा गया । जिन्हें यह भाषा नहीं आती वे भी भावी भारत की संपर्क भाषा के रूप में इसे प्रतिष्ठित करने के राष्ट्रीय कार्य में लग गये । दक्षिण में जहाँ टीपू सुल्तान ने अपने राजकीय काम-काज में इस भाषा का प्रयोग किया था वहाँ अल्लूरी सीताराम राजू, सी. राजगोपालाचारी तथा सुब्रह्मन्यम भारती सदृश देशभक्तों ने इसके प्रचार प्रसार का समर्थन किया ।

अपनी विकास यात्रा में हिंदी ने सच्चे भारतीय भाव के अनुसार आचरण किया । इसने राजाश्रय की मुखापेक्षा कभी नहीं की तथा भारत के साथ अपना तादात्म्य बनाये रखा । इसने विद्वत्गोष्ठियों से नहीं, जन-समावेशों, मेलों-बाज़ारों तथा गलियों-राजमार्गों से अपनी शक्ति तथा ऊर्जा ग्रहण की । तभी तो अखिल भारतीय संप्रेषण में जहां अंग्रेजी असहाय और अन्य भाषाएं अपर्याप्त लगती हैं, हिंदी सहज ही काम बना देती है । हिंदी के इस प्रभाव को गांधी जी ने तब ही समझ लिया था, आज का मनोरंजन उद्योग इसे समझ चुका है और दुनिया के कई देश भी इसे समझ चुके हैं ।

हिंदी का विकास एक खास प्रयोजन से हुआ था । भारत के परिप्रेक्ष में यह बात अच्छी तरह समझी जा चुकी थी कि किसी एक पंथ, मतवाद या परंपरा के आधार पर भारत को बांध कर नहीं रखा जा सकता । विविधताओं को मिटा अथवा दबाकर भारत को मज़बूत नहीं किया जा सकता । विवेकानंद जी ने घोषणा की थी कि भारत को मालूम है कि विभिन्न नदियां जिस प्रकार विभिन्न रास्तों को अपना कर अंतत एक ही सागर में विलीन होती हैं उसी प्रकार भारत यह भी जानता है कि सभी मतवाद अंत में एक ही आध्यात्मिक अनुभव हमें प्रदान करते हैं । इसी क्रम में भारतीयता यहां सदियों से विकसित होती रही है । हिंदी इसी भारतीय-भाव की अनुगामिनी रही है । हिंदी के आंदोलन से जो लोग जुड़े वे इसी भाव से भावित थे । हिंदी को जिसने अपनाया वे भी इसी भाव के आग्रही लोग रहे हैं ।

गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर ने भारत को महामानव तीर्थ कहा है । महामानव के इस तीर्थ पर जिस जल में हम अवगाहन करते हैं वह हिंदी ही है । साहित्यिक संपदा की दृष्टि से अनेक भारतीय भाषाएं हिंदी से धनी हैं, प्राचीनता की दृष्टि से अनेक भारतीय भाषाएं हिंदी की दादी लगेंगी । पर हिंदी को उनसे कोई होड़ नहीं है । हिंदी पवन प्रवाह की तरह भारतीय भाषाओं की सुगंधि को दिग्दिगंत तक फैलाना चाहती है । हिंदी अपने को किसी प्रांत से किसी क्षेत्र से जोड़ना नहीं चाहती । वह भारत के लोगों के बीच आत्मीय संवाद तथा राष्ट्रीय संपर्क के महनीय कार्य में अपना नियोजन करना चाहती है । इसकी लघुता ने ही इसे प्रभुता प्रदान की । हिंदी एकमत से भारत संघ की राजभाषा बनी । यह हिंदी के लिए एक नई चुनौती थी । परंतु हिंदी ने इस चुनौती को भी स्वीकार किया । कोई आश्चर्य नहीं कि हिंदी भाषा की इसी भूमिका के कारण भारत को समझने के लिए हिंदी का पथ अवलंबन करना सभी चाहते हैं । ■

याद रखें

देवनागरी लिपि में हिंदी आपकी राजभाषा है ।

राजभाषा का प्रयोग स्वाभिमान एवं गौरव का विषय है ।

आप अपना कामकाज हिंदी में बेरोक-टोक करें ।

कठिन हिंदी की बजाय सरल हिंदी का उपयोग करें ।

2787 HA/2009—2A

हिंदी का मानकीकरण रूप एवं कार्यालयी हिंदी

–डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा*

हिंदी एक विकासशील भाषा है। संघ की राजभाषा घोषित हो जाने के बाद यह शनैः-शनैः अखिल भारतीय रूप ग्रहण कर रही है। अन्य प्रांतीय भाषाओं के संपर्क में आकर उनसे बहुत कुछ ग्रहण करके और अहिंदी भाषाओं द्वारा प्रयुक्त होते-होते यथासमय एक सर्वसम्मत अखिल भारतीय रूप विकसित होगा-ऐसी आशा है।

यद्यपि यह सही है कि एक विस्तृत भूखंड में और बहुभाषी समाज के बीच व्यवहृत किसी भी विकासशील भाषा के उच्चारणगत गठन में अनेकरूपता मिलना स्वाभाविक है, उसे व्याकरण के कठोर नियमों में जकड़ कर रखना उचित नहीं है, उसके प्रयोग-कर्ताओं को, किसी ऐसे शब्द को जिसके दो या अधिक समानांतर रूप प्रचलित हैं, एक विशेष रूप में प्रयुक्त करने के लिए बाध्य नहीं किया जाना चाहिए। ऐसे शब्द रूपों के बारे में किसी विशेषज्ञ-समिति द्वारा निर्णय दे देने के बाद भी उनकी ग्राह्यता-अग्राह्यता के विषय में मतभेद बना रहना स्वाभाविक है, फिर भी कम से कम लेखन, टंकण और मुद्रण के क्षेत्र में तो हिंदी भाषा में एकरूपता और मानकीकरण की तत्काल आवश्यकता है।

यदि भाषाविषयक कठोर नियम बना दिए जाएँ तो उन नियमों के कारण भाषा की स्वीकार्यता संदेहास्पद बन जाती है, साथ ही भाषा के स्वाभाविक विकास का अवरुद्ध होना भी निश्चित हो जाता है, परिणाम स्वरूप भाषा की गतिशीलता और जीवंतता भी नहीं रह पाती। इसलिए यह आवश्यक है कि भाषा के विकास के लिए उसका मानकीकरण (वर्तनी और उच्चारण दोनें संदर्भों में) हो। इस दृष्टि से ही यहाँ हिंदी भाषा के मानकीकरण के लिए केंद्रीय हिंदी-निदेशालय, शिक्षा-विभाग, मानव-संसाधन विकास-मंत्रालय, भारत सरकार की अनुशंसाओं को प्रस्तुत किया जा रहा है–

हिंदी के स्वर – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

हिंदी के व्यंजन – क, ख, ग, घ, ङ। च, छ, ज, झ, ञ। ट, ठ, ड, ढ, ण। ड़, ढ़। त, थ, द, ध, न। प, फ, ब, भ, म। य, र, ल, व, श। ष, स, ह।

संयुक्त व्यंजन – क्ष (क्+ष), त्र (त्+र), ज्ञ (ज+ञ), श्र (श्+र)

हल् चिह्न – त्, थ्, द्, ...

गृहीत स्वर – ऑ (अँगरेजी से)

ग्रहीत व्यंजन – ख़, ज़, फ़ (फ़ारसी से)

अनुस्वार – -ं- (अं)

अनुनासिकता – -ँ (आँ)

विसर्ग – : (अः)

(1) हिंदी के संयुक्ताक्षर-लेखन के नियम :-

खड़ी पाई वाले व्यंजनों का संयुक्त रूप बनाने के लिए खड़ी पाई को हटा दिया जाता है, जैसे विख्यात, अच्छा, सज़्ज़ा, उल्लेख।

क, फ के संयुक्ताक्षर – शक्ल, हफ्ता।

ङ, छ, ट, ढ, द, ह के संयुक्ताक्षर हल् चिह्न लगाकर बनते हैं– वाङ्मय, लट्टू, पद्म।

संयुक्त "र" के रूप – र + व्यंजन (—र्) वर्ष, व्यंजन + र (्र) क्रम, ट् + र (ट्रे) ट्रेन।

*प्राध्यापक, केंद्रीय विद्यालय, आइ.टी.बी.पी., गौचर। (उत्तराखंड)

2787 HA/2009—2B

विशिष्ट संयुक्त रूप – श् + र (श्र) – श्री, त् + र (त्र) पत्र, द् + य (द्य) विद्या।

हल् चिह्नयुक्त वर्ण का प्रयोग – हल् चिह्न से बनने वाले संयुक्ताक्षर के द्वितीय व्यंजन के साथ 'इ' की मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन के तत्काल पूर्व ही किया जाए, न कि पूरे युग्म से पूर्व, जैसे – द्वितीय, बुद्धिमान।

(2) विभक्ति चिह्न :–

क) हिंदी के विभक्ति चिह्न सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों से अलग करके लिखे जाएँ, जैसे-राम ने रावण को बाण से

ख) सर्वनाम शब्द के साथ विभक्ति को जोड़कर लिखा जाए, जैसे-उसने, तुमको, मैंने ।

ग) सर्वनाम शब्द के साथ दो विभक्ति चिह्न हों तो पहले को जोड़कर तथा दूसरे को अलग करके लिखा जाए, जैसे-उसके लिए, इसमें से।

घ) सर्वनाम और विभक्ति के बीच 'ही', 'तक' हो तो विभक्ति को पृथक, लिखा जाए, जैसे-आप ही के लिए

(3) हाइफन :–

क) द्वंद्व समास के पदों के बीच हाइफन रखा जाए, जैसे राम-लक्ष्मण, शिव-पार्वती।

ख) सा, जैसा के पूर्व हाइफन रखा जाए, जैसे-जल-सा, राम-जैसा।

ग) तत्पुरुष समास में हाइफन वहीं लगाया जाए, जहाँ उसके बिना भ्रम की संभावना हो, जैसे-भू-तत्व, (पृथ्वी तत्व), भूतत्व (भूत होने का भाव), अ-नख (बिना नख का), अनख (क्रोध)।

(4) ये/ए, वा/आ का प्रयोग :–

क) जहाँ 'य', 'व' का प्रयोग किसी स्वर के विकल्प में होता है, वहाँ 'य', 'व' का प्रयोग न करके संबद्ध स्वर का ही प्रयोग होता है, जैसे-किए-किये, नई-नयी, छुआ-छुवा में से पहले (स्वरात्मक) रूपों का ही प्रयोग किया जाए। यह नियम क्रिया-विशेषण, अव्यय आदि सभी रूपों और स्थितियों में लागू माना जाए।

ख) जहाँ 'य', व्याकरणिक परिवर्तन न होकर शब्द का ही मूल तत्व हो, वहाँ स्वरात्मक परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है, जैसे-स्थायी, भाषायी, दायित्व। स्थाई, भाषाई, दाइत्व नहीं।

(5) अनुस्वार (ं) तथा अनुनासिकता (ँ) :–

अनुस्वार तथा अनुनासिकता दोनों चिह्न हिंदी में मान्य और सार्थक हैं, इनके प्रयोग में सावधानी की आवश्यकता है–

क) संयुक्त व्यंजन के रूप में जहाँ पंचमाक्षर (ङ, ञ, ण, न, म) के बाद सवर्गीय शेष चारों वर्णो में से कोई एक वर्ण हो, वहाँ एकरूपता और मुद्रण/लेखन की सुविधा के लिए अनुस्वार का ही प्रयोग करना चाहिए। ध्यान रखें-जिस अक्षर के ऊपर अनुस्वार (ं) चिह्न लगा हो, उससे ठीक आगे जिस वर्ग का व्यंजन हो उसी वर्ग का पंचम वर्ण अनुस्वार के स्थान पर उच्चरित होगा। जैसे-अंक, गंगा, अंचल, अंड़ा, संध्या, संपादक। (अङ्क, गङ्गा, अंचल अण्डा, संध्या, सम्पादक रूप अमानक हैं)।

अनुस्वार के कुछ अपवाद–यदि पंचमाक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग का कोई वर्ण आए अथवा पंचमाक्षर की पुनरावृत्ति हो तो पंचमाक्षर अनुस्वार के रूप में परिवर्तित नहीं होगा, जैसे-वाङ्मय, अन्य, अन्न, सम्मेलन चिन्मय। वांमय, अंय, अंन, संमेलन, चिंमय नहीं।

ख) चंद्र-बिंदु (ँ) के बिना कभी-कभी अर्थ में भ्रम हो जाता है, जैसे-हँस-हंस, यथा-हँस (क्रिया) बच्चे हँस रहे हैं। हंस (संज्ञा) मानसरोवर में हंस तैर रहे हैं । ऐसे भ्रम को दूर करने के

लिए चंद्रबिंदु (-̐-) का प्रयोग अवश्य किया जाए। कुछ स्थितियों में चंद्रबिंदु की जगह केवल बिंदु (-ं-) के प्रयोग को मान्यता दी गई है, जैसे-शिरोरेखा के ऊपर जुड़ने वाली मात्रा के साथ चंद्रबिंदु के प्रयोग से छपाई आदि के प्रयोग में कठिनाई होती है। अतः चंद्रबिंदु के स्थान पर बिंदु का प्रयोग किया जाए जैसे-नहीं, मैं, हैं आदि।

हिंदी के लेखन में यह मानकीकरण रूप भाषायी एकरूपता स्थापित करने में सक्षम हो सकेगा, ऐसी आशाएँ हैं। किसी भी सक्षम भाषा के लिए भाषा का मानकीकरण अनिवार्य है, इससे उसमें गतिशीलता और जीवंतता बनी रहती है। हिंदी भारत की राजभाषा है और इस नाते प्रत्येक भारतीय का यह नैतिक दायित्व है कि वह अपनी भाषा को जीवंतता प्रदान करने में अपने स्तर से सहयोग करें। राजभाषा की दयनीय स्थिति कार्यालय स्तर पर, विशेषकर राजनेताओं, लाल फीताशाही के स्तर पर अधिक हुई है। कार्यालयों में काम करने वाले साथियों की सुविधा के लिए इस लेख में टिप्पणी-लेखन, आदेश, कार्यालय-आदेशों के कुछ नमूने भी प्रस्तुत हैं।

टिप्पणी-लेखन का अर्थ–

टिप्पणी का सामान्य अर्थ है-किसी मामले में कोई राय या सम्मति देना, लेकिन कार्यालयी हिंदी में इसका अपना एक अलग ही अर्थ होता है। सरकारी कार्यालयों में बाहर से आने वाले पत्रों पर या कार्यालय के आंतरिक प्रशासनिक मामलों पर कार्यवाही टिप्पणी-लेखन द्वारा होती है। किसी पत्र या मामले पर निर्णय लेने के लिए सहायक और ऊपर के अधिकारियों के बीच विचार-विमर्श होता है, जिसे फाइल पर लिखा जाता है। विभिन्न मामलों पर किए जाने वाले ये निर्णय फाइलों में सुरक्षित रहते हैं, जिनका उपयोग भविष्य में इसी मामले में या दूसरे मामलों में भी किया जाता है। यह विचार-विमर्श किसी भी मामले में निर्णय लेने की प्रक्रिया का जरूरी हिस्सा होता है।

फाइल की तैयारी–

किसी भी मामले की एक फाइल खोली जाती है, जिसके दो भाग होते हैं-एक भाग में टिप्पणी होती है और दूसरे में पत्राचार। टिप्पणी हाशिये वाले कागज पर लिखी जाती है। टिप्पणी भाग को फाइल के बाहर नत्थी करके रखा जाता है। पत्राचार भाग फाइल के अंदर होता है। टिप्पणी भाग में किसी आवती यानी बाहर से आए पत्र से संबंधित मामले को निपटाने के लिए अनुभाग के सहायक और अधिकारियों के बीच टिप्पणी द्वारा उनके बारे में किए जाने वाले पत्र-व्यवहार की कार्यालय-प्रतियाँ रखी जाती हैं।

फाइलों पर टिप्पणी लिखने की पद्धति–

आवतियों और दूसरे मामलों को निपटाने के लिए संबंधित सहायक या लिपिक फाइल पर टिप्पणी लिखते हैं। फाइल पर टिप्पणी लिखने के बाद सहायक या लिपिक टिप्पणी के नीचे बाईं ओर अपने आद्यक्षर (छोटे हस्ताक्षर) करके दिनांक डालता है और अनुमोदन के लिए अधीक्षक या अनुभाग अधिकारी के सामने प्रस्तुत करता है। यदि अनुभाग अधिकारी टिप्पणी में दिए गए सुझावों से सहमत है तो वह टिप्पणी के नीचे उत्तर का मसौदा प्रस्तुत करने का आदेश देगा और नीचे दाईं ओर हस्ताक्षर कर दिनांक डालेगा, किंतु यदि वह टिप्पणी में दिए गए सुझावों से सहमत नहीं है तो वह अपने सुझावों के साथ टिप्पणी को अपने से ऊपर के अधिकारी के आदेश के लिए प्रस्तुत करेगा। ऐसी टिप्पणी पर वह सहायक की तरह बाईं ओर ही हस्ताक्षर कर दिनांक डालेगा।

टिप्पणी लेखन के प्रकार–

टिप्पणी लेखन के दो प्रकार हैं-नेमी (रुटीन) टिप्पणी तथा नियमित टिप्पणी।

नियमित टिप्पणियाँ दो प्रकार की हैं–अंतर्विभागीय तथा अंतरविभागीय। नेमी टिप्पणियाँ कामचलाऊ और सामान्य स्तर की होती हैं। सामान्य विचार-विमर्श और चर्चाओं के बारे में, अनुस्मारक, पावती, नैमित्तिक पत्र-व्यवहार तथा छोटी-मोटी गैर जरूरी बातों के स्पष्टीकरण के लिए नेमी टिप्पणियाँ की जाती हैं। इन टिप्पणियों को मुख्य फाइल के पिछले भाग में अलग आवरण में रखना चाहिए। किसी आवती या प्रशासनिक मामले में निर्णय पर पहुँचने के लिए सहायक या अधिकारियों के बीच जो विचार-विमर्श होता है, वह नियमित टिप्पणी कहलाती है। जब इस टिप्पणी

का उपयोग विभाग के भीतर होता है तो इसे अंतर्विभागीय टिप्पणी तथा जब इस टिप्पणी का उपयोग एक विभाग दूसरे विभाग से नियमों के स्पष्टीकरण के लिए कोई सूचना प्राप्त करने या किसी अन्य परामर्श के लिए टिप्पणी भेजता है तो वह अंतरविभागीय टिप्पणी कहलाती है।

टिप्पणी लेखल के लिए आवश्यक निर्देश –निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए –

- टिप्पणी में दिए गए सभी तथ्य सही हों ।
- टिप्पणी की भाषा सरल, स्पष्ट तथा असंदिग्ध हो ।
- तथ्यों को घुमा-फिराकर प्रस्तुत न किया जाएँ ।
- यदि पहले लिखी टिप्पणी में तथ्यों को गलत ढंग से प्रस्तुत किया गया हो या कोई सूचना या आँकड़े गलत हों तो उनकी ओर ध्यान दिलाया जाए ।
- टिप्पणी के समर्थन या विरोध में इससे पहले जो निर्णय लिए गए हों, उनके उल्लेख किए जाएँ ।
- टिप्पणी में यह भी सुझाव दिया जाए कि इस मामले में क्या कार्रवाई की जाए ।

सहायक स्तर पर टिप्पणी लेखन :–

किसी फाइल पर सहायक द्वारा ही टिप्पणी की शुरुआत की जाती है । यह टिप्पणी किसी आवती या प्रशासनिक कार्य के बारे में हो सकती है । सहायक, विचाराधीन पत्र को फाइल के पत्राचार-भाग में रखकर उसपर पत्राचार-खंड की पृष्ठ-संख्या अंकित करता है । टिप्पणी लिखते समय वह टिप्पणी के ऊपर क्रम-संख्या .... (आवती) पृष्ठ-संख्या (पत्राचार) लिखकर पत्र के बारे में निम्नलिखित जानकारी देता है –

- आवती में क्या माँग की गई हैं?
- पत्र भेजने वाले ने उक्त माँग किस आधार पर की है?
- माँग के संबंध में सरकारी नियमों की क्या स्थिति है?
- कार्यालय में काम को देखते हुए वह माँग कहाँ तक उचित है?
- अंत में, सहायक पत्र पर कार्रवाई के बारे में सुझाव देता है?

इन पाँच चरणों के साथ टिप्पणी को उच्चतर अधिकारी के अनुमोदन के लिए प्रस्तुत करेगा ।

सहायक स्तर पर टिप्पणी का नमूना –

मान लीजिए कार्यालय का सहायक निजी तौर पर एम्.ए. करना चाहता है, उसके आवेदन के संबंध में टिप्पणी का नमूना देखिए–

> क्रम सं. .... (आवती) पृष्ठ संख्या .... (पत्राचार) श्री कर्मचंद्र, तकनीकी सहायक ने अपनी योग्यताएँ बढ़ाने के लिए गढ़वाल विश्वविद्यालय से सांध्यकालीन कक्षाओं में पढ़कर हिंदी विषय में एम.ए. की परीक्षा देने की अनुमति माँगी है । श्री कर्मचंद्र बी.ए. पास हैं । आवेदन में यह भी आश्वासन दिया गया है कि इसके कारण उनके सरकारी काम पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा ।
>
> हस्ताक्षर सहायक –
>
> दिनांक

सहायक, अपनी टिप्पणी के साथ फाइल को अनुभाग अधिकारी को प्रस्तुत करता है । यदि अनुभाग-अधिकारी अपने सहायक की टिप्पणी से सहमत है तो उस पर अपने हस्ताक्षर दाईं ओर करके अनुभाग को लौटा देगा । उसका नमूना इस प्रकार होगा –

> श्री कर्मचंद्र को यह भी सूचित कर दिया जाए कि यदि परीक्षा के समय कार्यालय में काम की अधिकता हुई तो उन्हें अवकाश देना संभव नहीं होगा ।
>
> कार्यालय–आदेश का मसौदा प्रस्तुत करें ।
>
> हस्ताक्षर ....
>
> अनुभाग-अधिकारी ....
>
> दिनांक ....

इसके बाद सहायक, कार्यालय-आदेश का मसौदा प्रस्तुत करेगा ।

आदेशानुसार कार्यालय-आदेश का संशोधित मसौदा अनुमोदन/हस्ताक्षर के लिए प्रस्तुत है ।

हस्ताक्षर	हस्ताक्षर अनुभाग
सहायक	अधिकारी
दिनांक	दिनांक ....

अंतरविभागीय टिप्पणी–

स्पष्टीकरण, सुझाव, सम्मति आदि के लिए विभाग दूसरे विभाग को जो टिप्पणी लिखता है, वह अंतरविभागीय टिप्पणी कहलाती है । सामान्यत: इस टिप्पणी को भेजने के लिए एक नोट-शीट का प्रयोग किया जाता है । इस पर सबसे ऊपर भेजने वाले मंत्रालय/विभाग का नाम लिखा जाता है । इसके नीचे संक्षेप में विषय का उल्लेख करते हुए टिप्पणी की मुख्य विषयवस्तु का विवरण दिया जाता है । इस टिप्पणी में संबोधन और स्वनिर्देश नहीं लिखा जाता । टिप्पणी के नीचे दाईं ओर टिप्पणी भेजने वाले अधिकारी के हस्ताक्षर पदनाम एवं दूरभाष संख्या लिखी जाती है । हस्ताक्षर के नीचे बाईं ओर अंतरविभागीय टिप्पणी पाने वाले मंत्रालय/विभाग का नाम लिखा जाता है । उसके नीचे एक लम्बी लकीर खींच कर नीचे टिप्पणी भेजने वाले मंत्रालय/विभाग का नाम अंतरविभागीय टिप्पणी संख्या और दिनांक लिखा जाता है ।

कार्यालय-आदेश एवं आदेश –

कार्यालय के आंतरिक प्रशासन के अनुदेश जारी करने के लिए पत्राचार के जिस रूप का प्रयोग किया जाता है उसे कार्यालय-आदेश कहते हैं । कर्मचारियों की नियमित छुट्टी की स्वीकृति, अधिकारियों/अनुभागों के बीच कार्य का विवरण, अराजपत्रित अधिकारियों की नियुक्ति या स्थानांतरण कार्यालय-आदेश के उपयोग की स्थितियाँ हैं । कार्यालय-आदेश जहाँ कार्यालय विशेष की सीमा में व्यवहार में लाया जाता है, वहीं आदेश का उपयोग क्षेत्र विस्तृत है । नए पदों की स्वीकृति, वित्तीय स्वीकृतियाँ, कर्मचारियों को सरकारी आदेश की सूचना आदि आदेश के उपयोग की स्थितियाँ हैं ।

कार्यालय-आदेश का नमूना –

दिनांक ....

संख्या – 105/3/5-ए
भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय,
यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान,
देहरादून ।

यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान कार्यालय-आदेश
सं................. दिनांक...................

संस्थान के निम्नलिखित प्रवर श्रेणी लिपिकों का स्थानांतरण प्रत्येक के सामने दिए गए अनुभाग में किया जाता है ।

क्रम सं.	नाम	वर्तमान अनुभाग	अनुभाग जिसमें स्थानांतरण हुआ	विवरण
1.	श्री वीरेन्द्र गुलाटी	प्रशासन	अनुवाद	
2.	श्रीमती राधा पटेल	अनुवाद	लेखा	
3.	श्री महेश गुप्ता	लेखा	बिक्री	
4.	श्रीमती रीता सक्सेना	बिक्री	प्रशासन	

सभी संबंधित व्यक्ति 07-01-2009 तक अपनी-अपनी सीट का आवश्यक बकाया कार्य निपटा लें और 08-01-2009 से अपने-अपने नए अनुभागों में काम करना शुरू कर दें ।

कखग
उपनिदेशक

प्रति सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु–

1. श्री वीरेन्द्र गुलाटी
2. श्रीमती राधा पटेल
3. श्री महेश गुप्ता
4. श्रीमती रीता सक्सेना

उक्त के अतिरिक्त प्रारूपण/प्रालेखान (DRAFTING), सूचना (NOTICES), विज्ञापन (MEMORANDUM), परिपत्र (CIRCULAR), अनुस्मारक/स्मरण-पत्र (REMINDER), ज्ञापन (NOTIFICATION), प्रेस-विज्ञप्ति (PRESS NOTE), प्रतिवेदन (REPORT) आदि का भी कार्यालय में उपयोग होता है । ■

'प्रयुक्ति' भेद और पारिभाषिक शब्द प्रयोग की संभावनाएँ

–ममता शर्मा*

प्रयुक्ति का शाब्दिक अर्थ है 'प्रयोग'[1] । प्रयुक्ति के अंग्रेजी पर्याय 'Register' का अर्थ है 'form of language used in particular circumstances[2].'

ज्ञान-विज्ञान के शाखा विस्तार के साथ-साथ भाषा का भी विस्तार होता रहता है । इसमें नए-नए शब्दों का प्रवेश होता है । भाषा नए विषयों को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए तैयार होती है । विषयों के अनुरूप भाषा स्वरूप और भूमिका बदलती रहती है । भाषा के इसी स्वरूप या भूमिका परिवर्तन को उसकी प्रयुक्ति कहा जाता है । हिंदी भाषा भी समय के साथ-साथ बोल-चाल की भाषा से आगे चलकर साहित्य, प्रशासन, पत्रकारिता, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, सामाजिक विज्ञान, रसायन शास्त्र, भौतिकी आदि की भाषा बनी ।

आधुनिक काल में उन्नीसवीं सदी के मध्य से पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान के संपर्क से भारत में जीवन के विविध क्षेत्रों में परिवर्तन आने लगे । इस परिवर्तन ने भारतीय समाज में नवजागरण का कार्य किया । भाषा पर भी इस परिवर्तन का प्रभाव पड़ा । हिंदी नए परिवेश को अभिव्यक्ति देने के लिए तैयार होने लगी । हिंदी में अधिक से अधिक पारिभाषिक शब्दों का निर्माण एवं विकास होने लगा । हिंदी में पारिभाषिक शब्दों का निर्माण एवं विकास मुख्य रूप से तीन प्रकार से होता है :-

(i) अंगीकरण

(ii) अनुकूलन

(iii) नव-निर्माण

(i) अंगीकरण–अंगीकरण का अर्थ है दूसरी भाषाओं के शब्दों को ज्यों का त्यों अपना लेना । विश्व की कई भाषाएँ अंगीकरण द्वारा अपनी अभिव्यक्ति क्षमता को सूक्ष्म बनाती हैं । आज विश्व संपर्क की भाषा मानी जाने वाली अंग्रेजी इसका ज्वलंत उदाहरण है। ऐसे नाम जिनका प्रणयन दूसरे देश में हुआ हो, ऐसे अविष्कार जिनका उद्गम विदेशी भूमि पर हुआ हो, उन्हें यथावत् ग्रहण किया जा सकता है । उदाहरण के लिए रासायनिक तत्वों, यौगिकों के नाम आदि।

(ii) अनुकूलन–दूसरी भाषा के शब्दों को अपनी भाषा में ध्वनिसाम्यता के आधार पर नया रूप देकर शब्दों का निर्माण किया जा सकता है । इसे शब्द अनुकूलन की संज्ञा दी जाती है । जैसे Academy से अकादमी, आक्सीजन से ओषजन आदि । अनुकूलन करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि शब्दों की सहजता इससे नष्ट न हो । अर्थात् अनुकूलन के द्वारा ऐसे शब्द तैयार किए जाएं जो अर्थ, ध्वनि एवं भाव में स्वाभाविक लगे न कि आरोपित ।

(iii) नव-निर्माण–भाषा में नए शब्दों का निर्माण भाषा की सृजन शक्ति का द्योतक होता है । साथ ही इससे भाषा की सृजनात्मकता विकसित होती है । हिंदी में उपसर्ग-प्रत्यय या सन्धि समास की सहायता से शब्दों का निर्माण किया जाता है । उदाहरण के लिए विधि शब्द से विधिक, विधितः, विधिवत्, विधिसंगत, विधिमान्य आदि । समास द्वारा निर्मित शब्द है–अनुज्ञप्तिधारी, विपणन, सिद्धान्त, अधीक्षण-इंजीनियर, अधिशेष बजट आदि । सन्धि के प्रयोग निर्मित पारिभाषिक शब्दों के उदाहरण हैं–अग्रेषण, कार्योत्तर, गतावधि आदि।[3]

मोटे तौर पर प्रयोग के आधार पर पारिभाषिक शब्द दो प्रकार के हो सकते हैं :-

(i) पूर्ण पारिभाषिक शब्द

(ii) अर्द्ध पारिभाषिक शब्द

(i) पूर्ण पारिभाषिक शब्द–पूर्ण पारिभाषिक शब्दों की श्रेणी में उन शब्दों को रखा जा सकता है जो केवल

*57, मानसरोवर, पोस्ट-हटिया, रांची-834003 (झारखण्ड)

किसी विषय विशेष में किसी विशिष्ट वस्तु उसके गुण आदि के लिए प्रयोग में लाए जाए जैसे ऑक्सीजन, नाइट्रोजन आदि शब्द ।

(ii) अर्द्ध पारिभाषिक शब्द–अर्द्ध पारिभाषिक शब्द इन शब्दों को कहा जा सकता है जो विषय वस्तु, गुण आदि के अनुसार एक से अधिक अभिव्यक्तियों के लिए भी प्रयोग में लाए जा सकते हैं जैसे असंगति, स्वीकृति आदि शब्द ।

विभिन्न विषयों में पूर्ण पारिभाषिक शब्दों और अर्द्ध पारिभाषिक शब्दों की संख्या अलग-अलग होती है। उदाहरण के तौर पर राजनीतिशास्त्र की शब्दावली में न्याय की शब्दावली की बनिस्पत निश्चित रूप से पूर्ण पारिभाषिक शब्दों की संख्या कम होगी। आयुर्विज्ञान में पूर्ण पारिभाषिक शब्दों की संख्या अधिक है। गणित, रसायनशास्त्र जैसे विषयों में पूर्ण पारिभाषिक शब्दों की संख्या अधिक है। पूर्ण पारिभाषिक शब्दों के लिए प्रयोगकर्त्ताओं में अंग्रेजी भाषा के प्रयोग की प्रवृत्ति पाई जाती है। इस प्रवृत्ति के कई कारण हो सकते हैं जिनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं :–

(1) पूर्ण पारिभाषिक शब्द बहुधा अन्य भाषाओं से आयातित शब्द होते हैं। किसी भी विषय की सामग्री के प्रचलन में आने के साथ-साथ यह शब्द जुबान पर चढ़ जाते हैं। प्रयोगकर्ता समय के साथ इन शब्दों के साथ ऐसा तादातम्य स्थापित कर लेते हैं कि कालान्तर में जब इन शब्दों को रूपांतरित/अनुदित करके प्रचलित करने की चेष्टा की जाती है तो प्रयोगकर्ता को इस प्रकार रूपांतरित/अनुदित शब्द आरोपित प्रतीत होने लगते हैं। कम्प्यूटर की शब्दावली इसका उदाहरण है।

(2) भारत में विशिष्ट ज्ञान की विविध शाखाओं में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी ही है। अर्थात् शिक्षा प्राप्त करने के समय से ही प्रयोगकर्ता को अंग्रेजी शब्द प्रयोग का अभ्यास हो जाता है। इस अभ्यास की गति को बाधित कर हिंदी भाषा की शब्दावली प्रयोग में लाना एक श्रमसाध्य कार्य प्रतीत होता है; जिसके लिए विशेष प्रयास की अपेक्षा होती है।

(3) बहुभाषिकता–भारत एक बहुभाषी देश है। सर जी.ए. ग्रिथर्सन ने 1866 से 1927 के बीच किए गए भाषा सर्वेक्षण में 179 भाषाओं एवं 544 बोलियों की पहचान की। वर्ष 1951 की जनगणना में भाषाओं और बोलियों की संख्या 845 पाई गई।[4]

राजभाषा नीति के अनुसरण के लिए भारत को तीन भाषाई श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है–'क', 'ख' एवं 'ग'। 'क' क्षेत्र में हिन्दी भाषा की प्रमुखता है जबकि 'ख' एवं 'ग' क्षेत्र मे क्षेत्रीय भाषाएँ प्रमुख हैं। इस भाषाई परिदृश्य में हिंदी भाषा एवं शब्दावली का प्रयोग 'क' क्षेत्र में अधिक संभावित है जबकि 'ख' एवं 'ग' क्षेत्र में अपेक्षाकृत कम। इसके अतिरिक्त पिछले दो-तीन दशकों से लोगों की अंतरराज्य गतिशीलता में व्यापक बढ़ोतरी हुई है। लोगों का एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में आवागमन शैक्षिक एवं व्यावसायिक कारणों से बढ़ा है। परिणामस्वरूप बोलचाल की भाषा के रूप में या जनभाषा के रूप में तो हिंदी का महत्व बढ़ा है परन्तु व्यावसायिक अथवा वैचारिक आदान-प्रदान की संपर्क भाषा के रूप में अंग्रेजी का महत्व निरंतर बढ़ रहा है, और यही क्षेत्र है जहाँ पारिभाषिक शब्दों का अधिक प्रयोग होता है।

(4) शिक्षा के वैश्विक प्रयोग का आकर्षण: भारत में अंग्रेजी को एक अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता प्रदान की जाती है। इसे वैश्विक संपर्क की भाषा जानकर हर व्यक्ति यह समझकर अपनी उच्च शिक्षा अंग्रेजी में ही ग्रहण करना चाहता है कि इसमें उसकी गतिशीलता वैश्विक हो। शिक्षा की कीमत विश्व बाजार में आंकी जाती है। यह तभी संभव है जब शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी हो।

हिंदी को पारिभाषिक शब्दावली के प्रयोग की दृष्टि से ज्ञान की दो विशिष्ट शाखाओं का विश्लेषण :–

अभियांत्रिकी–अभियांत्रिकी के क्षेत्र के अन्तर्गत, धातुकर्म, इलेक्ट्रॉनिकी कम्प्यूटर, यांत्रिक, सिविल, खनन आदि विषयों को लिया जा सकता है। अभियांत्रिकी का क्षेत्र भी एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ पूर्ण पारिभाषिक शब्द बहुतायत में पाए जाते हैं। परन्तु फिर भी स्वाधीनता के बाद इस क्षेत्र में हिंदी भाषा एवं शब्दावली के संदर्भ में प्रचुर मात्रा में कार्य किया गया है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा अभियांत्रिकी के क्षेत्र में एक विशेषज्ञों द्वारा किए गए प्रभूत कार्य को संकलित कर 1976 में बृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह का प्रकाशन किया गया। अभियांत्रिकी के क्षेत्र में भाषा एवं शब्दावली का इतना कार्य तो सम्पन्न हो ही चुका है कि पॉलेटेकनिक एवं स्नातक स्तर तक के ज्ञान को हिंदी में अभिव्यक्त किया जा सके[5]। परन्तु प्रयोग के स्तर पर स्थिति अब भी निराशाजनक ही है। यहाँ एक बात

उल्लेखनीय है कि अभियांत्रिकी की खनन, सिविल, आर्किटेक्चर आदि शाखाओं में बहुत हद तक जनप्रचलित शब्दों का प्रवेश बाखूबी हो गया है और उनका प्रयोग भी धड़ल्ले से किया जाता है । यह इस बात का प्रमाण है कि प्रयोग की प्रारंभिक बाधाओं को दूर करके शब्दों को प्रचलन में लाया जा सकता है ।

खेल–खेल भी अन्तरराष्ट्रीय परिदृश्य का विषय है । आज इसका स्वरूप भी अन्य विषयों की भांति तेजी से वैश्विक रूप धारण कर रहा है। घरेलू खेलों के साथ-साथ अन्तरराष्ट्रीय खेलों ने भी सूचना तंत्र के माध्यम से हमारे दैनिक जीवन में अपनी मजबूत पकड़ बना ली है । खेल शब्दावली को प्रचलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं संचार-माध्यम। खेल शब्दावली के पूर्ण पारिभाषिक शब्दों में से कई शब्दों के हिंदी रूपातंरण बहुत ही अच्छे तरह से किए गए हैं और उनका प्रचलन भी बहुत ही बेहतरीन हुआ है । कुछ उदाहरण दृष्टव्य है :–

Batting	—	बल्लेबाजी
Bowling	—	गेंदबाजी
Javelin Throw	—	भाला फेंक
Series	—	श्रृंखला
Hurdle Race	—	बाधा दौड़

इसके अतिरिक्त तीरंदाजी, तैराकी, लम्बी कूद आदि शब्द भी भली भांति प्रचलित है। एक लम्बी सूची ऐसे शब्दों की भी है जिनके हिंदी पर्याय नहीं ढूँढ़े जा सके हैं या कहा जा सकता है कि प्रचलित नहीं हो पाए हैं परन्तु उन्हें लिप्यंतरित करके हिंदी में ही प्रयोग में लाया जा रहा है। जैसे पेनाल्टी कार्नर, अंपायर, विकेटकीपर, स्पिन आदि शब्द।

ऐसा माना जा सकता है कि इन शब्दों को इसी रूप में हिंदी में स्वीकार कर लिया गया है । खेल के क्षेत्र में हिंदी भाषा के प्रयोग का प्रतिशत अन्य क्षेत्रों की बनिस्पत अच्छा है । खेलों की कमेंटरी अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी की जाती है। समाचार-पत्रों, न्यूज चैनलों में हिंदी में पर्याप्त खेल सामग्री मौजूद होती है। चूंकि खेल एक ऐसा विषय है जिसका जनाधार बहुत विस्तृत होता है। जनसंख्या का एक बड़ा भाग इस क्षेत्र से जुड़ा होता है। दूसरे शब्दों में खेल लोक का विषय होता है। भले ही खेल के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर प्रचलित शब्दों का प्रयोग हिंदी में अधिकतर लिप्यंतरण के द्वारा किया जा रहा हो परन्तु इसे भी किसी न किसी रूप में हिंदी का प्रयोग ही माना जा सकता है।

इसके अतिरिक्त आयुर्विज्ञान, विधि, लेखा आदि ऐसे विषय-क्षेत्र हैं जिनमें हिंदी के पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग अपेक्षाकृत कम होता है जबकि पत्रकारिता, राजनीति, अर्थशास्त्र जैसे विषय क्षेत्रों में हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के प्रयोग की संभावनाएँ अपेक्षाकृत बेहतर है।

वस्तुत: सामाजिक विज्ञान या मानविकी ऐसे विषय हैं जिनपर सामाजिक परिवेश का अधिक प्रभाव पड़ता है ।[6] ये विषय ऐसे हैं जो अपने परिवेश के अनुरूप शब्द पर्याय ग्रहण करने की अद्भुत क्षमता रखते हैं। शब्द निर्माताओं और प्रयोगकर्ताओं के थोड़े प्रयास से ही शब्द आसानी से प्रचलन में लाए जा सकते हैं । जबकि गणित, आयुर्विज्ञान, रसायन शास्त्र जैसे विषयों में आयातित शब्दों की संख्या अधिक है। ऐसे शब्दों के विकल्प तैयार करने एवं उन्हें प्रचलित करने के लिए विशेष प्रयास की आवश्यकता होती है।

सार रूप में कहा जा सकता है कि प्रयुक्ति भेद के साथ हिंदी के पारिभाषिक शब्दों की प्रयोग दर बदलती है। तथापि भाषा एवं शब्दों के प्रयोग पर प्रयोगकर्ताओं का ही सर्वाधिक नियंत्रण होता है। अतएवं अंतत: प्रयोगकर्ता के पास यह शक्ति होती है कि वह भाषा एवं शब्दों को अपनी इच्छा के अनुसार प्रचलित या लुप्त करें।

संदर्भ ग्रंथ–

[1] बृहत शब्दकोश, ज्ञानमंडल वाराणसी

[2] Oxford Dictionary

[3] बैंकों में राजभाषा हिंदी का स्वरूप–सुरेशकांत

[4] Multilinguism in India—Language in India, Online Journal

[5] इंजीनियरी की शब्दावली–सत्यपाल अरोड़ा

पारिभाषिक शब्दावली की विकास यात्रा–सम्पादक गार्गी गुप्त

[6] खेल के क्षेत्र की हिंदी शब्दावली–श्रेय मिश्र

पारिभाषिक शब्दावली की विकास यात्रा–सम्पादक गार्गी गुप्त

2787 HA/2009—3A

साहित्यिकी

मधुशाला के अमर गायक डॉ. हरिवंशराय बच्चन की काव्यानुभूति

—डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव*

एक सफल साहित्यकार काल की गति और कला को ठुकराता हुआ ऐसे साहित्य का निर्माण करता है जिसके बीज में मानव जीवन के कल्याण के लिये संस्कार भरे होते हैं। ऐसे साहित्यकार का आग्रह समाज की परिधि में व्यक्ति की पहचान खोजने के साथ-साथ मानव मन की गुफाओं, कंदराओं और भित्तियों का शिल्पी निर्मित ढांचा देकर मनोवैज्ञानिक तरीके से अपने परिवेश का यथार्थ निरूपित करना होता है। सफल साहित्यकार की इन्हीं परिस्थितियों में उसकी रचना युग-धारा से सम्पृक्त होकर ही रूपाकर पाती है।

साहित्य वाङ्मय में नया और पुराना कुछ भी नहीं होता है। साहित्य के माध्यम से जिस नवीनता एवं प्राचीनता की बात हम करते हैं "वह मूलत: और सारत: अनुभूति से अभिव्यक्ति तक, और साथ ही सम्प्रेषण की क्षमता तक, भावना और विचार, कल्पना और यथार्थ, कला और जीवन, साहित्य और समाज की मान्यताओं को आंकने, झांकने, समझने-परखने और अभिव्यक्त करने की केवल एक परम्परावादी दृष्टि भर है। यही वजह है कि हिंदी कविता-धारा में नयी कविता का प्रस्फुटन एक ऐसी क्रांतिकारी घटना बन गई जिसकी स्वीकृति-अस्वीकृति को लेकर ढेरों प्रश्न चिह्न खड़े होने लगे साथ ही कविता की नव्यता को अति तीव्र और दीर्घ एवं अन्तहीन विवादों के घेरे में खड़ा कर दिया।

डॉ. हरिवंशराय बच्चन छायावाद कालीन साहित्यिक परिवेश में भौतिक तथा आध्यात्मिक द्वन्द की समस्याओं से टकराते हुए उत्तर छायावाद युग में जब प्रवेश करते हैं तो उनका कवित्व मुख्यता गायक की मादकता में डूब जाता है। "बच्चन यों तो छायावाद से प्रगतिवाद और प्रयोगवाद में रूपान्तरण की अवधि के कवि दिखते हैं, जिनके भाषागत प्रयोगों को समीक्षकों ने उत्साह के साथ रेखांकित किया है और जिनकी अनुभूति की गहराई छायावादी कवियों से अधिक मानी है। इस दूसरी मान्यता से सहमत हो पाना निश्चय ही कठिन होगा। यहाँ आत्मपरकता और अनुभूति की गहराई में समीक्षकों ने कोई भेद नहीं समझा और फलत: छायावादी काव्य के प्रति अनजाने में ही एक बड़ा अन्याय कर डाला। फिर एक सिलसिला-सा बन गया।"(1) वैसे बच्चन जी की इस मादकता में अनेक स्तरों पर विरोध के स्वर जरूर उठे परन्तु इस सच से इंकार नहीं किया जा सकता है कि बच्चन का उत्तरकालीन काव्य दिनकर की उर्वशी और नरेन्द्र अंचल के गीत शारीरिक अनुभवों और उसके उल्लास का अकुंठ भाव से अंकन करते हैं। इस संदर्भ में पूर्व बच्चन और उत्तर बच्चन की संवेदना के बीच स्पष्ट अंतर परिलक्षित होता है, जिसकी विभाजक-रेखा उनके गीत संग्रह मिलन यामिनी में देखी जा सकती है। पहले दौर में अनुभव प्रधान है, दूसरे में शरीर। यहाँ रचना-समस्या यह है कि छायावाद की सांकेतिक शैली में संयोग-चित्र, उदाहरण के लिये आँसू का प्रसंग परिरंभ कुम्भ की मदिरा/निश्वास मलय के झोंके, जहाँ कल्पना को उद्दीप्त करते हैं, वहाँ सीधी-सादी भाषा में शरीर के चित्र, शरीर को ही स्पर्श करते हैं। "उर्दू के कवि अपने सीधे भाषिक विधान में इसलिए विरह वेदना का चित्रण अधिकतर लेते हैं। शरीर की भंगिमाओं को नहीं । इस संदर्भ में मधुबाला से लेकर 'एकांत संगीत' तक बच्चन अपने श्रेष्ठतम रूप में दिखाई देते हैं। इसके बाद का काव्य प्राय: उनके निजी सुख-दुख का लेखा होकर रह जाता है। पूर्व बच्चन का कृतित्व उत्तर-छायावाद का प्रतिनिधि और महत्वपूर्ण काव्य

*वरिष्ठ प्रवक्ता, हिंदी विभाग, डी.वी. कालेज, उरई (जालौन)-285001 (उ.प्र.)

2787 HA/2009—3B

हैं।"(2) बच्चन जी तत्कालीन लोकमानस में इतने व्यापक और गहरे स्तरों पर उतर चुके थे जिसका कोई विकल्प उनके तत्कालीन समय के विरोधियों के पास उपलब्ध नहीं हो सका था। शायद इसका एक दूसरा पहलू यह भी था कि बच्चन का स्वर माधुर्य लोगों को झूमने पर विवश कर देता था। इसके साथ ही बच्चन की भाषा श्रोता के मन में उनकी अपनी भाषा जैसी लगती थी जो उनके संवेदना के स्तर पर गहराई से जुड़ जाती थी, मिट्टी का तन/मस्ती का मन/क्षण भर जीवन/मेरा परिचय, जब बच्चन ये पंक्तियाँ गाते ऐसे में, कुम्हार के घड़े को प्रतीक बनाकर परिचय देना पाठक को संवेदना के स्तर पर अपने से जोड़ देती है। "इसी प्रकार जब मधुशाला के पदों में बच्चन अपने स्वर माधुर्य को छलकाते हैं तो यह केवल स्वर का ही जादू नहीं, बल्कि उसमें निहित चुम्बकीयता होती है जो पाठक के मन को इतनी गहराई से बांध लेती है। मेरी जिह्वा पर हो अंतिम वस्तु न गंगाजल, हाला/मेरे होठों पर हो अंतिम वस्तु न तुलसी दल, प्याला। दे वे मुझको कन्धा जिनके पग मग डग मग करते हों/और जलूँ उस ठौर जहाँ पर कभी रही हो मधुशाला।" बच्चन जब इन पदों को गा-गाकर सुनाते थे तो उनके स्वर का सम्भार, इन पदों का शब्द-विन्यास और इनमें निहित संवेदना एक रसायन बनकर श्रोता या पाठक के मन को अपने जादू में बाँध लेती थी।"(3) अपनी सम्प्रेषण क्षमता के बल पर डॉ. बच्चन ने जितना विशाल पाठक एवं श्रोता समुदाय हिंदी जगत को उपलब्ध कराया, उसका ऐतिहासिक महत्व निर्विवाद है। आत्मकथा के माध्यम से उत्तर छायावाद के प्रमुख कवि बच्चन का लेखन इस युग का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और विवादस्पद रहा है । उनकी आत्मकथा के चार खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं—'क्या भूलूँ क्या याद करूँ (1969)', 'नीड़ का निर्माण फिर (1970)', 'बसेरे से दूर (1977)', 'दशद्वार से सोपान तक (1985)'। इस आत्मकथा में लेखक ने अपने को केंद्र में रखा है, उपलक्ष्य नहीं माना है। फिर कुछ जीवित व्यक्तियों, विशेषतः महिलाओं के संबंध में ऐसे उल्लेख दिये हैं जो बहुत शोभन नहीं कहे जा सकते। तीसरा खण्ड प्रवास-काल से संबंध होने के कारण ऐसे कई विवादों से मुक्त हैं । इसके अंतर्गत एक रोचक तुलनात्मक विवेचन आपसे आप उभरता है लेखक के स्वदेशी इलाहाबाद विश्वविद्यालय और विदेशी कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के बीच। इन दोनों परिसरों के बारे में कवि-दृष्टि के पर्यवेक्षण विशेष महत्व रखते हैं।"(4) बच्चन जी के साहित्य पर विशेष प्रभाव उमर खैय्याम का पड़ा था। आपने उमर खैय्याम की रुबाइयों को उनकी गहराइयों में समझने की चेष्टा की थी और इन गहराइयों में उन्हें वेदांत और उपनिषदों के दर्शन की स्पष्ट झलक भी दिखती है। ''खुरासान के इराल शहर में ग्यारहवीं शताब्दी में जन्में उमर खैय्याम एक दीर्घायु कवि थे और वे मूलतः गणितज्ञ और ज्योतिषी थे। उन्हें केवल मदवी, रसगशत, रिंद या नाफर्मान समझना भारी भूल है। फिट जेराल्ड ने भी उन्हें फारस का ज्योतिषी कवि—यानी कवि से भी पहले ज्योतिषी माना था। बच्चन जी सम्भवतः जान पैन के इस मन्तव्य से सहमत थे कि उमर खैय्याम औपनिषिदक सिद्धांतों के पालक ही नहीं प्रचारक भी रहे होंगे। अतः उमर खैय्याम की अनेक रुबाइयों की व्याख्या वेदांत दर्शन के आलोक में भी की जा सकती थी। इस वैचारिक पृष्ठभूमि में बच्चन की मधुशाला के अर्थोमीलन को एक गम्भीर धरातल पर समझने की चेष्टा की जानी चाहिये।"(5) इसमें कोई दो राय नहीं कि "अपनी लक्षण और व्यंजना में, डॉ. बच्चन जी की मधुशाला एक लोकप्रिय रचना बन गई है तथा वह हालावाद की भाव-भंगिमापूर्ण अमूर्त रहस्यात्मकता को व्यंजित करने के साथ ही युगातीत और युगीन समय संदर्भों को भी प्रतिबिम्बित करती है।" 'बैर कराते मस्जिद-मंदिर, मेल कराती मधुशाला' जैसी पंक्तियां इसी मानी में पंथ-निरपेक्षता की ओर हमें प्रेरित करती हैं। बच्चन ने खैय्याम के हताशावादी चिंतन से प्रभावित होकर भी जिजीविषा से सराबोर आशावादी चिंतन का साक्षात्कार किया था, जहाँ एक ओर उमर खैय्याम जीवन की नश्वरता से हताश एवं अभिनिवेश (मृत्यु भय) से परास्त मन को क्षणवादी सुखात्मक दर्शन की मादक उत्तेजना में भुलाये रखना चाहते हैं वहीं दूसरी तरफ बच्चन की हाला चेतना की ज्वाला है जिसका पान करके कवि 'मरण' जीवन का महोत्सव मनाने लगता है क्योंकि बच्चन जी की हाला में निःसंदेह मानवीय आशाओं, आकांक्षाओं का भाव विह्वल उन्मेष तथा व्यथा विभोर परिस्थितियों में जीवन की जिस उद्दाम अभिलाषा का जलधि उद्वेलित होकर उसकी चेतना में क्रांति की हलचल मचा देता है, उसे अभिव्यक्ति देने के लिये तारूण्य की आरक्त, पलाश-ज्वाला से भरा हाला का प्रतीक ही संभव तथा सक्षम प्रतीत हो

सकता था। "बच्चन के संपर्क में आकर उमर खैय्याम का मिट्टी का 'प्याला', 'हाला' तथा मधुशाला-सबका रूपान्तरण हो जाता है और वे अभिनव आनन्द, अभिनव जीवन चेतना तथा अभिनव युग के सौन्दर्य बोध के प्रतीकों में परिणित हो जाते हैं।"(6) कुछ समीक्षकों का मानना है कि जिस हालावाद की नींव डॉ. बच्चन ने डाली थी, लगता है कि वह अब समाप्ति की ओर है यह हमारी दृष्टि में उचित नहीं जान पड़ता है। क्योंकि हालावादी काव्य सृजन के पथ पर चलने वाले कवियों की आज भी एक लम्बी कतार है। 'हालावाद गम से घबड़ाकर खुदकुशी करने की बात नहीं कहता, बल्कि वह गम को खोने की बात कहता है, गम को पीने की बात कहता है। अपने काव्य में हाला-प्याला का प्रयोग जितना डॉ. बच्चन ने किया, उतना किसी अन्य कवि ने अब तक नहीं किया। हाला दु:ख दर्दों के विस्मरण का साधन है। मधुशाला पर हो रही प्रतिक्रियाओं के परिप्रेक्ष्य में अपने एक संस्मरण में (इंदौर में अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन) डॉ. बच्चन कहते हैं कि किसी ने गांधी जी से शिकायत कर दी थी कि जिस सम्मेलन के आप सभापति हों उसमें मदिरा का गुणगान किया जाए, बड़े आश्चर्य की बात है। दूसरे दिन अंतरंग सभा की बैठक थी, रात के 12 बजे गांधी ने मुझे सभा हाल के बगल वाले कमरे में मिलने को बुलाया। लोगों के मांगने पर भी गाँधी जी से मिलने का समय नहीं मिलता था, मुझे बुलवाने की खुशी थी, डर भी, अगर कह दें कि 'मधुशाला' न पढ़ा करूँ या नष्ट कर दूँ तो उनकी आज्ञा को टालना कैसे सम्भव होगा। गाँधी जी ने शिकायत की और मधुशाला के कुछ पद सुनने चाहे। कुछ सतर्कता मैंने भी बरती। चुन-चुनकर ऐसी रूबाइयाँ सुनाई जिसके संकेतार्थ शायद उन्हें सहज ग्राह होते, दो की मुझे याद है -

मदिरा जाने को घर से चलता है पीने वाला,
किस पथ से जाऊँ, असमंजस में है वह भोला भाला
अलग-अलग पथ बतलाते सब, पर मैं यह बतलाता हूँ,
राह पकड़ तू एक चला चल पा जाएगा मधुशाला।
मुसलमान और हिंदू हैं दो, एक, मगर, उनका प्याला
एक, मगर, उनका मदिरालय, एक मगर उनकी हाला,
दोनों रहते एक न जब तक मंदिर-मस्जिद में जाते,
बैर बढ़ाते मंदिर-मस्जिद, मेल कराती मधुशाला।

"इसमें तो मदिरा का गुणगान नहीं है।' उनसे यह सुन और उनके द्वारा बख्शा जाकर मैं भागा। उनको भी समय नहीं था। शरीर से गाँधी जी के इतने निकट बैठने का मेरा पहला और अंतिम अवसर था।"(7) डॉ. बच्चन ने मधुशाला के माध्यम से एक सहज, सरल और कभी-कभी गद्य की समीपी काव्य-भाषा को खड़ी बोली में जन्म दिया। यह भाषा हृदय को छूकर मर्म-स्पर्शिनी बन गई है। मुधशाला की एक दूसरी विशेषता यह थी कि कवि ने बहुत ही सतर्क होकर अपनी कल्पनाजन्य अनुभूति में (Idiated Experiences) अपने पाठकों और श्रोताओं को रमा दिया था। वास्तव में कल्पित अनुभूति इसलिये कि डॉ. बच्चन ने कभी शराब का स्वाद तक नहीं चखा था, किसी मधुशाला, मयखाने में जाने की बात तो दूर रही। बच्चन ने शराब के साथ अपने रिश्ते को बताते हुए एक स्थान पर लिखा है कि अमोड़ा के कायस्थ कभी शराब नहीं पीते। डॉ. बच्चन के यहाँ किंवदन्ती के रूप में यह लोग मानते हैं कि यदि कोई शराब पिएगा, तो कोढ़ी हो जाएगा। अपने कुशल काव्य नेतृत्व के जरिए पाठकों को भ्रमित रखने के लिए उत्तर भारत की लोकधारणा और चन्दरवाई के एक छप्पयकी पंक्ति का सहारा लेते हुए एक ऐसी रुबाई लिख दी -

मैं कायस्थ कुलोदभव, मेरे।
पुरखों ने इतना ढाला
मेरे तन के लोहू में है
पचहत्तर प्रतिशत हाला,
पुश्तैनी अधिकार मुझे है
मदिरालय के आँगन पर,
मेरे दादों-परदादों के
हाथ बिकी थी मधुशाला।

इस पर व्यंग्य का पुट हो सकता है लेकिन अपनी विदेश यात्राओं और इंग्लैण्ड-प्रवास के बावजूद बच्चन शराब के स्वाद से अपरिचित थे। इसलिये मधुशाला अपनी अभिधा में कल्पित अनुभूतियों के कारण एक अच्युत ब्रह्मचारी द्वारा लिखित कोक शास्त्र के सम्भोग प्रकरण जैसी कृति है। हालावादी कवि संसार की विषम परिस्थितियों से संघर्ष नहीं करता; वह तो अपनी पीड़ा को मदिरा की बोतल में ढालता है। किसी वस्तु को वह तोड़ता नहीं; टूटे

हुए दिलों को जोड़ता है। डॉ. बच्चन की व्यक्तिवादी कविता का प्रमुख प्रतिपाद्य यही है। यही तत्व उन्हें हालावादी कवि की श्रेणी में ला खड़ा कर देता है – पीने वालों ने/मदिरा का मूल्य/हाय! कब पहचाना, फूट चुका जब मधु का प्याला, टूट चुकी मधुशाला। कितनी ही विषम परिस्थितियाँ कवि बच्चन के लिये अपने आपको संघर्ष से मस्ती की ओर उन्मुख करती हैं क्योंकि मस्ती के लिए मस्ती चाहिए, यह डॉ. बच्चन के लिए उनके अपने जीवन का मूल मंत्र रहा है –

पीकर मदिरा/मस्त हुआ तो/प्यार किया क्या मदिरा से?
मैं तो पागल हो उठता हूँ – सुन लेता यदि मधुशाला!

महाकवि सुमित्रा नंदन पंत के अनुसार – "मधुशाला अमृत संजीवनी है, जिसका पान कर मृत्यु भी जीवित हो उठती है।" उर्दू फारसी शैली में जितनी इश्क मिजाजी तथा साकी और शराब के प्यालों की खुमारी बच्चन की कविताओं में मिलती है; उतनी अन्यत्र दुर्लभ है। उनकी मधुशाला इस युग की गीता है; मृदुभावों के अंगूरों की हाला है/पर कैसे?

प्रियतम! तू मेरी हाला है/मैं तेरा प्यासा प्याला।
अपने में मुझको भरकर/तू बनता है पीने वाला।।
मृदु भावों के अंगूरों की आज बना लाया हाला।
प्रियतम! अपने हाथों से आज पिलाऊँगा प्याला।।

इन पंक्तियों के अमर गायक डॉ. बच्चन जी की मधुशाला में भाँति-भाँति के रसों की भरमार है। विशेषता यह है कि उनके गीतों को पीते-पीते न तो पीने वाले थकते हैं और न तो पिलाते-पिलाते पिलाने वाले ही। ऐसा लगता है कि डॉ. बच्चन की मदिरा पीने वालों की प्यास कभी मिटती नहीं।

कभी न कण भर/खाली होगा/लाख पियें दो लाख पियें
दिन को होली/रात दिवाली/रोज मनाती मधुशाला।

डॉ. बच्चन जी अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार कविता में बोलचाल का प्रयोग करते हैं। इस संदर्भ में यह लक्षित करना रोचक है कि कैसे घरेलू पुकार का साधारण नाम बच्चन आधुनिक हिंदी कविता का क्रमशः एक महत्वपूर्ण नाम बन गया। बच्चन का ध्यान उर्दू-काव्य शैली पर भी था, जहाँ भाषा के बोले जाने वाले रूप का प्रयोग सर्वाधिक काम्य रहा है, जहाँ गजल लिखी नहीं कही जाती है। बोलचाल वे अपने नगर इलाहाबाद से सीखते हैं, तो उर्दू काव्य-शैली के प्रभाव के लिए उसके सबसे बड़े कवि मीर के प्रति आभारी हैं – "कोई न खड़ी बोली लिखना आरम्भ करे। अंदाज मीर का बे-जाने बे पहचाने। बच्चन अपने काव्य विकास के क्रम में उत्तरोत्तर उर्दू की साफ़गोई की ओर झुकते गए । पर उन्होंने इस ओर ध्यान नहीं दिया कि उर्दू बोलचाल का मुहावरा हिंदी की शब्द-व्यंजना-प्रधान काव्य भाषा से मेल नहीं खाता। यहाँ वह महज इतिवृत कथन जैसा होकर रह जाता है।"(४)

परम्परा एवं आधुनिकता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। ये एक-दूसरे के पूरक हैं। परम्पराओं का अनुगामी व्यक्ति आधुनिक भी हो सकता है और आधुनिक-विचार प्रधान व्यक्ति परम्पराओं का अनुगमन भी कर सकता है। जीवन के परिप्रेक्ष्य में बच्चन न तो पूर्णतः परम्परावादी थे और न उन्होंने आधुनिकता का अंधानुकरण ही किया है। सदियों से चली आ रही रूढ़ियों एवं परंपरा के अंतर्गत आने वाले उन समस्त तथ्यों का, जो व्यक्ति विशेष की उन्नति के मार्ग को अवरुद्ध करते हैं। बच्चन ने उसका पूरी तरह से बहिष्कार किया है और जो विकास का पथ प्रशस्त करते हैं, उन्हें अंगीकृत किया है। हिंदू समाज में पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आ रहे धार्मिक कर्मकाण्डों, पुराण पंथियों द्वारा सद्गति दिलाने के उद्देश्य से मरणोपरांत किए जाने वाले कर्मों के प्रति बच्चन ने पूर्ण रूप से अनास्था प्रकट की है। अपनी आत्मकथा में बच्चन का कहना है कि दाह तो मैं कर दूँगा, पर 'कर्म' नहीं, यानी दाह से संबद्ध रोष कर्मकाण्ड नहीं। मुझसे यह नहीं होगा। मैं एक वस्त्र ही, छरी-लौटा ले, तख्त पर चटाई डाल कर बैठूं .... और वह सब खटराग करूँ जो नाई, ब्राह्मण मुझे कराये। इन सब बातों से मेरा बिल्कुल विश्वास नहीं।"(५)

पितृ पक्ष में, पुत्र उठाना/अर्ध्य न कर में, पर प्याला
बैठ कहीं पर जाना गंगा-सागर में भरकर हाला
किसी जगह की मिट्टी भीगे, तृप्ति मुझे मिल जाएगी
तर्पण-अर्पण करना मुझको/पढ़-पढ़कर के मधुशाला।।

शेष पृष्ठ 22 पर

पं. प्रताप नारायण मिश्र के काव्य में आध्यात्म-दर्शन

–डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'*

हिंदी साहित्य ही नहीं वरन् विश्व साहित्य या कहें कि विश्व के ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में अनेक ऐसी महान विभूतियां अवतरित हुई हैं जो वय की दृष्टि से अत्यंत लघु कालखंड लेकर इस पृथ्वी पर अवतीर्ण हुई किंतु अवदान, साहित्य साधना एवं अद्भुत सेवा, समर्पण के चलते उन्होंने उस लघु कालखंड में ही विलक्षणता का ऐसा अनूठा इतिहास सृजित किया है जो कालांतर से आज तक लगातार मेधा-शक्ति को चुनौती देने में सक्षम हुआ है । हिंदी साहित्य में भारतेंदु हरिश्चंद्र हों, प्रकृति के परमचितेरे कवि चंद्र कुंवर बर्तवाल हों या फिर विश्व के समक्ष अपनी अद्भुत मेधाशक्ति व प्रखर वक्तृत्व कला का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करने वाले आध्यात्म एवं धर्म के जीवंत दस्तावेज स्वामी विवेकानंद या ऐसी ही असंख्य अन्य विभूतियां जिन्होंने अत्यंत लघु जीवन पाकर भी ज्ञान-विज्ञान, साहित्य,धर्म, दर्शन,संस्कृति एवं चिंतन के क्षेत्रों में अपना अविस्मरणीय एवं अनुकरणीय योगदान प्रदान किया है ।

ऐसी ही प्रतिभाओं में से एक, विलक्षण व्यक्तित्व व बहुमुखी प्रतिभा के धनी पं. प्रताप नारायण मिश्र न केवल प्रमुख गद्यकार, निबंधकार, प्रहसन लेखक एवं सुविख्यात पत्रकार थे अपितु एक अत्यंत संवेदनशील एवं मेधावी कवि भी थे जिनकी कविता में गहन राष्ट्रीयता, राष्ट्र प्रेम के साथ-साथ आध्यात्म एवं दर्शन की गहनानुभूति यत्र-तत्र नैसर्गिक रूप से उपस्थित थी ।

पं. प्रताप नारायण मिश्र का जन्म 24 सितंबर, 1856 को बैजे गांव-बेघर में पिता संकटा प्रसाद मिश्र के घर में हुआ । पिता न केवल अपने क्षेत्र के अत्यंत सम्मानित व प्रतिष्ठित व्यक्ति थे बल्कि अपनी अध्यवसायी प्रवृत्ति के कारण ज्योतिष के गहन अध्ययन के उपरांत एक प्रतिष्ठित ज्योतिषी के रूप में भी विख्यात थे । ज्योतिष, गणित तथा सटीक भविष्यवाणियों के कारण उनकी ख्याति दूर-दूर तक थी । बड़े-बड़े लोग अपनी आकांक्षाओं, तृष्णाओं एवं जिज्ञासाओं की भावी प्रतिपूर्ति हेतु अथवा भावी जीवन से संबंधित उनसे प्रश्न पूछने आया करते थे । इस वृत्ति के कारण परिवार में धन व मान प्रतिष्ठा की कोई कमी न थी । आध्यात्म एवं ज्योतिष के संगम में डूबे पिता बालक को भी विधिवत ज्योतिष की शिक्षा दिलाकर ज्योतिषी ही बनाना चाहते थे किंतु बालक का उन्मुक्त मन संस्कृत के श्लोकों की अनवरत रटना से ऊब चुकने पर भीतर ही भीतर कुछ और बनने के लिए प्रतिबद्ध व अनुबंधित हो चुका था । अकादमिक अध्ययन में भी बालक प्रताव की रूचि बहुत अधिक नहीं थी । किंतु विभिन्न विषयों की गंभीर पुस्तकें पढ़ना बचपन से ही उनका शौक हो गया था । विद्यालयी शिक्षा के प्रति अरूचि और गहन ज्ञान उद्गात्री शिक्षा के प्रति अप्रतिम झुकाव ने एक दिन उन्हें विद्यालय छोड़ने के लिए विवश कर दिया । वे स्वतंत्र रूप से अध्ययन एवं लेखन करने लगे । उनकी यही प्रवृत्ति कुछ अंतराल पश्चात 'ब्राह्मण' पत्र के यशस्वी संपादक के रूप में उभरकर सबके समक्ष दृष्टिगोचर हुई । अत्यंत संवेदनशील कवि, जागरूक पत्रकार, गहन विश्लेषणकर्ता, चिंतक के रूप में लेखन-मनन व संपादन ही उनकी मुख्य अभिरूचि का विषय हो गया ।

वे 'प्रेमदास', 'ईश्वरावलंबित', 'प्रताप कानपुरी', 'कात्यायन कुमार', 'प्रतापजू', 'प्रताप्रहरी', 'अक्खड़ अल्हैत' आदि-आदि नामों से रचनाएं एवं लेखन किया करते थे । ब्राह्मण कुटीर ही उनकी साधना की मूल कर्मस्थली रही, जहां उन्होंने न केवल अपने लेखन एवं पत्रकारिता से भारतीय मनीषा को अपना परिचय दिया बल्कि अनेकमुखी चिंतन की साधनास्थली भी यही भूमि रही । इस संबंध में डॉ. चंद्रिका प्रसाद शर्मा ने लिखा है--

'स्वभाव में मस्त और फक्कड़, मिश्र जी की 'ब्राह्मण कुटीर' में दीवारों पर अगर कोई सजावट थी तो मात्र एक

*वरिष्ठ हिंदी अधिकारी एवं संपादक 'विकल्प' भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून-248 005

इकतारा टंगा रहता था । कमरे का सारा सामान अस्त-व्यस्त और धूलभरा रहता था । इसी कमरे को उन्होंने अपनी सारस्वत साधना की तप:पूत स्थली बना रखा था । यहीं वे छंद रचते थे, लावनियां लिखते थे, आल्हा की कड़ियां टांकते थे और गजलें आदि लिखते थे। 'ब्राह्मण' पत्र का संपादन इसी कमरे में बैठकर करते थे । संपादकीय, निबंध तथा प्रहसन आदि की रचना यहीं पर करते थे ।

कोई बड़ा या छोटा हो, यही आकर फर्श पर जमता था । महावीर प्रसाद द्विवेदी, पं. मदन मोहन मालवीय, कालाकांकर नरेश रामपाल सिंह, बालमुकुंद गुप्त, लाला श्रीनिवास दास आदि यही फर्श पर बैठकर मिश्र जी से बातचीत करते थे । उनमें बनावट तनिक भी नहीं थी ।

मिश्र जी लिखते-पढ़ते जब थक जाते थे तो इकतारा बजाकर लावनी गाने लगते थे । कभी-कभी खड़े होकर आल्हा भी गाते थे । हिंदी के प्रचार-प्रसार की योजनाएं, राष्ट्रीय जागरण का शंखनाद और हिंदी, हिंदु, हिंदुस्तान की उद्घोषणाएं इस 'ब्राह्मण कुटीर' से हुई थी । इन सबका संयोजन करने वाले फकीर कानपुर की सीमाओं को लांघकर संपूर्ण हिंदी क्षेत्र में छा गया और ऐसा छा गया कि भारतेंदु जी का अभिन्न बन गया ।' (1)

यद्यपि अपने काव्य में राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रीयता एवं राष्ट्र प्रेम का अद्‌भुत त्रिवेणी समेटे कवि प्रताप नारायण मिश्र को प्रथम राष्ट्र कवि कहा जा सकता है किंतु उनकी काव्य रचनाओं में गहन आध्यात्म दर्शन की चिन्गारियों के अवलोकन से उनकी आध्यात्मिकता एवं दार्शनिकता अपना स्वतंत्र बिंब गढ़ने लगती है । कवि मिश्र की आध्यात्मिक-चेतनापरक कविताओं से गुजरते हुए भौतिकता का विस्तार निस्सार लगने लगता है और भक्तिकाल की गहन भक्ति चेतना स्वत: स्फूर्त होकर सम्मुख प्रतिबिंबित होने लगती है । जो कवि अपनी प्रखर मेघाशक्ति से एक दैदिव्यमान नक्षत्र के रूप में दिपदिपाता हुआ अनेकों को राष्ट्र के प्रति समर्पित होने व जूझने का शंखनाद करता है वही अनेक में से एक और एक से शून्य होता हुआ, आरोह से अवरोह की ओर अग्रसर होकर भौतिकता को नकारता हुआ उस देवाधिदेव से दैन्यता की गुहार लगाते हुए काव्य पंक्तियों की अंजुरी अर्पित करते हुए कहता है--

शरणागतपाल कृपाल प्रभो ! हमको इक आस तुम्हारी है ।
तुम्हरे सम दूसर और कोऊ, नहिं दीनन को हितकारी है ।।
सुधि लेत सदा सब जीवन की, अति ही करुना बिस्तारी है ।
प्रतिपाल करै बिन ही बदले, अस कौन पिता महतारी है।।
जब नाथ दया करि देखत हों, छुटि जात बिथा संसारी है।
बिसराय तुम्हें सुख चाहत जो, अस कौन नदान अनारी है।।
परवाह तिन्हें नहिं स्वर्गहु की, जिनको तव कीरति प्यारी है।
धनि है, धनी है, सुख दायक जो, तव प्रेम-सुधा अधिकारी हैं ।।' 2)

भौतिक दृष्टि से अति संपन्न होने पर भी कवि मिश्र आध्यात्मिकता के सरोवर में इतने गहरे डूब चुके थे कि उन्हें संपूर्ण भौतिक सृष्टि की उपलब्धियां शून्य, निर्रथक व निरंक लगने लगी थीं और सांसारिक संबंधों का विस्तार निरा स्वप्न सदृश प्रतीत होने लगा था । इस दृष्ट जगत का आभासित सुख अंतत: गहन वेदना के भंवर में धकेलेगा, यह बात बीज रूप से कवि के अंतस्थल में घर कर चुकी थी । यदि कोई अच्छा उत्तम और शाश्वत आनंद का स्रोत है तो वह आध्यात्म व देवत्व है और समूचा दृष्ट जगत महज कष्ट का पिटारा है जहां अपेक्षाओं-महत्वाकांक्षाओं के जहरीले सर्प फुफकार रहे हैं । यहां का समूचा सुख , सुख न होकर दु:ख का कु-आरंभ है । यहां का विस्तार पल-पल गहन कष्ट की अनुगूंज की पुनरावृत्ति करने वाला है । यदि सच्चा सुख कहीं है तो वह देवाधिदेव की शरणस्थल में ही है । वह केवल पालनहार की नहीं बल्कि इस दृष्ट-सृष्टि के समूल संबंधों का उद्‌गाता भी है । इसलिए कवि मुखर होकर कह उठता है--

'पितु मातु सहायक स्वामि-सखा, तुमही इक नाथ हमारे हो ।
जिनके कछु और अधार नहीं, तिनके तुमही रखवारे हो ।।
सब भांति सदा सुखदायक हो, दुख-दुर्गुन-नासन हारे हो ।
प्रतिपल करौ सिगरे जग को, अतिसै करुना उर धारे हो ।।
भुलिहै हमही तुमको तुम तौ, हमरी सुधि नाहिं बिसारे हो ।
उपकारन को कछु अंत नहीं, छिन ही छिन जो बिस्तारे हो ।।
महराज महा महिमा तुम्हरी, समझै बिरले बुधिवारे हो ।
शुभ शांति निकेतन प्रेमनिधे ! मन-मंदिर के उजियारे हो ।।'3)

मिश्र जी के काव्य में विनय के स्वर की पराकाष्ठा का दिग्दर्शन होता है । यद्यपि उनका पालन-पोषण संपन्नता

के संरक्षण में हुआ है फिर भी आध्यात्मिक चिंतन की अंतरंगता ने उनकी सृष्टि के प्रति दृष्टि को उपेक्षित कर देवत्व में समग्रत: कीलित कर दिया है । इसलिए वे इस भौतिक प्रचुरता के संसार के होते हुए भी स्वयं को नितांत असहाय, असमर्थ, संबंधों से हीन मानते हुए चकोरी सदृश एकटक अपना सब कुछ देव कृपा के समक्ष न्यौछावर करते हुए दया की भीख मांगते हुए दिखाई देते हैं एक असहाय याचक की तरह । वह उस पालनहार से निरंतर अपनी भूलों को क्षमा करने की गुहार लगाते दिखाई देते हैं । वह आत्मा और परमात्मा के रिश्ते को दैहिकता से अधिक आत्मिक अंतरंगता का पर्याय मानते हुए याचना करते हैं --

'क्यों दीनानाथ ! मुझ पै तेरी कुछ दया नहीं,
आश्रित तेरा नहीं हूँ कि तेरी प्रजा नहीं ।
मेरे तो नाथ ! कोई तुम्हारे बिना नहीं
माता नहीं है, बंधु नहीं है, पिता नहीं ।।
माना कि मेरे पाप बहुत हैं पै हे प्रभो,
कुछ उनसे न्यूनतर तो तुम्हारी दया नहीं ।
करुणा करोगे क्या मेरे आंसू ही देखकर,
जी का भी मेरे दु:ख तो तुमसे छिपा नहीं ।।
तुम शरण न दोगे तो जाऊंगा हा ! कहां
अच्छा हूँ वा बुरा हूँ किसी और का नहीं ।।'[4]

भौतिक आसक्ति को नकारने की शक्ति उसी में पैदा हो सकती है जो सांसारिक विषय-वासनाओं से विरक्त हो पूर्णत: अपने आराध्य में एकाकार हो गया हो । संपन्नता की उत्तुंगता होते हुए भी दार्शनिक गांभीर्य कवि को न केवल इस भौतिक जगत का यथार्थबोध कराता है अपितु मिथ्या को ठुकरा कर वह परमानंद को प्राप्त कर शाश्वत सुख के मधुकणों को बटोर लेना चाहता है । इस पंच भौतिक जगत की विषय-वासनाओं का डंक किसी को भी इस योग्य नहीं छोड़ता कि वह आने वाले जन्म-जन्मांतरों का परिमार्जन कर सके । सांसारिक सुख एवं उपलब्धियां, क्षणिक, निराधार, अस्थायी एवं संतापपूर्ण हैं । सुख, शांति एवं ज्ञान की शाश्वतता चिरंतनता का एक आधार देवदर्शन अथवा देवत्व की वह उद्दाम शरणस्थली ही है । उनके स्पर्श मात्र से संसार के दैहिक, भौतिक ताप न केवल नष्ट होते हैं अपितु होने वाला कल भी नितांत सुखी व यथार्थ जीवनी शक्ति से परिपूर्ण होता है । उस परब्रह्म को सर्वशक्तिमान व स्वयं को तुच्छ मानते हुए कवि की ये हृदय में हिलोरें उठाती करुण काव्य पंक्तियां गहन जीवन दर्शन एवं उनकी विनय की पराकाष्ठा का ही गहन दर्शन कराती हैं--

'नाथ मेरे तुम ही एक आधार।
सुख के सिन्धु कृपा के मूरति विपति विनाशन हार ।।
निज दुर्मति बस तुम्हें भूलि के भोगी विथा अपार ।
काम क्रोध मद लोभ मोह की सही सबै विधि मार ।।
दुख को सुख समझो तांही हित कीन्हें यतन हजार ।
हाय भये सब व्यर्थ परिश्रम सब चतुराई छार ।।
अब तव चरण शरण तकि आयो पर्‌यो तिहारे द्‌वार ।
दीन हीन प्राणिन तुम बिन को करि सकै संभार ।।'[5]

अज्ञानता की पराकाष्ठा से वशीभूत हो संसार की मिथ्या, सत्य लगती है और सत्य के साक्षात्कार होने के पश्चात समूचा सत्य, मिथ्या में बदल जाता है । लेकिन इस असली सत्य के दिग्दर्शन हेतु यथार्थ दृष्टि की गहराई तथा जीवन अनुभूतियों की पराकाष्ठा का सीधा प्रसारण एवं अनुभूतिजन्यता होनी अनिवार्य है । इस दृष्ट जगत एवं दृष्टि व्युत्पन्न संबंधों का अंत दु:ख दारुण से पूर्ण एवं कारुणिक है । यहां तक कि जिस शरीर के रथ में आरुढ़ हो व्यक्ति स्वयं को सर्वसमर्थ घोषित करता घूमता है काल को चुनौती देता रहता है, वह भी उसके सनातन हित-लाभ में नहीं आ पाता । सांसारिक सुखों के उन्मूलन की नींव तले असली सुखों का साम्राज्य गढ़ा रहता है जिसमें यह स्वप्नद्रष्टा प्रतीति हो , वही इसके फलागम को भलीभांति जान सकता है । अन्यथा देव शरण के अतिरिक्त कोई दूसरा स्थायी ठौर-ठिकाना नहीं है और न ही कोई सच्चा मीत भी--

'दयानिधि तुम ही सांचे मीत ।
तुम बिन और कौन करि है प्रभू, बिन निज स्वारथ प्रीत ।।
प्रत्युपकार बिन जीवन को, भलो करत सब रीत ।
जन्म देत रक्षत निशि बासर, सिखवत सुख-प्रद नीत ।।
को पितु मातु बंधु जग जिनकी, कीजै कुछ परतीत ।
जब निज देहहि काम न आवत, पौरूष भार वितीत ।।
तुम ही मरत जियत के साथी, प्रेम सुरूप पुनीत ।
दीनदयाल सदा सुखदाता, वेद विदित यश गीत ।।'[6]

मिश्र जी के पिता संपन्न व प्रतिष्ठित व्यक्ति थे । उनके अपने नगर में पांच भवन थे । किंतु दर्शन, आध्यात्म व देवत्व की त्रिवेणी में गहरे डूबे कवि मिश्र नितांत सांसारिक अनाथता के पर्याय बन कर असली गृह की तलाश के मंथन में जब-तब अपनी चेतना के द्वारों को झंकृत करते हुए एक विचित्र उहा-पोह की स्थिति में स्वयं को पाते हैं । सांसारिक वैभवों के अतुल भंडारों की प्राप्ति के निकष पर भी कवि मिश्र को सुखानुभूति की किंचित भी प्रतीति सुनिश्चित नहीं हो पाती । उनकी दृष्टि में यह दीन-हीन संसार दीनता व हीनता के विस्तार के अतिरिक्त इस दुर्लभ मानव जीवन को कुछ भी देने की स्थिति में नहीं है । इसलिए वह इस नितांत अस्थायी, अव्यावहारिक एवं अस्तित्वहीन संसार के संबंधों के विस्तार में इस जीवन के क्षण विशेष को भी गंवाना ठीक नहीं समझते । उन्हें ललक है तो केवल दीनबंधु दीनानाथ के उस स्थायी द्वार के संस्पर्श की, जिसकी छुवन मात्र से सांसारिक भवसागरों के बंधनों से सदा-सदा के लिए मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है--

'मेरो दूसरो नहीं द्वार ।
दीनबंधु कृपायतन! मैं सबहि भांति तुम्हार ।।
कौन शरणागत सुखद तुम सरिस सर्व प्रकार ।
गहहुं जाकी आस तुम बिन हे दया आगार ।।
कौन के आगे करौ निज दीनता विस्तार ।
मोहि तो सूझत न दूजो करनहार सम्हार ।।'[7]

मिश्र का दार्शनिक कवि हिन्दुत्व, इस्लामियत, सिक्खी, इसाईयत आदि धर्मों के खांचे में बंध कर अपनी मेधा व शक्ति के अस्थायीत्व का प्रदर्शन नहीं करना चाहता बल्कि ऐसे धर्म की कल्पना पर परम विश्वसनीयता की भित्ति को आरूढ़ करता है कि जो सर्वथा कालातीत, स्थायी, अखंड व अभेद्य हो । मानवता में चिंतन, भाषिक एवं सांस्कृतिक आधार पर विग्रह व फूट का बीज बोने वाले धर्मों का कवि पक्षधर नहीं है । क्योंकि ये सांसारिकता स्वार्थपरायणता से परिपक्व हो अनेकानेक पूर्वाग्रहों से ग्रसित रहते हैं और अंततः कष्ट, वैमनस्यता, राग-द्वेष, विध्वंश एवं त्रासदजन्य स्थितियों की उत्पत्ति पर समाप्त होता है । इसलिए कवि एक शाश्वत, चिरंतन, कालजयी व सार्वभौमिक धर्म की ही मांग अपने आराध्य से दत्तचित्त हो करता है--

'सर्व धर्म पर धर्म यही बस ।
जो चाहै आनंद अखंडित, पान करै प्रभु प्रेम सुधारस ।।
और कर्म संसारिक जितने, हैं सब सात्विक राजस तामस ।
सबके फल सुख दु:ख अल्प हैं, बने सदा नहिं रहे एकरस ।।
करके कठिन मुक्ति के साधन, फेर देखिए मार्ग बहु दिवस।
है कि नहीं कुछ कैसी क्या है, हमको मुक्तिहि में असमंजस।।'[8]

देवत्व की छाया और ईश्वरीय अनुकंपा के बिना प्राणों की जीवंतता कवि के लिए कोई अर्थ नहीं रखती । यह संसार महज आकांक्षाओं का विस्तार है जिसका अंत संतापों से परिपूर्ण है । कवि किसी भी कीमत पर इस दुर्बुद्धिमय संसार में लंबे समय तक जीवन जीने का आकांक्षी नहीं है अपितु पूर्णतः उसकी अनुकंपा पर अवलंबित होकर अपना सर्वस्व तल्लीनभाव से उसके श्रीचरणों में अर्पित कर देना चाहता है । एक निर्दोष अपराधी की तरह अपने दुर्गुनों के अपराध को स्वीकार करता हुआ कवि उसके समक्ष जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्त करता हुआ अपनी अज्ञानता का प्रदर्शन करता है । दैन्यता, असमर्थता व निर्दोषता का चरम,कवि की इन पंक्तियों में दृष्टिगोचर होता है--

'कर दया दीन पर दाता ।
दुष्ट कर्म दुर्बुद्धि दु:ख से , त्राहि-त्राहि हे ताता ।।
रक्षा तेरे हाथ हमारी तूही सत्य पितु त्राता ।
तेरे बिन हम और कौन से चाहै निज कुशलाता ।।
मांगे कहां ज्ञान गुण गौरव तेरे समय नहिं ज्ञाता ।
ईश्वरावलम्बित हैं हम और नाम तेरा है धाता ।।'[9]

सांसारिक ज्ञान को संचित करने के बावजूद भी कवि का सचेत दार्शनिक मन अपनी अज्ञानता को स्वीकारते हुए उन्मुक्त भाव से अपने आराध्य का आह्वान करता है कि उन्हें ऐसी स्थायी, सद्मार्ग व शाश्वत प्रतिष्ठा प्रदान करें जो सर्वथा गणग्राह्य व अनुकरणीय हो । अपने आराध्य का मूलभूत प्रेम ही कवि की अनुभूत पूंजी है । अतः इस दृष्ट जगत में फैले हुए गहन तमस को चीरने के लिए विद्या रूपी सूर्य प्रकाश की अतीव आवश्यकता है जो देवत्व के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं भी संभव नहीं है । कवि की प्रभु के प्रति आगाध श्रद्धा की बानगी प्रस्तुत है --

2787 HA/2009—4A

'तुम मेरे प्रानन के प्रान।
तुम मेरे प्रानन के प्रान, जीवन मेरे जी के।।
शील स्नेह गुण बलि बुद्धि विनय धर्म को।
धन धीरज मेरो अति विस्तारो।
जाचन जाय 'प्रताप' कहां, आश्रित है एक तुम्हारो।।"[10]

अतः कहा जा सकता है कि प्रतापनारायण मिश्र की कविता में अध्यात्म एवं दर्शन की वे अंतरंग अनुभूतियां सम्मिलित हैं जो उन्होंने भौतिक जीवन की संपन्नता के तिरस्कार व परित्याग के उपरांत अपने गहन के साधुत्व से अर्जित की हैं, की बहुआयमी अनुगूंज कवि की इन दार्शनिक कविताओं में मिलती है। इन कविताओं के अवलोकन से कवि के जीवन का एक नवीन छवि-चित्र पाठक के मन में घर कर बैठता है जो हिंदी साहित्य के स्वर्णकाल अर्थात भक्तिकाल का अनायास स्मरण करा देता है। मिश्र की कविताएं भावनात्मक सौदागरी की कविताएं नहीं हैं अपितु अनुभूतियों की कढ़ाई में तप-तप कर इतने परिपक्व चिंतन का बोध कराती हैं तो शाश्वत ज्ञान सीढ़ियों के आरोहण में उत्प्रेरक सिद्ध हो सकती हैं। वे किसी दृष्टि से संभ्रात संसारी नजर नहीं आते। इन कविताओं में जहां सोए हुए पौरुष को जगाने की एक अतृप्त उत्कंठा है, वहीं मिथ्या व सत्य के आलोढ़न-विलोढ़न के पश्चात मथित वैचारिक दधि से ऐसे शाश्वत वैचारिक घृत की प्राप्ति की अभिलाषा भी है जिसके आस्वादन मात्र से भवसागर की जटिलताओं को फांद कर मानव अपने स्थायी आवास अर्थात मोक्ष की ओर अग्रसर हो इस दुलर्भ मानव जीवन को सफल कर सकता है। निश्चित रूप से नए तेवर व कलेवर की इन कविताओं में वैचारिक स्फुरण के अप्राप्य मंत्र बीजों की अनेकानेक पौधशालाएं तैयार करने की विलक्षण क्षमता सन्निहित है जो संपूर्ण युग को स्पंदित कर अनुभूति व चिंतन की नई आधारभूमि उपलब्ध कराती हैं।

संदर्भ–

1. प्रतापनारायण मिश्र रचनावली–संपादक डॉ. चंद्रिका प्रसाद शर्मा, पृष्ठः 10-11
2. वही, प्रार्थना, पृष्ठः 23
3. वही, प्रार्थना, पृष्ठः 24
4. वही, कोई तुम्हारे बना नहीं, पृष्ठः 32
5. वही, हे पितु परम उदार, पृष्ठः 35
6. वही, तुम ही सांचे मीत, पृष्ठः 36
7. वही, मेरो दूसरो नहिं द्वार, पृष्ठः 37
8. वही, लगै स्वर्ग सुख फीको, पृष्ठः 39
9. वही, कर दया दीन पर दाता, पृष्ठः 42
10. वही, विनय, पृष्ठः 42

पृष्ठ 17 का शेष

कहा जाता है कि देवकी नंदन खत्री के उपन्यासों को पढ़ने के लिए लोगों ने हिंदी भाषा सीखी। बच्चन के बारे में भी यह कहा जा सकता है कि जिन्हें कविता के प्रति कोई रूझान नहीं था उन लोगों ने बच्चन की कविताओं को सुनकर कविता पढ़ना सीखा और कविता की परिधि को विस्तृत किया।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि जीवन के दग्ध अनुभवों ने बच्चन को नई दृष्टि दी। महाकवि निराला की भाँति आंसुओं को भीतर ही भीतर पीकर, उनकी ऊर्जा और सौंदर्य में, अपनी कविता को स्वर्ण की तरह चमकवान बनाया। उमर खैय्याम की रूबाइयों का गायक जिसने साक्षात मनुष्य की आकांक्षाओं को संसार की सीमाओं के अंदर घुटते-टूटते साथ ही व्यक्ति के सुकुमार स्वप्नों को संसार के कठोर सत्यों से टक्कर खाकर चूर-चूर होते देखा है। इन रूबाइयों के अंदर एक उद्विग्न और आर्त चेतना की पुकार है, एक विषन्न और विपन्न मन का रोदन है, एक दलित और भग्न हृदय का क्रंदन है। विष्णु प्रभाकर जी के शब्दों में अपनी बात समाप्त करना चाहूँगा जो उन्होंने श्रद्धांजलि स्वरूप डॉ. बच्चन की स्मृति में कही थी। "बच्चन जी ज्ञानी कवि थे; उमर खैय्याम की रूबाइयों पर आधारित मधुशाला को अपनाकर हिंदी साहित्य को इस प्रकार उन्होंने प्रस्तुत किया कि मधुशाला हिंदी जगत की हो गई। जब वे गाकर मधुशाला सुनाते थे तो एक अद्भुत वातावरण पैदा हो जाता था।"(10)

संदर्भ -

[1] हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृ. 184
[2] हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृ. 187-188
[3] बच्चन : काव्य-भाषा का जन संस्कार, डॉ. रामकमल राय, हिंदी अनुशीलन, पृ. 9
[4] हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृ. 258
[5] बच्चन जी की स्मृति में-डॉ. कुमार विमल, हिंदी अनुशीलन, पृ. 15, 16
[6] बच्चन के साहित्य में सौन्दर्यानुभूति, श्रीमती माधुरी शुक्ला, पृ. 196
[7] राह पकड़ तू एक चला चल, अक्षर शिल्पी, अक्तूबर-दिसंबर 2005, पृ. 9
[8] हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृ. 186
[9] बच्चन नीड़ का निर्माण फिर, पृ. 21, 13
[10] हिंदुस्तान, 20 जनवरी, 2003, पृ. 16

2787 HA/2009—4B

अमर शहीदों के अंतिम शब्द

—प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा*

अमर शहीद रामप्रसाद 'बिस्मिल' ने अपनी फांसी से कुछ दिन पूर्व अपने एक मित्र को लिखे पत्र में अपनी अंतिम इच्छा को काव्यात्मक रूप में इस प्रकार अभिव्यक्त किया था—

'यदि देश हित में मुझको सहस्रों बार भी मरना पड़े,
तो भी न मैं इस कष्ट को निज ध्यान में लाऊं कभी।
हे ईश, भारतवर्ष में शत बार मेरा जन्म हो,
कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।।

'बिस्मिल' जब फांसी के तख्ते पर खड़े थे और एक अंग्रेज अधिकारी ने उससे 'अंतिम इच्छा' पूछने की औपचारिकता निभायी तो उनका निर्भीक उत्तर था 'मैं अंग्रेजी साम्राज्य का विनाश चाहता हूं।' उनके इस उत्तर से अंग्रेज अधिकारी भी सहम गया और उसने तत्काल 'बिस्मिल' के गले में फांसी का फंदा डालने की आज्ञा दे दी।

अपने जीवनकाल में भी बिस्मिल अक्सर अपनी इन पंक्तियों को गुनगुनाया करते थे—

अब न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़।
सिर्फ मिट जाने की हसरत अब दिले बिस्मिल में है।।

रामप्रसाद 'बिस्मिल' के समान उनके साथी और काकोरी कांड के दूसरे शहीद अशफाकुल्ला खां भी कविताएं लिखते थे और अक्सर देशभक्ति से परिपूर्ण अपनी इन कविताओं को गुनगुनाया करते थे। अपने मुकदमे के फैसले से एक दिन पूर्व उन्होंने एक गीत लिखा, जिसकी कुछ पंक्तियां इस प्रकार थीं—

हे मातृभूमि तेरी सेवा किया करूंगा।
फांसी मिले मुझे या हो जन्मकैद मेरी,
बेड़ी बजाबजा कर तेरा भजन किया करूंगा।।

फांसी के केवल दो दिन पूर्व अशफाकुल्ला के दो बड़े भाई रियासतुल्ला खां और शहंशाह खां तथा दो छोटे भतीजे उनसे मिलने के लिए जेल की कोठरी में पहुंचे तो श्री अशफाकुल्ला खां ने उन्हें स्नेह से समझाते हुए कहा—'हिंदुओं में तो खुदीराम बोस और कन्हाई लाल दत्त जैसी हस्तियां गुजर चुकी हैं, जो अपनी जान पर खेल गए हैं। मगर मुसलमानों में शायद मैं पहला खुशनसीब हूं, जो ऐसे क्रांतिकारी षड़यंत्र के मुकदमे के सिलसिले में फांसी पर चढूंगा।' इन्हीं के साथ गए एक वकील मित्र कृपाशंकर हजेला ने जब श्री अशफाकुल्ला खां से उनकी अंतिम इच्छा के बारे में पूछा तो उन्होंने मुस्कराते हुए कहा—'हां एक अंतिम इच्छा है, अगर आप पूरी कर सकें। परसों (19 दिसंबर 1927) सुबह मैं फांसी के तख्ते पर चढूंगा। आप देखने आइए कि मैं किस शौक और प्रसन्नता से फांसी पर चढ़ता हूं।'

फांसी से चार दिन पहले अशफाकुल्ला खां ने जेल से लिखे अपने एक पत्र में अपनी भावनाओं को इन शब्दों में व्यक्त किया—'ऐ खुदाबंदे कुद्दूस, क्या कोई ऐसा सवेरा नहीं आएगा कि जिस सुबह तेरा आफताब आजाद हिन्दुस्तान पर चमके ओर फिजायहिंद आजादी के नारों से गूंज उठे।' उनके बारे में अमर शहीद भगत सिंह ने लिखा कि—'वह मस्ताना शायर भी हैरान करने वाली खुशी से फांसी पर चढ़ा। बड़ा सुन्दर और लम्बा तगड़ा जवान था। फांसी से एक दिन

*10/611, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

पहले मुलाकात हुई। खूब सजे संवरे थे। बड़े बड़े केस खूब सजते थे। हंस हंस कर बातें कर रहे थे। उन्होंने कहा–'कल मेरी शादी होने वाली है।' दूसरे दिन उन्हें सुबह छः बजे फांसी हो गयी।

काकोरी कांड के ही एक और क्रांतिकारी राजेन्द्रनाथ लाहिडी को गोंडा जेल में 17 दिसंबर, 1927 को फांसी पर चढ़ा दिया गया। उन्होंने 14 दिसंबर, 1927 को अपने एक पत्र में एक मित्र को लिखा–'मौत क्या है? जीवन की दूसरी दिशा के सिवा कुछ भी नहीं। जीवन क्या है? यह मौत की पहली दिशा का नाम है। फिर डरने की क्या बात है? मेरा सबको अन्तिम नमस्कार !'

चन्द्रशेखर 'आजाद' कवि तो नहीं थे, लेकिन यदाकदा अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए तुकबन्दी का सहारा ले लिया करते थे। उनका सबसे प्रिय गीत था–

दुश्मन की गोलियों का, हम सामना करेंगे।
आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे।

'आजाद' की जीवन भर यही इच्छा बनी रही कि वे कभी भी पुलिस के हाथों न पड़ें और उससे दो दो हाथ करते हुए युद्ध के मैदान में ही खेत रहे। वे प्रायः कहा करते थे–'हम इस सरकार को स्वीकार नहीं करते। इसलिए सरकारी अदालत के सामने न्याय के नाटक में कठपुतली भी नहीं बनेंगे। हम स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले सैनिक हैं और इसलिए समर में ही खेत रहेंगे।' एक बार सरदार भगतसिंह ने मजाक के लहजे में उनसे कहा–'पंडितजी, आपको फांसी देने के लिए दो रस्सों की आवश्यकता पड़ेगी। एक गले के लिए और दूसरा, आपके भारीभरकम पेट के लिए।' इस पर आजाद ने तत्काल उसी लहजे में उत्तर दिया–'देख, फांसी खाने का शौक मुझे नहीं है। वह तुझे मुबारक हो। जब तक यह बमतुल बुखार (आजाद अपने पिस्तौल को इसी नाम से पुकारते थे) मेरे पास है, किसने मां का दूध पिया है, जो मुझे जीवित पकड़ ले जाए ?

ऐसा ही हुआ भी। आजाद ने स्वयं अपनी इस इच्छा को पूरा किया। 27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में जब पुलिस ने उन्हें अचानक घेर लिया तो उन्होंने डटकर पुलिस का मुकाबला किया और जब उनकी पिस्तौल में केवल एक गोली शेष रह गयी तो उसे स्वयं अपने शरीर पर चलाकर शहीद हो गए ।

काकोरी कांड में जिन क्रांतिकारियों को फांसी हुई, उन्हीं में एक थे रोशन सिंह। 19 दिसंबर, 1927 को उन्हें इलाहाबाद में फांसी दी गई थी। एक मित्र को लिखे अपने आखिरी पत्र में उन्होंने लिखा–'आप मेरे लिए कोई गम न करना । मेरी मौत, तो खुशी वाली मौत है। शास्त्रों में लिखा है कि युद्ध में मरने वालों को ऋषियों जैसा सम्मान मिलता है।

'जिन्दगी जिन्दादिली को जान ए रोशन।
वरना कितने मरते और पैदा हो जाते हैं।'

शहीदेआजम भगतसिंह से उनकी फांसी के 20 दिन पूर्व 3 मार्च, 1931 को उनके परिवार के सदस्य अंतिम बार मिले। उस समय सरदार भगतसिंह ने उन सबसे हंस हंस कर बातें कीं। परिवार के सदस्यों की आंखों में जब कभी आंसू आ जाते तो वे उन्हें प्रेम से समझाते और हिम्मत दिलाते । मस्ती भरी मुस्कराहट उनके चेहरे पर हमेशा बनी रहती। अपनी मां से उन्होंने उसी मुस्कराहट के साथ कहा–'लाश लेने आप मत आना। कुलबीर (छोटा भाई) को भेज देना। कहीं आप रो पड़ीं तो लोग कहेंगें कि भगतसिंह की मां रो रही है।' इतना कहकर वे जोरों से हंस पड़े।

इस मुलाकात के बाद सरदार भगतसिंह ने अपने छोटे भाई कुलबीर को पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने उसे धीरज और हिम्मत रखने के लिए कहा। फिर लिखा–

'उसे फ्रिक है हरदम नया तर्जे जफा क्या है।
हमें यह शौक देखें सितम की इन्तहा क्या है।
कोई दम का मेहमां हूं ए अहले महफिल,
चरागे सहर हूं, बुझा चाहता हूं।
अच्छा रूखसत! खुश रहो अहले वतन हम तो
सफर करते हैं ।'

सरदार भगतसिंह की अंतिम इच्छा अपने चाचा और प्रसिद्ध क्रांतिकारी देशभक्त सरदार अजीतसिंह से मिलने की थी, जिनसे उन्होंने देशभक्ति का पहला पाठ पढ़ा था। सरदार अजीतसिंह 1909 में ही देश से निष्कासित कर दिये गए थे और उसके बाद उनके बारे में कोई जानकारी नहीं मिल रही

थी कि वे कहां हैं। बाद में पता चला कि वे ब्राजिल में हैं, किन्तु ऐसी स्थिति में उनसे मिल पाने का प्रश्न ही नहीं था। सरदार भगतसिंह की इच्छा थी कि अंग्रेजी सरकार उन्हें सामान्य कैदी के स्थान पर युद्धबन्दी माने और उस रूप में उन्हें फांसी के स्थान पर गोली से उड़ाया जाए। इस संबंध में उन्होंने पंजाब के गवर्नर को पत्र भी लिखा, किन्तु वह स्वीकार नहीं किया गया।

अंतिम दिनों में अपने एक पत्र में सरदार भगतसिंह ने लिखा—'मेरे हंसते हंसते फांसी पर चढ़ जाने से भारतीय माताएं अपने बच्चों को भगतसिंह बनने की प्रेरणा दिया करेंगी। देश पर बलिदान होने वालों की संख्या इतनी बढ़ जाएगी कि शायद क्रांति की इस बाढ़ को रोकना साम्राज्यवादियों के लिए असंभव हो जाए और यह उनकी शैतानी तोपों के वश की बात न रहे।'

23 मार्च, 1931 की संध्या को लगभग सात बजे का समय था। सरदार भगतसिंह को आज ही फांसी होने वाली थी ओर वे बड़ी तन्मयता से लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे। इसी बीच जेल अधिकारियों ने वहां आकर कोठरी का दरवाजा खोला और उन्हें फांसी के तख्ते की ओर चलने की सूचना दी। सरदार भगतसिंह ने अपनी तन्मयता और मस्ती को कायम रखते हुए कहा—'ठहरो, अभी एक क्रांतिकारी दूसरे क्रांतिकारी से मिल रहा है।' अधिकारी किंकर्तन्यविमूढ़ता की स्थिति में खड़े रहे। इसके थोड़ी देर बाद सरदार ने पुस्तक एक ओर रख दी और मुस्कराते हुए खड़े होकर कहा—'चलो!'

23 मार्च, 1931 को भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव लाहौर सैंट्रल जेल में फांसी के फन्दे की तरफ बढ़ते हुए यह गीत गा रहे थे।

'दिल से न निकलेगी, मरकर भी वतन की उल्फत
मेरी मिट्टी से भी खुशबू ए वतन आएगी।'

सरदार भगतसिंह और उनके साथी (राजगुरु और सुखदेव) जब फांसी के तख्ते पर मौत का आलिंगन करने के लिए मुस्कराते हुए तैयार खड़े थे, तब वहां नियमानुसार एक अंग्रेज मजिस्ट्रेट भी था। उसे संबोधित करते हुए भगतसिंह ने कहा—'आप सौभाग्यशाली हैं, जो आज आप भारत के क्रांतिकारियों को अपनें सर्वोच्च आदर्श के लिए मृत्यु का आलिंगन करते देखेंगे।' इसके बाद सरदार भगतसिंह ने अपने अन्य दो साथियों के साथ नारे लगाये— 'इंकबाल—जिन्दाबाद, साम्राज्यवाद—मुर्दाबाद'—और वे फांसी के फन्दे पर झूल गए।

भारतवर्ष पर जिन, अंग्रेज अधिकारियों ने विशेष अत्याचार किए थे, उन्हीं में सर कर्जन वायली भी एक थे। अमर क्रांतिकारी मदनलाल धींगरा ने उन्हें इसकी सजा देने का निर्णय लिया। प्रथम जुलाई 1909 को लंदन के जहांगीर हॉल में जब एक समारोह हो रहा था तो धींगरा निश्चित भाव से वहां पहुंचे और गोली मारकर वायली की हत्या कर दी। उन्हें गिरफ्तार किया गया और फिर मुकदमे का नाटक चला। धींगरा मुस्कराते हुए मुकदमे का तमाशा देखते रहे। उन्हें मृत्युदंड की सजा सुनाई गई। 17 अगस्त, 1909 को फांसी से पूर्व उनसे अंतिम इच्छा के लिए जब पूछा गया तो उन्होंने कड़कते हुए उत्तर दिया—'मेरी अंतिम इच्छा यही है कि मैं फिर इसी भारत भूमि पर जन्म लूं और इसके लिए अपनी कुर्बानी दे दूं।'

बंगाल के एक क्रांतिकारी शहीद चित्रप्रिय चौधरी ने भी अपनी फांसी से कुछ दिन पूर्व इसी भावना को अपने एक पत्र में इन शब्दों में व्यक्त किया था—'बेमकसद दिन गुजारने से तो अच्छा है, जल्दी मर जाना। इस तरह मैं एक नया जन्म लूंगा और बहुत जल्दी ही अधिक ताकतवर होकर अंग्रेजों का खात्मा करने में समर्थ हो सकूंगा।'

अमर शहीद प्रीतिलता ने अपने अंतिम वक्तव्य में महिलाओं का आह्वान करते हुए कहा था—'यदि हमारे भाई मातृभूमि की स्वाधीनता के संघर्ष में शामिल हो सकते हैं तो हमारी बहिनें ऐसा क्यों नहीं कर सकतीं ? मुझे आशा है कि इस संघर्ष में महिलाएं भी पीछे नहीं रहेंगी।'

एक और क्रांतिकारी थे—हरिकिशन। उन्होंने पंजाब के गर्वनर पर गोलियां दागी थीं। गवर्नर तो बच गया, मगर हरिकिशन पकड़े गये। उन्हें 9 जून, 1931 को लाहौर में फांसी पर चढ़ा दिया गया। फांसी से पहले उन्होंने अपनी अन्तिम इच्छा इन शब्दों में व्यक्त की—'मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि मैं इस पवित्र धरती पर उस समय तक जन्म लेता रहूं, जब तक यह स्वतंत्र न हो।'

विश्व हिंदी दर्शन

प्रवासन की भारतीय संस्कृति और भारतीय महाकाव्य

–नरेन्द्रनाथ त्रिपाठी*

संपूर्ण विश्व में भारतवंशियों के प्रवासन के आंकड़ों का अवलोकन करने और यूरोपीय देशों के प्रवासियों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने पर एक विरोधाभाषी प्रश्न खड़ा होता है कि क्या कारण है कि यूरोपीय प्रवासी विभिन्न देशों में उस रूप में नहीं बस पाए जिस रूप में भारतवंशी स्थितियों के प्रतिकूल होने के बावजूद भी वहां के समाजों में रच-बस गए। चाहे प्राचीन वृहदतर भारतीय इतिहास का युग हो अथवा आधुनिक युग का आरम्भिक काल हम पाते हैं कि भारतीय प्रवासन से किंचित घबराए या डरे नहीं बल्कि इसका मुकाबला करें। भारत के संदर्भ में जब हम विदेशियों को देखते है तो हमें सहज यह पता लग जाता है कि वे निहित उद्देश्य से आए थे और उनके पूर्ण होने के पश्चात् वे यहां से चलते बने या उन्हें भगा दिया गया। परंतु भारतवंशियों के साथ ऐसा नहीं हुआ। वे जहां कहीं भी गए, वहां के समाज के साथ तादात्मय स्थापित किया, वहां के मूलनिवासियों के साथ संपर्क किया, उन्हें समझा और स्वयं को उनके लायक बनने के लिए ढ़ाला और कालांतर में उनके समाज के अभिन्न अंग बन गए। वे भारतवंशी बने रहे किंतु उस देश के साथ ऐसा कुछ भी नहीं किया जैसा कि यूरोपीय देश के लोगों ने अपने प्रवासी देश के साथ किया था। बल्कि भारतवंशी वहां के बनकर रहे। इतिहास से लेकर वर्तमान तक का उदाहरण विद्यमान है उन्होंनें प्रवासी देश को अपना देश माना, उसे अंगीकार किया, अपने श्रम से सींचा तथा अपने वैभव एवं प्रतिष्ठा से उसे सम्मानित किया। **भारतीय संस्कृति की शक्ति को भारत देश के बाहर रह रहे आप्रवासी भारतवंशियों की जीवन शैली से अनुभव किया जा सकता है।**

आज भारतीय प्रवासी समूह विश्व का सबसे बड़ा प्रवासी समूह है जो तकरीबन दुनिया के सभी महाद्वीपों में फैला हुआ है। कई एक देशों में तो भारतवंशी वहां के सबसे बड़े जातीय समूह के रूप में पाए जाते हैं जैसे कि फीजी, मारीशस, सूरीनाम, ट्रीनीडाड और टुब्सेगो, गयाना तथा नेपाल। इन देशों के लिए अधिकांश उत्प्रवास उपनिवेश काल के दौरान हुए। बीसवीं सदी में स्वत्रंताप्राप्ति के पश्चात् जो उत्प्रवास हुए वे औद्योगिक और विकसित देशों की तरफ हुए। 19वीं और 20वीं सदी में शर्तबंद मजदूरों, ब्रिटिश, डच तथा फ्रांसिसी उपनिवेश के कर्मचारी तथा कामगार के रूप में एशिया, अफ्रीका एवं लैटिन अमेरिका के देशों में भारी संख्या में भारतीयों का उत्प्रवास हुआ। उपनिवेश काल के दौरान हुए उत्प्रवास को मुख्यत: तीन रूपों में बांटा जा सकता है। पहला शर्तबंदी के तहत उत्प्रवास दूसरा कांगनी जो मजदूरों का उत्प्रवासन था तथा तीसरा मुक्त उत्प्रवासन। शर्तबंदी के अंतर्गत किए गए उत्प्रवासन ब्रिटिश, गयाना, फीजी, जमैका, ट्रिनीडाड और टुबैगों और गुउलूप तथा मारटिनी के फ्रांसिसी उपनिवेशों तथा सुरीनाम के डच उपनिवेशों में हुआ। कांगनी उत्प्रवासन मुख्य रूप से सीलोन, मलाया, बर्मा आदि देशों में हुआ। तीसरे तरह का जो उत्प्रवासन हुआ वह कामगारों या उत्प्रवासियों द्वारा स्वेच्छा से किया गया उत्प्रवासन था जो दक्षिण और पूर्वी अफ्रीकी देशों में हुआ था। बीसवीं सदी के आरंभ में जो उत्प्रवासन हुए वे व्यवसायिकों द्वारा औद्योगिक तथा विकसित देशों की ओर किया गया उत्प्रवासन था जिसे ग्रेन ड्रेन कहा जाता है। इस प्रकार 18वीं-19वीं सदी में अंग्रेज, डच और फ्रेंच सत्ताधारियों ने भारतीय मजदूरों को अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए विश्व के अनेकानेक देशों में कच्चे माल की तरह भेजा।

*भारतीय राजदूतावास पारामारिबो

भारतीय लोगों द्वारा किया गया यह उत्प्रवासन चाहे जिस भी रूप में हुआ, यह कोई साधारण काम नहीं था परंतु वे इस असाधारण काम को बड़ी सहजता से कर लिए। अगर आपको विश्व का भ्रमण करने का अवसर मिले और आप विभिन्न प्रवासी भारतीय समुदायों से मिलें और उनकी प्रवास संबंधी बातें सुनें तो आपके मस्तिष्क में सबसे पहले जो एक मनोवैज्ञानिक बात उभरेगी, उसका निष्कर्ष यही होगा कि अंततः भारत की सांस्कृतिक परंपरा ही इस परिस्थिति में उनका सहारा बनी थीं । हालांकि इन उत्प्रवासियों की देखभाल और रक्षा एवं कुशलता का पूरा दायित्व तत्कालीन उपनिवेशीय सरकारों का था किन्तु इन लोगों द्वारा कहे गए दास्तान और इतिहास के पन्नों में तत्कालीन बुद्धिजीवियों द्वारा ब्रिटिश संसद की मूक दिवारों से पूछे गए प्रश्न जो ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में आज भी उपलब्ध हैं, प्रवासियों के अकथनीय कष्ट और उनकी त्रासद स्थिति का अब भी खुलासा करते हैं । उनकी पीड़ा और नारकीय जीवन की यातनाओं की चिठ्ठी महासुमद्रों को लांध कर उनके मातृदेश के चरण छुने में हमेशा नाकामयाब रही । समय के साथ सिवाय समझौता करने के और कुछ नहीं बचा था किन्तु इन भारतवंशियों को दुख की इस घड़ी में जो ढ़ाढ़स मिला था वह भारतीय आरण्यक संस्कृति के आख्यानों से मिला हुआ ढ़ाढ़स था। इन भारतवंशियों ने अनेकानेक कष्ट झेलते हुए अपने खून-पसीने की कमाई से जमीनें खरीदीं-मकान बनाए व्यापारी बनें। लेकिन अपने मन और आत्मा को धर्म एवं संस्कृति के रूप में भारत से लाई पूंजी के जरिये रौशन रखा। मन के मंदिर में पूजा-अर्चना का आधार अपनी बोली-बानी को ही बनाया और इस प्रकार अपने धर्म एवं संस्कृति को सुरक्षित रखा।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन संस्कृतियों में से एक है और तुलनात्मक रूप से अध्ययन करने पर पता चलता है कि वर्तमान में यही एक मात्र ऐसी संस्कृति है जो आज भी अपने अस्तित्व को ज्यों के त्यों बनाए हुए है। विश्व के अनेक देशों में प्रवासी भारतीयों ने अपनी संस्कृति और धर्म की ज्योति से यह सिद्ध कर दिया है कि भारतीय संस्कृति में विश्व के धर्म, सभ्यता और संस्कृति से समायोजन करने की अद्भुत गुणवत्ता है। प्राचीनता, सामन्जस्यता समरसता, निरंतरता, आदि इसकी विशेषताएं तो है ही एक अन्य विशेषता जो प्रवासी भारतीयों के माध्यम से संस्थापित हुई वह अपने आपमें कम रोचक गौरवपूर्ण तथा अनुकरणीय नहीं है। इसे हम भारत की प्रवासी संस्कृति कह सकते हैं।

भारतीयों के प्रवासन संस्कृति के विकास की कहानी आरण्यक संस्कृति से मानी जा सकती है। आर्य सभ्यता के अलावा सिंधु घाटी की भारतीय सभ्यता में भी इसको जीवन का अभिन्न अवसर माना गया था। पुरातत्वविदों का मानना है कि सिंघु सभ्यता के दौरान भारत का मिश्र, मेसोपौटामिया, बैबीलोन तथा बाद में रोम आदि के साथ व्यापारिक संबंध थे। बाद में आर्यों के आगमन के पश्चात् तो इस परंपरा का अद्भुत विकास हुआ और यह पहले से अधिक व्यापक तथा दायित्वपूर्ण हो गया आर्यों ने विदेशीय संबंधों और प्रवास के लिए अलग मानदण्ड स्थापित किए। परवर्ती काल में समुन्द्रपार की प्रवासिवा यात्राओं पर रोक भी लगा था जैसा कि मनुस्मृति आदि में पाया जाता है। लेकिन महाकाव्य युग के आते-आते काफी कुछ बदल गया। आरण्यक जीवन, जीवन का आवश्यक चरण बन गया और प्रवास चाहे जितना भी कष्टप्रद क्यों न हो सम्मानजनक लगने लगा। अब उत्प्रवासन वाणिज्यिक हितों तक ही सीमित नहीं था। पौराणिक तथा महाभारत कालीन युग में तो यह प्रवृति ठोस रूप ले चुकी थी।

भारत की प्रवासन की संस्कृति के बारे में भारतीय धार्मिक एवं लौकिक ग्रंथों जो विशेष रूप से संस्कृत भाषा में रचित ग्रंथ हैं, में अनेकों उदाहरण प्राप्त होते है। वेदों के परवर्ती अंश आरण्यक के नाम से ही जाने जाते हैं। वृहदारणक उपनिषद का नाम भला किसे नहीं पता। यही नहीं भारतीय संस्कृति की आश्रम व्यवस्था और पुरूषार्थ अवधारणा से यही सिद्ध होता है कि प्राकृतिक जीवन से भारतीयों का सभ्यता के आदि काल से ही गहरा लगाव रहा है। वन जीवन के बारे में तकरीबन सभी लौकिक संस्कृत भाषा के ग्रंथों में वर्णन मिलता है। भावभूति, कालिदास ने वैभवपूर्ण नगरीय जीवन का व्यापक वर्णन किया है किंतु वे भी आरण्यक जीवन की विशेषताओं को अपने पाठकों के सम्मुख लाने के लिए अनेक प्रसंगों का सहारा लेते हैं और सफल होते हैं। विष्णु शर्मा के पंचतंत्र, हितोपदेश आदि ग्रंथों के माध्यम से आरण्यक संस्कृति के प्रचार प्रसार में अधिक योगदान रहा

है । इन ग्रंथों में प्रवास काल के दौरान जरूरी अनेक उपयोगी विचारों का संग्रह मिलता है।

लेकिन इन सबमें अधिक लोकप्रिय ग्रंथ तुलसीदास कृत रामचरित मानस है। रामचरित मानस प्रवासी भारतवासियों के लिए वेद स्वरूप है । वे मानस की प्रत्येक चौपाई, दोहा और कथानक से प्रेरणा लेते हैं। विशेष रूप से वनवास काल के कथानक तो उन्हें संजीवनी बूटी की तरह जीवनदाई हैं। उनके लिए प्रतिकूल परिस्थियों में भी इस ग्रंथ के माध्यम से जीवन योग्य बन जाता है। जैसा कि गोस्वामी जी ने लिखा है: खग मृगपरिजन नगरू बनु बलकल विमल दुकूल। नाथसाथ सुर सदन सम परनसाल सुख मूल।

हिंदमहासागर की गोद में बसे मारीशस देश को ही लें। इसे लघु भारत कहा जाता है। वहां के लोग आज भी रामायण और महाभारत के कथानकों की चर्चा करते हैं और उन्हें अपने लोकजीवन में उतारने की प्रेरणा लेते हैं। सुदूर कैरेबियाई क्षेत्रों में बसे भारतवंशियों को देखें तो पता चलता है कि उनके दुर्दिन में ये ही महाग्रथ उनके प्रेरण स्रोत थे। लंदन और अमेरिका देशों में बसें भारतीय आज भी रामायण और महाभारत के आख्यानों को याद करके प्रवासन के कष्ट को दूर करने की कोशिश करते हैं। ऐसा लगता है सभी प्रवासियों के लिए ये दोनों ग्रंथ अन्य चीजों से अधिक प्रेरणादायक सिद्ध हुए थे।

आखिर हो भी क्यों नहीं सच पूछे तो रामायण हो या महाभारत दोनों ही प्रवास के दिनों के ही ग्रंथ हैं। राम का संपूर्ण जीवन एक तरफ जहां भारतीयों को आदर्श पुरूषोत्तम बनने की प्रेरणा देता रहा है वहीं प्रवासियों को उनके प्रवासन के कष्ट को कम करने की प्रेरणा भी देता रहा है। प्रवास के दिनों की विरह वेदना को तुलसी के राम में जिस प्रकार से सहने की हिम्मत प्रवासी भारतीयों को दी वह स्तुत्य तो है ही वरेण्य भी है। रामकथा का संपूर्ण अरण्य काण्ड इसका साक्षात प्रमाण है। भारतवंशी अपनी सनातन संस्कृति का प्रमाण देते हुए अक्सर कह देते हैं सीय राम मय सब जग जानी करहू प्रणाम जोरि जूग पानी। वसुधैव कुटुम्बकम् की इस धारणा के चलते भारतीयों ने किसी के साथ कोई भेदभाव न बरतते हुए विश्व सामाजिक संस्कृति के निर्माण में अप्रतिम योगदान दिया। अरण्य कांड के दौरान राम द्वारा अपनाए गए सभी उपक्रम प्रवासन के लिए आज भी अमूल्य सहायक विचार हैं। वास्तविकता तो यह है कि भारतीय संस्कृति अपने मूल में ही आरण्यक रही है। आर्य संस्कृति के स्वर्ण पृष्ठों पर दृष्टिपात करने पर यह ज्ञात होता है कि भारतीय आरण्यक रहे हैं और राजमहलों की सुख संस्कृति के प्रति उनका कोई विशेष आकर्षण नहीं रहा है।

यदि रामायण की कहानियां प्रवासी भारतीयों के लिए चौदह वर्ष के वनवास काल की कहानियां हैं तो महाभारत की कहानियों में उससे भी बड़े कालखंड के प्रवासन के बारे में वर्ण मिलता है। महाभारत में तो अज्ञातवास जैसी प्रवासन की परिस्थतियों के बारे में भी कथानक मिलती है। विचार करने पर हम पाते हैं कि निस्संदेह ये ग्रंथ प्रवासी भारतीयों के लिए इसीलिए हितकर लगे थे और वे इन्हें अपने साथ ले गए । आज भी इन देशों में इन ग्रंथों के प्रभाव को देखा जा सकता है। जग जाहिर है कि ये दोनों महाकाव्य मानव संस्कृति के महान संस्कृति ग्रंथ हैं। इनमें मानव जीवन के सभी परिस्थितियों के बारे में वर्णन किया गया है। भारतीय चिंतनपरंपरा का सम्यक निर्वाह इन ग्रंथों में तो है ही इनमें मनोवैज्ञानिक तथा समाजशास्त्रिय विषयों का भी संदर्भ है। लेकिन हमारे प्रवासियों के उपर सबसे अधिक प्रभाव प्रवासन की स्थिति में संतोष प्रदान करने वाले ज्ञानपूर्ण आख्यानों का ही पड़ा है।

राम कथा तथा महाभारत के आख्यानों से जैसा कि ज्ञात होता है बनवास के लिए अयोध्या और हस्तिनापुर की राजकीय परिस्थियां अधिक जिम्मेदार थीं। चाहे दशरथपुत्र राम हों या पाण्डूपुत्र युधिष्ठिर दोनों ने तत्कालीन मनमाफिक परिस्थितियों के अभाव में ही बनवास स्वीकार किया था । यदि सब कुछ उनके अनुकूल रहा होता तो संभव था कि वे वनवास को स्वीकार नहीं किए होते । यदि भारत में विद्यमान तत्कालीन परिस्थितियों पर विचार करें तो हम यह सहज ही समझ जाते हैं कि जब उपनिवेश काल के दौरान भारतीयों का यह पोत परिवहन शुरु हुआ तो भारत में आम लोगों की स्थिति बड़ी दयनीय थी। वे भूखों मर रहे थे। विदेशी शासन की मार से वे मृतप्राय हो चुके थे। अनेक तरह की सामाजिक राजनैतिक स्थितियां उनके लिए असहनीय हो चुकी थीं। इसलिए उन्होंने सात समुंदर पार जाने का इतना बड़ा निर्णय

स्वीकार किया था। अंग्रेजों ने जब उन्हें यह मार्ग सुझाया तो राम की तरह उन्होंने उसे **पिता दीन्ही मोहि कानन राजू** कहकर स्वीकार कर लिया। तभी तो जब कैरिवियन देशों में शर्तबंदी की अवधि समाप्त होने के बावजूद भी उन्होंने यहां से भारत वापस जाना पसंद नहीं किया। वे राम से भी अधिक कठोर निर्णय लिए। अपनी भावी पीढ़ी के लिए उन्होंने यह स्वीकार किया कि जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी। लेकिन अपने संदर्भ में वे बेचारे मातृ प्रेम को भूल गए। शायद इसके मूल में उनके द्वारा विदेश में ही नहीं भारत में उपनिवेश काल के दौरान भोगी गई नारकीय स्थितियों का दु:स्वप्न ही एक कारण रहा हो। क्योंकि उस काल में उपनिवेशीय भारत की दुर्दशा निम्न और मध्य वर्ग के लोगों के लिए असहनीय होने लगी थी। तभी तो वे आरकाटियों के बहकावे में आकर सात समुंदर जाने जैसे निर्णय ले लिए थे। फ्रांस के एक इतिहासकार चाटन्द्रु तेते तथा वेस्टेन्डीज विश्वविद्यालय के समाजशास्त्री लोरेंस से शर्तबंद मजदूरों के जीवन की दर्दनाक सच्चाइयों के बारे में यह खोज किया है कि शायद घर पर परिस्थितियों के अनुकूल न होने के कारण ही 10 प्रतिशत भारतीयों ने विदेश जाना स्वीकार किया था जाहिर हो 1900 में भारत की कुल आबादी 300 मीलियन मानी जाती है।

कारण चाहे जो भी हों, रामायण और महाभारत के पात्रों के आर्दशों को उन्होंने पूरी तरह निभाए। जब कभी मात्रभूमि की याद आती तो उसे वे वैसे ही सह लेते जैसे इन महाकाव्यों के पात्र बनबास काल के दौरान कर लिया करते थे। तभी तो भारतवंशी जब चले तो साथ में रामायण और महाभारत की पौथियां थीं और था हनुमान चालीसा। समय के प्रवाह के साथ इस देश में रहने वाले भारतवंशियों ने अपना भविष्य प्रवासी की धरती से जोड़ लिया।

रामायण महाभारत आदि ग्रंथों से ज्ञात होता है, बनवास केवल दुख का काल ही नहीं था, हमारे पूर्वज इस समय का बड़े महत्वपूर्ण ढंग से लाभ उठाए। यदि राम का बनवास नहीं हुआ होता तो रामायण की ढेरों लीलाएं नहीं हो पातीं। ऐसा ही महाभारत के प्रसंग में भी सच है। और भारतीय प्रवासियों ने इस परंपरा का बहुत उचित ढंग से उपयोग किया। उन्होंने प्रवास काल को एक अवसर की तरह माना और सारे गमों को भुलाकर शीघ्र नवनिर्माण में लग गए। आज विश्व भर में फैले भारतवंशियों की अकूत संपत्ति पर उन्हें ही नहीं भारत के लोगों को भी गर्व होता है। जिन भी देशों में ये अभिनव प्रयोग कर सकते थे, किए। इन्होंने अपने सपनों के अनुरूप समाज की संरचना की। जिन जाति, धर्म के विद्रुपपूर्ण परिस्थितियों को वे झेल चुके थे। उन्हें उन्होंने समाप्त करके एक नए समाज की स्थापना की। जिसमें ये भारतीय सामाजिक दोष आउ' हाथ न आवे। आज आप देख सकते है कि कैरेवियन में स्थिति अनेक देशों में जाति धर्म सामाजिक या निजी जीवन में कहीं भी बाधक नहीं है। जातिवाद, धर्मवाद के मोह में फंसा भारत आज भारतवंशी प्रवासियों द्वारा रचे इस समाज से बहुत कुछ सीख सकता है। सामाजिक सहिष्णुता के इतने उदात्त पाठ उन्होंने रामायण और महाभारत के आख्यानों से ही सीखे थे। यदि हिंडिम्बापुत्र भीम हस्थिनापुर के राजवंश में अपना नाम दर्ज करा सकता था तो अमेरिकी महादीप के इन विशाल जंगलों में रहने वाले आदिवासियों के साथ वे संबंध क्यों नहीं बना सकते थे। उन्होंने वैसा करके दिखाया और आज एक नए समरस समाज के जनक के रूप में वे यहां आदरणीय हैं।

प्रवासी भारतीयों ने रामायण और महाभारत के अनेक प्रसंगों और कथानकों के आधार पर न केवल वैवाहिक संबंध स्थापित किए बल्कि उन्होंने तमाम जातियों का आर्ययीकरण भी किया। सूरीनाम इसका ज्वलंत उदाहरण है। भारतीय संस्कृति की यहां के सामाजिक जीवन में महत्ता के आधार पर इसे आंधमहासागर के मध्य एक लघु भारत की संज्ञा दी जा सकती है। हालैंड के सत्ताधारी वर्ग ने उत्तरप्रदेश और बिहार से आए इन भारतवंशियों को गुलामी रूपी धान के पौधों की भांति इन्हे रोप दिया था। लेकिन अपनी मेहनत और लगन से इन्होंने उनके अनाज के भंडारों को इतना भर दिया कि वे कायल हो गए। यही बात हिंदमहासागर के मध्य लघुभारत मारीशस और प्रशांतमहासागर के मध्य स्थित लघुभारत फीजी के संदर्भ में सच है।

इन सभी देशों में पहनावे की संस्कृति पूरी तरह यूरोपीय है। लेकिन महिलाओं के प्रति इनकी सम्मान की भावना देख कर स्वयं के भारतीय होने पर संदेह होने लगता है। आज भारत विकसित देशों की अपसंस्कृति को सीख कर

शेष पृष्ठ 34 पर

2787 HA/2009—5A

विज्ञान

तारे : उद्भव, पालन, प्रलय कहानी

–डॉ. विजय कुमार उपाध्याय*

खगोलविंद के मतानुसार किसी भी तारे के जीवन की शुरुआत संभवत: किसी अन्धेरे गैसीय नाभस (डार्क गैसियस नेबुला) में होती है । कोई भी गैसीय नाभस किसी खौलते हुए द्रव के समान संक्षुब्ध (टर्बुलेंट) रहता है जिसमें संवाहन धारायें उठती-गिरती रहती हैं । ऐसे नाभस में गैस तथा धूल कणों के छोटे-छोटे गोले अथवा पॉकेट बन जाते हैं । इस प्रकार नाभस में जब कोई गोला बन जाता है तो इसमें मौजूद कणों के आपसी गुरूत्वाकर्षण बल के कारण यह गोला संकुचित तथा घना होता जाता है । जैसे-जैसे यह गोला अधिक से अधिक संकुचित तथा घना होता जाता है वैसे-वैसे इसका भीतरी दाब तथा तापमान लगातार बढ़ता जाता है । अन्त में दाब तथा तापमान इतना अधिक ऊँचा हो जाता है कि इसके कारण हाइड्रोजन गैस हीलियम में परिवर्तित होने लगती है, जिसके फलस्वरूप ऊर्जा का निर्माण होने लगता है । इस प्रकार यह गोला एक तारा बन जाता है ।

किसी भी अंधेरे नाभस में किसी गोले या पॉकेट का निर्माण एक तारे के सम्पूर्ण जीवन-इतिहास को ध्यान में रखते हुए बहुत ही अल्प अवधि की घटना है । जब तारे का निर्माण हो जाता है तो उसके भीतर उत्पन्न होने वाली ताप-ऊर्जा के कारण उस तारे के आयतन में प्रसार होने लगता है । इस प्रकार जब प्रसार बल तथा तारे के भीतर मौजूद पदार्थ के आपसी गुरूत्वाकर्षण बल के कारण तारे का संकुचन बल साम्यावस्था में आ जाता है तो तारा एक स्थिर अवस्था में पहुँच जाता है । हमारा सूर्य अभी इसी प्रकार की स्थिति में है । किसी भी तारे के लिए ऐसी स्थिति में पहुँचने पर उस तारे के भीतर की नाभिकीय भट्ठी अपनी पूरी क्षमता के साथ काम करने लगती है तथा तारा अपने चारों ओर अन्तरिक्ष में अपनी ऊर्जा के विकिरण को भेज रहा होता है । तारे के क्रोड में मौजूद हाइड्रोजन गैस नाभिकीय ईंधन का काम करती है जिसके जलने से हीलियम रूपी राख पैदा होती है ।

अब प्रश्न उठता है किसी तारे द्वारा इस प्रकार ऊर्जा-उत्पादन की स्थिर अवस्था कब तक बनी रहती है? बहुत अधिक भारी भरकम तारे अपने क्रोड के बहुत ऊँचे तापमान के कारण अपने ईंधन भंडार का उपयोग बहुत शीघ्र कर लेते हैं । अनुमान है कि ऐसे तारों का सम्पूर्ण ईंधन सिर्फ 10 लाख से 20 लाख वर्षों की अवधि में ही समाप्त हो जाता है । हमारे सूर्य जैसे कुछ कम भारी तारे अपने सम्पूर्ण ईंधन भंडार का उपयोग लगभग 10 अरब वर्षों में करते है। अनुमान है कि अपनी उत्पत्ति के समय से अब तक सूर्य लगभग अपने आधे ईंधन भंडार का उपयोग कर चुका हे । सूर्य से भी अधिक हल्के तारे अपने सम्पूर्ण ईंधन भण्डार का उपयोग लगभग 50 से 60 अरब वर्षों की अवधि में कर पाते हैं ।

अब एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है कि किसी तारे में मौजूद सम्पूर्ण हाइड्रोजन ईंधन भंडार समाप्त हो जाने के बाद क्या होता है? वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया हे कि जब किसी तारे का सम्पूर्ण हाइड्रोजन भंडार समाप्त हो जाता है तो उसका पुन: संकुचन होने लगता है । इस संकुचन के कारण तारे के क्रोड का तापमान बढ़ने लगता है । इस अवस्था में क्रोड के बाहर स्थित आवरण में मौजूद हाइड्रोजन भंडार नाभिकीय भट्ठी को एक बार फिर से ईंधन की आपूर्ति करने लगता है । इसके फलस्वरूप तारा अधिक प्रकाशमान हो जाता है । ऐसी परिस्थिति में तारे के भीतर से लगने वाला

*कृष्णा इन्कलेव, राजेन्द्र नगर, पो. जमगढ़िया, भाया जोधाडीह, चास, जिला - बोकारो, झारखण्ड, पिन - 827013

2787 HA/2009—5B

प्रसार बल बाहर से भीतर की ओर लगने वाले संकुचन बल से अधिक हो जाता है। इसकी वजह से तारा फैलने लगता है। तारे के फैलने के कारण इसकी बाहरी सतह धीरे-धीरे ठंढी होने लगती है। इस प्रकार यह तारा लाल रंग का एक विशाल तारा बन जाता है जिसे **लाल दानव (रेड जैंट)** तारा कहा जाता है।

लाल दानव अवस्था के बाद तारे के जीवन में एक ऐसी परिस्थिति आती है जब तारा बार-बार फैलने तथा बार-बार सिकुड़ने लगता है। ऐसे तारे को **पल्सर** कहा जाता है। इस प्रकार बार-बार फैलता तथा बार-बार संकुचित होता तारा अपने जीवन के अगले चरण में **नव तारा (नौवा)** बन जाता है। नवतारा की अवस्था में तारे की बाहरी परत से टूट कर अलग हो जाती है तथा अन्तर्तारकीय अंतरिक्ष में खो जाती है। बाहरी परत के टूट कर निकल जाने के बाद तारे का जो केन्द्रीय भाग बच जाता है, वह आकार में काफी छोटा (लगभग पृथ्वी के आकार के बराबर) तथा काफी चमकीला रहता है। ऐसे तारे को **श्वेत वामन (ह्वाईट ड्वार्फ)** तारा कहा जाता है। श्वेत वामन तारे काफी सघन होते हैं। इनका घनत्व काफी अधिक होता है। वैज्ञानिकों द्वारा अनुमान लगाया गया है कि औसत तौर पर श्वेत वामन तारों का घनत्व हमारे सूर्य से लगभग दो लाख गुना अधिक होता है। उनका पिण्डमान सामान्य तौर पर सूर्य का लगभग आधा तथा उनका व्यास पृथ्वी के व्यास के आधे से चार गुने तक पाया गया है। श्वेत वामन तारों में नाभिकीय ऊर्जा स्रोत बिल्कुल ही नहीं बचा रहता। इस कारणवश इनमें ऊर्जा का उत्पादन नहीं होता। परन्तु पहले की अवशिष्ट ऊर्जा को ये विकिरण द्वारा धीरे-धीरे बाह्य अंतरिक्ष में भेजते रहते हैं तथा शनैः शनैः ठंडे होते रहते हैं और अन्ततः प्रकाशहीन होकर काले पड़ जाते हैं।

नोबेल पुरस्कार से सम्मानित भारतीय वैज्ञानिक (जो बाद में अमरीकी नागरिक बन गये) डॉ. सुब्रह्मण्यम चन्द्रशेखर का मत था कि किसी भी संकुचनशील तारे के परमाणुओं के भीतर एक संपीडन रोधी बल उस तारे के संकुचन को एक सीमा के बाद रोक देगा। इसके फलस्वरूप श्वेत वामन तारे का निर्माण होगा। परन्तु चन्द्रशेखर की धारणा थी कि सभी तारे श्वेत वामन तारे नहीं बन सकते। हमारे सूर्य के सापेक्ष सिर्फ चार गुना तक भारी तारे ही श्वेत वामन तारे बन सकते हैं। इससे अधिक भारी किसी भी तारे में उपर्युक्त प्रकार के संपीडन को उसके इलेक्ट्रनों द्वारा रोकने की सामर्थ्य एक सीमा के बाद समाप्त हो जाएगी। इस प्रकार के तारे संकुचित होते होते इतने अधिक सघन हो जाएंगे तथा उनका गुरूत्वाकर्षण बल इतना अधिक हो जाएगा कि इसकी सतह से किसी भी वस्तु का बाह्य अन्तरिक्ष में पलायन संभव नहीं होगा। यहाँ तक कि प्रकाश किरणें भी इससे बाहर नहीं निकल पायेंगी। इस कारणवश ये बिल्कुल ही नहीं दिखायी पड़ेंगे। ऐसे तसरे कृष्ण विवर (ब्लैक होल) कहे जाते हैं। जिस समय डॉ. सुब्रह्मण्यम चन्द्रशेखर ने कृष्ण विवर संबंधी अपनी परिकल्पना प्रस्तुत की, संसार के अधिकांश खगोलविदों ने उनकी काफी खिल्ली उड़ाई तथा कृष्ण विवर के अस्तित्व को पूर्णतः असंभव तथा हास्यास्पद बताया था। परन्तु आज से लगभग तीन दशक पूर्व किए गए अत्यानुधिक खगोल वैज्ञानिक अध्ययनों से कृष्ण विवर के अस्तित्व की पुष्टि हुई तथा सुग्रह्मण्यम चन्द्रशेखर को भौतिकी के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

तारे के जीवन का अन्तिम चरण सुपर नौवा अवस्था का होता है। इस अवस्था में किसी भी तारे के आन्तरिक भाग में भयंकर शक्तिशाली तथा प्रलयकारी विस्फोट होता है। इस प्रकार का विस्फोट हजारों मेगाटन की क्षमता वाले परमाणु बम के विस्फोट से भी अधिक शक्तिशाली तथा विनाशकारी होता है। इस प्रकार के विस्फोट की वजह से वह तारा असंख्य टुकड़ों में टूट कर अन्तर्तारकीय अन्तरिक्ष में पूरी तरह बिखर जाता है। जब इस प्रकार का विस्फोट होता है उस समय उस तारे की चमक हमारे सूर्य की चमक की तुलना में लाखों गुना अधिक दिखायी पड़ती है। सुपरनौवा की घटना बहुत कम दिखायी पड़ती है। विगत एक हजार वर्षों के दौरान हमारी आकाश गंगा में सुपरनौवा की सिर्फ तीन ही घटनायें देखी गई है। सुपरनौवा की सबसे अधिक सुन्दर घटना का कुछ विवरण सन् 1054 ई. में लिखे गए चीनी तथा जापानी साहित्य में मिलता है। इस सुपरनौवा विस्फोट से दम्पन्न कचरे को आज 'क्रैब नेबला' में मौजूद गैस के विशाल बादल के रूप में देखा जा सकता है। ■

भारतीय वैज्ञानिक व इसरो की उपलब्धियाँ

–डा. दिनेश मणि, डी. फिल.

विज्ञान जगत के लिए 22 अक्तूबर, 2008 का दिन एक ऐतिहासिक दिन के रूप में स्मरण किया जाएगा। इस दिन भारत द्वारा अत्याधुनिक ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पी एस एल वी) से चंद्रयान-1 का प्रक्षेपण किया गया। अब चंद्रमा के लिए अंतिरक्ष यान प्रक्षेपण करने वाले विश्व के गिने चुने छः देशों में भारत सम्मिलित हो गया है। भारतीय अंतिरक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के चेयरमैन डॉ. जी. माधवन नायर ने इस सफल प्रमोचन को भारतीय अंतिरक्ष कार्यक्रम का एक अविस्मरणीय एवं ऐतिहासिक क्षण बताया।

श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतिरक्ष केन्द्र से पी.एस.एल.वी.सी-2 की उड़ान के साथ भारत के प्रथम चंद्र मिशन चंद्रयान-1 का प्रमोचन 22 अक्तूबर, 2008 को सुबह 6 बजकर 22 मिनट तक सम्पन्न हुआ। प्रमोचन के 19 मिनट बाद चंद्रयान-1 ट्रांसफर कक्षा में स्थापित कर दिया गया। 1380 किग्रा. भार 11 तथा नीतभारों से लैस चंद्रयान-1 को मात्र 18.2 मिनट बाद ही 250 किलोमीटर वाली पेरिजी (पृथ्वी से निम्नतम दूरी वाला बिंदु) तथा 23,000 किलोमीटर वाली अपोजी (पृथ्वी से इष्टतम दूरी वाला बिंदू) की ट्रांसफर कक्षा में छोड़ दिया गया।

भारतीय वैज्ञानिक चंद्र अभियान का प्रस्ताव सर्वप्रथम भारतीय विज्ञान अकादमी में 1999 तथा तत्पश्चात् सन् 2000 में भारतीय एस्ट्रोनाटिकल सोसायटी में विचार विमर्श के लिए आया। इन संस्थाओं के वैज्ञानिकों की अनुशंसा के आधार पर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (इसरो) ने एक राष्ट्रीय चंद्र अभियान दल का गठन किया। लगभग 100 विशिष्ट वैज्ञानिकों ने अप्रैल, 2003 में इस अभियान दल के प्रतिवेदन पर गहन विचार करने के पश्चात् निष्कर्ष निकाला कि चंद्र अभियान में पुनर्जागृत अंतर्राष्ट्रीय दिलचस्पी तथा भारतीय वैज्ञानिक तथा अभियांत्रिकी अनुसंधान को बहुप्रतीक्षित बढ़ावा देने की दृष्टि से भी भारत को चंद्र अभियान पर कार्य करना चाहिए।

भारत सरकार ने नवंबर, 2003 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (इसरो) के प्रथम चंद्र अभियान-चन्द्रयान-1 के प्रस्ताव की स्वीकृति प्रदान की। भारतीय वैज्ञानिकों के लगभग आठ वर्षों के अथक परिश्रम के फलस्वरूप 22 अक्तूबर, 2008 को प्रातः 6 बजकर 22 मिनट पर श्री हरिकोटा स्थित सतीश भवन अंतरिक्ष केंद्र से चंद्रयान-1 का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया गया। चंद्रयान-1 चंद्रमा की कक्षा में दो वर्ष की परिक्रमा करने के पश्चात् वापस धरती पर आएगा।

भारतीय चंद्रयान के सफलतापूर्वक चंद्रमा की कक्षा में स्थापित होने का कार्य पूर्ण होने में भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम से प्रारंभ से जुड़े भारतीय वैज्ञानिकों डॉ. विक्रम साराभाई, प्रो. सतीश धवन, डॉ. ब्रह्मप्रकाश, डॉ. बसंत गोवरिकर, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, डॉ. यू. आर. राव, डॉ. के. कस्तूरीरंजन एवं श्री जी. माधवन नायर की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इन वैज्ञानिकों ने न केवल स्वयं इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाया बल्कि अनेक लोगों को इस कार्यक्रम से जुड़ने को प्रेरित किया।

हमारे देश में परमाणु ऊर्जा आयोग की भांति एक अंतरिक्ष आयोग का गठन हुआ। भारत में पृथक रूप से अंतरिक्ष विभाग की स्थापना 1 जून, 1972 को हुई। सितम्बर, 1972 को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) को इसके अंतर्गत लाया गया। प्रो. सतीश धवन को अंतरिक्ष विभाग का अध्यक्ष, अंतरिक्ष विभाग का सचिव और इसरो का अध्यक्ष बनाया गया। भारत का पहला उपग्रह प्रमोचन यान एस.एल.बी.-3 परियोजना की सफलता में डॉ. ब्रह्मप्रकाश की महत्वपूर्ण भूमिका थी। डॉ. ब्रह्मप्रकाश के बाद डॉ. बसंत गोवारिकर तथा डॉ. एस.सी. गुप्ता का इस दिशा में उल्लेखनीय योगदान रहा।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति व सुप्रसिद्ध रक्षा वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने इसरो में लम्बे समय

डी. एस. सी. 35/3, जवाहर लाल नेहरू रोड जार्ज टाउन, इलाहाबाद-2

(1963-1982) तक कार्य किया। फाइबर रिशन्फोर्स्ड प्लास्टिक्स गतिविधियां शुरू करने तथा एयरो-डायनामिक्स व डिजाइन समूह में कुछ समय बिताने के बाद डॉ. कलाम धुम्बा के उपग्रह प्रमोचन यान दल से जुड़े। एस.एल.वी.-3 परियोजना के माध्यम से जुलाई, 1980 में एक वैज्ञानिक उपग्रह रोहिणी का प्रमोचन किया गया। एस.एल.वी-3 के सफल प्रमोचन के बाद इसरो ने ए.एस.ली.वी. को एस.ली.वी. एवं पी.एस.एल.वी. के बीच सेतु का काम करना था। ए.एस.एल.वी. का पहला और दूसरा प्रमोचन असफल रहा और तीसरे प्रयास में सफलता मिली। ए.एस.एल.वी. का अनुभव पी.एस.एल.वी. के लिए काफी महत्वपूर्ण साबित हुआ। पी.एस.एल.वी. के शुरूआती दौर में परियोजना निदेशक जी. माधवन नायर थे।

विभिन्न चरणों के पश्चात् चंद्रथान को चंद्रमा की कक्षा में परिवर्तित करने का कार्य संभव हो गया। इसके बाद चंद्रयान की गति को इतना धीरे किया गया कि उसे चंद्रमा की गुरुत्वाकर्षण की शक्ति प्रभावित कर सके एवं वह चंद्रमा की अंडाकार कक्षा में परिक्रमा कर सके। कक्षाएं परिवर्तित करते हुए अंत में चंद्रयान 12 नवम्बर की शाम चंद्रमा से 100 कि.मी. दूर अपनी अंतिम कक्षा में पहुंच गया तथा 14 नवम्बर को चंद्रयान-1 से अलग होने के पश्चात् भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के तीन रंगों से रंगा चंद्र संघाती अंवेषक (मून इम्पेक्ट प्रोबो) अथवा एम.आई.पी. चाँद की सतह पर उतर गया और इसके साथ ही यह ऐतिहासिक करिशमा करने वाला भारत दुनिया को चौथा देश बन गया। एम.आई.पी. में मौजूद ऊँचाई नापने का यंत्र, कैमरा और मास स्पेक्ट्रोफोटोमीटर चाँद की सतह और आवरण से संबंधित आंकड़े भेजेंगे। इस अभियान के द्वारा पहली बार चंद्रमा के उत्तर तथा दक्षिण ध्रुवीय क्षेत्रों की खनिज पदार्थीय तथा रासायनिक इमेजिंग की जाएगी। चंद्रमा पर विशेषकर ध्रुवों पर पानी या बर्फ का पता लगाया जाएगा। इसका भविष्य के लिए अत्यधिक महत्व है क्यों कि लंबी अवधि के मानव अभियान के समय पानी की आवश्यकता की पूर्ति संभव हो सकेगी। चंद्रमा की सतह का एक त्रिआयामी मानचित्र भी तैयार किया जाएगा।

त्रिआयामी दृश्यों में उच्च विभेदन मानचित्रण द्वारा चंद्रसतह के टोपोग्राफिक अभिलक्षणों का पता करना, सुदूर संवेदन नीतभारों द्वारा विभिन्न खनिजों एवं रासायनिक तत्व प्रजातियों का सम्पूर्ण चंद्र सतह पर पता करना, इसके मुख्य उद्देश्य हैं। विभिन्न प्रकार के नये आंकड़े इसके सामान्य रूप में सौर-तंत्र के उद्भव और विकास के गूढ़ रहस्यों को उजागर करेंगे। इससे चंद्रमा की उत्पत्ति तथा प्रारंभिक विकास का इतिहास जानने को मिलेगा। साथ ही साथ पृथ्वी तथा सौर-मण्डल की उत्पत्ति के विषय में भी पता लगाना संभव होगा।

इसरो के चेयरमैन डॉ. जी. माधवन नायर ने चंद्रयान-1 की सफलता के अवसर पर कहा-"जहाँ तक भारत का प्रश्न है, यह एक ऐतिहासिक क्षण है। हमने अपनी चंद्रयात्रा प्रारम्भ कर दी है तथा यात्रा का प्रथम चरण बिल्कुल सही तरीके से सम्पन्न हुआ है। प्रमोचनयान द्वारा यह अद्भुत निष्पादन है।"

ऐसा माना जा रहा है कि वर्ष 2008 की भांति वर्ष 2009 भी इसरो के लिए कई महत्वाकांक्षी योजनाओं के लिहाज से अहम रहेगा। खगोलीय पिण्डों की जानकारी के लिए इसरो द्वारा तैयार किए जा रहे एस्ट्रोसेट उपग्रह को वर्ष 2009 के मध्य तक प्रक्षेपित करने की योजना है। एस्ट्रोसेट नामक इस वेधशाला को पृथ्वी की ध्रुवीय कक्षा में स्थापित किया जाएगा। यह वेधशाला खगोल भौतिकी के अनुसंधानों में सहायक होगी। इसके साथ ही इसरो की आगामी अन्य महत्वपूर्ण परियोजनाएं हैं- ओशन सेट और आदित्य। ओशनसेट रडार इमेजिंग उपग्रह है। समुद्र की परिस्थितिकी एवं अंय हलचल के अध्ययन के लिए ओशनसेट के प्रक्षेपण की योजना है।

इसरो ने गूगल अर्थ की तर्ज पर मार्च, 2009 में रिमोट सेंसिंग इमेज पोर्टल भवन एवं रिमोट सेसिंग इन्फार्मेशन पोर्टल भू संपदा लांच करने का फैसला किया है।

इसरो के लिए वर्ष 2008 हर दृष्टिकोण से काफी सफल रहा। जहाँ चंद्रयान-1 की सफलता से इसरो ने नई ऊँचाइयों को छुआ वहीं व्यापारिक दृष्टिकोण से भी वर्ष 2008 उसके लिए काफी अच्छा रहा। इसरो ने वर्ष 2008 में विदेशी कंपनियों और संस्थाओं के लिए उपग्रह बना और प्रक्षेपित कर 1000 करोड़ रुपयों से अधिक की राशि अर्जित की। इसरो वर्तमान वर्ष में भी नई उपलब्धियां अर्जित करने हेतु तत्पर है। इस वर्ष इसरो द्वारा चार विदेशी उपग्रह प्रक्षेपित करने की योजना है।

अभी हाल ही में इसरो ने विदेशी कंपनी यूटेलसेट के लिए डब्ल्यू-2 एवं संचार उपग्रह प्रक्षेपित किया है। इस उपग्रह को फ्रेंच गुयाना में कोउरु से एरियन रॉकेट के जरिए छोड़ा गया। इसरो की व्यावसयिक शाखा एंट्रीक्स कॉरपोरेशन के महानिदेशक के.आर.एस. मूर्ति के अनुसार इस साल इसरो द्वारा चार विदेशी उपग्रह प्रक्षेपित किए जाऐंगे। ये चारों देश हैं-सिंगापुर, हालैण्ड, इटली और अल्जीरिया। इस बार यह काम स्वतंत्र रूप से इसरो को ही मिला है। इससे पहले डब्ल्यू-2 एम का प्रक्षेपण आई. ए. डी. एस.-एस्ट्रीयम के सहयोग से किया गया था। श्री मूर्ति के अनुसार ये चारों नैनो और छोटे उपग्रह हैं। इसरो द्वारा उपग्रह प्रक्षेपित करने की कीमत अंतर्राष्ट्रीय बाजार से काफी कम है।

चंद्रयान-1 की सफलता ने देश की युवा पीढ़ी को उत्साहित कर दिया है। उन्हें अब अंतरिक्ष विज्ञान में बेहतर भविष्य नजर आने लगा है। पिछले दो महीनों में बड़ी संख्या में विज्ञान के छात्रों ने इसरो से जुड़े वैज्ञनिकों से संपर्क साधकर अपनी इच्छा प्रकट की है। कई स्कूल में स्पेस संबंधी कार्यक्रम भी आयोजित किए जा चुके हैं। केरल सरकार ने बाकायदा स्पेशल प्रोजेक्ट शुरू करने की घोषणा की है। वैज्ञानिकों के अनुसार चंद्रयान-1 से प्राप्त सैंपल डाटा प्रोफेसरों व छात्रों को भी उपलब्ध कराये गए। इसकी समीक्षा कुछ समय बाद की जाएगी। स्पेस एप्लीकेशन सेंटर बंगलोर के उप निदेशक किरन कुमार ने कहा है कि यह पहला मौका है जब भारतीय छात्रों में अंतरिक्ष विज्ञान के प्रति इतना उत्साह देखा जा रहा है। इसरो अध्यक्ष जी. माधवन नायर ने कहा कि उनका संगठन चंद्रमा के एडवेंचर को स्कूलों से जोड़ने में पूरा सहयोग करेगा। छात्रों को इसरो की इकाइयों में बुलाया जाएगा।

भविष्य में अंतिरक्ष विज्ञान, संचार, टेलीमेडिसिन, टेली एजूकेशन, विलेज रिसोर्स सेंटर, नेचुरल रिसोर्स मैनेजमेंट, वाटर एण्ड ऑयल रिसोर्स के क्षेत्र में युवाओं में रुचि बढ़ेगी। चंद्रयान-1 के सफल प्रक्षेपण के बाद छात्रों ने ई-मेल, फोन आदि के माध्यम से अंतरिक्ष विज्ञान के बारे में गहराई से जानने की इच्छा प्रकट की है। वैज्ञानिक भी छात्रों की पूरी मद्द करना चाहते हैं। जब इसरों के पास चंद्रमा से जुड़े सभी डाटा आ जायेंगे, उन्हें छात्रों को भी अध्ययन के लिए दिया जाएगा। ■

पृष्ठ 29 का शेष

जिस गर्त में गिरता जा रहा है उससे उबरने के लिए इन भारतवंशियों के निजी जीवन में झांकन पर बहुत कुछ समझ में आ जाता है। यह देखकर विश्मय होता है कि रामायण, महाभारत के देश भारत में महानगर आज बलात्कार, अपहरण के केंद्र बने हुए हैं किंतु यूरोपीय देशभूषा वाले अर्धनग्न इन सुदूर देशों में महिलाएं पूरी तरह सुरक्षित और मर्यादित हैं।

कैरेबियाई देशों के हिंदुस्तानियों के लिए उनके समाज और संस्कृति का आधार आज भी उनका धर्म और गौरवपूर्ण भारतीय परंपराएं ही हैं। इस क्षेत्र के लोग भारतीय महाकाव्यों के उद्यत्त पात्रों के जीवन चरित्र को स्वयं तथा अपनी पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत मानते हैं। उदाहरण के तौर पर इस क्षेत्र में रामचरित्र मानस की चौपाइयों का पाठ विभिन्न सांस्कृतिक और संस्कार संबंधी अवसरों पर किया जाता है। जहां एक ओर जन्म उपनयन और विवाह जैसे मंगल अवसरों पर रामचरित मानस की तत्संबंधी चौपाइयों का पारायण किया जाता है वहीं अंतिम संस्कार के अवसर पर भी दसरथ विरह एवं तुलसीदास के धर्म कर्म संबंधी दार्शनिक चौपाइयों की व्याख्या की जाती है। गोस्वामी जी कृत रामचरित्रमानस इस क्षेत्र के हिंदी प्रेमियों के लिए हिंदी प्रेम जीवित रखने में बड़े सहायक सिद्ध हुए हैं। गोस्वामी तुलसीदास की कंठस्थ की गई रामचरित मानस की चौपाइयां जिसने दुर्दिन पड़ने पर असीम मानसिक पीडा के क्षणों में आस्था ही नहीं यातनाओं/अवहेलनाओं को सहने का आत्मबल दिया। यहां के लोगों के लिए प्रेरणा प्राप्त करने का महान पुण्यदायक साधन है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत में प्रवासन की एक सुसंस्थापित संस्कृति रही है और इस संस्कृति का वर्णन भारतीय महाकाव्यों में बखूबी किया गया है। इसीलिए तो इन देशों को रामायण और महाभारत का देश कहा जाता है। यहां के प्रवासियों ने मानवसंस्कृति के इन महान ग्रंथों को जिस तरह अपने जीवन में आत्मसात किया है उससे यह सहज रूप से पता चल जाता है कि भारत में प्रवासन की संस्कृति रही है और ये ग्रंथ उस संस्कृति के प्रतिनिधि ग्रंथ हैं। आज भी प्रवासी भारतीय भारत से जुड़ा रहना चाहते है हालाकि उनका अपना स्वतंत्र नागरिक जीवन है। इस जुड़ाव को इतने दिनों बाद भी ज्यों का त्यों बनाए रखने में इन ग्रंथों के अप्रतिम योगदान को इनकार नहीं किया जा सकता। प्रवासी भारतीय और भारतवंशी वास्तव में एक वृहद भारत परिवार की तरह ही है जिनकी आत्मा रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों में वास करती है। ■

पत्रकारिता

जनतंत्र में पत्रकारिता की भूमिका

डॉ. मृत्युजय उपाध्याय*

प्रजातंत्र की जड़ें वहीं गहरी जाती हैं, जहाँ ग्राम पंचायतों की भूमिका उल्लेखनीय होती है । दूसरी महत्वपूर्ण बात है तीन 'पी' का कमाल–प्रेस, पब्लिक ओपिनियन और प्लेटफॉर्म । प्रेस (जन संचार, मीडिया), जनमत और मंच की भूमिका तभी उजागर हो सकती है जब जनता में जागरण हो । माउत्से तुंग ने कहा था कि 'शाश्वत जागरूकता ही आजादी का मूल्य है ।' जन संचार का लाभ बिना शिक्षा और जागरण के नहीं लिया जा सकता है और बिना जनसंचार के जागरूकता नहीं आ सकती । जनतंत्र का चौथा स्तंभ हैं तीनों 'पी' । आज जनतंत्र पर संकट गहरा रहा है । मानवीय संवेदना मिटती जा रही है । स्वार्थपरता, आत्मकेंद्रण ने मानव के विकास पर प्रश्न चिह्न लगा दिया है । जनसंचार हमारी मदद कर सकता है, पर उनपर भी तना अंकुश, नियम–परिनियम, सत्ता की निरंकुशता का दबाव है । इन विषम परिस्थितियों में मीडिया के स्वरूप, अवधारण समस्याओं पर खुलकर विचार होना चाहिए । इस दिशा में 'मीडिया समग्र आयाम' (विजया पाठक सं.) की उपादेयता निस्संदिग्ध है । समाज जितना अधिक सूचनासंपृक्त होगा, उसमें उतनी ही जागरूकता होगी और ऐसे समाज में ही लोकतंत्र विकसित हो सकता है । इसीलिए सूचना का अधिकार जनशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण आयाम स्वीकारा गया है ।

मीडिया के विकास और विस्तार ने पत्रकारिता के कौशल तथा प्रौद्योगिकी के बेहतर इस्तेमाल के हुनर को विकसित करने की आवश्यकता भी रेखांकित की है । विषय वैविध्य और जटिल सामाजिक, आर्थिक–राजनैतिक संरचना के चलते पत्रकारिता अधिक चुनौतीपूर्ण कर्म हो गई है । इसीलिए पत्रकारिता और जनसंचार विषय की शिक्षा की जरूरत भी बढ़ी है । विशेषज्ञता की मांग भी बढ़ी है ।

साहित्य जीवन की व्याख्या है, उसके घात–प्रतिघात का चित्रण है, तो पत्रकारिता विश्वभर में (ब्रह्मांड की बात कीजिए) क्षण–क्षण घटनेवाली घटनाओं का अविकृत दर्पण है । यह एक कृच्छ साधना है, जो एक योगी कर सकता है, तो एक पत्रकार, मीडिया । यह आकाश को पीने का प्रयास है कि हवा को बाँधने की चेष्टा, पर इस दुष्कर कार्य पर हम विजय पा रहे हैं । उनकी उपलब्धियों और समस्याओं पर यहाँ विचार हुआ है ।

प्रभाष जोशी संचार माध्यमों को सरकारी नियंत्रण से मुक्त करने के बारे में उतना नहीं सोचते, जितना उसे राष्ट्रहित, लोकहित–सापेक्ष करने के बारे में । इसलिए प्रसार भारती के अमल की घोषणा से उन्हें खुशी हुई है । सरकार बनेगी, टूटेगी, पर देश तो स्थायी है, उसपर सोचना जरूरी है ।

रामशरण जोशी मिशनरी पत्रिकाओं, पत्रों के विलोपीकरण और पत्रों के व्यावसायीकरण से चिंतित हैं । पूँजीपति पत्र के कारण सारी सुविधाएँ ले लेता है, पर सरकारी तंत्र पर उसकी निर्भरता बढ़ती जाती है । अरब बारपतियों ने प्रेसेतर उद्योगों (शराब के कारखाने, जमीन–जायदाद, सिनेमा, इलेक्ट्रानिक इंडस्ट्री) में पूंजी लगाई । यहीं से जोड़–तोड़ की राजनीति शुरू होती है और पत्रकारों का पतन होने लगता है । अर्थशास्त्र में पूंजी का संग्रह शुभ माना गया है बशर्ते वह शोषण का हथियार न बने । जो मालिक (अखबार) जनहित के लिए लड़ता था, वही पूंजी से शोषण के नाना हथकंडे अपनाने लगा ।

राष्ट्रीय नवजागरण का सवाल हो या आजादी हासिल करने का पत्रकारिता की अहम भूमिका रही है । मस्तराम कपूर का मानना है कि जिस अर्थ की व्यापकता में भारतीय नवजागरण राष्ट्रीय आंदोलन को उस समय लिया जाता है, वैसा परिवेश यहाँ नहीं है । पर इतना मानना पड़ेगा कि ऐसी हवा बही थी, ऐसा जोशीला वातावरण बना था कि सभी भेद

*वृन्दावन, मनोरम नगर, एल.सी. रोड, धनबाद-826001 (झारखंड)

धुलाकर लोग आजादी के लिए पिल पड़े थे । पर आज जातिवाद, संप्रदायवाद का जहर पत्र उगल रहा है । कहाँ चला गया वह उत्साह और एकता ! वह मिशन, वह समर्पण !

डॉ. विद्यानिवास मिश्र का मानना है कि आज उपभोक्तावाद व अपसंस्कृति का बोलबाला है । परिणाम समक्ष है । "आज उपभोक्ता अप-संस्कृति का दबाव जीवन के अर्थ को दूषित कर रहा है और सहभागिता का स्थान गला काट प्रतिस्पर्धा ले रही है । ''''''''''आज परोक्ष उपयोगिता की विविध प्रकृतियों का सरलीकरण करके जो भी उपयोग्य सामग्री प्रस्तुत हो रही है, उसको लगाने के लिए पूरा का पूरा विज्ञापन तंत्र विकसित हो गया है । इसमें ख़तरा यह है कि विज्ञापन की भाषा गढ़ते-गढ़ते भाषा ही विज्ञापन हो जाए, जबकि भाषा विज्ञापन नहीं है ।" (पृष्ठ 91)

विजया पाठक भी इससे सहमत हैं कि "मूल्यों की जगह व्यावसायिकता ने ले ली है । अधिक विज्ञापनों को पाने की ऐसी होड़ है, जिसने अखबारों को बाजार में आ रहे नए-नए उत्पादों की प्रचार सामग्री बना दिया है ।" उन्होंने पत्रकारों की भटकन, भिक्षावृत्ति, पराश्रय की वृत्ति के पीछे उनकी अल्प शिक्षा, सिद्धांत-हीनता और शोषण की मंशा को माना है । जरूरत है माधव राव सप्रे, गणेश शंकर विद्यार्थी आदि के स्पप्न साकार हों । न्यायमूर्ति पी. बी. सामंत ने 'समाचार और विचार की दादागिरी का खतरा' में बताया है कि विचारों में निरंकुशता, तानाशाही और दादागिरी हो, तो समाचार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है । प्रेस के व्यावसायीकरण के खतरे के प्रति यह आगाह करते हैं । आज की त्रासदी यही है । प्रेस के व्यावसायीकरण का जो दौर दुनिया भर में चल रहा है, उसके वफादार अनुयायियों की संख्या इस देश में भी कम नहीं है । नतीजतन प्रेस के अधिकांश हिस्से किसी व्यावसायिक संस्थान की तरह व्यावसायिक मूल्यों और व्यवहार पर चलाए जाते हैं ।

इसका प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है पत्रकारिता के उच्च मापदंड और व्यावसायिक नैतिकता पर । अंग्रेजी में इनका लेख है-'भारतीय प्रेस के गत पचास वर्ष ।' इसमें भी उन्होंने औद्योगिक घरानों, समूहों के प्रेस मालिक होने के खतरे और तज्जन्य स्थितियों से साक्षात्कार कराया है । पहले के पत्रकारों के त्याग, समर्पण और उद्देश्य पर टिप्पणी करते हुए आज की बदहाली का मातम भी मनाया गया है ।

ब्लिज के मुख पृष्ठ पर रहता था-प्रथम, निर्भय और स्पष्टवादी (first, fearless & frank) पर आज पूर्वग्रहयुक्त संवाद दिए जाते हैं । रिपोर्टिंग की पांच दशकीय यात्रा पर लिखा है एस. पी. के. गुप्ता ने और पूर्वग्रहयुक्त रिपोर्टिंग पर दो लेख हैं-स्वामी अग्निवेश और एन. राजन को स्वामी अग्निवेश कुंभ मेले का संदर्भ देते हैं कि वहाँ पाखंड खंडिनी पताका लगाई जाती है 35 दिनों के लिए, जिससे लोगों में जागृति आए । पाखंड मिटे । जगह जगह होते हैं प्रेस सम्मेलन सभाएँ, पर किसका ध्यान रहता है इस ओर यानी कथनी-करनी का अंतराल देखते ही बनता है । संवाददाता क्षणिक, निजी, सांप्रतिक स्वार्थ के कारण पूर्वग्रहयुक्त रिपोर्टिंग कर जनता का बड़ा अहित करते हैं ।

पूरे देश में पत्रकारिता के स्वरूप और महत्व की जो प्रगति है, दिशा है, उस पर भी विरमकर विचार हुआ है । हिंदी पत्रकारिता दशा और दिशा (जयप्रकाश भारती, सं.) में । स्वाधीनता के पूर्व पत्रकारों का उद्देश्य था-देश को स्वाधीन बनाना । इसके लिए वे प्राणपन से जूझते रहे । संघर्ष करते हुए उन्होंने अपना अप्रतिम योगदान अंकित कराया । परंतु आजादी मिलने के बाद देश के पुनर्निर्माण का बुनियादी सवाल उठा । उसे हल करने के बजाय संपूर्ण राष्ट्रीय जीवन में ही जैसे व्यावसायिकता हावी होने लगी । पत्रकार अपने लक्ष्य से भटकने लगे और देश के विकास पर प्रश्न चिह्न लगता गया । सबसे अहम सवाल हुआ पत्रकारिता का पूंजीपतियों के चंगुल में फंस जाना । मालिक ही संपादक होगा । उसका बेटा संपादक होगा और वह जो चाहेगा, वही छपेगा । ऐसी विषम स्थिति में 'चुनौतियों के बीच खड़ा है पत्रकार ।' प्रभाष जोशी मानते हैं –

"मालिक संपादक की संस्था पत्रकारिता के स्वस्थ विकास के लिए जितना बड़ा खतरा है, उतना बड़ा खतरा और कोई नहीं है । .... पत्रकारिता के हित में है कि मालिक ऐसे संपादक को नियुक्त करे, जो खबरों को बिना किसी परेशानी के जनहित में प्रकाशित कर सके । (चुनौतियों के बीच खड़ा पत्रकार) मालिक अपने हित को जनहित समझता है । यह धारणा सर्वथा भ्रामक है, विघटनकारी है । पूरे देश का जो हित है, वही जनहित है और उसकी सब प्रकार रक्षा पत्राकार का अनिवार्य और नैतिक कर्त्तव्य है । 'सर्वेभवन्तु सुखिनः'-उसका अभीष्ट है ।"

डॉ. विद्यानिवास मिश्र इसलिए चिंतित हैं कि टेलीविजन आदि इलेक्ट्रोनिक मीडिया के विकास के कारण संप्रेषण की

समस्या जटिल होती जा रही है । भाषा ही सोचने का कारण है । वही सोच को उकसाती है । पर वही दूसरों के द्वारा हो, समूह के द्वारा हो, तो मनुष्य उस पूर्व स्थिति में लौट जाएगा, जब भाषा नहीं थी । पत्रकारिता का संकट तकनीकी विकास के कारण बढ़ा है । इस पर ध्यान नहीं जा रहा है । डॉ. मिश्र ने एलूल की पुस्तक 'दि टेक्नालोजिकल सोसाइटी' का एक उदाहरण दिया है, जिससे बात स्पष्ट हो जाती है–"आज का आदमी अपने पड़ोसी की बात नहीं समझ सकता क्योंकि उसका व्यवसाय उसका समूचा जीवन बन गया है और उसके जीवन के तकनीकी अतिविशेषीकरण ने उसे विवश कर दिया है कि वह एक बंद संसार में रहे । इसी से वह दूसरों की शब्दावली नहीं समझ पाता, न दूसरों के अंतर्निहित अभिप्राय ही समझ सकता है, ... जब तकनीक ही मनुष्य से मनुष्य को जोड़ने वाला सूत्र है । ऐसी स्थिति में पहुंचने पर भाषा, भाषिक संप्रेषण और वैयक्तिक भाषिक संप्रेषण की बात कुछ अधिक चिंता की बात हो गई है ।" (तकनीकी युग में संप्रेषण की समस्या) ।

डॉ. मिश्र ने इस बात पर बल दिया है कि संप्रेषण की समस्या मानवीय समस्या है । भाषिक संप्रेषण की स्वच्छंदता, पवित्रता, सत्यता और मधुरता पर ही विश्वजीवन का विकास निर्भर है ।

डॉ. राधेश्याम शर्मा ने पत्रकारिता के प्रशिक्षण की समस्या पर सम्यक प्रकाश डाला है । वे प्रशिक्षण की कथनी-करनी के गहरे अंतर से क्षुब्ध हैं। उनकी मान्यता है–"अभी तक पत्रकारिता की शिक्षा के लिए कोई व्यवस्थित एवं समन्वित ढाँचा नहीं बन पाया है । इसके मानवीकरण और स्तरीयकरण को लेकर भी अभी कोई स्पष्ट व्यवस्था नहीं बन सकी है । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अथवा व्यवयाय की ओर से इस दिशा में कोई सार्थक पहल नहीं हुई है । जो व्यवस्था है, वह आधी-अधूरी है ।"(पत्रकारिता : प्रशिक्षण की समस्याएं; उन्होंने विभिन्न पत्रकारिता संस्थानों के क्रिया-कलापों, सरकारी रवैये और पत्रकारों की दयनीयता का विस्तृत विवेचन किया है ।

डॉ. शर्मा जो आदर्श, संकल्प, स्पप्न संजोकर बढ़ रहे हैं, उसका बहुत हद तक क्रियान्वयन माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल में हो रहा है । निदेशक स्वयं कल्पनादर्शी हो, तो फिर क्या बात है । उनके समक्ष दादा का आदर्श है–उन्हें लोकमान्य तिलक ने कहा था "माखनलालजी, मैंने तो बहुत गरीबी में काम शुरू किया । अखबार के जिस दफ्तर में काम करता था, उसी में रात को सोता भी था और जमीन पर बिछे गद्दे को औंधा कर उसी पर लिखता था । गद्दा झुक जाता, लेकिन ख्याल नहीं झुक पाते थे ।"

डॉ. शर्मा के अनुसार 'कर्मवीर' (माखनलाल चतुर्वेदी) का आदर्श हमारा दिशानिर्देशन हो । आनेवाले कल के इलेक्ट्रानिक अखबार से वृजमोहन गुप्त भी चिंतित हैं । उनका मानना है कि हमारे देश में अखबार केवल सूचना के माध्यम नहीं है । वह हमारी दैनिक जरूरतों की आपूर्ति कई प्रकार से करता हैं । कागज बनानेवाले, प्रेस कर्मचारी, अखबार बेचनेवाले हाकरों का तब क्या होगा । गुप्त जी बड़ा सटीक चित्र खींचते हैं "अनेक ऐसे लोग हैं, जिनके नथुने अखबारी कागज और उसकी स्याही की मादक गंध के आदी हैं । बिना उसके उन्हें सुबह का नाश्ता ही नहीं भाता ।"

उषा महाजन पत्रकारिता जगत में महिलाओं की भागीदारी, उनकी जुझारू शक्ति और समस्याओं पर विस्तृत विवेचन देती है । पूरे देश की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं की महिला पत्रकारों के नाम तक उन्हें याद हैं । पुरुष की महिला पत्रकारों के प्रति मानसिकता में वे उदारता चाहती हैं और चाहती हैं कि महिला जीवन की समस्याओं पर महिला पत्रकारों को लिखने में कोई अंकुश छेड़छाड़ न हो । महिलाओं की दुर्गति व पग-पग पर घर, परिवार, बाहर में उनके शोषण का कारण है उनकी आर्थिक पराधीनता । ऐंजिल्स मानते हैं कि आर्थिक परावलंबन घटने से उनकी आजादी और अस्मिता को खतरा नहीं है । उषा महाजन पुरुष की रुग्ण मानसिकता से चिंतित हैं और चाहती हैं कि पत्रकारिता ऐसे प्रश्नों को खुलकर उछाले । पुरूष को सरेआम नंगा करे । यह स्वस्थ, निर्भीक पत्रकारिता से ही संभव है ।

धर्म, अध्यात्म संबंधी पत्रकारिता की परंपरा और उसके विकास पर प्रमाणिक दस्तावेज प्रस्तुत करते हैं–शिव कुमार गोयल । उनकी दृष्टि में धर्मनिरपेक्षता राजनीति का हथियार भले ही हो, पर आम आदमी की आस्था धर्म और अध्यात्म में भरपूर है, जिसकी सम्यक और संतुलित अभिव्यक्ति पत्रकारिता ने की है । उसका कर्त्तव्य है कि संप्रदायवाद, फिरकापरस्ती, राजनीति, गुटबाजी आदि से उत्पन्न स्थितियों को धर्म के नाम पर न हवा दें, न विस्फोटक वातावरण बनाएँ । महाभारत में धर्म का मूल प्रत्यय अन्य धर्मों के प्रति उदार और सहिष्णु होना है–'धर्मः या बाधते धर्म

शेष पृष्ठ 87 पर

2787 HA/2009—6A

कोरोनरी धमनी रोग

–डॉ. के. सी. गुप्ता*
वरि. प्रो. स्वा. प्रबं.

धमनियां हमारे शरीर में एक अंग से दूसरे अंग तक रक्त व ऑक्सीजन ले जाने वाली नलिकाएं हैं, जो हृदय की मांसपेशियों तक भी रक्त व ऑक्सीजन ले जाती हैं । इन धमनियों को कोरोनरी धमनियां कहते हैं । जब इनमें अधिक कॉलेस्ट्रॉल की वजह से प्लेक नामक वसा का जमाव हो जाता है तो उसे कोरोनरी धमनी रोग कहते हैं । इस रोग में धमनियों में रुकावट से हृदय को पर्याप्त रक्त और ऑक्सीजन नहीं मिल पाता हैं, जिससे सीने में दर्द या बेचैनी (एन्जाइना) की शिकायत हो सकती है । अगर इन धमनियों में रक्त का थक्का जम जाए तो हृदय मांसपेशियों को रक्त प्रवाह बंद हो सकता है और दिल का दौरा पड़ सकता है जिसे हार्ट अटैक कहते हैं ।

धमनियों सें प्लेक का जमाव कई वर्षों में होता है । प्लेक जमने का एक कारण रक्त में कॉलेस्ट्रॉल की मात्रा अधिक होना है । प्लेक जमने के कारण धमनी धीरे-धीरे तंग होने लगती है, उसमें रुकावट शुरू हो जाती है और रक्त प्रवाह प्रभावित हो जाता है ।

चिकित्सा अनुसंधान द्वारा कुछ ऐसी परिस्थितियों की पहचान की गई है जिनसे स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है और हृदय रोग होने का खतरा बढ़ जाता है । ये परिस्थितियां रिस्क फैक्टर के नाम से भी जानी जाती हैं जिनमें से कुछ पर नियंत्रण रखा जा सकता है । यह रिस्क फैक्टर्स ज्यादातर अपनी जीवन शैली से संबंधित हैं ।

कुछ ऐसे रिस्क फैक्टर हैं जिन पर नियंत्रण संभव नहीं है, वे निम्नलिखित हैं :–

1. **वंशानुगत और नस्लगत**–परिवार में वंशानुगत कारणों से उच्च रक्तचाप और अधिक कॉलेस्ट्रॉल की आशंका हो सकती है । भारतवासी लोगों में हृदय धमनी रोग की आशंका अधिक रहती हैं क्योंकि वंशानुगत कारणों से उनके रक्त में एलडीएल अर्थात् खराब कॉलेस्ट्रॉल की मात्रा अधिक और एचडीएल अर्थात् अच्छे कॉलेस्ट्रॉल की मात्रा कम होती है । खराब कॉलेस्ट्रॉल की अधिक मात्रा से प्लेक जमने की वजह से हृदय धमनी रोग का खतरा रहता है ।
2. **आयु**–हृदय धमनी रोग से पीड़ित लोगों की आयु प्राय: 50-60 वर्ष से अधिक होती है । परंतु भारत में बढ़ते मोटापे के कारण कम उम्र के लोगों में भी यह रोग देखा जा रहा है ।
3. **लिंग**–आमतौर पर महिलाओं की तुलना में पुरुषों में हृदय धमनी रोग का खतरा अधिक रहता है, लेकिन रजोनिवृत्ति के बाद महिलाओं में भी यह खतरा बढ़ जाता है ।

इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे रिस्क फैक्टर हैं जिन पर नियंत्रण संभव है (रिवर्सिबल रिस्क फैक्टर) और जीवन शैली से संबंधित हैं, वे निम्न प्रकार हैं :–

1. **धुम्रपान/तम्बाकू सेवन**–धुम्रपान या तम्बाकू सेवन से धमनियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है और रक्तप्रवाह में बाधा होती है । यह कोरोनरी धमनियों में प्राय: देखा जा सकता है, जिसकी वजह से हृदय मांसपेशी का रक्त प्रवाह प्रभावित होता है और हृदय धमनी रोग का खतरा बढ़ जाता है । धुम्रपान या तम्बाकू सेवन छोड़ने से इस रोग पर नियंत्रण पाया जा सकता है ।
2. **उच्च रक्तचाप**–लगातार 120/80 मिमि. मर्करी से अधिक रक्तचाप रहने पर धमनियों में एथेरो स्केलोरोसिस की गति बढ़ जाती है और हृदय

*रेलवे स्टाफ कालेज, लालबाग, बड़ोदरा-390004

2787 HA/2009—6B

धमनियों को नुकसान हो सकता है। अत: जिनको उच्च रक्तचाप अनियंत्रित है, उनको हृदय धमनी रोग का खतरा अधिक है। परंतु रक्तचाप नियंत्रित किया जा सकता है और धमनी रोग से बचाव भी किया जा सकता है। वंशानुगत उच्च रक्तचाप को छोड़कर जीवन शैली में बदलाव द्वारा निश्चित रूप से इस रिस्क फैक्टर पर नियंत्रण एवं हृदय धमनी रोग से बचाव संभव है।

3. **उच्च रक्त कॉलेस्ट्रॉल**–कॉलेस्ट्रॉल एक प्रकार की वसा है, जिसकी रक्त में एक निश्चित मात्रा होनी चाहिये। परंतु अगर रक्त में इसकी मात्रा अधिक हो तो हृदय धमनी रोग का खतरा बढ़ जाता है। कॉलेस्ट्रॉल की कुल मात्रा को दो भाग में बांटा जा सकता है, एक अच्छा कॉलेस्ट्रॉल जिसे एचडीएल कॉलेस्ट्रॉल कहा जाता है और दूसरा खराब कॉलेस्ट्रॉल जिसे एलडीएल कॉलेस्ट्रॉल कहा जाता है। खराब कॉलेस्ट्रॉल की अधिक मात्रा से प्लेक जमने की वजह से हृदय धमनी रोग का खतरा ज्यादा हो जाता है। इस वसा को खानपान में सावधानी, व्यायाम या विशेष दवाइयों द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है।

4. **मधुमेह**–मधुमेह (डीयबिटीज) के रोगियों में हृदय धमनी रोग का खतरा ज्यादा होता है, क्योंकि इस रोग में धमनियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है और रक्त प्रवाह प्रभावित हो जाता है। अगर रक्त में ग्लूकोज की मात्रा नियंत्रण में न हो तो यह खतरा और अधिक होता है। इसलिये मधुमेह रोग में ग्लूकोज (शुगर) की मात्रा को नियंत्रण में रखना अत्यन्त आवश्यक है, जिसके लिये खानपान पर नियंत्रण, व्यायाम व ज़रूरत पड़ने पर विशेष दवाइयों का प्रयोग जरूरी है।

5. **मोटापा**–मोटापा और हृदय धमनी रोग के बीच अप्रत्यक्ष संबंध है। मोटापा होने से धमनियों में अधिक वसा (चर्बी) जमा होने का खतरा बढ़ जाता है तथा मधुमेह, उच्च रक्तचाप होने की भी संभावना बढ़ जाती है। इन सब कारणों से मोटापा के शिकार व्यक्तियों में हृदय धमनी रोग का खतरा अधिक है जिसके लिए खानपान पर नियंत्रण व नियमित व्यायाम द्वारा इस पर काबू पाया जा सकता है।

6. **तनाव (स्ट्रैस)**–आजकल के आधुनिक/मोडर्न जीवन शैली, वातावरण, दृष्टिकोण, सोच में बदलाव आदि के कारण सभी मानसिक तनाव (स्ट्रैस) से पीड़ित हैं, जिसकी वजह से उच्च रक्तचाप, हृदय धमनी रोग, मोटापा, मधुमेह, कैंसर आदि बीमारियों का खतरा बढ़ रहा है। यह तनाव निश्चित रूप से नियंत्रित किया जा सकता है। स्ट्रैस प्रबंधन द्वारा तनाव कम किया जा सकता है। जिसके लिए दृष्टिकोण व सोच में बदलाव (सकारात्मक सोच), स्वास्थ्यप्रद जीवनशैली, नियमित व्यायाम, योग, प्राणायाम, ध्यान आदि अति आवश्यक हैं।

इसलिये हृदय धमनी रोग से बचाव हेतु उक्त बताए गये सभी रिस्क फैक्टरों को ध्यान में रखकर उन पर नियंत्रण/काबू प्राप्त करने का प्रयत्न करना अत्यन्त आवश्यक है।

याद रखें

हिंदी में लिखे या हस्ताक्षर किए गए पत्रों, आवेदनों आदि का उत्तर देने के लिए हिंदी का प्रयोग करें।

हिंदी भाषी राज्यों में स्थित कार्यालयों और व्यक्तियों को अपनी ओर से लिखे पत्रों के लिए हिंदी का प्रयोग करें।

हिंदीत्तर भाषी राज्यों को पत्र आदि द्विभाषी (हिंदी–अंग्रेजी) रूप में भेजें।

राजभाषा संबंधी गतिविधियां

(क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

पूर्व रेलवे, महाप्रबंधक (राजभाषा) कार्यालय 17 एन.एस. रोड, कोलकाता

क्षेरेराकास की तिमाही बैठक 30-3-2009 को महाप्रबंधक, पूर्व रेलवे श्री दीपक कृष्ण की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। मुख्य राजभाषा अधिकारी ने निम्नांकित क्षेत्रों का जिक्र किया जिनमें कार्रवाई अपेक्षित है :-

(क) कानूनी प्रलेख अनिवार्यत: द्विभाषी जारी किए जाएं।

(ख) हिंदीतर भाषी कार्मिक जो जनसंपर्क में आते हैं, को हिंदी अधिकाधिक वार्तालाप प्रशिक्षण दिया जाएं।

(ग) रेल संचलन विषयक गोष्ठियां हिंदी माध्यम से आयोजित की जाएं।

(घ) स्टेशनों एवं कार्यालयों के ग्लो साइन बोर्ड आरंभ से ही द्विभाषी/त्रिभाषी बनाए जाएं।

महाप्रबंधक एवं समिति अध्यक्ष ने मुख्य राजभाषा अधिकारी, प्रमुख विभागाध्यक्ष, मण्डलों एवं कारखानों से आए प्रतिनिधियों का स्वागत किया, उन्होंने कहा कि सरकार की नीति है कि सरल व सहज भाषा में काम किया जाए। अत:, प्रचलित शब्दों के हिंदी रूपांतर का कृत्रिम एवं जबरन प्रयास न किया जाए। अंग्रेजी के प्रचलित शब्द देवनागरी में लिखे जा सकते हैं। संसदीय राजभाषा समिति के आगामी निरीक्षण के पहले हिंदी कार्यों की समीक्षा इस समिति के निरीक्षण मापदण्डों के अनुसार कर ली जाए।

कंप्यूटर हमारे जीवन का अटूट अंग हैं। इन मशीनों पर हिंदी में कार्य करने में तकनीकी दृष्टि से कोई बाधा नहीं है। अत:, कंप्यूटर के माध्यम से हिंदी के कार्यों को बढ़ाया जाए।

महानदी कोलफील्ड्स लि. महाप्रबंधक (प्रबंधन प्रशिक्षण संस्थान/राजभाषा) का कार्यालय, जगरुती विहार, संबलपुर (उड़िसा)

महानदी कोलफील्ड्स लिमिटेड मुख्यालय में दिनांक 27 मार्च, 09 को अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री एस आर उपाध्याय की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक सम्पन्न हुई। इस अवसर पर निदेशक (वित्त) श्री बी. महापात्र, निदेशक (कार्मिक) श्री एस. सी. पाढी, निदेशक (तकनीकी/ऑपरेशन) श्री ए. के. तिवारी सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इनके अतिरिक्त हिंदी शिक्षण योजना, भारत सरकार के हिंदी प्राध्यापक डॉ. हरिश्चंद्र शर्मा एवं मुख्यालय तथा क्षेत्रीय कार्यालयों के उच्चाधिकारीगण भी बैठक में उपस्थित हुए।

इसके अतिरिक्त श्री अमरेंद्र कुमार, मुख्य महाप्रबंधक (प्रबंधन प्रशिक्षण संस्थान/राजभाषा) ने उपस्थित अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। श्री उदय नाथ बेहेरा, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने गत बैठक में लिए गए निर्णय पर कृत कार्रवाई पर प्रकाश डाला तत्पश्चात दिसम्बर, 09 तिमाही रिपोर्ट की गहन समीक्षा की गई।

अध्यक्ष महोदय श्री उपाध्याय ने अपने आशीर्वचन में कहा कि राजभाषा हिंदी की महत्ता उस समय जान पड़ती है जब हम इसके सहारे देश के किसी भी भू-भाग में जाकर अपने विचारों का सहज संप्रेषण करने में कामयाब होते है। हमें अपनी मानसिकता में बदलाव लानी चाहिए। यह बात ठीक है कि एमसीएल ग-क्षेत्र में अवस्थित है, यहां अधिकांशत: गैर-हिंदीभाषी व्यक्ति कार्यरत हैं परन्तु राजभाषा के लक्ष्यों को प्राप्त करना भी हमारा संवैधानिक दायित्व है इससे हम बच नहीं सकते।

भाषा प्रशिक्षण के क्षेत्र में प्रबंधन द्वारा सख्त कदम उठाने पर बल दिया गया। बैठक में एमसीएल में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर गहन चर्चा हुई एवं कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

कार्यालय, आयकर आयुक्त (केंद्रीय) दण्डी स्वामी चौक लुधियाना

आयकर आयुक्त लुधियाना प्रभार की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 25-2-2009 को श्री बि. बि. महन्ति आयकर आयुक्त लुधियाना की अध्यक्षता में उनके कक्ष में साय 4.30 बजे आयोजित की गई।

सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदय ने बैठक में भाग ले रहे सभी सदस्यों का स्वागत किया। इसके उपरान्त अध्यक्ष महोदय की अनुमति से सदस्य सचिव ने बैठक के लिए निर्धारित कार्यसूची (एजैण्डा) के अनुसार बैठक का संचालन किया।

सदस्य सचिव ने चर्चा करते हुए बताया कि आयकर विभाग से संबंधित निम्नलिखित कार्य हिंदी में ही किए जाने अपेक्षित हैं :–

क. **निर्धारण और संग्रहण संबंधी कार्य :**

1. सभी समरी निर्धारण-इन में निर्धारितियों को भेजे जाने वाले पत्र इत्यादि भी शामिल हैं ;
2. सभी प्रकार के नोटिस जारी करना ;
3. सभी रजिस्टरों का रखरखाव-इनमें दैनिक संग्रहण रजिस्टर, मांग और वसूली रजिस्टर आदि शामिल हैं ;
4. वसूली प्रमाण-पत्र जारी करना।

ख. **कर वसूली कार्य :**

1. सभी नोटिस जारी करना ;
2. सिविल प्राधिकारियों से पत्राचार-इनमें कर वसूली प्रमाण-पत्रों के रद्द करने/परिवर्तित करने आदि के मामले भी शामिल हैं ;
3. कुर्की(डिस्ट्रैस) वारंट तैयार करना ;
4. कर वसूली अधिकारी के मांग रजिस्टर का रख रखाव ;
5. चालान बनाना ;
6. चूक कर्त्ताओं को अनुस्मारक (रिमांइडर) भेजना ;
7. वसूली प्रमाण-पत्र जारी करना।

बैठक के समापन पर अध्यक्ष महोदय ने हिंदी माह के उपलक्ष्य में आयोजित की गई हिंदी नोटिंग तथा ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता, हिंदी शब्द-ज्ञान प्रतियोगिता तथा हिंदी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के विजेताओं को नगद पुरस्कार देते हुए सम्मानित किया और यह आशा प्रकट की कि वे अपने कार्यालय का कार्य करते समय भी हिंदी भाषा को माध्यम के रूप में अपनाएं।

श्री बि. बि. महान्ति, आयकर आयुक्त लुधियाना ने इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए उपस्थित सदस्यों से अनुरोध किया कि वे हिंदी को मन, वचन और कर्म से अपनाएं। अपनी गतिविधियों को केवल प्रतियोगिताओं के आयोजन तक ही सीमित न रखें बल्कि उनकी कार्यशैली में भी राजभाषा को सर्वोच्चता प्राप्त होनी चाहिए।

आकाशवाणी-अहमदाबाद

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक संयुक्त रूप से दिनांक 23-3-2009 को श्री भगीरथ पंड्या केंद्र निदेशक की अध्यक्षता में संपन्न हुई।

पिछली बैठक के मुद्दों की समीक्षा के साथ-साथ सचिव ने बताया कि महानिदेशालय से तिमाही प्रगति रिपोर्ट के विषय में कल ही समीक्षा रिपोर्ट प्राप्त हुई है। अध्यक्ष महोदय ने उक्त समीक्षा को पढ़ कर सुनाने के लिए कहा। सर्व प्रथम पहले मुद्दे पत्राचार की स्थिति पर चर्चा की गई। सचिव ने पूरी समीक्षा को पढ़ कर सुनाया और बताया कि हमारे पत्राचार के मद पर टिक किया गया है हमारे कार्यालय से लक्ष्यों के अनुसार 'ख' क्षेत्र से 'क' और 'ख' क्षेत्र के साथ 90 प्रतिशत और 'ग' क्षेत्र के साथ 55 प्रतिशत पत्राचार हिंदी में किया जाना अनिवार्य है। अध्यक्ष महोदय ने सभी उपस्थित सदस्यों से अपील की कि सभी अपने-अपने अनुभागों में हिंदी पत्राचार बढ़ाने पर जोर दें। सारा कार्य अच्छा होने के साथ-साथ हमारा हिंदी पत्राचार का प्रतिशत भी बढ़ना चाहिए। उन्होंने कहा कृपया इसका अनुपालन सुनिचित करें।

2787 HA/2009—7A

हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्सहित करने हेतु प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशाला आयोजित करना अपेक्षित है ।

आने वाली प्रशासनिक बैठकों में भी वार्तालाप कार्रवाई पूर्णतया हिंदी में की जाएगी एवं कार्यसूची तथा कार्यवृत भी हिंदी भाषा में ही जारी किया जाए ।

कार्यालय में उपलब्ध सभी कम्प्यूटर जिसमें नए कम्प्यूटर भी शमिल हैं, उसे द्विभाषी करवा दिए गए हैं । इस पर अध्यक्ष महोदय ने निवेदन किया कि सभी अनुभाग अधिकारी अपने-अपने अनुभागों में तैनात कर्मचारियों सचिवों से हिंदी में टंकण कार्य करवाते रहें ताकि उनका हिंदी टंकण का अभ्यास भी बना रहे और हिंदी कार्य में भी बढ़ोतरी हो सके ।

कार्यालय में वेतन पर्ची हिंदी-अंग्रेजी द्विभाषी जारी होना शुरू कर दिया गया है । इस पर अध्यक्ष महोदय ने प्रशासनिक अधिकारी के सहयोग कार्य की सराहना की ।

श्रीमती मनीषा जैन, कार्यक्रम निष्पादक ने बताया कि अभी हाल ही में उनके संगीत अनुभाग के 150 से 200 कॉल लेटर हिंदी में भेजे गए । पी पी चार्ट हिंदी में भरा जाता है ।

इस तिमाही में एक कार्यशाला आयोजित करना तय किया गया था । क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान के श्री सदिक नूर पठाण का नाम वक्ता के रूप में तय हुआ था । श्री सादिक नूर पठाण, कार्यक्रम निष्पादक ने इसके लिए तैयारी भी शुरु कर दी थी एवं तारीख मार्च में निश्चित हो गई थी लेकिन अचानक उनको प्रशिक्षण के संबंध में बाहर जाना पड़ा । उनके मुख्यालय लौटने पर अप्रैल माह में इस तिमाही की कार्यशाला अवश्य आयोजित की जाएगी एवं उसके बाद अगली तिमाही की कार्यशाला मई-जून में आयोजित की जाएगी ।

बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, प्लाशा चेंबर्स, चौथी मंजिल, डॉ. आत्माराम बोरकर रोड, पणजी :- गोवा

31 मार्च, 2009 को समाप्त होने वाली तिमाही की क्षेत्रीय कार्यालय राजभाषा कार्यान्वय समिति की बैठक गोवा एवं प. महा. क्षेत्र के सहायक महाप्रबंधक एवं समिति के अध्यक्ष श्री श्रीपाद दत्तात्रेय इनामदार जी की अध्यक्षता में 17 मार्च, 2009 को 3.15 बजे अपराह्न क्षेत्रीय कार्यालय के सभागार कक्ष में संपन्न हुई ।

बैठक के आरंभ में समिति के सदस्य-सचिव, श्री राजीव कुमार ने अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष महोद्य सहित सभी उपस्थित सदस्यों का हार्दिक स्वागत करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की । उन्होंने अपने स्वागत संबोधन में क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के स्वरूप से सभी उपस्थित सदस्यों को अवगत कराया और राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने का अनुरोध किया ।

इस दौरान शाखाओं से प्राप्त पिछली तिमाही की समीक्षा की गई । इसमें यह पाया गया है कि ज्यादातर शाखाओं में हिंदी के प्रति कार्य करने की रुचि है । अधिकतर शाखाओं के स्टाफ सदस्यों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान है ।

अभी हाल ही में संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति का निरीक्षण दौरा हुआ । वहां पर इस सवाल को बहुत गंभीरता से लिया गया कि बैंक में जो भी पत्र मिलता है कम से कम हमें उसकी पावती तो हिंदी में ही भेजनी चाहिए । इस संबंध में एक कॉमन पावती पत्र तैयार कर सभी विभागों एवं शाखाओं में प्रेषित किया जा रहा है ।

भारतीय रिजर्व बैंक और बैंकिग प्रभाग, वित्त मंत्रालय द्वारा जारी किए गए दिशा-निर्देशों के अनुसार वार्षिक राजभाषा कार्ययोजना 2008-09 का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए शाखाओं की समय-समय पर समीक्षा की जाती है ।

इस तिमाही में कुल 4 शाखाओं का राजभाषा कार्यान्वयन निरीक्षण किया गया । वहां स्टाफ को डेस्क प्रशिक्षण भी दिया गया ।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा दिनांक 24 से 27 जनवरी, 2009 तक गोवा स्थित विभिन्न सरकारी कार्यालयों का निरीक्षण किया गया जिसमें हमारे क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी को संयोजक नियुक्त किया गया था । 27 जनवरी, 2009 को हमारे कार्यालय का निरीक्षण किया गया जिसमें संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यों ने हमारे कार्यालय की स्थिति को संतोषजनक पाया

2787 HA/2009—7B

है किन्तु उन्होंने अपेक्षा की है कि बैंक में हिंदी का प्रचार-प्रसार एवं हिंदी का कार्य निरंतर बढ़ाने का प्रयास किया जाए। इस संबंध में बैठक में उपस्थित सदस्यों से अनुरोध किया गया कि सभी अपने-अपने विभागों से अधिकतम पत्र हिंदी में जारी करें।

मुख्य आयकर आयुक्त, आयकर भवन, मक्बूल रोड, अमृतसर

मुख्य आयकर आयुक्त, अमृतसर क्षेत्र की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक 18 मार्च, 2009 को 1.00 बजे दोपहर मुख्य आयकर आयुक्त श्री सुनील चोपड़ा की अध्यक्षता में उन्ही के कार्यालय कक्ष में सम्पन्न हुई।

प्रत्यक्ष कर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नई दिल्ली की 68वी बैठक में किए गए निर्णयों तथा उनके अनुपालन हेतु की जानी वाली कार्यवाही पर विचार किया गया। विशेष रूप से अमृतसर क्षेत्र में हिंदी पत्राचार को बढ़ावा देने पर जोर दिया गया।

31-12-2008 को समाप्त तिमाही के बारे में अधीनस्थ कार्यालयों से प्राप्त राजभाषा संबंधी तिमाही प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा के दौरान पाई गई कमियों की ओर सभी का ध्यान आकर्षित किया गया, तथा इन्हें दूर किए जाने हेतु निदेश दिए गए। समिति की 16 दिसम्बर, 2008 को आयोजित बैठक में किए गए निर्णयों की समीक्षा की गई।

समिति को सूचित किया गया कि 31-12-2008 को समाप्त तिमाही के आंकड़ों के अनुसार अमृतसर क्षेत्र में 64 प्रतिशत पत्राचार हिंदी में हुआ है, जोकि राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य 90 प्रतिशत से बहुत कम है। मुख्य आयकर आयुक्त महोदय ने इसका कड़ा नोटिस लिया तथा इस लक्ष्य को प्राप्त किए जाने हेतु प्रभावी कदम उठाए जाने हेतु निदेश दिए, जैसा कि :-

क उच्च अधिकारियों/अधीनस्थ अधिकारियों को प्रेषित की जाने वाली सभी रिपोर्टों, परिपत्रों/अनुदेशों के अग्रेषण पत्र केवल हिंदी में जारी किए जाएं।

ख कार्यालय प्रशासन संबंधी सभी आदेश (जैसे-छुट्टी की स्वीकृति, जी. पी. एफ की स्वीकृति, मैडीकल प्रतिपूर्ति, वित्तीय स्वीकृतियाँ) केवल हिंदी में या द्विभाषी जारी किए जाएं।

ग स्थानांतरण/तैनाती के सभी आदेश हिंदी में या द्विभाषी जारी किए जाएं। मुख्यालय पर ऐसे आदेश द्विभाषी रूप से जारी किए जा रहे हैं। अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित आयकर आयुक्तों को निदेश दिए कि वे भी अपने-अपने स्तर पर ऐसे आदेश हिंदी में जारी करवाएं जाने की व्यवस्था करें।

घ सांख्यिकी शाखा संबंधी तथा अन्य सभी रिपोर्टों के अग्रेषण पत्र/पृष्ठांकन हिंदी में जारी किए जाएं।

ड़ सभी कम्प्यूटरों पर हिंदी सॉफ्टवेयर (लीप) लोड किया जाना सुनिश्चित किया जाए। सहायक निदेशक (सिस्टम) ने सूचित किया कि अधिकतर स्थानीय कम्प्यूटरों पर हिंदी सॉफ्टवेयर लोड कर दिया गया है। शेष कम्प्यूटरों पर भी इसे शीघ्र ही लोड करवाया जा रहा है।

अध्यक्ष महोदय ने निदेश दिए कि सभी आयकर आयुक्त अपने अधीनस्थ कार्यालयों का सामान्य निरीक्षण करते समय राजभाषा हिंदी के प्रयोग की स्थिति का भी निरीक्षण किया करें तथा निरीक्षण रिपोर्ट में राजभाषा हिंदी के प्रयोग संबंधी मद को भी शामिल किया करें। अध्यक्ष महोदय ने सदस्यों को उनके कार्यालय की तिमाही प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा दौरान पाई गई कमियों को दूर किए जाने हेतु आवश्यक कार्यवाही के निदेश दिए।

समिति को सूचित किया गया कि इस तिमाही के बारे में आयकर आयुक्त जम्मू तथा बठिंडा द्वारा अपने-अपने प्रभार की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित कर ली गई है।

सभी आयकर आयुक्त अपने प्रभार में किसी एक अनुभाग, (विशेषकर स्थापना/अनुभाग) में सारा कार्य हिंदी में किया जाना अवश्य विनिर्दिष्ट (स्पेसीफाई) करें। अध्यक्ष महोदय ने निदेश दिये कि मुख्यालय की प्रशासन शाखा को भी सारा कार्य हिंदी में किए जाने हेतु विनिर्दिष्ट कर दिया जाए। इस उपलक्ष्य में जारी किए जा रहे आदेशों की प्रतिलिपि इस कार्यालय को प्रेषित की जाए।

कर निर्धारण क्षेत्र में भी हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए । विशेष रूप से द्विभाषी फार्मों का हिंदी भाग भर कर उस पर हिंदी में हस्ताक्षर किए जाएं । आयकर आयुक्त, जम्मू प्रभार में आयकर अधिनियम की धारा 144 के अन्तर्गत काफी आदेश हिंदी में जारी किए गए हैं । मुख्य आयकर आयुक्त महोदय ने अन्य आयकर आयुक्तों से भी ऐसे कुछ आदेश हिंदी में जारी करवाए जाने का अनुरोध किया ।

मुख्य आयकर आयुक्त स्तर पर आयोजित होने वाली मासिक बैठकों में अधिकतर कार्यवाही हिंदी में की जाती है तथा इसमें हिंदी कार्यान्वयन पर भी चर्चा की जाती है । मुख्य आयकर आयुक्त महोदय ने आयकर आयुक्तों को भी अपने-अपने स्तर पर आयोजित होने वाली मासिक बैठकों में ऐसी ही कार्रवाई करने के निदेश दिए ।

यह भी निर्णय किया गया कि :-

(क) रबड़ की मोहरें, नाम की प्लेटें, साईन बोर्ड द्विभाषी बनवाए जाएं । इसकी जिम्मेदारी इन वस्तुओं का आदेश देने वाले अधिकारी/कर्मचारी की हो । इस आशय का एक कार्यालय आदेश भी जारी किया जाए ।

(ख) हिंदी व अंग्रेजी के प्राप्ति तथा प्रेषण रजिस्टर अलग-अलग रखे जाएं ।

(ग) जन शिकायतों संबंधी सभी रिपोर्टें हिंदी में प्रेषित की जाएं ।

(घ) समरी निर्धारण अधीन जारी इंटीमेशन स्लिपों (सूचना-पत्रों) पर हिंदी की मोहर लगाई जाए तथा हिंदी में हस्ताक्षर किए जाएं ।

(ङ) सभी आयकर आयुक्त अर्ध-शासकीय पत्र हिंदी में भेजने का प्रयास करें तथा हिंदी में हस्ताक्षर करना सुनिश्चित करें ।

अध्यक्ष महोदय ने टिप्पणी की कि हिंदी पत्राचार के क्षेत्र में हम अभी 90 प्रतिशत पत्राचार के लक्ष्य से काफी पीछे हैं । उन्होंने सभी सदस्यों से अनुरोध किया कि वे अपने-अपने स्तर पर राजभाषा हिंदी पत्राचार को बढ़ावा दें ताकि इस तिमाही में हिंदी पत्राचार में कम-से-कम 04-05 प्रतिशत की बढ़ौतरी अवश्य हो जाए ।

अंत में सभी सदस्यों द्वारा अध्यक्ष महोदय के प्रति आभार प्रकट करने के साथ बैठक समाप्त हुई ।

बिहार दूरसंचार परिमण्डल
मुख्य महाप्रबंधक का कार्यालय, संचार सदन, बुद्धमार्ग, पटना-800001

बिहार दूरसंचार परिमण्डल कार्यालय, पटना की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 31 मार्च, 2009 को 3.00 बजे अपराह्न से महाप्रबंधक (प्रशासन), बिहार परिमण्डल, पटना की अध्यक्षता में संचार सदन के सम्मेलन कक्ष में आरम्भ हुई ।

बैठक की कार्यवाही की शुरुआत करते हुए उपमहाप्रबन्धक (प्रशासन) श्री सूर्य प्रकाश, ने पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों एवं उस पर की गई कार्रवाई का बिन्दुवार ब्यौरा समिति के समक्ष प्रस्तुत किया । सभी बिन्दुओं पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई पर कार्यकारी अध्यक्ष एवं वरीय अधिकारियों ने अपने सुझाव भी दिए ।

तत्पश्चात् कार्यालय में राजभाषा सम्बंधी लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों से सुझाव आमंत्रित किए गए एवं प्राप्त सुझावों पर विस्तृत चर्चा की गई ।

समिति को बताया गया कि चालू सत्र में अपने कार्यालय से 7 कर्मियों को हिंदी शिक्षण योजना के अन्तर्गत हिंदी टंकण प्रशिक्षण हेतु भेजा गया है । इस सम्बंध में महाप्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी) महोदय ने सुझाव दिया कि वैसे कर्मियों की सूची तैयार कर सम्बंधित अनुभाग नियंत्रकों को सौंपी जाए जिन्होंने हिंदी टंकण का प्रशिक्षण ले लिया है । ऐसा करने से अनुभाग नियंत्रक इनकी सेवायें हिंदी पत्रों के टंकण हेतु ले सकेंगे । कुछ सदस्यों ने विचार व्यक्त किया कि प्रशिक्षण ले चुके कर्मियों के निरंतर अभ्यास हेतु भी कुछ व्यवस्था होनी चाहिए । इस पर उपमहाप्रबंधक (प्रशासन) महोदय ने समिति को जानकारी दी कि 28 मार्च को आयोजित हिंदी कार्यशाला में यह निर्णय लिया गया है कि प्रत्येक शुक्रवार को 3.00 बजे अपरान्ह से 5.00 बजे तक सभाकक्ष में टंकण अभ्यास कार्यशाला का आयोजन किया जायेगा । जिसका सभी सदस्यों ने स्वागत किया ।

समिति को बताया गया कि 28 मार्च, 2009 को परिमण्डल कार्यालय के कर्मियों के लिए कम्प्यूटर पर हिंदी

हिंदी में काम करने सम्बधी एक कार्यशाला का आयोजन कर लिया गया है । समिति को अवगत कराया गया कि निरीक्षण प्रश्नावली के अनुसार आवश्यक अपेक्षित कार्रवाई हेतु मदों को चिन्हित कर लिया गया है एवं आने वाले समय में चरणबद्ध रूप से आवश्यक कार्रवाई की जाएगी । आगामी बैठकों में इन बिन्दुओं पर आवश्यक चर्चा भी की जाएगी ।

अन्त में महाप्रबंधक (प्रशासन) महोदय ने उपमहा-प्रबंधक (प्रशासन) द्वारा संघ की राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु किए जा रहे प्रयासों की पशंसा की एवं राजभाषा अनुभाग के कार्यकलापों को सराहनीय बताया ।

केंद्रीय लोक निर्माण विभाग, 34 ए, एम. जी मार्ग सिविल लाईन्स, इलाहाबाद

इंजी. रमेशचन्द्र, अधीक्षण अभियंता, इलाहाबाद केंद्रीय परिमण्डल, के. लो. नि. वि., इलाहाबाद की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 2009 की द्वितीय बैठक दिनांक 13-4-2009 को पूर्वाह्न 11.30 बजे किया गया ।

इलाहाबाद केंद्रीय मण्डल की शत-प्रतिशत प्रगति पर अध्यक्ष महोदय ने कार्यपालक अभियंता एवं उनके सहयोगियों को बधाई दी । परिमण्डल एवं कानपुर तथा वाराणसी केंद्रीय मण्डल की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया गया । कानपुर एवं वाराणसी केंद्रीय मण्डल अपने सामूहिक प्रयास से लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करें । कार्यपालक अभियंता प्राप्त प्रगति को बनाए रखते हुए आगे बढ़ाया जाए ।

बैठकों की समीक्षा के पश्चात् अध्यक्ष महोदय ने अपनी व्यवस्था में कहा कि मण्डल कार्यालय संबंधित माह के प्रथम सप्ताह की 3 तारीख तक तथा परिमण्डल कार्यालय द्वितीय सप्ताह में अनिवार्य रूप से बैठकों का आयोजन किया करें जिसकी पूर्व सूचना इस कार्यालय को भी समय रहते दिया करें ।

अध्यक्ष महोदय ने अपनी व्यवस्था में प्रकाश डाला कि कार्यालय में प्रयोग होने वाले रबर मुहरें, नेम प्लेट तथा बैनर इत्यादि अनिवार्य रूप से हिंदी में ही प्रयोग किए जाएं तथा फाईलों एवम् रजिस्टरों के मुख्य पृष्ठ पर हिंदी में ही विषयांकित किया जाए । मण्डल कार्यालय में लेखा-शाखा में कैश बुक, डिपाजिट रजिस्टर इत्यादि हिंदी में ही बनाये जाएं ।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में अध्यक्ष महोदय ने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का आह्वान किया कि वे अपनी सामूहिक प्रतिबद्धता का परिचय देते हुए राजभाषा के विकास में अपनी सहभागिता निभाएं और लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करें ।

कार्यालय, महाप्रबंधक, दूर संचार जिला, दूरसंचार भवन, लिंक रोड, कटक

दिनांक 28-3-2009 को दूरसंचार भवन के प्रथम तल पर स्थित सम्मेलन कक्ष में अपराह्न 16.00 बजे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठक आयोजित की गई । बैठक की अध्यक्षता महाप्रबंधक, दूरसंचार जिला, श्री प्रदीप कुमार होता ने की ।

बैठक में चालू तिमाही के दौरान हुई राजभाषा सम्बन्धी प्रगति का आकलन किया गया तथा उपलब्धियों को अधिक तर्कसंगत, स्पष्ट और ठोस बनाने के लिए अनेक निर्णय लिए गए :

(क) निविदासूचना, प्रेस-विज्ञप्ति, करार, संविदा आदि यथासंभव द्विभाषिक रूप में जारी किए जाएंगे ।

(ख) योजना आदि से संबधित प्रतिवेदन/आँकड़ों के परिचयात्मक विवरण भी द्विभाषिक रूप में भेजे जाएंगे ।

(ग) स्थानांतरण तैनाती, छुट्टी स्वीकृति आदि मामले में जारी किए जाने वाले कार्यालय आदेश/आदेश द्विभाषिक रूप में जारी किए जाएंगे ।

(घ) कार्यालय भवन के शीर्षतल पर नामपट को तत्काल त्रिभाषी रूप में लिखवाकर लगाया जाएगा ।

(ङ) सभी अनुभाग प्रमुख को उनके नियंत्रणाधीन अनुभागों में राजभाषा सम्बन्धी कामकाज को बढ़ाने के लिए नोडल अधिकारी बनाया जाएगा ।

(च) सभी अधिकारी/कर्मचारी हिंदी भाषा में ही अपने हस्ताक्षर किया करें ।

(छ) सभी आवरण पत्र द्विभाषिक रूप में मुद्रित करा लिए जाएं ।

(ज) मंत्र (मशीन-साधित अनुवाद प्रणाली) सॉफ्टवेयर को यथासंभव सभी कम्प्यूटरों में स्थापित किया जाएगा ।

2787 HA/2009—8A

(झ) सेवाकलीन हिंदी प्रशिक्षण से शेष बचे सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की नामावली (रोस्टर) तैयार कराई जाएगी ।

(ञ) हिंदी कक्षा में एक अतिरिक्त डेस्क को बनवाकर लगा दिया जाएगा ।

बैठक में निर्णय लिया गया कि हिंदी में मूल पत्राचार को बढ़ावा दिया जाए । इसके आँकड़ों पर निगाह रखने के लिए पृथक से आगम एवं निर्गम पंजी का प्रयोग किया जाएगा ।

परमाणु ऊर्जा विभाग परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, पश्चिमी क्षेत्र, ए एम डी कॉम्पलैक्स, प्रताप नगर, सेक्टर 5, विस्तार बंबाला सांगानेर, जयपुर

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 63वीं बैठक में मुख्य रूप से पश्चिमी क्षेत्र कार्यालय में दिनांक 25 से 27 मार्च, 2009 को आयोजित हिंदी कंप्यूटर कार्यशाला के संबंध में चर्चा की गई । बैठक में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों के साथ कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रशिक्षणार्थियों ने भी भाग लिया ।

उपस्थित सदस्यों तथा प्रशिक्षणार्थियों ने दिनांक 25 मार्च से 27 मार्च, 2009 को आयोजित हिंदी कंप्यूटर कार्यशाला के आयोजन के संबंध में अपनी प्रतिक्रियाएँ दी एवं कार्यशाला को और प्रभावी व प्रायोगिक बनाने के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किए ।

पश्चिमी क्षेत्र कार्यालय में कंप्यूटर में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा एम एस एक्सेस सॉफ्टवेयर का प्रयोग करने के लिए इस तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जिसे उपस्थित सभी सदस्यों तथा प्रशिक्षणार्थियों ने बहुत सराहा । बैठक की शुरुआत में मुख्यालय हैदराबाद से पधारे सहायक निदेशक (राजभाषा) ने कार्यशाला के सफलतापूर्वक संपन्न होने की सूचना दी साथ ही उन्होंने अध्यक्ष महोदय को उन सॉफ्टवेयर तथा तकनीकों के बारे में बताया जिनका प्रशिक्षण कार्यशाला में दिया गया था ।

तत्पश्चात् बैठक की अध्यक्षता कर रहे क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने वर्तमान समय में कंप्यूटर में हिंदी के प्रयोग की आवश्यकता पर प्रकाश डाला साथ ही उपस्थित सदस्यों व प्रशिक्षणार्थियों को हिंदी के यूनीकोड फोण्ट का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए भी प्रेरित किया इसके साथ ही क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने उपस्थित सभी सदस्यों तथा प्रशिक्षणार्थियों से इस कार्यशाला के संबंध में उनके सुझाव व प्रतिक्रियाएँ मांगी ।

प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव देते हुए सदस्यों ने कहा कि इस प्रकार की कार्यशालाएँ कंप्यूटर के दैनन्दिन प्रयोग में अत्यंत सहायक होती हैं साथ ही उन्होंने सुझाव दिया कि कार्यशाला के समय को और बढ़ाया जाए, अध्यक्ष महोदय ने सुझाव पर गौर करते हुए कहा कि भविष्य में आयोजित की जाने वाली कार्यशालाओं में इस सुझाव को अमल में लाने का प्रयास किया जाएगा ।

एक अन्य सुझाव यह भी दिया गया कि कार्यशाला में सदस्यों की संख्या और बढ़ाई जाए जिससे प्रत्येक अनुभाग इस प्रकार की कार्यशालाओं से लाभान्वित हो सके एवं कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य को और अधिक प्रोत्साहन मिल सके ।

प्रशिक्षणार्थियों ने यह सुझाव भी दिया कि भविष्य में होने वाली कार्यशाला में पाठ्यक्रम को और अधिक बढ़ाया जाए साथ ही प्रायोगिक सत्र पर अधिक ध्यान दिया जाए जिसमें प्रशिक्षणार्थियों से ही कार्यालय के लिए उपयोगी कंप्यूटर प्रोग्राम बनवाने का प्रयास किया जाए ।

उपरोक्त सुझावों का क्षेत्रीय निदेशक महादेय ने स्वागत किया साथ ही आश्वासन दिया कि इस भविष्य में होने वाली इस प्रकार की कार्यशालाओं में इन सुझावों पर गौर किया जाएगा ।

तत्पश्चात् क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र एवं कार्यशाला में सिखाई गई प्रशिक्षण सामग्री सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रदान की । इसके साथ ही अध्यक्ष महोदय की अनुमति से बैठक समाप्ति की घोषणा की गई, सदस्य सचिव ने उपस्थित सदस्यों, प्रशिक्षणार्थियों तथा मुख्य प्रशिक्षक श्री जे. श्रीनिवास, सहायक निदेशक (राजभाषा) को धन्यवाद ज्ञापित किया ।

रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक (वायु सेना), देहरादून

कार्यालय, रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक (वायु सेना) देहरादून की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

2787 HA/2009—8B

श्री नन्दकिशोर, भा. रा. ले. से. रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक (वायु सेना) की अध्यक्षता में दिनांक 22-4-2009 को कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गई ।

श्री आर. सी. जखवाल हिंदी अधिकारी ने बताया कि मुख्य कार्यालय के अनुभागों में संपर्क एवं अधीनस्थ कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया जा रहा है ।

अध्यक्ष महोदय ने बैठक में उपस्थित प्रत्येक सदस्य से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के संबंध में सुझाव देने को कहा । कुछ सुझावों का ब्यौरा इस प्रकार है :–

सभी अनुभाग केवल अंग्रेजी में प्रयोग में लाए जा रहे प्रारूपों को द्विभाषी किए जाने हेतु हिंदी अनुभाग को उपलब्ध कराएं ।

जिन अनुभागों के अग्रेषण पत्र (Forwarding Letter) केवल अंग्रेजी में हैं उन्हें द्विभाषी बनाया जाए एवं भविष्य में यह सुनिश्चित किया जाए कि किसी भी रिपोर्ट का फारवर्डिंग लैटर केवल अंग्रेजी में न भेजा जाए ।

जिन अधीनस्थ कार्यालयों का पत्राचार का प्रतिशत कम है उन्हें उप-नियंत्रक (प्रशासन) की ओर से डी. ओ. पत्र भेजा जाए ।

मुख्य आयकर आयुक्त, हरियाणा क्षेत्र, आयकर भवन, सैक्टर-2 पंचकूला

मुख्य आयकर आयुक्त, हरियाणा क्षेत्र, पंचकूला की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक दिनांक 26-3-2009 को सायं 03-00 बजे श्री कैसर शमीम, माननीय मुख्य आयकर आयुक्त, पंचकूला की अध्यक्षता में उन्हीं के कक्ष में आयोजित की गई ।

सदस्य सचिव ने सूचित किया कि पिछली बैठक दिनांक 3-12-2008 को आयोजित की गई थी जिसके कार्यवृत्त मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय के दिनांक 17-12-2008 के पत्र द्वारा समिति के सभी सदस्यों को भेज दिए गए थे । इस पर समिति के किसी भी सदस्य द्वारा कोई भी सुझाव एवं टिप्पणी न दिए जाने पर कार्यवृत्त को सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया ।

इसके उपरान्त कार्यसूची की विभिन्न मदों तथा पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई पर चर्चा की गई ।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि यह बहुत ही हर्ष की बात है कि कार्यालय में 67 प्रतिशत कार्य हिंदी में किया जा रहा है फिर भी लक्ष्य प्राप्ति के लिए हमें और प्रयास करने की आवश्यकता है । अध्यक्ष महोदय ने यह भी कहा कि मूल पत्राचार में बढ़ोतरी के साथ-साथ हिंदी में लिखी जाने वाली टिप्पणियों में भी और बढ़ोतरी की आवश्यकता है ।

केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा-शुल्क आयुक्तालय, सी. जी. ओ. भवन, इन्दौर

माणिकबाग पैलेस, इन्दौर स्थित केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा-शुल्क आयुक्तालय में 24 मार्च, 2009 को आयुक्त श्री जी. आर. मीणा जी की अध्यक्षता में मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसमें दिसम्बर, 2008 को समाप्त तिमाही अवधि में हिंदी प्रगति की समीक्षा की गई तथा सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के उपायों पर विचार-विमर्श किया गया ।

सरकारी निर्देशों के अनुरूप अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने का प्रशिक्षण दिलाने के लिए मण्डल-रतलाम, पीथमपुर एवं इन्दौर में गत तिमाहियों में हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है । इस तिमाही में उज्जैन प्रभाग में कार्यशाला का आयोजन किया जाना है । आयुक्त महोदय ने उज्जैन में मार्च अन्त तक कार्यशाला आयोजन का निर्देश दिया जिसे शिरोकार्य कर 31 मार्च, 2009 को कार्यशाला उज्जैन में की जानी है । बैठक में निम्नलिखित निर्णय लिए गए :–

(i) अध्यक्ष महोदय ने सभी कार्यालयों में आज का चिन्तन के पोस्टर लगाए जाने की स्वीकृति देकर उसकी महत्ता पर प्रकाश डाला ।

(ii) आयुक्तालय में राजभाषा के कार्य पर आयुक्त महोदय ने संतोष व्यक्त किया ।

(iii) सभी उच्चाधिकारियों से अधिक से अधिक राजभाषा में कार्य सम्पादित करने हेतु व्यक्तिगत रुचि लेकर कार्य करने को कहा गया ताकि 100 प्रतिशत कार्य राजभाषा में करना सुनिश्चित किया जावे ।

सम्पदा निदेशालय

सम्पदा निदेशालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 112वीं बैठक संपदा उपनिदेशक (स्था.)

श्री अशोक कुमार की अध्यक्षता में 4-3-2009 को सांय 3.00 बजे संपदा निदेशालय के सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गयी । बैठक के प्रारंभ में अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित सदस्यों का स्वागत किया । तदुपरांत पिछली बैठक (111वीं) के कार्यवृत्त की पुष्टि के पश्चात् 31-12-2008 को समाप्त तिमाही में हिंदी के प्रयोग की स्थिति की अनुभागवार समीक्षा की गई ।

(1) दिसम्बर, 2008 को समाप्त तिमाही में हिंदी पत्राचार पर चर्चा करते हुए अध्यक्ष महोदय ने कहा कि प्रत्येक अनुभाग हिंदी पत्राचार को और बढ़ाने का प्रयत्न करें ताकि वार्षिक कार्यक्रम 2008-09 के अनुसार हिंदी पत्राचार का लक्ष्य, जो कि "क" तथा "ख" क्षेत्र के लिए 100 प्रतिशत तथा "ग" क्षेत्र के लिए 65 प्रतिशत है, पूरा किया जा सके । 2-11-2007 को संसदीय राजभाषा समिति द्वारा संपदा निदेशालय के निरीक्षण के दौरान निदेशालय द्वारा समिति को यह आश्वासन दिया गया था कि निदेशालय द्वारा हिंदी पत्राचार के 100 प्रतिशत के लक्ष्य को शीघ्र ही पूरा कर लिया जाएगा । इसलिए जिन अनुभागों का हिंदी पत्राचार 70 प्रतिशत से कम है वे अपना हिंदी पत्राचार बढ़ाने का विशेष प्रयास करें । प्रत्येक अनुभाग प्रभारी की यह जिम्मेदारी है कि वह यह सुनिश्चित करे कि अनुभाग के हिंदी पत्राचार में गिरावट न आए ।

तिमाही प्रगति रिपोर्ट के संबंध में अध्यक्ष महोदय ने कहा कि तिमाही प्रगति रिपोर्ट केवल हिंदी अनुभाग की जिम्मेदारी नहीं है, सभी अनुभाग प्रभारियों का यह दायित्व है कि रिपोर्ट समय से तैयार करके हिंदी अनुभाग को भेज दी जाए । सभी उप निदेशक इस बात पर ध्यान दें कि प्रत्येक अनुभाग अपनी तिमाही प्रगति रिपोर्ट समाप्ति के एक सप्ताह के भीतर हिंदी अनुभाग को भेज दें ताकि बार-बार अनुस्मारक भेजने की आवश्यकता न पड़े । तिमाही प्रगति रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करने से पहले संबंधित अधिकारी यह सुनिश्चित कर लें कि विभिन्न मदों के बारे में जो आंकड़े दिए जा रहे हैं, वह ठीक हैं तथा सभी कॉलम ठीक प्रकार से भरे गये हों।

सभी अधिकारियों को बताया गया कि कंप्यूटरों पर हिंदी सॉफ्टवेयर उपलब्ध रहना चाहिए यदि किसी कारणवश फार्मेटिंग आदि के उपरांत किसी अनुभाग में यह साफ्टवेयर नहीं है, तो हिंदी फॉन्ट (चाणक्य/कृति देव) इत्यादि लोड करा लें क्योंकि हिंदी में कार्य करने हेतु केवल फॉन्ट ही पर्याप्त है । इसके लिए संबंधित अधिकारी उपनिदेशक (कंप्यूटर) से संपर्क कर सकते हैं ।

हिंदी में प्रवीणता प्राप्त सभी अधिकारी/कर्मचारी अधिक से अधिक नोटिंग हिंदी में करें परन्तु लिखावट स्पष्ट हो अथवा नोट टाइप किया हो ताकि उच्चाधिकारियों को इसे पढ़ने में अतिरिक्त समय लगाने की आवश्यकता न हो । जिस फाइल पर हिंदी में नोटिंग हो, उस पर अंग्रेजी न लिख कर हिंदी भाषा में ही लिखना जारी रखा जाए ।

हिंदी टाइपिंग में प्रशिक्षित सभी कर्मचारी अपने-अपने अनुभाग में हिंदी टाइपिंग का कार्य करेंगे । इससे उनका अभ्यास बना रहेगा साथ ही आवश्यकता पड़ने पर हिंदी अनुभाग भी उनकी सेवाएं ले सकेगा । इस संबंध में प्रशासन-क अनुभाग द्वारा 13-6-2008 के कार्यालय ज्ञापन द्वारा निदेश भी जारी कर दिए गए हैं ।

समिति ने निर्णय लिया कि नए फाइल कवर ऐसे खरीदे जाएं जिनके पीछे दिन-प्रतिदिन काम में आने वाली प्रशासनिक टिप्पणियां हिंदी अनुवाद सहित प्रिंटिड हों इससे हिंदी में नोटिंग करने में सरलता होगी ।

अन्त में अध्यक्ष महोदय ने कहा कि हिंदी के प्रति हमारा भावनात्मक लगाव होना चाहिए तथा पुन: दोहराया कि राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों को प्राप्त करना प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी का कर्त्तव्य है इसलिए सभी अधिकारी/कर्मचारी राजभाषा नीति के अनुपालन में सहयोग दें ।

एन. एच. पी. सी. लिमिटेड, सैक्टर-33, फरीदाबाद

राजभाषा निगम मुख्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 2008-2009 की चौथी तिमाही बैठक का आयोजन श्री एस. के. गर्ग, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय की अध्यक्षता में दिनांक 12-3-2009 को किया गया ।

इस बैठक में माननीय अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय ने निगम में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति की गहन समीक्षा की तथा व्यापक स्तर पर हिंदी में कार्यालयीन कार्य बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण निर्देश दिए । उन्होंने निगम

में उत्कृष्ट कार्य के लिए राजभाषा शील्ड एवं पुरस्कार प्राप्त करने पर सभी को बधाई दी । उन्होंने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि हमें हर स्तर पर राजभाषा कार्य को आगे बढ़ाना है । राजभाषा कार्यान्वयन को केवल प्रत्राचार तक ही सीमित नहीं रखना है वरन् कुछ नए कार्यक्षेत्रों की भी पहचान करनी है जहाँ राजभाषा का प्रसार किया जा सकता है । उन्होंने कहा कि एक नई ऊर्जा व उत्साह के साथ राजभाषा कार्यान्वयन को नया आयाम देने की आवश्यकता है । उन्होंने कहा कि यद्यपि हमारे निगम में राजभाषा में बहुत अच्छा काम हो रहा है, किंतु अभी भी हम भारत सरकार द्वारा निर्धारित सभी लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर पाए हैं । इसके लिए हमें थोड़े और गंभीर प्रयास करने की आवश्यकता है । विशेषकर हमारे उच्च अधिकारियों से इसमें व्यक्तिगत योगदान की अपेक्षा है । उन्होंने विभागाध्यक्षों से अनुरोध किया कि वे हिंदी कार्यों में व्यक्तिगत रूप से रुचि लें और यह सुनिश्चित करें कि उनके विभाग से सभी परिपत्र, कार्यालय आदेश आदि द्विभाषी रूप में ही जारी किए जाएं । उन्होंने ईआरपी प्रणाली में हिंदी में कार्य की सुविधा उपलब्ध कराने पर विशेष रूप से जोर दिया और आशा व्यक्त की कि आगामी तिमाही में राजभाषा प्रयोग में और अधिक बढ़ोतरी होगी ।

बोकारो स्टील प्लांट, इस्पात भवन, बोकारो

बोकारो स्टील प्लांट की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 2008-2009 की चतुर्थ बैठक 26 मार्च, 2009 को इस्पात भवन स्थित समिति कक्ष में संपन्न हुई । श्री डी. पी. बजाज, कार्यकारी प्रबंध निदेशक, बोकारो स्टील प्लांट ने बैठक की अध्यक्षता की । आवश्यक औपचारिकताओं के बाद आरम्भ में विगत बैठक (10-12-2008) में लिए गए निर्णयों के अनुपालन की स्थिति से समिति को अवगत कराया गया । बैठक में 31 दिसम्बर, 2008 को समाप्त तिमाही में हुई हिंदी की प्रगति की गहन समीक्षा की गई । तदनुसार "क" क्षेत्र में वर्तमान हिंदी पत्राचार का प्रतिशत 90.76 है जबकि "ख" क्षेत्र में 90.54 प्रतिशत तथा "ग" क्षेत्र में हिंदी पत्राचार का प्रतिशत 69.8 है ।

श्री उमा कान्त शरण, उप महाप्रबंधक (संपर्क एवं प्रशासन) ने जनवरी-मार्च, 2009 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में किए गए विशिष्ट कार्यों का विवरण समिति के समक्ष प्रस्तुत किया जिनमें 25 विभागों का निरीक्षण, 20 हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन, 19 कार्मिकों को कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने का प्रशिक्षण तथा 16-20 फरवरी, 2009 तक केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, भारत सरकार के सहयोग से बोकारो नराकास के 25 कार्मिकों को अनुवाद कार्य में प्रशिक्षण शामिल थे ।

विचार विमर्श के उपरांत हिंदी कार्यान्वयन को गति देने के लिए बैठक में जो महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए उनसें-अगली तिमाही तक 13 नए विभागों में शत प्रतिशत हिंदी पत्राचार, प्लांट में प्रकाशित गृह पत्रिकाओं का राभाकास बैठक में लोकार्पण तथा सभी कर्मचारियों के लिए पी सी प्रशिक्षण की अनिवार्यता आदि उल्लेखनीय हैं।

अध्यक्ष महोदय ने बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों एवं विभागीय प्रतिनिधियों से अनुरोध किया कि वे अपने-अपने विभागों में हिंदी कार्यान्वयन में तेजी लाने का प्रयास करें जिससे कि निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके ।

केंद्रीय उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क एवं सेवाकर आयुक्तालय, कानपुर

केंद्रीय उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क एवं सेवाकर आयुक्तालय, कानपुर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 16-03-2009 को अपराह्न 16.30 बजे से कार्यालय के सभाकक्ष में 31-02-2008 को समाप्त तिमाही के लिए, आयोजित की गई । बैठक की अध्यक्षता आयुक्त श्री एस. सी. जाना ने की ।

30-09-2008 व 31-12-2008 को समाप्त तिमाहियों की रिपोर्टों की तुलनात्मक समीक्षा की तालिका का अध्यक्ष महोदय ने अवलोकन किया तथा संबंधित अनुभागों एवं मण्डलों के प्रभारी/प्रतिनिधियों से चर्चा की एवं लक्ष्य पूर्ण होने या सुधार होने और गिरावट आने जैसी स्थितियों में तकनीकी कारकों को महसूस किया ।

सचिव से जानकारी लेने के बाद अध्यक्ष महोदय ने वर्तमान वित्तीय वर्ष समाप्त होने के पहले ही हिंदी पुस्तकालय के लिए पुस्तकें खरीदा जाना सुनिश्चित करने की व्यवस्था दी।

कार्यालय आयुक्त केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क, होशंगाबाद रोड, भोपाल

केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क आयुक्त भोपाल की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 31-12-2009 को समाप्त तिमाही की बैठक आयुक्त महोदया प्रवीण महाजन की अध्यक्षता में दिनांक 28-1-2009 को अपराह्न में 03 बजे आयुक्तालय के सभा कक्ष में आयोजित की गई ।

2787 HA/2009—9A

अध्यक्ष महोदया एवं समिति के सदस्यों के समक्ष पिछली तिमाही की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का कार्यवृत्त पुष्टि हेतु प्रस्तुत किया गया, समिति के सदस्यों द्वारा जिसकी पुष्टि की गई ।

शाखा प्रभारियों द्वारा 1-10-2008 से 31-12-2009 तक की प्रस्तुत की गई तिमाही राजभाषा हिंदी प्रगति रिपोर्ट पर अध्यक्ष महोदया द्वारा संतोष व्यक्त किया गया व निर्देश दिए कि आगे भी वार्षिक लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए सभी शाखा प्रभारी एवं प्रभागीय कार्यालय शत प्रतिशत कार्य हिंदी में ही करने को प्राथमिकता प्रदान करें ।

अध्यक्ष महोदया द्वारा प्रभागीय कार्यालयों एवं मुख्यालय शाखा प्रभारियों द्वारा समय पर तिमाही राजभाषा हिंदी प्रगति रिपोर्ट हिंदी शाखा मुख्यालय को प्रस्तुत न करने को गम्भीरता से लेते हुए नाराजगी व्यक्त करते हुए तिमाही राजभाषा हिंदी प्रगति रिपोर्ट प्रत्येक तिमाही की समाप्ति पर अनिवार्य रूप से '5' तारीख तक हिंदी शाखा मुख्यालय को प्रस्तुत करने के निर्देश प्रदान करे ।

हिंदी के रिक्त पदों को भरने हेतु किए गए पत्राचार पर आगे की गई कार्यवाही पर जानकारी अधीक्षक स्थापना-I को लिखित में प्रस्तुत करने के निर्देश दिए ।

31-3-2009 तक वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार राजभाषा हिंदी में राजकीय कार्य करने हेतु निर्धारित वार्षिक लक्ष्य को शत प्रतिशत पूरा करने हेतु सभी शाखा प्रभारियों को हिंदी में ही कार्य करने के निर्देश अध्यक्ष महोदया द्वारा दिए गए ।

आयुक्तालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका प्रयास अंक 2009 के प्रकाशन हेतु आमंत्रित रचनाओं के प्रकाशन पर सहमति प्रदान करते हुए पत्रिका को रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक स्वरूप में प्रकाशित करने के अध्यक्ष महोदया ने निर्देश प्रदान किए ।

पूर्व मध्य रेल मुख्यालय, हाजीपुर

महाप्रबंधक, पूर्व मध्य रेल, श्री गिरीश भटनागर की अध्यक्षता में 27-3-2009 को क्षेत्रीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 24-25वीं संयुक्त बैठक का आयोजन संपन्न हुआ । बैठक का प्रारंभ मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री जे. एस. पी. सिंह के स्वागत संबोधन से हुआ । अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय बैठक एक उपयुक्त अवसर है जहां मिल, बैठकर कार्यों की समीक्षा करते हैं और उन्हें पूरा करने के लिए कार्य योजना बनाते हैं । उन्होंने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि पूर्व मध्य रेल मुख्यालय, हाजीपुर में राजभाषा के प्रयोग-प्रसार का उपयुक्त माहौल बना है । लेकिन अभी भी धारा 3(3) के क्षेत्र में हो रहे उल्लंघन को रोकना जरूरी है तथा हिंदी पुस्तकालयों की स्थिति में और सुधार किया जाना चाहिए । बैठक की अध्यक्षता करते हुए महाप्रबंधक श्री गिरीश भटनागर ने कहा कि हम हिंदी प्रयोग-प्रसार की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं । परंतु अभी भी कई सारे काम करने हेतु शेष हैं । बैठक को सूचित करने हुए उन्होंने कहा कि मुख्यालय के राजभाषा विभाग ने कंप्यूटरों के माध्यम से हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए आई टी मंत्रालय द्वारा सी-डैक के सहयोग से विकसित टूल्स सॉफ्टवेयर की प्रतियां सभी विभागों/मंडलों/कारखानों को वितरित करने के लिए मंगाई हैं । मौके पर इस सॉफ्टवेयर की खूबियां भी उन्होंने बताईं और साथ-साथ सभी को निर्देश दिया कि वे इस सॉफ्टवेयर को अपने कंप्यूटरों में लोड करें तथा सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाएं । उप महाप्रबंधक/राजभाषा श्री मेहरबान सिंह नेगी ने संबंधित सॉफ्टवेयर का प्रदर्शन किया ।

उल्लेखनीय है कि बैठक में परिचालन विभाग को अंतर्विभागीय राजभाषा चल शील्ड प्रदान किया गया तथा सामूहिक पुरस्कार योजना 2007 के अंतर्गत विभागों को पुरस्कार भी प्रदान किया गया । सिगनल, कार्मिक एवं चिकित्सा विभाग ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया ! वैशाली पत्रिका का विमोचन भी इस अवसर पर हुआ।

बैठक में पूर्व मध्य रेल पर नामित प्रेक्षक सदस्य श्री धनबीर पासवान और श्री कामेश्वर यादव मौजूद थे । श्री धनबीर पासवान ने पूर्व मध्य रले पर हिंदी प्रयोग-प्रसार के लिए किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की एवं राजभाषा विभाग को धन्यवाद दिया । श्री कामेश्वर यादव ने भी हिंदी प्रयोग-प्रसार पर संतोष व्यक्त किया । उन्होंने राजभाषा प्रयोग-प्रसार हेतु कई सुझाव भी दिए ।

बैठक में उपस्थित विभागाध्यक्षगण और मंडलों से आये प्रतिनिधियों ने अपने विभागों, मंडलों में राजभाषा प्रयोग-प्रसार की जानकारी दी । राजभाषा विभाग द्वारा टूल्स सॉफ्टवेयर के वितरण हेतु उन्होंने धन्यवाद ज्ञापित किया । उन्होंने उम्मीद जताई कि इस सॉफ्टवेयर के वितरण से राजभाषा प्रयोग-प्रसार को बढ़ावा मिलेगा और हिंदी में काम करने में सुविधा होगी । ■

2787 HA/2009—9B

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

भिलाई -दुर्ग

भिलाई-दुर्ग की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 28वीं छःमाही बैठक 14 अप्रैल, 2009 को अपराह्न 4.00 बजे इस्पात भवन सभागार में सम्पन्न हुई। श्री तपन कुमार गुप्ता, कार्यकारी प्रबंध निदेशक, भिलाई इस्पात संयंत्र एवं अध्यक्ष, नराकास की अध्यक्षता में सम्पन्न इस महत्वपूर्ण बैठक में विशेष रूप से श्री रामलाल शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं कार्यालयाध्यक्ष (कार्यान्वयन) मध्य क्षेत्र भोपाल, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्री पवन कुमार अग्रवाल, कार्यपालक निदेशक (कार्मिक व प्रशासन), भिलाई इस्पात संयंत्र सहित सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, केंद्रीय सरकार के संस्थान, बैंक व बीमा आदि 51 संस्थानों के प्रमुख व हिंदी अधिकारी सम्मिलित हुए। बैठक में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित प्रावधानों के तहत सभी सदस्य संस्थानों में राजभाषा हिंदी में हो रहे कामकाज की समीक्षा की गई। इस अवसर पर सभी सदस्य-संस्थानों को सुप्रसिद्ध साहित्यकार व कवि डॉ. शेरज़ंग गर्ग की किताब 'हिंदी कार्यकुशलता' भेंट की गई।

इस अवसर पर श्री तपन कुमार गुप्त ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि हमारी संस्था नराकास ने राष्ट्रीय स्तर पर इस वर्ष कई पुरस्कार जीते हैं। इन सारी उपलब्धियों के पीछे आप सबकी, पुरजोर मेहनत, कर्तव्यनिष्ठा और पक्के इरादों की अहम् भूमिका है। लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि सम्मान और पुरस्कार हमारा मनोबल तो बढ़ाते हैं पर वास्तव में हर उपलब्धि कुछ और अच्छा कर गुजरने की चुनौती ही होती है। नराकास का समेकित हिंदी में विभागीय काम करने का प्रतिशत लगभग 85 प्रतिशत से अधिक है। मेरी सोच है कि अब हमें उन लगभग 15 प्रतिशत कामों पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए जो अभी भी अँग्रेजी में ही हो रहे हैं। उन्होंने पुरस्कृत संस्थानों को बधाई देते हुए कहा कि आज संस्थानों के साथ-साथ हिंदी सेवकों को भी व्यक्तिगत तौर पर सम्मान दिया गया, यह मुझे बहुत अच्छा लगा। मुझे पूरा-पूरा विश्वास है कि इसी तरह हिंदी के प्रयोग और प्रसार में भी हम एक आदर्श प्रस्तुत करेंगे।

इस अवसर पर भिलाई-दुर्ग में राजभाषा कार्यान्वयन पर विशेष संतोष व्यक्त करते हुए श्री रामलाल शर्मा ने कहा कि बैठक का मूल उद्देश्य आपसी विचार-विमर्श के ज़रिए राजभाषा को आगे बढ़ाना है। हिंदी में जो प्रगति हम दर्ज कर चुके हैं, उसे कायम रखना हमारा पहला दायित्व है। उन्होंने कहा कि हर कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन व नियमित तिमाही बैठक, हिंदी रोस्टर अर्थात् हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान रखने वालों की सूची होना अनिवार्य है।

श्री पवन कुमार अग्रवाल ने कहा कि नराकास में और भी उप समितियों का गठन कर अन्य संस्थानों की भागीदारी बढ़ाने की जरूरत है। सिर्फ आँकड़ों के जाल में उलझने से हिंदी का हित नहीं होगा। भाषा के संदर्भ में हमें अपनी मानसिकता बदलनी होगी। उन्होंने कहा कि अपने दीर्घ प्रबंधकीय अनुभव के आधार पर मैं यह कहना चाहूँगा कि हिंदी में काम करना आसान है, हिंदी में काम करवाना आसान है।

श्री एन.पी. शर्मा, कार्यपालक, निदेशक, एच.एस.सी.एल. एवं अध्यक्ष, नराकास निरीक्षण उप समिति ने निरीक्षण प्रतिवेदन में कहा कि कुछ संस्थानों को छोड़कर अधिकांश कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति सराहनीय है। इसके लिए सभी संस्थान साधुवाद के पात्र हैं। नराकास का कार्य केवल कार्यालय तक ही सीमित नहीं है। भिलाई-दुर्ग में साहित्य, कला, खेल एवं अन्य साहित्यक समारोहों के आयोजनों द्वारा हमें प्रदेश में एक अग्रणी की भूमिका निभानी है। कवि सम्मेलनों व अन्य साहित्यक आयोजनों के माध्यम से अपनी ट्विन सिटी में हिंदी के लिये प्रेरक माहौल बनाना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

रायपुर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर की 59वीं बैठक दिनांक 18-12-2008 को 16:00 बजे, श्री अनिल

कुमार, आयुक्त, केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क, रायपुर की अध्यक्षता में केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क भवन, टिकरापारा, रायपुर के सम्मेलन कक्ष में सम्पन्न हुई । श्री रामलाल शर्मा, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, भोपाल ने इस बैठक में राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया ।

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में अध्यक्ष महोदय ने सर्वप्रथम बैठक में सदस्यों के समुचित प्रतिनिधित्व पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की । राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को वास्तविक रूप से बढ़ाने के लिए उन्होंने इच्छाशक्ति का होना अति आवश्यक समझा । उन्होंने इस संदर्भ में जवाहर नवोदय विद्यालय, रायपुर के प्राचार्य श्री विजय कुमार सिंह द्वारा व्यक्त विचारों का विशेष रूप से उल्लेख किया । राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में उन्होंने हिंदी में बातचीत को भी कार्यान्वयन का एक महत्वपूर्ण पहलू समझा । उन्होंने कहा कि कार्यालयों में हम अधिकतर हिंदी में ही बात करते हैं, यहां तक कि विभागीय बैठकों में बातचीत एवं चर्चा हम हिंदी में ही करते हैं, इसे राजभाषा कार्यान्वयन का एक अंग समझा जाना चाहिए तथा इसका उल्लेख भी हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित रिपोर्टों में किया जाना चाहिए । फिर भी जहां तक राजभाषा अधिनियम एवं इसके तहत बनाए गए राजभाषा नियमों की विभिन्न आवश्यकताओं का प्रश्न है उन्हें गंभीरतापूर्वक लिया जाना चाहिए एवं उनकी पूर्ति का हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए । बैठक में समुचित प्रतिनिधित्व पर उन्होंने सदस्यों का हार्दिक आभार माना एवं आशा व्यक्त की कि उनका इसी तरह का सहयोग नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की विभिन्न गतिविधियों के लिए भी मिलता रहेगा ।

अध्यक्ष महोदय द्वारा दिए गए सुझावों का स्वागत करते हुए श्री रामलाल शर्मा, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, भोपाल ने सदस्यों से अनुरोध किया कि राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित विशेष प्रयासों का अलग से एक कागज पर उल्लेख करते हुए उसे तिमाही हिंदी प्रगति रिपोर्ट के साथ जोड़ा जा सकता है ।

पानीपत

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पानीपत की बैठक दिनांक 16-02-2009 को श्री राजकुमार घोष, कार्यकारी निदेशक, पानीपत रिफाइनरी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई । बैठक में राजभाषा विभाग के संयुक्त सचिव, श्री डी.के. पाण्डेय, मुख्य अतिथि के रूप में तथा सहायक निदेशक (कार्या.), श्री जसवन्त सिंह बतौर राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित थे ।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली से पधारे सहा. निदेशक (कार्यान्वयन), श्री जसवंत सिंह ने सदस्य कार्यालयों से अनुरोध किया कि वे अपनी छःमाही रिपोर्ट नियमित रूप से समिति के कार्यालयों को तथा इसकी एक प्रतिलिपि राजभाषा विभाग को अनिवार्य रूप से भिजवाया करें, जिससे उनके द्वारा हिंदी कार्यान्वयन हेतु किए जा रहे प्रयासों का अवलोकन एवं समीक्षा की जा सके । उन्होंने संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण को गंभीरता से लेते हुए राजभाषा द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने का अनुरोध किया ।

संयुक्त सचिव ने कार्यालय सदस्यों से कहा राजभाषा विभाग समय-समय पर अपनी वैबसाइड (www.rajbhasha. nic.in) अपडेट करता है । इस साईट से हिंदी फॉन्ट डाउनलोड किया जा सकता है । किसी भी कम्पयूटर से Unicode की सहायता से हिंदी में कार्य करना आसान हो जाता है । उन्होंने कहा कि उनके विभाग में लगभग 200 हिंदी पुस्तकें तथा विभिन्न कार्यालयों द्वारा प्रकाशित पत्र/पत्रिकाएँ उपलब्ध हैं । इसे क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय से प्राप्त करके आप सब ग्रामीण स्कूलों के पुस्तकालयों में बाँट सकते हैं । उन्होंने टॉलिक अध्यक्ष से अनुरोध किया कि सदस्य कार्यालयों को उनके विभाग द्वारा प्रकाशित **राजभाषा विभाग के आदेशों का संकलन** की प्रतियाँ वितरित करें ताकि सभी कार्यालयों को राजभाषा नियमों/अधिनियमों की जानकारी हो सके ।

समिति के अध्यक्ष श्री राजकुमार घोष ने समिति के क्रिया-कलापों पर संतोष प्रकट करते हुए सदस्यों से अनुरोध किया कि हिंदी कार्यान्वयन के वार्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक सदस्य हर संभव प्रयास करें । इसके

चित्र समाचार

1. नराकास पानीपत की दिनांक 16-2-2009 की बैठक को संबोधित करते हुए मध्य में श्री डी. के. पाण्डेय, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, दाईं ओर बैठे हैं–श्री आर. के. घोष, अध्यक्ष नराकास एवं कार्यकारी निदेशक, पानीपत रिफाइनरी ।

2. नराकास भिलाई की बैठक की झलक

3. दिनांक 26-2-2009 को आंचलिक कार्यालय में वरिष्ठ प्रबंधकों हेतु आयोजित 'राजभाषा संगोष्ठि में श्री बी. आर. शर्मा, निदेशक (कार्यान्वयन) राजभाषा विभाग संबोधित करते हुए ।

4. दिनांक 24 मार्च, 2009 को महानदी कोलफ़ील्ड्स लि. की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का दृश्य ।

5. श्री डी. के. पाण्डेय, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए ।

6. दिनांक 25-26 फरवरी, 2009 को महानदी कोलफील्ड्स लि. संबलपुर द्वारा आयोजित दो-दिवसीय राजभाषा संगोष्ठी की एक झलक ।

7. एन. एच. पी. सी. लि. की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में अधिकारी गण

8. एन. एच. पी. सी. लि. मुख्यालय फरीदाबाद में अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में श्री डी. के. पाण्डेय, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, 'राजभाषा ज्योति' पत्रिका का विमोचन करते हुए ।

9. नराकास (बैंक) कोयंबटूर द्वारा उत्तम कार्य निष्पादन के लिए वर्ष 2007-08 का इण्डियन ओवरसीज बैंक को प्रथम पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री एन. चन्द्रशेखरन, महाप्रबंधक तथा डॉ. बी. बालकृष्णन, उप निदेशक (कार्यान्वयन) राजभाषा ।

10. क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन बडोदरा में मुख्य अतिथि प्रो. रमेश के. गोयल, कुलपति से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री बासू जी कार्यकारी निदेशक इंडियन आयल कार्पोरेशन लि., बडोदरा ।

11. नराकास भिलाई द्वारा आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह की एक झलक

12. दिनांक 27-3-09 को संपन्न क्षेत्रीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में महाप्रबंधक श्री गिरीश भटनागर से अंतर्विभागीय राजभाषा चल शील्ड प्राप्त करते हुएं मुख्य परिचालन प्रबंधक श्री आर. एस. पाण्डेय ।

13. दिनांक 16—19 मार्च, 2009 को महानिदेशालय, भारत तिब्बत सीमा पुलिस में हिंदी कार्यशाला के प्रमाण-पत्र वितरण समारोह में मुख्य अतिथि श्री श्याम मेहरोत्रा, उप महानिरीक्षक (प्रशासन) प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए ।

14. हिंदी दिवस के अवसर पर श्री शिशुपाल, सांसद से सम्मान-पत्र ग्रहण करते हुए डॉ. एस. के. माथुर, वैज्ञानिक-डी, केंद्रीय रेशम बोर्ड, भंडारा ।

15. नराकास (बैंक) चैन्नेई द्वारा आयोजित अंतर बैंक हिंदी विज्ञापन प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि श्री दिलीप चारी संपादक, राजस्थान पत्रिका का स्वागत करते हुए श्री आर. आर. सरीन, सहायक महाप्रबंधक एवं श्री अरुण श्रीवास्तव, मुख्य प्रबंधक यूनियन बैंक, चैन्नेई ।

16. बी. एस. एन. एल. द्वारा आयोजित संयुक्त कार्यशाला के नराकास जलगांव के अध्यक्ष एवं क्षेत्रीय प्रबंधक, सैन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया का स्वागत करते हुए सौ. आर. डी. चिरमाडे ।

17. एच एल एल लाइफकेयर लि. द्वारा आयोजित राजभाषा संगोष्ठि का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि ।

18. हैदराबाद विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़ा समारोह का उद्घाटन करते हुए प्रो. मुकुल चंद पाण्डेय, साथ में सम-कुलपति प्रो. वी. पी. संजय, कुल सचिव एस. परब्रह्मय्या, हिंदी अधिकारी डॉ. जे. आत्माराम ।

19. यूनियन बैंक ऑफ इंडिया चैन्नेई द्वारा आयोजित हिंदी दिवस समारोह में उप महाप्रबंधक श्री राम वी. वर्गीस संबोधित करते हुए ।

20. आकाशवाणी, शिमला द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए अधिकारी गण ।

21. बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा 'व्यवसाय विकास एवं राजभाषा' पर आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ अंचल के अंचल प्रमुख श्री बी. कैलाश शंकर ।

22. नराकास (बैंक) दिल्ली के तत्वावधान में कृषि बैंकिंग महाविद्यालय, पुणे द्वारा आयोजित 'राजभाषा अधिकारियों के लिए यूनिकोड प्रशिक्षण' में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए श्री आई. सी. बंसल, सदस्य सचिव, नराकास (बैंक) दिल्ली।

23. कर्मचारी राज्य बीमा निगम हैदराबाद द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशाला को संबोधित करते हुए अधिकारी।

24. एन. एच. पी. सी. लि. द्वारा आयोजित हिंदी कंप्यूटर कार्यशाला को संबोधित करते हुए अधिकारी।

लिए कार्य योजना बनाएं और कड़ाई से इसका अनुपालन सुनिश्चित करें। उन्होंने सभी कार्यालयों से अनुरोध किया कि राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रत्येक बैठक को समय पर आयोजित करें और बैठक में लिए गये निर्णयों का गम्भीरता से पालन सुनिश्चित करें।

नाजिरा

दिनांक 28 जनवरी 2009 को गेल टाउनशिप, लक्ष्मीनगर गेल परिसर, शिवसागर में श्री अशोक वर्मा, अध्यक्ष नराकास नाजिरा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। नराकास, नाजिरा की 12वीं बैठक में अध्यक्ष महोदय के अतिरिक्त राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय, गुवाहाटी से पधारे श्री अशोक मिश्र, सहायक निदेशक पूर्वी क्षेत्र, श्री प्रदीप सहारिया, महाधिप्रबंधक (मा.सं.) श्री श्रीधर व्यास, महा-प्रबंधक (प्रशासन), श्री ज्ञानेश्वर साकरवाल, महाप्रबंधक, ओ.एन.जी.सी., श्री संजीव मैधी, प्रभारी-गेल, श्री प्रभात कुमार भाटी, प्रधान (मा.सं.) गेल एवं शिवसागर/नाजिरा स्थित केंद्रीय उपक्रम, बैंक, केंद्रीय कार्यालयों से आये प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

बैठक में राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, पूर्वोत्तर क्षेत्र, गुवाहाटी से उपस्थित सहायक निदेशक ने उल्लेख किया कि सरकारी नियमों के अनुसार सदस्य कार्यालयों के कार्यालय अध्यक्ष की उपस्थिति बैठक में अनिवार्य है, अतः अनुपस्थित सदस्य कार्यालयों को अध्यक्ष, नराकास, नाजिरा के माध्यम से अनुपस्थित सदस्य कार्यालयों को स्मरण पत्र भेजे जाएं। इसके अतिरिक्त यह भी निर्णय लिया गया कि जिन सदस्य कार्यालयों से नराकास की दोनों बैठकों में कार्यालय अध्यक्ष की उपस्थिति सुनिश्चित हो रही हो उन्हें नराकास शील्ड एवं प्रमाण पत्र के लिए प्राथमिकता दी जायेगी।

वर्ष 2008-09 के लिए राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की दिशा में उत्कृष्ट कार्य के लिए निम्नलिखित कार्यालयों को अध्यक्ष, नराकास नाजिरा के द्वारा शील्ड एवं प्रमाण पत्र वितरित किए :

प्रथम पुरस्कार : गेल (इण्डिया) लि., लकवा।

द्वितीय पुरस्कार : केन्द्रीय विद्यालय, ओ.एन.जी.सी., शिवसागर।

तृतीय पुरस्कार : के. औ. सु. ब., ओ.एन.जी.सी. ईकाई, नाजिरा।

उक्त योजना को जारी रखने के लिए भी निर्णय लिया गया। पिछली बैठक में लिए गये निर्णय के अनुसार ओ.एन.जी.सी., नाजिरा को शील्ड प्रतियोगिता से बाहर रखा गया जिससे नाजिरा, शिवसागर, लकवा स्थित कार्यालयों में अधिक प्रतिस्पर्धा हो सके, और यदि उन्हें शील्ड प्राप्त होता है, तो वहाँ भी हिंदी के काम काज का वातावरण तैयार होगा।

बैठक में उपस्थित नराकास के सदस्य कार्यालयों ने अपने-अपने कार्यालयों की त्रिमासिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। जिसकी समीक्षा राजभाषा विभाग गुवाहाटी के प्रतिनिधि द्वारा की गई।

सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग पूर्वोत्तर क्षेत्र गुवाहाटी ने अपने संबोधन में कहा कि आज कंपयूटर का युग है, और नई तकनीक के माध्यम से कार्यालयों में आसानी से काम-काज किया जा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि कार्यालयों में हिंदी साफ्टवेयर उपलब्ध होना तथा उसे प्रयोग में लाने के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जाए।

याद रखें

केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के साथ पत्रादि में हिंदी का प्रयोग करें।

सभी कार्यालय ज्ञापन, कार्यालय आदेश, परिपत्र तथा विज्ञापन आदि द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेजी) रूप में जारी करें।

सभी सरकारी समारोह के निमंत्रण पत्र व बैनर हिंदी तथा अंग्रेजी में बनाएं।

(ग) कार्यशालाएं

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन में दिनांक 24-25 मार्च, 2009 को दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

कार्यशाला का उद्घाटन भारी पानी संयंत्र के विशेष कार्याधिकारी श्री एस.परमसिवम ने किया । इस अवसर पर आमंत्रित संकाय सदस्य श्री मनोहर, हिंदी अध्यापक पलयकायल, प्रशासन अधिकारी श्री एस.एम. सिरोंमणि, सहायक कार्मिक अधिकारी श्री नवीन कुमार भी उपस्थित थे । इस अवसर पर प्रशासन अधिकारी श्री सिरोंमणि ने कहा कि भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन में राजभाषा हिंदी को बढ़ाने हेतु सराहनीय कार्य किए जा रहे हैं । उन्होंने पूर्व नियुक्त सहायक निदेशक श्रीनरसिंहराम एवं श्री मनोज कुमार शर्मा के योगदान एवं उनके व्यक्तित्व की भूरी भूरी प्रशंसा की । उन्होंने उनके कार्यकाल में उनके द्वारा किए गए कार्यों के बारे में बताया एवं कहा कि आशा है आगे भी हिंदी को बढ़ाने हेतु मज़बूत कदम उठाए जाएंगे ।

अपने उद्घाटन भाषण में श्री परमसिवम जी ने कहा कि सरकार राजभाषा हिंदी को आगे बढ़ाने हेतु बहुत सारे प्रोत्साहन योजनाएँ, प्रशिक्षण के तरीके अपना रही हैं । अत: यह हमारा कर्तव्य बनता है कि हम उनका लाभ उठाएँ और हिंदी को बढ़ाने में अपना योगदान दें । उन्होंने यह भी कहा कि हम वर्ष में चार कार्यशालाओं का आयोजन करते हैं जिसमें नराकास के सदस्य कार्यालयों से भी नामांकन प्राप्त किए जाते हैं ताकि वे भी इसका लाभ उठा सकें ।

कार्यशाला में श्री मनोहर, हिंदी अध्यापक, पलयमकोट्टै, श्री एस.एम. सिरोंमणि, प्रशासन अधिकारी, श्री जी. नवीन कुमार, सहायक कार्मिक अधिकारी, श्रीमती श्यामलता, हिंदी अनुवादक श्रीमती भाग्यवती, प्रवर श्रेणी लिपिक व श्री अरुणाचलम के क्रमश सूचना का अधिकार, LTC, छुट्टी नियम, संविधान में राजभाषा, राजभाषा अधिनियम, नियम, अनुवाद, हिंदी व्याकरण व विकिरण जैसे विषयों पर व्याख्यान दिए । इस दो दिवसीय कार्यशाला में कुल 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया । कार्यशाला का संचालन एवं धन्यवाद प्रस्ताव श्रीमती श्यामलता ने किया ।

महानिदेशालय असम राइफल्स शिलांग-793011

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन के क्रम में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिलांग स्तर पर दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन इस निदेशालय में 17 एवं 18 मार्च 2009 को किया गया । इस कार्यशाला में महानिदेशालय असम राइफल्स, शिलांग के साथ-साथ शिलांग नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों से कुल 83 अधिकारी/कार्मिक उपस्थित हुए कार्यशाला की शुरूआत में मेजर सुजीत कुमार कर्ण, सदस्य सचिव, नराकास, शिलांग ने उपस्थित सभी अधिकारी/कर्मचारियों तथा श्री अजीत कुमार श्रीवास्तव, प्रबंधक नाबार्ड, जो अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित थे, का स्वागत किया ।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार, उक्त दो दिवसीय कार्यशाला में विभिन्न वक्ताओं ने निम्नलिखित विषयों पर व्याख्यान दिए :-

(क) राजभाषा नीति ।

(ख) प्रोत्साहन योजनाएं ।

(ग) वार्षिक कार्यक्रम ।

(घ) तिमाही प्रगति रिपोर्ट ।

(ङ) प्रशासनिक शब्दावली ।

(च) मुहावरे एवं लोकोक्तियां ।

(छ) मानक हिंदी वर्तनी ।

(ज) टिप्पणी लेखन ।

(झ) पत्र लेखन ।

(ञ) कम्प्यूटर पर हिंदी ।

दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला के अंत में मेजर सुजीत कुमार कर्ण, सचिव नराकास ने सभी उपस्थित अधिकारीगण एवं कार्मिकों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन देते हुए दो दिवसीय कार्यशाला समाप्त घोषित किया ।

परमाणु ऊर्जा विभाग नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र

हैदराबाद एनएफसी में दिनांक 30-03-2009 को प्रशासन व लेखा वर्ग के कर्मचारियों के लिये हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला का उद्घाटन श्री प्रणव कुमार बनर्जी, महाप्रबंधक (सीईडी व यूटिलिटी) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वियन समिति ने किया । अपने संबोधन में आपने कहा कि- 'अपनी भाषा और संस्कृति से ही हमारी पहचान है और इसलिए हमें हिंदी पर गर्व होना चाहिए । इस कार्य में सबकी भागीदारी आवश्यक है अत: हिंदी में हस्ताक्षर और छोटे-छोटे पत्र लिखकर हिंदी के कार्यान्वयन में अपना योगदान दें ।'

तदुपरांत श्री अम्बादास, प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, हैदराबाद ने 'कार्यालयीन हिंदी और व्याकरण', श्री गजानन पाण्डेय, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने 'एनएफसी में हिंदी और प्रोत्साहन योजनाएँ', श्री सैयद मासूम रज़ा, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने 'संघ सरकार की राजभाषा नीति' और श्री सैयद इरफान अली, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने 'हिंदी में टिप्पणी और आलेखन' विषयों पर प्रतिभागियों को उपयोगी जानकारी प्रदान की ।

इस कार्यशाला में 20 कर्मचारियों ने भाग लिया । कार्यक्रम की सफलता में श्री संतोष कुमार, आशुलिपिक और श्रीमती अनुराधा का महत्वपूर्ण योगदान रहा ।

एन.एच.पी.सी. लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय, क्षेत्र-III सैक्टर-V सॉल्ट लेक सिटी, कोलकाता

क्षेत्रीय कार्यालय क्षेत्र-III कोलकाता में दिनांक 17-01-2009, 21-01-2009, 24-01-2009 एवं 28-01-2009 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में क्षेत्रीय कार्यालय क्षेत्र-III कोलकाता एवं विभिन्न परियोजनाओं/पावरस्टेशनों व कार्यालयों के 71 अधिकारी/कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया । कार्यशाला का आरम्भ श्री अजय कुमार बक्सी, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) के स्वागत संबोधन के बाद किया गया । कार्यशाला में डा. आर.बी. सिंह, केंद्र प्रभारी, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, कोलकाता अतिथि व्याख्याता के रूप में उपस्थित हुए । उन्होंने कार्यशाला का आरम्भ करते हुए राजभाषा नीति एवं हिंदी व्याकरण के विभिन्न प्रमुख पक्षों पर विस्तृत चर्चा किया । उन्होंने बताया कि किसी चीज को सीखने के पहले उसकी नीति की जानकारी होने से सीखने में रूचि बढ़ती है । अपने चर्चा को आगे बढ़ाते हुए कहा कि हमारे देश के बहुत बड़े भूभाग में हिंदी बोली व समझी जाती है । यह भाषा बहुत ही सरल एवं आसान भाषा है । अब तो हमारे देश के कई हिंदीतर भाषी राज्यों में भी स्कूलों में हिंदी का एक विषय अनिवार्य कर दिए गए हैं । उन्होंने लिपि का परिचय देते हुए कहा की हिंदी की अपनी लिपि नहीं है इसे देवनागरी लिपि में लिखा जाता है जो संस्कृत से लिया गया है । हमारे देश के कई राज्यों के भाषाओं की लिपि भी देवनागरी है एवं यह लिपि कई राज्यों की भाषाओं की लिपि से मिलती जुलती है । हिंदी भाषा के अनेक रूप है । हिंदी हमारे देश के करीब सभी राज्यों में बोली जाती है लेकिन सभी राज्यों में उस राज्य की भाषा के अनुरूप पाई जाती है इस लिए भी हिंदी भाषा सीखने में आसान है ।

हिंदी में पत्र एवं टिप्पण मशौदा लेखन के बारे में विस्तार रूप से बतलाया गया एवं प्रतिभागियों से अभ्यास कराए गए । उसके साथ ही साथ हिंदी के आसान शब्दों वाक्यों एवं अनेक शब्दों का एक शब्द से संबंधित शब्दों के बारे में भी काफी जानकारियाँ दी गई । कार्यशाला के प्रतिभागियों ने भी जानकारी लेने में काफी रूचि दिखाई ।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
5-9-23, हिलफोर्ट रोड, हैदराबाद-063

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम में आज दिनांक 30-03-2009 के पूर्वाह्न में हिंदी कार्यशाला का शुभारंभ हुआ । दो दिन तक चलने वाली इस कार्यशाला का उद्घाटन श्री यू.एच. राव, क्षेत्रीय निदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम-आंध्र प्रदेश हैदराबाद ने किया । निगम के कर्मचारियों को हिंदी का व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान करने और निगम कार्यालयों में मूल हिंदी पत्राचार बढ़ाने के उद्देश्य से कर्मचारियों के लिए क्षेत्रीय आधार पर दो दिवसीय विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन दिनांक :

30-03-2009 से 31-03-2009 तक क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद में किया गया। इस कार्यशाला में क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद के कर्मचारियों ने भाग लिया।

कार्यशाला का उद्घाटन श्री यू.एच. र ; क्षेत्रीय निदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम-आंध्र प्रदेश हैदराबाद ने किया। उद्घाटन के अवसर पर प्रशिक्षार्थियों को संबोधित करते हुए श्री यू.एच. राव, क्षेत्रीय निदेशक ने कहा कि निगम राजभाषा हिंदी की प्रगति के लिए प्रतिबद्ध है इस कार्यशाला का उद्देश्य निगम कार्यालयों में मूल हिंदी के पत्राचार को बढ़ाना है ताकि राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य तो प्राप्त हो ही साथ ही साथ साथी कर्मचारियों को भी हिंदी में काम करने की प्रेरणा मिले और एक हिंदी में सरकारी कामकाज का वातरवरण बने।

इस अवसर पर प्रशिक्षार्थियों को संबोधित करते हुए श्री ए.वी. श्रीनिवासन, संयुक्त निदेशक, क.रा.बी. निगम ने कार्यशाला की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी पत्राचार ही वह एकमात्र औजार है जो किसी भी कार्यालय में हिंदी के कार्यान्वयन की स्थिति को दर्शाता है अत: हमारा उद्देश्य यही रहना चाहिए कि हम मूल रूप से हिंदी में पत्राचार के प्रयास करें।

डॉ. एन. नारायण रेड्डी, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इस विशेष कार्यशाला में केवल क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद के कर्मचारी ही भाग ले रहे हैं। कार्यशाला में उपस्थित सभी कर्मचारियों का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा कि कार्यशाला में कर्मचारियों को इस तकनीक से प्रशिक्षित किया गया कि वे नई तकनीक का उपयोग करते हुए मूल पत्राचार हिंदी में कर सके। उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला के दौरान संघ की राजभाषा नीति, कार्यान्वयन, पत्राचार तथा विविध रिपोर्ट तैयार करने आदि विषयों पर विशेष ध्यान दिया गया। उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला के दौरान संघ की राजभाषा नीति, कार्यान्वयन, पत्राचार तथा विविध रिपोर्ट तैयार करने आदि विषयों पर विशेष ध्यान दिया गया।

श्री कमलेश शर्मा ने कार्यशाला में जानकारी दी कि निगम के कर्मचारियों को हिंदी का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करने व हिंदी पत्राचार को बढ़ाने व पत्राचार की सही ढंग से रिपोर्टिंग के उद्देश्य से कर्मचारियों के लिए दो दिवसीय विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में विभागीय वक्ताओं के रूप में सर्व श्री ए. वी. श्रीनिवासन, डॉ. एन. नारायण रेड्डी, श्री दिनेश सिंह श्री कमलेश शर्मा, आदि मूल हिंदी पत्राचार को बढ़ाने के संबंध में आवश्यक जानकारी व परिचर्चा की।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण पूर्वोत्तर क्षेत्र, गुवाहाटी

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, पूर्वोत्तर क्षेत्र मुख्यालय, लोकप्रिय गोपीनाथ बरढ़लै अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, गुवाहाटी के मुख्य भवन के सम्मेलन हॉल में, दिनांक 04, 05 तथा 06 मार्च, 2009 को पूर्वोत्तर क्षेत्र मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों तथा वरिष्ठ प्रबंधक से ऊपर के स्तर के कार्यपालकों के लिए अर्ध दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित हुई। कार्यशाला की शुरुआत, कार्यपालक निदेशक (पूर्वोत्तर क्षेत्र) श्री सुभाष चन्द्र शर्मा के संक्षिप्त संबोधन से हुई। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन, हिंदी के कामकाज में आनेवाली समस्याओं के निवारण के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होता है। हिंदी कार्यशाला में प्रशिक्षित अधिकारियों का यह पुनीत कर्तव्य होता है कि वे अपने ज्ञान का उपयोग, राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में करें तथा अपने अधीनस्थों को भी कार्यालय कार्य हिंदी में करने के लिए उत्प्रेरित करें।

श्री राधेश्याम उपाध्याय, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, भारत सरकार, राजभाषा विभाग, मालीगांव, गुवाहाटी ने अपने उद्गार में कहा कि जब तक भारत सरकार के कार्यालयों में कार्यालयीय कार्य, अधिक से अधिक परिमाण में नहीं होने लगते, तब तक हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन की प्रासंगिकता बनी रहेगी। मूल बात यह समझनी है कि हमें अपने कार्यालय का काम, पांडित्यपूर्ण हिंदी में नहीं करना है। इसमें अँग्रेजी के चलते शब्दों का भी धड़ल्ले से (नागरी लिपि में) प्रयोग करना है। कार्यक्रम का संक्षिप्त संचालन डॉ. दुर्गाशरण मिश्र, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) ने किया।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कार्यपालक निदेशक (पूर्वोत्तर क्षेत्र) श्री सुभाष चन्द्र शर्मा ने कहा कि भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, भारत सरकार की राजभाषा नीति के सम्यक् अनुपालन में निष्ठा से जुटा है। इसके परिणाम

दिखने भी लगे हैं । सभा का संचालन सहायक प्रबंधक (राजभाषा) डॉ. दुर्गाशरण मिश्र ने किया ।

आकाशवाणी : हैदराबाद-500 156

आकाशवाणी, हैदराबाद में दिनांक 05-02-2009 को एक-दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में किया गया ।

कार्यशाला का उद्घाटन श्री पी. राजाराव, उपनिदेशक, क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान (कार्यक्रम), आकाशवाणी, हैदराबाद एवं कार्यालयाध्यक्ष ने किया । उन्होंने अपने भाषण में राजभाषा हिंदी सीखने की आवश्यकता और कार्यालय में हिंदी के प्रयोग करने की अनिवार्यता पर जोर दियां ।

कार्यशाला में श्रीमती सुरभि, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, हैदराबाद ने व्याख्यान दिया । पहले सत्र में उन्होंने "भारत सरकार की राजभाषा नीति, अधिनियम, नियम" पर विस्तृत जानकारी दी ।

दूसरे सत्र में, उन्होंने हिंदी में टिप्पण और मसौदा-लेखन, प्रशासनिक शब्दावली, सरकारी कामकाज में नेमी रूप से प्रयोग में आने वाले अंग्रेजी के वाक्यांशों/पदबंधों एवं उनके हिंदी रुपान्तर आदि के बारे में समझाया एवं प्रतिभागियों से व्यावहारिक अभ्यास भी करवाया । साथ ही उन्होंने प्रतिभागियों द्वारा उठाए गए प्रश्नों का समाधान भी किया । कुछ प्रतिभागियों ने अपने विचार भी व्यक्त किए ।

कार्यशाला में आकाशवाणी के मुख्य भवन में ही स्थित विज्ञापन प्रसारण सेवा, सिविल निर्माण स्कंध, विपणन प्रभाग, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन और क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान (कार्यक्रम), आकाशवाणी कार्यालयों के कर्मचारियों सहित आकाशवाणी, हैदराबाद के कुल मिला कर 17 अधिकारियों/कर्मचारियों ने सक्रिय भाग लिया ।

बैंक ऑफ बड़ौदा
क्षेत्रीय कार्यालय (गोवा और प.म. क्षेत्र) : प्लाझा चेंबर्स, चौथी मंजिल, डॉ. आत्माराम बोरकर रोड, पणजी-गोवा-403006

बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी, गोवा में दिनांक 16-02-2009 को सभागार कक्ष में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें गोवा राज्य स्थित हमारी 25 शाखाओं में से कुल 20 स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया । सभी स्टाफ सदस्यों में हिंदी के प्रति अगाध रूचि दिखी ।

इस कार्यशाला का उद्घाटन उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री एस.बी. डोंगरे जी ने किया । इसमें मुख्य प्रबंधक (प्रशिक्षण) श्री प्रदीप श्रीवास्तव जी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था । हिंदी कार्यशाला के आरंभ में राजभाषा अधिकारी श्री राजीव कुमार ने उप क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय श्री डोंगरे जी, मुख्य प्रबंधक श्री श्रीवास्तव जी, प्रबंधक श्री अरुण जी एवं उपस्थित सभी अन्य स्टाफ सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया ।

उप क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय श्री डोंगरे जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमें अपनी राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा का सम्मान करना चाहिए और अपना कार्य हिंदी में कर यह सिद्ध भी करना चाहिए । श्री श्रीवास्तव जी ने अपना व्याख्यान देते हुए राजभाषा हिंदी के संवैधानिक दायित्व के बारे में जानकारी दी और बताया कि प्रत्येक सरकारी कार्यालय, उपक्रम एवं बैंक का यह दायित्व है कि वे अपनी राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करे । साथ ही, उन्होंने हिंदी में नोटिंग एवं टिप्पणी लिखने के आसान तरीकों को भी बताया कि कैसे हम हिंदी में टिप्पणियां लिख सकते हैं । अपने ग्राहकों को पावती जैसे पत्र हिंदी में आसानी से तैयार कर भेजे जा सकते हैं ।

राजभाषा अधिकारी श्री राजीव कुमार ने हिंदी कार्यशाला में उपस्थित सभी स्टाफ सदस्यों को विभिन्न प्रकार के बैंकिंग शब्दों, वाक्यांशों इत्यादि का प्रयोग करना सिखाया । सभी स्टाफ सदस्यों को कुछ अभ्यास प्रश्न-पत्र प्रदान किए गए और उनसे उन्हें हल करने का अनुरोध किया गया । इस दौरान एक वचन, बहुवचन, शुद्ध एवं अशुद्ध शब्दों में अंतर, प्रशासनिक शब्दों के प्रयोग में सावधानी जैसे विभिन्न पहलुओं पर भी चर्चा की गई ।

इस कार्यशाला के अंत में, श्री अरुण कुमार, प्रबंधक (मानव संसाधन) ने उपस्थित अधिकारियों एवं स्टाफ सदस्यों को धन्यवाद दिया ।

राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, सैक्टर-67, एस.ए.एस. नगर, (मोहाली)-160 062

राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (नाईपर), एस.ए.एस. नगर में वर्ष 2009 की प्रथम हिंदी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 13 मार्च, 2009 को किया गया । इस कार्यशाला में संस्थान के छात्रों, कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया । कार्यशाला के दौरान दो प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें श्रुतलेख प्रतियोगिता एवं हास्य काव्य पाठ प्रतियोगिता शामिल था । हास्य कविता पाठ प्रतियोगिता में कुल पांच प्रतिभागियों एवं श्रुतलेख प्रतियोगिता में करीब 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

प्रतियोगिंताओं में प्रथम एवं द्विवितीय स्थान पर आने वाले प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार के रूप में क्रमश: रु. 500 एवं रु. 250 तथा प्रमाणपत्र प्रदान किए गए ।

संपन्न कार्यशाला के पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में प्रो. पी. रामाराव, निदेशक, नाइपर ने अपने भाषण के दौरान कहा कि यह हर्ष की बात है कि नाईपर के छात्रों में हिंदी के प्रति काफी उत्साह है, ये एक अच्छी बात है । इसके अलावा हिंदी के प्रोत्साहन और कार्यान्वयन के लिए समस्त नाइपरवासियों की ओर से किये जा रहे प्रयास प्रशंसनीय हैं एवं हम अपेक्षा करते हैं कि हिंदी की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए समस्त नाईपरवासी मिलजुल कर कार्य करेंगे तथा संस्थान में राजभाषा को उचित स्थान दिलाने में भरपूर सहयोग करेंगे ।

कार्यशाला में प्रतियोगिताओं के निर्णायक सदस्य के रूप में डॉ. ईप्सिता रॉय, सहायक प्राध्यापक उपस्थित थी । श्री भूपिन्दर सिंह, कार्यवाहक कुलसचिव एवं श्री संतोष सोगौरा, प्रभारी अधिकारी (राजभाषा) के अलावा संस्थान के कर्मचारीगण तथा विद्यार्थीगण उक्त कार्यक्रम में उपस्थित थे ।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, जलगांव

राजभाषा नियमों का अनुपालन करते हुए सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया एवं भारत संचार निगम लि., जलगांव द्वारा दि. 25-02-2009 को भारत संचार निगम लि., जलगांव के सभागृह में लिपिक कर्मचारियों हेतु एक दिवसीय संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

प्रथमत: हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन प्रात: 10.00 बजे किया गया । इस समारोह की अध्यक्षता श्री पी.के. मोहंती, अध्यक्ष, न.रा.का.सं., जलगांव ने की । इस अवसर पर गणमान्य व्यक्तियों के साथ भारत संचार निगम लि., जलगांव के महाप्रबन्धक श्री ए.एल. पटेल प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे । दोनों महानुभावों का सर्वप्रथम स्वागत किया गया । तत्पश्चात् कार्यसूची के अनुसार आगे की कार्यवाही आरंभ हुई ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, जलगांव के क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री पी.के. मोहंती ने सर्वप्रथम कार्यशाला में उपस्थित प्रमुख अतिथि एवं प्रतिभागियों का हृदय से स्वागत किया और कहा कि दि. 15-11-2008 को इसी स्थान पर अधिकारियों के लिए बी.एस.एन.एल. के साथ संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन हुआ था । वह सपना जैसा था लेकिन आज इस सफलता का दूसरा चरण है कि दोनों संस्थाओं के लिपिक वर्ग के लिए आज हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई है । यह बड़े ही हर्ष का विषय है कि दोनों ही संस्थाओं का फायदा होगा और इस फायदे में हिंदी का प्रचार और प्रसार भी बढ़ेगा । उन्होंने सभी को शुभ संदेश देते हुए कार्यशाला की सफलता की कामना की ।

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित बी.एस.एन.एल. के महाप्रबन्धक श्री ए.एल. पटेल जी ने अपने उद्बोधन में सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया । उन्होंने भी दोनों संस्थाओं के मेल को एक बहुत बड़ा अवसर बताया और अपने आप में एक अनूठा अनुभव बताया । उन्होंने कहा कि यह एक बड़ा सुखद प्रयास है और इससे विश्वबंधुत्व की भावना के साथ-साथ लोगों का मेल मिलाप बढ़ेगा, एक दूसरे के कार्यालयों की कार्यप्रणाली के बारे में भी पता चलेगा और हिंदी के प्रचार प्रसार में दोनों संस्थान किस तरह एक दूसरे का साथ दे सकते हैं कि संभावनाओं का भी पता चलेगा । उन्होंने यह भी कहा कि आर्थिक मंदी के दौर में इस प्रकार आधारभूत ढांचे का संयुक्त उपयोग करते हुए खर्चे बचाने के क्षेत्र में यह एक अनूठी पहल साबित होगी ।

गोवा शिपयार्ड लिमिटेड, वास्को-द-गामा, गोवा-403802

गोवा शिपयार्ड लिमिटेड में राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी बनाने एवं भारत सरकार के वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप कार्य योजना के निर्धारण हेतु रियर ऐडमिरल (निवृत्त) अनिल कुमार हांडा, अविसेप, विसेप, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक गोवा शिपयार्ड लिमिटेड की अध्यक्षता में दिनांक 27 दिसम्बर, 2008 को आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 40वीं बैठक में लिए गए निर्णयानुसार हिंदी में अधिक-से-अधिक काम करने के लिए अपने अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से गोवा शिपयार्ड में प्रयोजनमूलक राजभाषा कार्यशाला 10 फ़रवरी, 2009 से 13 फरवरी, 2009 तक आयोजित की गई ।

प्रयोजनमूलक राजभाषा कार्यशाला का उद्घाटन श्री महेश मिश्रा, राजभाषा अधिकारी, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, पणजी ने किया । उन्होंने अपने उद्बोधन में हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए प्रतिभागियों से आग्रह किया कि वे अपना सरकारी काम-काज अधिक से अधिक हिंदी में करें । कार्यशाला की प्रस्तावना रखते हुए उप प्रबंधक (राजभाषा), श्री एस.बी. प्रभुदेसाई ने प्रयोजनमूलक कार्यशाला का महत्व तथा विषय की गंभीरता से कर्मचारियों को अवगत कराते हुए कार्यालय में प्रयुक्त अक्षर नवीन सॉफ्टवेयर का कम्प्यूटर पर प्रयोग करने का आवाह्न कर्मचारियों से किया । उन्होंने निमंत्रित संकाय अतिथियों का परिचय विवरण प्रस्तुत कर स्वागत किया । लेफ्ट. कर्नल टी.एम. शर्मा, उप महाप्रबंधक (प्रशासन) ने इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त किए एवं उम्मीद जताई कि सभी प्रतिभागी इससे लाभान्वित होंगे । प्रयोजनमूलक कार्यशाला के द्वितीय सत्र में डॉ. मंगल प्रसाद, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), कुद्रेमुख आयरन ओर, बैंगलोर ने हिंदी को राजभाषा बनाए जाने की पृष्ठभूमि बताते हुए डेस्क संबंधित शब्दों के सरल एवं आसान प्रयोग पर जोर दिया तथा कठिन शब्दों को बड़े ही मनोरंजन ढंग से छोटे-छोटे उदाहरणों से भी समझाया ।

हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य एवं हिंदी संवाद सेतु पत्रिका, हैदराबाद के संपादक श्री शशि नारायण स्वाधीन ने प्रयोजनमूलक कार्यशाला में प्रतिभागियों को कार्यालयी ज्ञान के अतिरिक्त 'राजभाषा विकास यात्रा' के बारे में जानकारी प्रदान की । उन्होंने हिंदी को राष्ट्रीय एकता की कड़ी बताते हुए कहा कि हिंदी हमारी संस्कृति का संवाहक है । इसके बाद भारत सरकार की राजभाषा नीति पर सत्र में श्री विजय कुमार, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), नेशनल मिनरल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड, हैदराबाद ने हिंदी की संवैधानिक स्थिति, राजभाषा अधिनियम एवं राजभाषा नियमों की विभिन्न धाराओं की जानकारी देते हुए इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार प्राप्ति के कुछ आवश्यक मुद्दों की ओर संकेत किया । रक्षा उत्पादन विभाग की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 75वीं बैठक कार्यवृत्त में 'गोवा शिपयार्ड' लिमिटेड द्वारा हिंदी पत्राचार में अच्छी वृद्धि की जाने की सराहना की गई और आशा व्यक्त की कि यह उपक्रम आगे भी यह प्रक्रिया जारी रखेगा' का उल्लेख करते हुए राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, विशाखापत्तनम के सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री कृष्णबाबू ने प्रतिभागियों को अपने दैनंदिन के कार्यों में बेझिझक हिंदी का प्रयोग करने का, सरल एवं सुबोध भाषा का प्रयोग करने का तथा कठिन शब्दों के प्रयोग से बचे रहने का अनुरोध किया । अपने उत्पादों के प्रचार के लिए हिंदी का प्रयोग करने वाली विदेशी कंपनियों का उदाहरण देते हुए उन्होंने आगे कहा कि, हिंदी भाषा बड़ी तेजी से विज्ञापन के लिए प्रमुख भाषा बन गई है ।

प्रयोजनमूलक कार्यशाला के अगले सत्र का प्रारंभ श्री इम्तियाज अली, हिंदी अनुवादक, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, दाबोलिम द्वारा कार्यालय में हिंदी का प्रगतिगत प्रयोग और अनुवाद पर चर्चा के साथ शुरू हुआ, उन्होंने हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के बारे में बड़े ही प्रभावी ढंग से कुछ जरूरी बातों पर चर्चा की तथा कार्यालय में हिंदी में काम को आसानी से निपटाने के बारे में भी जानकारी दी । इसके बाद माननीय हिंदी सलाहकार समिति के अन्य एक सदस्य प्रो. राम मोहन पाठक, निदेशक, महामना मदन मोहन मालवीय हिंदी पत्रकारिता संस्थान, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी ने अपने वक्तव्य में हिंदी को अपने तंत्र में पूरी इज्जत देने की सलाह दी । उन्होंने प्रतिभागियों को उद्बोधित करते हुए कहा कि, हम किसी भी काम को दिल लगाकर करें । उन्होंने हिंदी कार्यशाला संचालन करने संबंधी कुछ आवश्यक निर्देशों के बारे में जानकारी देते हुए

कहा कि, इसके लिए पहले ही कार्य योजना तैयार करनी चाहिए । उन्होंने बल देते हुए कहा कि, औषधालयों से खरीदी जाने वाली औषधों पर विवरण हिंदी में भी होना है । प्रो. बी.के. शर्मा, 'राहिताश्व', गोवा विश्वविद्यालय, तालेगांव ने गोवा शिपयार्ड में हो रहे हिंदी प्रयोग पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि, राजभाषा के क्षेत्र में भी गोवा शिपयार्ड का नाम ऊँचा हो । जिसके लिए उन्हें पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है, इसे और आगे बढ़ाने का उन्होंने अनुरोध किया । अपने सारगर्भित व्याख्यान से उन्होंने प्रतिभागियों को प्रेरित करने तथा व्यवहारिक बनाने की कोशिश की । अपने निराले अंदाज में व्याख्यान प्रस्तुत कर उन्होंने सभी प्रतिभागियों का मन मोह लिया ।

हिंदी में टिप्पण प्रारूपण विषय पर श्री देवकीनंदन पाठक, हिंदी प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, पणजी ने सत्र संचालित किया । उन्होंने हिंदी टिप्पण-प्रारूपण में प्रयुक्त होनेवाले पत्राचार के विभिन्न रूपों की जानकारी देते हुए अच्छी टिप्पणी लिखने की अपेक्षाओं से प्रतिभागियों को अवगत कराया । इसके बाद श्री राजीव कुमार, राजभाषा अधिकारी, बैंक ऑफ बड़ौदा, पणजी ने अपने व्याख्यान में प्रतिभागियों से 'इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो ना' प्रार्थनापाठ संकल्प के रूप में करा लिया । हिंदी के पारिभाषिक शब्दों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए व्यवहार तथा दैनिक कार्यों में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का उन्होंने अभ्यास भी कराया, प्रपत्र भरवाया एवं उसकी जाँच की ।

श्री जी.पी. गुप्ता, राजभाषा अधिकारी, बैंक ऑफ महाराष्ट्र, पणजी ने अपने भाषण में राजभाषा-संपर्क भाषा की व्याख्या देते हुए कहा कि दिन-प्रतिदिन राजभाषा हिंदी का विस्तार हो रहा है । आगे उन्होंने कहा कि विश्व में हिंदी भाषा का तीसरा स्थान है । अत: हिंदी ही हमारी राजभाषा हो सकती है । हिंदी बोलने में आसान है । जैसी बोली जाती है, वैसी ही लिखी जाती है । इसके प्रयोग में संकोच न करें । हिंदी के प्रति अपने हीन भाव को त्याग कर राजभाषा हिंदी को अपनाएं । उन्होंने प्रतिभागियों की रोजमर्रा के कार्य में आने वाली समस्याओं और कठिनाइयों के निवारण के बारे में चर्चा कर उनकी शंकाओं का समाधान किया । समापन के अवसर पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दक्षिण गोवा के सदस्य सचिव एवं मुरगांव पत्तन न्यास के हिंदी अधिकारी श्री राजेंद्र सिंह ने सभी को संबोधित करते हुए हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया । हिंदी के पत्राचार को बढ़ाने की दृष्टि से शुद्ध हिंदी में टिप्पणी लिखने, पढ़ने और समझने में सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से टेबल कैलेंडर के रूप में मानक टिप्पणियां तैयार कर सभी उपस्थित प्रतिभागियों को इसकी एक-एक प्रति वितरित की गई । इससे न केवल शुद्ध हिंदी लिखने में मदद मिलेगी वरन् उनकी झिझक मिटाने में भी सहायता मिलेगी । यह टेबल कैलेंडर हिंदी भाषा का सही प्रयोग जानने के लिए इच्छुक तथा दैनिक कार्यालयीन कार्यों में उसके प्रयोग करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए काफी सहायक मार्गदर्शक है । प्रतिभागियों ने कार्यशाला को उपयोगी बताया तथा सकारात्मक विचार व्यक्त करते हुए कहाकि, ऐसे कार्यशालाओं के आयोजन से कर्मचारियों की झिझक तो समाप्त होगी ही इसके अलावा आत्म विश्वास के साथ सरकारी काम-काज हिंदी में निष्पादित करने की क्षमता में भी वृद्धि होगी । अंत में वरिष्ठ हिंदी अनुवादक श्रीमती सैली थोमस के धन्यवाद ज्ञापन के उपरांत प्रयोजनमूलक हिंदी कार्यशाला का समापन हुआ । प्रयोजनमूलक हिंदी कार्यशाला का सफल आयोजन करने में हिंदी अनुभाग के श्री सौगत कुमार पालित का सक्रिय योगदान प्राप्त हुआ । डिजाइन, आयोजना विभाग एवं लिपिक स्तरीय कुल 70 कर्मचारियों ने उत्सुकतापूर्ण माहौल में लगन सक्रियता के साथ उत्साह और रुचि से भाग लेकर कार्यशाला को सफल बनाया ।

एन.एच.पी.सी. लिमिटेड, कार्यालय कार्यपालक निदेशक (क्षेत्र-4), 74-75, दक्षिण मार्ग, सैक्टर -31ए, चण्डीगढ़-160030

क्षेत्रीय कार्यालय, चण्डीगढ़ में 11 फरवरी, 2009 को अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला का उद्घाटन श्री स्वतंत्र कुमार, महाप्रबंधक ने किया । श्री स्वतंत्र कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि इस कार्यालय में हिंदी कार्याशालाओं का निरंतर आयोजन किया जा रहा है जिसके माध्यम से अधिकारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित किया जाता है । हम सब का दायित्व है कि हम

हिंदी को अपने दैनिक कार्य में अधिक से अधिक प्रयोग में लाएं । उन्होंने प्रतिभागियों से अपना कार्य हिंदी में करने के लिए आह्वान भी किया । हम अपने व्यवहार के अधिकतर कार्य अपनी भाषा में भी पूरे करते हैं । हिंदी में हम अपने भावों को स्वतंत्र रूप से प्रकट कर सकते हैं । इसलिए मैं चाहता हूं कि सभी अधिकारी व कर्मचारी बिना किसी संकोच के अपने कार्य में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें ।

कार्यशाला में श्री संत राम, सहायक निदेशक (राजभाषा), हिंदी शिक्षण योजना, चण्डीगढ़ ने हिंदी का महत्व विषय पर व्याख्यान दिया । दूसरा व्याख्यान सुश्री नीरू, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, केंद्रीय वैज्ञानिक यंत्र संगठन ने हिंदी वर्तनी पर व्याख्यान दिया और अधिकारियों व कर्मचारियों की कई शंकाओं का समाधान भी किया । कार्यशाला के दौरान श्री अर्नेष्ट तिर्की, प्रमुख (मानव संसाधन) ने अतिथि वक्ताओं का स्वागत किया और प्रतिभागियों का परिचय करवाया । इस अवसर पर श्री रूपेश सूद, वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त) भी उपस्थित थे ।

कार्यशाला में श्री देश राज, सहायक राजभाषा अधिकारी ने अभ्यास सत्र में प्रतिभागियों को हिंदी शब्दावली व छोटी-छोटी टिप्पणियां हिंदी में लिखने का अभ्यास कराया । कार्यशाला में 16 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ कोल मैनेजमैंट, कांके, रांची-834006

आई.आई.सी.एम. में कोल इंडिया के अधिकारियों के लिए "राजभाषा का प्रयोग" विषयक एक चार द्विवसीय (9 से 12 फरवरी, 2009) हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कोल इंडिया की विभिन्न अनुषंगी कंपनियों के विभिन्न भाषा-भाषी प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

कार्यशाला का शुभारंभ रांची दूरदर्शन के केंद्र निदेशक डॉ. शैलेश पंडित ने किया । कार्यशाला में सर्वश्री ए.के. मिश्र, डॉ. विद्याभूषण, कौशल किशोर ओझा, डॉ. नागेश्वर सिंह, डॉ. माया प्रसाद, कुशेश्वर ठाकुर, सुरेश प्रसाद, डॉ. रमापति तिवारी तथा पी.सी. मिश्र ने राजभाषा हिंदी के प्रयोग की विभिन्न पहलुओं से प्रतिभागियों को परिचित कराया ।

आई.आई.सी.एम. के कार्यकारी निदेशक प्रो. सुदीप घोष ने कार्यशाला का समापन करते हुए कहा कि हिंदी एक सशक्त भाषा है जो भारत की सभी भाषाओं को आपस में जोड़ती है और एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व और अस्तित्व के लिए राजभाषा हिंदी की जानकारी आवश्यक है ।

एन.एच.पी.सी. लिमिटेड, सैक्टर-33, फरीदाबाद

निगम में कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य की मात्रा को बढ़ाने के लिए निगम मुख्यालय में दिनांक 19 व 20 फरवरी, 2009 को चार हिंदी कम्प्यूटर कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इन कार्यशालाओं में 88 प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया गया ।

कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए कार्यपालक निदेशक महोदय ने अपने उद्बोधन में सभी प्रतिभागियों को इन कार्यशालाओं में भाग लेने पर सराहना की। उन्होंने कार्यशालाओं की उपयोगिता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इन कार्यशालाओं में जो प्रशिक्षण दिया जाएगा उसके माध्यम से कम्प्यूटर पर कार्य करना सहज और सरल हो जाएगा। उन्होंने कहा कि इससे प्रतिभागियों की कार्य क्षमता में वृद्धि होगी ही साथ-साथ निगम के राजभाषा कार्य में भी प्रगति होगी। यह निश्चित रूप से राजभाषा कार्य के क्षेत्र में सराहनीय एवं प्रशंसनीय कदम होगा। कार्यपालक निदेशक महोदय ने प्रतिभागियों से आह्वान किया कि वे पूरे समय बैठकर हिंदी कम्प्यूटर कार्यशाला का लाभ उठाएं। उन्होंने विभागाध्यक्षों का भी धन्यवाद किया जिन्होंने अपने विभाग से कार्मिकों को इन हिंदी कम्प्यूटर कार्यशालाओं के लिए नामित किया। कार्यपालक निदेशक महोदय ने अंत में सभी प्रतिभागियों से यह भी आह्वान किया कि वे इन कार्यशालाओं में दी जाने वाली जानकारी का उपयोग अपने दैनिक कार्यालयीन कार्य में करें और कंप्यूटर पर अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करें। उन्होंने कहा कि इन कम्प्यूटर कार्यशालाओं में दी जाने वाली महत्वपूर्ण जानकारी से वे दैनिक कार्य का डाटा बैंक तैयार कर सकते हैं और उसका उपयोग कार्यालयीन कार्य में कर सकते हैं। इससे हमारे निगम में राजभाषा कार्य के क्षेत्र में निश्चित रूप से प्रगति होगी और आप और निगम दोनों ही राजभाषा कार्य के क्षेत्र में और अधिक शील्ड एवं पुरस्कार प्राप्त कर पाएंगे ।

इसके बाद प्रमुख (मानव संसाधन व राजभाषा) श्री अविनाश कुमार ने भी उपस्थित प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि हमारे निगम में समय-समय पर सभी स्तर के कार्मिकों के लिए हिंदी कार्यशालाएं, हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि आयोजित किए जाते हैं। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार आज हमारे जीवन में कम्प्यूटर का उपयोग बढ़ता ही जा रहा है और सभी कार्यालयीन कार्यों में कम्प्यूटर की उपयोगिता बढ़ती जा रही है। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि हम अपने निगम में भी अधिक से अधिक कार्य कम्प्यूटर पर हिंदी में ही करें। प्रमुख (मानव संसाधन व राजभाषा) ने बताया कि हमारे निगम में ई.आर.पी. का उपयोग होने के बाद तो यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हम आधुनिक तकनीक और आधुनिक हिंदी सॉफ्टवेयर की जानकारी प्राप्त करें। इसी उद्देश्य से निगम मुख्यालय में इन हिंदी कम्प्यूटर कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। साथ ही उन्होंने बताया कि चूंकि हिंदी एक सहज और सरल भाषा है और वैज्ञानिक दृष्टि से भी देवनागरी लिपि अत्यन्त स्टीक है। इसलिए कम्प्यूटर पर कार्य करना अधिक सरल है। उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान किया कि वे इन कार्यशालाओं में दी जाने वाली जानकारी का पूरा लाभ उठाएं और उसका उपयोग अपने कार्यालयीन कार्यों में करें ।

तत्पश्चात् डॉ. राजबीर सिंह वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने भी हिंदी कार्यशालाओं के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने विशेष रूप से हिंदी कम्प्यूटर कार्यशालाओं के बारे में बताया कि इन कार्यशालाओं में आधुनिक हिंदी सॉफ्टवेयर के संबंध में नवीनतम जानकारी दी जाएगी। उन्होंने कहा कि यह प्रशिक्षण उन कार्मिकों के लिए भी लाभप्रद होगा जिन्हें हिंदी टाइपिंग नहीं आती है और वे किस प्रकार कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य कर सकते हैं और निगम में राजभाषा का प्रयोग बढ़ा सकते हैं ।

इन हिंदी कम्प्यूटर कार्यशालाओं का संचालन करते हुए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय से आमंत्रित श्री केवल कृष्ण, तकनीकी निदेशक (राजभाषा) ने हिंदी कार्य क्षेत्र में नवीनतम प्रौद्योगिक के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी । उन्होंने बताया कि जिस प्रकार आज का युग कम्प्यूटर का युग बन गया है और हमारे दैनिक व कार्यलयीन कार्यों में कम्प्यूटर का प्रयोग बढ़ता ही जा रहा है। इसलिए यह आवश्यक है कि हमें कम्प्यूटर की अद्यतन जानकारी हो। उन्होंने इन कार्यशालाओं के माध्यम से प्रतिभागियों को अद्यतन हिंदी सॉफ्टवेयर के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी देने के साथ-साथ यह भी बताया कि हिंदी टाइपिंग न जानते हुए भी हम किस प्रकार सहजता और सरलता से कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य कर सकते हैं और इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड, फोनेटिक की-बोर्ड के माध्यम से किस प्रकार कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य किया जा सकता है। उन्होंने इन कर्यशालाओं में कम्प्यूटर पर यूनिकोड की उपयोगिता के बारे में बताते हुए यूनिकोड में हिंदी कार्य करने का प्रशिक्षण भी दिया। प्रशिक्षण देने के साथ-साथ प्रतिभागियों को कम्प्यूटर पर हिंदी कार्य का अभ्यास भी कराया गया। इन चार हिंदी कम्प्यूटर कार्यशालाओं में प्रतिभागियों की कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करने में आने वाली कठिनाईयों का समाधान व निवारण भी किया गया। सभी प्रतिभागियों ने इन कार्यशालाओं की प्रशंसा करते हुए इन्हें अत्यन्त उपयोगी एवं महत्वपूर्ण बताया ।

अंत में डॉ. सोना शर्मा, प्रबंधक (राजभाषा) ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि हमारा निगम सभी कार्मिकों के सम्मिलित प्रयासों से ही राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में नई-नई उपलब्धियां प्राप्त कर रहा है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार प्रारंभ में कोई भी नया कार्य करने में समस्याएं आती हैं उसी प्रकार अद्यतन तकनीक के माध्यम से कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करने पर भी कुछ कठिनाईयां आती हैं । इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए ही चार हिंदी कम्प्यूटर कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है। उन्होंने सभी का धन्यवाद करते हुए कहा कि आशा है कि सभी प्रतिभागी इन कार्यशालाओं से लाभ उठाएंगे और उसका उपयोग अपने कार्यलयीन कार्यों में करेंगे ।

आकाशवाणी : नागपुर

आकाशवाणी, नागपुर में शुक्रवार, दिनांक 13 मार्च, 2009 को "एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला" का आयोजन किया गया। आकाशवाणी, नागपुर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित इस कार्यशाला का शुभारंभ, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री मोहन सिंह, अधीक्षण अभियंता की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। केंद्र अभियंता श्री संजय एस. बोदेले विशेष रूप से उपस्थिति थे। प्रमुख वक्ता, प्राध्यापक श्री सोमपाल सिंग का अधीक्षण अभियंता

श्री मोहन सिंह ने पुष्पगुछ देकर स्वागत किया तथा श्री मोहन सिंह, अधीक्षण अभियंता का स्वागत श्री संजय एस. बोदेले, केंद्र अभियंता ने किया। श्री संजय एस. बोदेले का स्वागत श्रीमती ओमनयम्मा जे. प्रशासनिक अधिकारी ने किया। कार्यशाला का संचालन कार्यक्रम अधिकारी अमर रामटेके ने किया।

कार्यशाला का मार्गदर्शन श्री सोमपाल सिंह, प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, नागपुर ने किया। "हिंदीतर भाषियों को हिंदी लिखने में होने वाली कठिनाईयाँ" विषय पर बहुमूल्य मार्गदर्शन दिया तथा उच्चारण, मात्रा तथा वर्तणी का प्रयोग कैसे किया जाता है इसे उदाहरण के साथ प्रस्तुत किया जिसका लाभ सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने लिया । कार्यशाला में आकाशवाणी, नागपुर के 22 अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे ।

राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान, 5, सीरी इंस्टीट्यूशनल एरिया, हौजखास, नई दिल्ली

संस्थान के अधिकारी/कर्मचारी अपना कामकाज हिंदी में सरलता से कर सकें, इसके लिए संस्थान में नियमित रूप से हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में संस्थान के संकाय सदस्यों के लिए 13 मार्च, 2009 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

इस कार्यशाला का उद्देश्य संस्थान के संकाय सदस्यों को राजभाषा नीति और इससे संबंधित नियमों की जानकारी देना और प्रशिक्षण कार्यक्रमों से संबंधित पत्राचार तथा कार्यक्रम अनुसूची बनवाने का अभ्यास कराना था ।

इस कार्यशाला में संस्थान के कुल 14 संकाय सदस्यों ने भाग लिया ।

डॉ. (श्रीमती) कुसुम अग्रवाल, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली और श्री यशपाल शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा), प्रशुल्क आयोग, नई दिल्ली इस कार्यशाला के अतिथि वक्ता थे ।

कार्यशाला के विषयों को भाषण एवं अभ्यास पद्धति द्वारा प्रतिपादित किया गया। इस कार्यशाला में दो सत्र रखे गए थे। पहले सत्र के दौरान सहभागियों को राजभाषा नीति और राजभाषा संबंधी नियमों की जानकारी दी गई और दूसरे सत्र के दौरान प्रशिक्षण कार्यक्रमों से संबंधित पत्राचार और कार्यक्रम अनुसूची बनवाने का अभ्यास कराया गया ।

इस कार्यशाला का उद्घाटन डॉ. दिनेश पाल, अपर निदेशक (टीसी) ने किया। उन्होंने आशा प्रकट की कि कार्यशाला सहभागियों के लिए उपयोगी रहेगी तथा इससे संस्थान में हिंदी के कार्य को बढ़ावा मिलेगा ।

केंद्रीय भूमि जल बोर्ड मुख्यालय, फरीदाबाद

दिनांक 19-20 मार्च, 2009 को केंद्रीय भूमि जल बोर्ड मुख्यालय में दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन के अवसर पर प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए श्री बी.एम. झा, अध्यक्ष ने कहा कि कार्यालय में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग हमारा नैतिक दायित्व है । उन्होंने कहा कि हिंदी ऐसा विशाल प्रवाह है जिसमें देश की सभी नदियां समाहित हैं । अध्यक्ष महोदय ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फरीदाबाद एवं जल संसाधन मंत्रालय द्वारा केंद्रीय भूमि जल बोर्ड को हिंदी कार्यान्वयन में उल्लेखनीय कार्य के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान करने पर अधिकारियों/कर्मचारियों को बधाई दी। श्री एस.के. सिन्हा, निदेशक (प्रशा.) ने कहा कि विभाग में हिंदी प्रयोग और कार्यान्वयन की दिशा में उत्तरोत्तर प्रगति हो रही है । हमें राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए निरंतर लक्ष्य प्राप्ति हेतु प्रयासरत रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला हिंदी प्रयोग को प्रोत्साहित करने में सहायक सिद्ध होगी । कार्यशाला में आमंत्रित विद्वानों ने भारत सरकार की राजभाषा नीति, हिंदी पत्राचार, हिंदी टिप्पणी लेखन आदि विषयों पर व्याख्यान दिए तथा व्यवहारिक अभ्यास करवाया। कार्यशाला में केंद्रीय भूमि जल बोर्ड के 20 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया ।

कार्यशाला के समापन समारोह के अवसर पर श्री एस. के. सिन्हा, निदेशक (प्रशा.) ने सभी प्रतिभागियों के विचार सुने और कार्यशाला की समीक्षा प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि हम जब दैनिक जीवन में हिंदी का प्रयोग कर सकते हैं तो कार्यालय के कार्यों को हिंदी में करने में कोई कठिनाई नहीं

होनी चाहिए। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि प्रत्येक तिमाही में एक कार्यशाला का आयोजन अवश्य किया जाना चाहिए ।

इस अवसर पर हिंदी कार्यशाला राजभाषा प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें तीन प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार दिए गए। अंत में कार्यशाला के संयोजक एवं उपनिदेशक (रा.भा.) डॉ. वीरेन्द्र कुमार सिंह के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन हुआ ।

गृह मंत्रालय, नॉर्थ ब्लाक, नई दिल्ली

सरकारी काम-काज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़वा देने तथा सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग की झिझक को दूर करने की दिशा में दिनांक 19 और 20 मार्च, 2009 को गृह मंत्रालय, नॉर्थ ब्लॉक में एक-दो दिवसीय हिंदी-कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में गृह मंत्रालय के उप-निदेशक (राजभाषा) डॉ. वेद प्रकाश दूबे ने निम्नलिखित विषयों पर व्याख्यान दिए :-

1. सरकार की राजभाषा-नीति, संवैधानिक उपबंध, राजभाषा अधिनियम, 1963 तथा राजभाषा नियम 1976 का कार्यान्वयन ।
2. तिमाही प्रगति रिपपोर्ट संबंधी जानकारी।
3. वार्षिक कार्यक्रम की मदों का अनुपालन।
4. मूल रूप से हिंदी पत्राचार, हिंदी में टिप्पण और आलेखन ।
5. विभिन्न हिंदी-प्रोत्साहन-योजनाएं।

इस कार्यशाला में गृह मंत्रालय के 20 कर्मचारियों ने भाग लिया एवं 20 मार्च, 2009 को इस कार्यशाला के समापन-समारोह में श्री अशोक कुमार शर्मा, वरिष्ठ अनुवादक द्वारा समस्त प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया गया।

आकाशवाणी : बीकानेर

आकाशवाणी बीकानेर में दिनांक 26-3-2009 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला की अध्यक्षता केंद्राध्यक्ष श्री प्रताप सिंह, सहायक केंद्र अभियन्ता ने की। कार्यशाला में आयोजित व्याख्यानमाला के अन्तर्गत हिंदी के विविध स्वरूपों और क्षेत्रों विषयक सारगर्भित विचार रखे गए।

अध्यक्षीय उद्बोधन में केन्द्राध्यक्ष श्री प्रताप सिंह ने व्यक्त किया कि आज महाविद्यालयों में विज्ञान के पठन-पाठन के लिए काफी हद तक हिंदी माध्यम को स्वीकारा जा रहा है। उन्होंने कहा कि विज्ञान पूरी दुनिया का विषय है अत: शोध कार्य अंग्रेजी के माध्यम से होता तो किन्तु उसका कार्यान्वयन या यूं कहें कि आम जन तक विज्ञान की पहुंच हमारी अपनी भाषा में होनी चाहिए ।

उन्होंने आगे कहा कि आज अपना माल बेचने की गरज से विश्व के हर देश को हिंदी को अपनाने की मजबूरी है। अत: विश्व स्तर पर आदान-प्रदान के लिए हिंदी का महत्व दिन प्रति दिन बढ़ रहा है। उन्होंने हिंदी के दैनंदिक प्रयोग में आंचलिकता को अपनाने पर बल दिया ।

महानिदेशालय, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल, खंड-2, केंद्रीय कार्यालय परिसर, लोदी रोड, नई दिल्ली

महानिदेशालय भा.ति.सी. पुलिस द्वारा भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन एवं सरकारी काम हिंदी में करने में कर्मचारियों की झिझक दूर करने के लिए भा.ति.सी. पुलिस की एस.एस. वाहिनी, सबोली, हरियाणा स्थित लिपिकीय प्रशिक्षण स्कूल में बल के 32 है.कां./सी.एम. के लिए 16-3-2009 से 19-3-2009 तक 'चार दिवसीय हिंदी कार्यशाला' आयोजित की गई ।

सभी प्रशिक्षणार्थियों को भारत-तिब्बत सीमा पुलिस महानिदेशालय में दि. 19-03-09 को सायं 1600 बजे आयोजित एक सादे समारोह में मुख्य अतिथि श्री श्याम मेहरोत्रा, उ.म.नि./(प्रशा.) द्वारा इस कार्यशाला में रुचिपूर्वक भाग लेने संबंधी प्रमाणपत्र वितरित किए गए। इस समारोह में प्रशिक्षणार्थियों के अतिरिक्त सभी व्याख्याता भी उपस्थित थे ।

श्री श्याम लाल, सूबेदार मेजर (रा.भा.) ने अपने स्वागत संबोधन में कहा कि हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन से कार्मिकों की हिंदी में काम करने में आने वाली कठिनाइयां एवं झिझक दूर होगी । उन्होंने अवगत करवाया कि इस कार्यशाला में हिंदी से जुड़े विभिन्न विषयों जिनमें राजभाषा

की संवैधानिक स्थिति तथा राजभाषा अधिनियम एवं नियमों, हिंदी में टिप्पणी लेखन एवं उसका अभ्यास, राजभाषा संबंधी विभिन्न निरीक्षण-निरीक्षण प्रोफार्मा भरवाने का अभ्यास, राजभाषा कार्यान्वयन समितियां, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन/बैठक का आयोजन, हिंदी पखवाड़ा का आयोजन, रबड़ की मोहरें/नामपट्टं संबंधी आदेश एवं डायरी/डिस्पैच रजिस्टरों का रखरखाव/पत्राचार की गणना, हिंदी संबंधी अंशकालिक/गहन/पत्राचार प्रशिक्षण हिंदी में पत्राचार, मानक हिंदी वर्तनी एवं हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली की जानकारी आदि शामिल हैं, पर व्याख्यान के साथ-साथ संबंधित विषयों का अभ्यास भी करवाया गया। सभी प्रशिक्षणार्थियों ने इसमें उत्साह और रुचि से भाग लेकर कार्यशाला को सफल बनाया। उन्होंने कार्यशाला की परीक्षा के परिणाम की घोषणा करते हुए समस्त प्रशिक्षणार्थियों को बधाई दी।

मुख्य अतिथि श्री श्याम मेहरोत्रा, उ.म.नि. (प्रशा.) ने हिंदी कार्यशाला के 'प्रमाण-पत्र वितरण समारोह' में सभी प्रशिक्षणार्थियों का स्वागत करते हुए उन्हें हिंदी कार्यशाला में रुचिपूर्वक भाग लेने और इसके सफल आयोजन के लिए बधाई दी। उन्होंने महानिदेशालय स्तर पर हिंदी के प्रयोग में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए प्रत्येक तिमाही में नियमित रूप से हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से कार्यशाला की उपयोगिता के संबंध में जानकारी भी ली। प्रशिक्षणार्थियों ने कार्यशाला के आयोजन को उपयोगी बताते हुए, इसकी अवधि बढ़ाने का अनुरोध किया।

मुख्य अतिथि ने सभी प्रशिक्षणार्थियों से अनुरोध किया कि अपने दैनिक सरकारी काम में सरल हिंदी का प्रयोग करें। उन्होंने यह भी संदेश दिया कि कार्यशाला में जो सीखा है उसे अपने सहकर्मियों को भी सिखाएं। इसके साथ ही यह भी कहा कि अपने सहयोगियों को हिंदी में कार्य करने में मदद करें और उन्हें भी सरकारी काम में हिंदी के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करें।

परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, पश्चिम क्षेत्र, जयपुर

परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, पश्चिमी क्षेत्र में दिनांक 25-3-2009 से 27-3-2009 तक हिंदी कंप्यूटर कार्यशाला आयोजन किया गया।

कार्यशाला का उद्घाटन दिनांक 25-3-2009 को उप-क्षेत्रीय निदेशक, श्री वी. जे. कट्टी द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में उप-क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने पखनि/प. क्षेत्र में राजभाषा से संबंधित गतिविधियों पर प्रकाश डाला साथ ही उन्होंने कंप्यूटर कार्यशाला की सार्थकता एवं महत्व के संबंध में भी जानकारी दी, अपने उद्बोधन में उप-क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने कहा कि कंप्यूटर के बढ़ते हुए प्रयोग ने आज यह आवश्यक कर दिया है कि राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार में इसका अधिक से अधिक प्रयोग हो इसके लिए हिंदी कंप्यूटर कार्यशाला जैसे आयोजन प्रेरणावर्धक सिद्ध होते हैं। इसके साथ ही उन्होंने कार्यशाला में भाग देने वाले प्रशिक्षणार्थियों को शुभकामनाएं दीं।

उप-क्षेत्रीय निदेशक के उद्घाटन भाषण के पश्चात श्री एम. के. खण्डेलावाल, वै.अ.-जी ने हिंदी कंप्यूटर कार्यशाला के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि विगत कुछ वर्षों से परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय में हिंदी कंप्यूटर कार्यशाला का अयोजन किया जा रहा है और कार्यालयीन प्रक्रिया में हिंदी के बढ़ते हुए प्रयोग से इस प्रकार की कार्यशालाओं के सकारात्मक प्रभाव को प्रत्यक्ष रूप से देखा एवं महसूस किया जा रहा है।

श्री एम. के. खण्डेलवाल के विचार व्यक्त करने के पश्चात श्री जे. श्रीनिवास, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने कंप्यूटर कार्यशाला में प्रशिक्षण दिए जाने वाले सॉफ्टवेयर तथा पाठ्यक्रम की जानकारी दी जिसमें उन्होंने बताया कि यह कार्यशाला मुख्य रूप से एम. एस. एक्सेस सॉफ्टवेयर के प्रशिक्षण हेतु आयोजित की गई है एवं इसके साथ कार्यशाला में यूनिकोड फोण्ट, एम. एस. वर्ड एवं एक्सेल की एडवांस तकनीकें तथा विस्टा ऑपरेटिंग सिस्टम में आई.एस.एम. के प्रयोग का प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाएगा। कार्यक्रम की रूपरेखा के पश्चात् उप-निदेशक महोदय ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को अध्ययन सामग्री प्रदान की।

उद्घाटन सत्र के पश्चात् कंपयूटर कार्यशाला का प्रथम सत्र प्रारंभ किया गया, इस सत्र में प्रशिक्षणार्थियों को हिंदी सॉफ्टवेयर वराह की जानकारी दी गई तथा यूनीकोड फोण्ट का प्रयोग करने की विधि भी बताई गई। भोजन अवकाश के पश्चात् कार्यशाला का सत्र पुन: जारी किया

गया जिसमें प्रशिक्षणार्थियों को यूनीकोड का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया एवं एम.एस. एक्सेस प्रोग्राम की जानकारी दी गई ।

कार्यशाला के दूसरे दिन प्रशिक्षणार्थियों को एम.एस. एक्सेस सॉफ्टवेयर का प्रशिक्षण दिया गया जिसमें उन्हें इसके विभिन्न प्रयोगों जैसे डेटा तैयार करना, क्वेरी करना, फार्म बनाना आदि की जानकारी एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया । पावर पॉइंट प्रजेण्टेशन के माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों को एम. एस. एक्सेस के अनुप्रयोगों को समझाया गया साथ ही उन्हें एम. एस. एक्सेस में हिंदी का प्रयोग करने का प्रशिक्षण भी दिया गया।

आकाशवाणी : शिमला

शिमला में मंगलवार (21-4-2009) को सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हिंदी कार्यशाला और पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। हिंदी कार्यशाला और पुरस्कार वितरण समारोह केंद्र निदेशक श्री तेज कृष्ण रावल की अध्यक्षता में आयोजित किया गया । उन्होंने समारोह का उद्घाटन करते हुए कहा कि हिंदी कार्यशाला के आयोजन से कार्यालय में हिंदी में कार्य करने का एक अनुकूल वातावरण बनता है । उन्होंने हिंदी अधिकारी को राजभाषा विभाग के आदेशानुसार नियमित रूप से केंद्र में हिंदी कार्यशाला आयोजित करने के आदेश जारी किए । समारोह में उपस्थित केंद्र के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत करते हुए नामित हिंदी अधिकारी श्री एच. सी. नेगी ने राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी विभिन्न नियमों, आदेशों और अधिनियमों की विस्तृत जानकारी दी। हिंदी अधिकारी ने कहा कि केंद्र में सभी कर्मचारी हिंदी में प्रवीणता प्राप्त हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी में कार्य करना बहुत आसान है परन्तु हमें मानसिकता को बदलने की जरूरत है। हिंदी कार्यशाला में भारत संचार निगम, कसुम्पटी, शिमला के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री एस. एल. गौतम ने कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के प्रयोग की विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर वर्ष 2008-2009 में हिंदी में प्रशंसनीय कार्य करने वाले केंद्र के 16 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को नकद पुरस्कार राशि से सम्मानित किया गया।

इन पुरस्कारों के बारे में हिंदी अधिकारी ने बताया कि संसदीय राजभाषा समिति के सुझाव पर ही राजभाषा विभाग द्वारा जारी आदेशों के अनुसार हिंदी प्रोत्साहन योजना के तहत इन कर्मचारियों को नगद पुरस्कार राशि से पुरस्कृत किया गया है। केंद्र के कर्मचारियों द्वारा हिंदी में किए गए कार्यों का एक मूल्यांकन समिति द्वारा मूल्यांकन के पश्चात् इन्हें सम्मानित किया गया। केंद्र निदेशक ने कहा कि जिन कर्मचारियों को सम्मानित किया गया है उनका विशेष दायित्व है कि वे अपना सरकारी कार्य अधिक से अधिक हिंदी में करें तथा अन्य कर्मचारी भी इनसे प्रेरित हों । इस कार्यशाला में केंद के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया । हिंदी कार्यशाला का संचालन केंद्र के हिंदी अधिकारी श्री एच. सी. नेगी द्वारा किया गया ।

बैंक ऑफ बड़ौदा, अंचल कार्यालय भोपाल

भोपाल के बैंक ऑफ बड़ौदा के मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ अंचल कार्यलय द्वारा हाल ही में प्रशिक्षण केंद्र, भोपाल में दो दिवसीय कार्यशाला 'व्यवसाय विकास एवं राजभाषा' विषय पर सम्पन्न हुई, इस कार्यशाला में मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्य की विभिन्न शाखाओं एवं कार्यालयों के 30 ऐसे युवा अधिकारियों को सम्मिलित किया गया था जिन्हें बैंक ने पिछले एक वर्ष के दौरान नियुक्ति प्रदान की थी। कार्यशाला का उद्घाटन बैंक के अंचल प्रमुख श्री बी. कैलाश शंकर ने किया । मुख्य प्रबंधक श्री रमेशचन्द्र वर्मा ने अंचल की राजभाषा गतिविधियों एवं कारोबार वृद्धि को रेखांकित करते हुए कार्यशाला के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला । कार्यशाला को भोपाल क्षेत्र के सहायक महाप्रबंधक श्री बी. के. सावंत ने भी संबोधित किया । कार्यशाला का संयोजन एवं संचालन वरिष्ठ प्रबंधक डॉ. जवाहर कर्नावट ने किया । इस कार्यशाला में अतिथि वक्ता के रूप में प्रख्यात शिक्षाविद् श्री रमेश दवे, माखनलाल चतुर्वेदी, पत्रकारिता विश्वविद्यालय के रीडर (आई टी) श्री अनुराग सीठा एवं सेंट्रल बैंक के मुख्य अधिकारी श्री देवेन्द्र पाल चड्डा ने 'व्यवसाय विकास में भारतीय भाषाओं की भूमिका', 'सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी पत्राचार के विविध क्षेत्र' एवं अनुवाद आदि विषयों पर मार्गदर्शन प्रदान किया । अंत में प्रशिक्षण केंद्र के प्रभारी श्री अंजनी कुमार ने आभार प्रदर्शन किया ।

(घ) हिंदी दिवस

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िशा भुवनेश्वर

दिनांक 15-9-2008 को अपराह्न 2.00 बजे कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), ओडिशा के सम्मेलन कक्ष में हिंदी दिवस श्रीमती सुपर्णा देब, महालेखाकार महोदया की अध्यक्षता में बड़े धूमधाम से मनाया गया ।

अध्यक्ष महोदया ने इस पावन अवसर पर कार्यालय के कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी हमारे भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है । इसे एक पर्व के रूप में मनाया जाता है । हिंदी के प्रति रुचि पैदा करने के लिए हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने का आग्रह किया।

दिनांक 17-9-2008 से 25-9-2008 तक कार्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिस में शुद्ध शब्द चयन, कविता पाठ एवं वाद विवाद प्रतियोगिताएं वर्गवार अर्थात् वरिष्ठ लेखा अधिकारी--लेखा अधिकारी, सहायक लेखा अधिकारी-अनुभाग अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग लेकर प्रतियोगिताएं आयोजित किए गए । प्रतियोगिताओं के अंत में हिंदी प्रश्नमंच एवं अंताक्षरी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई, जिस में सभी वर्ग के अधिकारियों ने भाग लिया । दिनांक 29-9-2008 को पखवाड़े का समापन समारोह कार्यालय के मनोरंजन गृह में अपराह्न 4.00 बजे आयोजित किया गया था । समारोह की अध्यक्षता महालेखाकार महोदया श्रीमती सुपर्णा देब द्वारा किया गया । स्थानीय बी.जे.बी. महाविद्यालय (स्वयं शासित) के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. निशामणि नंद ने मुख्य अतिथि के रूप में समारोह की शोभा बढ़ाई ।

वरिष्ठ उप महालेखाकार प्रशासन श्री अरविन्द दास ने इस समारोह पर अपने भावपूर्ण भाषण में कहा कि हिंदी विभिन्न देश वासियों को एक सूत्र में बांधने का काम करती है अत: इसे ऊपर उठाना प्रत्येक सरकारी कर्मचारी का कर्तव्य है । अंत में उन्होंने कहा कि इस समारोह पर आयोजित होने वाले विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद लें । उसके बाद मुख्य अतिथि डॉ. निशामणि नंद ने अपने भावपूर्ण भाषण में कहा कि ऐसे आयोजन होने चाहिएं जिस से हिंदी के प्रति सभी के मन में जागरुकता पैदा हो । उन्होंने हिंदी को किस लिए राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा का दर्जा प्रदान किया उस पर प्रकाश डाला । हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह को इतना बेहतर आयोजन करने पर उन्होंने महालेखाकार महोदया तथा उनके कार्यालय के कर्मचारियों की सराहना की ।

समापन के अपने अध्यक्षीय भाषण में महालेखाकार महोदया ने कहा कि हिंदी एक ऐसी भाषा है जो प्रत्येक भारतीय के दिलों में बसी है । उन्होंने और भी कहा कि राष्ट्र भाषा हिंदी राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देती है । उन्होंने कहा कि हिंदी एक ऐसी मजबूत कड़ी है जो सभी जाति, धर्म एवं वर्ण के लोगों को एक सूत्र में बांधने की क्षमता रखती है । हिंदी दिवस तथा हिंदी पखवाड़े को एक पर्व माना । अध्यक्ष महोदया ने और भी कहा कि हिंदी को बढ़ावा देने के लिए अपना अधिक से अधिक काम हिंदी में करें । तदुपरांत विभिन्न प्रतियोगिता में भाग लिए विजेताओं को मुख्य अतिथि, महालेखाकार एवं वरिष्ठ उप महालेखाकार के करकमलों द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए ।

अंत में कार्यालय के कर्मचारियों तथा उनके बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया । श्रीमती मृदुला भट्टाचार्य, उप महालेखाकार निर्माण लेखा, पुरी शाखा पुरी द्वारा रचित एक व्यंग नाटक 'आधुनिक' श्रीया कार्यालय के महिला कर्मचारियों द्वारा प्रस्तुत किया गया ।

कार्यालय महालेखाकार (ले.प.), मणिपुर, इम्फाल ।

वर्ष 2008 के लिए लेखा-परीक्षा तथा लेखा व हकदारी कार्यालयों ने संयुक्त रूप से हिंदी पखवाड़ा 12-09-2008

से 26-09-2008 तक आयोजित किया था । 12-09-2008 उद्घाटन समारोह में श्री एस. होंग्रे, महालेखाकार (ले.प.) प्रधान अतिथि और श्री विश्वनाथ सिंह जादौन, उप-महालेखाकार (ले.प. तथा ले. व हक.) महोदया सम्मान अतिथि थे । प्रधान अतिथि महोदय, श्री एस. होंग्रे ने दीप ज्वाला के हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ किया ।

हिंदी पखवाड़े के दौरान-हिंदी पत्राचार, हिंदी भाषण, हिंदी टिप्पण, हिंदी गीत, हिंदी-अंग्रेजी तथा अंग्रेजी-हिंदी अनुवाद, हिंदी गायन (कविता), हिंदी निबंध, हिंदी श्रुतलेखन एवं हिंदी हस्तलेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था । इसमें अनेक प्रतिभागियों ने भाग लिए थे । जिन्होंने इस प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त सभी को पखवाड़े के समापन समारोह दिनांक 26-09-2008 में मुख्य अतिथि महोदया के करकमलों से नकद पुरस्कार व प्रमाण-पत्र प्रदान की । दूसरा नकद पुरस्कार सम्मान अतिथि के करकमलों से दिया गया है । रिपोर्ट पाठ किया ।

मुख्य अतिथि महोदया तथा सम्मान अतिथि महोदय ने उनके भाषण में सभी को धन्यवाद दिए, प्रशंसा किए और पखवाड़े को आगे के लिए बरकरार रखने के लिए हिदायत दिए ।

यूनियन बैंक आफ इंडिया, क्षेत्रीय महाप्रबंधक कार्यालय यूनियन बैंक भवन, द्वितीय तल, 139, ब्रॉड वे, चैन्नेई-600108

देश के अग्रणी बैंकों में से एक यूनियन बैंक ने अपने महाप्रबंधक श्री पी.वाई. नागर जी के कुशल निदेशन में एक भव्य हिंदी समारोह, **भारतीय भाषा दिवस** के रूप में आयोजित किया, जिसमें स्टाफ सदस्यों ने हिंदी, तमिल, तेलुगू, मलयालम, मराठी, पंजाबी अंग्रेजी भाषाओं में विभिन्न गीत, संगीत, नृत्य, कविता, चुटकुले, इंटरव्यू आदि के कार्यक्रम प्रस्तुत किए ।

यूनियन बैंक के उप महा प्रबंधक श्री एम.पी. वर्गीस ने हिंदी समारोह में कहा आज देश में **"आप के सपने केवल आप के नहीं"** विषयक विज्ञापन के द्वारा हिंदी, तमिल, तेलुगू, मलयालम आदि भारतीय भाषाओं के माध्यम से जनता के दिल जीतकर सितम्बर, 2008 तक रु. 2,00,000 करोड़ के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है । अब मार्च तक रु. 2,40,000 करोड़ के लक्ष्य की ओर हम अग्रसर हैं । इस कारोबार वृद्धि का श्रेय भारतीय भाषाओं को है । यह सरकारी बैंकों के लिए ही नहीं अपितु सभी व्यापारिक उपक्रमों के लिए सत्य है । एलआईसी जैसी संस्था "जिन्दगी के साथ भी, जिंदगी के बाद भी" जैसे हिंदी मुहावरों को अपनी मार्केटिंग में सफलतापूर्वक प्रयोग कर के ही तरक्की कर रहे हैं । राष्ट्रीय समरसता, समन्वय एवं समृद्धि की भाषा हिंदी के गीतों, कहानियों, कविताओं को सुनकर सभी अपना मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन कर सकते हैं । केरल से लेकर काश्मीर, बनारस, गोहाटी, रामेश्वरम तक हिंदी के द्वारा हम बिजनेस बढ़ा सकते हैं । आप सभी हिंदी में काम कर राष्ट्रभाषा को राजभाषा के रूप में भी प्रतिष्ठित कर हिंदी सॉफ्टवेयर ए.पी.एस. का अधिकतम प्रयोग कर अपने पत्र, दैनिक कामकाज में हिंदी का प्रयोग करें । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिव श्री शेख कादिर, सहायक महाप्रबंधक I.O.B. थे । आपने यूनियन बैंक में हिंदी प्रगति की सराहना की । अपने सारगर्भित भाषण में तेलगू भाषी श्री कादर ने अपने तमिल सीखने के उदाहरण से बताया कि सभी भारतीय भाषाएं महत्वपूर्ण हैं । भारतीय संस्कृति, वेशभूषा, रीति-रिवाजों एवं भाषाओं को अपनाना होगा । घर में मातृभाषा, कार्यालय में राजभाषा एवं विदेशों में अंग्रेजी का प्रयोग हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए । श्री कादर ने चुटीले व्यंग्यों के माध्यम से श्रोताओं को शिष्ट एवं शालीन वेशभूषा धारण करने की सलाह दी ।

हिंदी माह का आयोजन दिनांक 13-09-08 से 14-10-08 आयोजित प्रतियोगिताओं में अधिकारियों और कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया ।

केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, 21 केम्पक स्ट्रीट, कोलकाता-700016

हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता दिए जाने के उपलक्ष्य में केनरा बैंक के कैमक स्ट्रीट, कोलकाता स्थित अंचल कार्यालय में 15 सितम्बर 2008 को बड़ी ही धूमधाम से हिंदी दिवस मनाया गया, जिसमें बैंक की कोलकाता की विभिन्न शाखाओं व कार्यालयों के कर्मचारियों ने भाग लिया और अपना बैंकिंग कार्य हिंदी में करने के

संकल्प को दोहराया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बैंक के महाप्रबंधक श्री ए के नय्यर ने की और कर्मचारियों से अपने कार्य में अधिकाधिक हिंदी के प्रयोग का आह्वान करते हुए उन्होंने बताया कि भारत सरकार की अपेक्षाओं के साथ-साथ ग्राहक सेवा के नज़रिये से भी हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के उपयोग का अपना महत्व है। केनरा बैंक सदा ही बैंकिंग कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देता रहा है। अधिक से अधिक लोगों तक अपनी बात पहुंचाने के लिए श्री नय्यर ने हिंदी और भारतीय भाषाओं के महत्व को रेखांकित किया। श्री नय्यर ने कहा कि यह खुशी की बात है कि हिंदी के बेहतरीन उपयोग के लिए कोलकाता अंचल को केनरा बैंक की राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है।

सितम्बर 2008 माह को केनरा बैंक हिंदी माह के रूप में मना रहा है। इस सिलसिले में बैंक द्वारा अपने कर्मचारियों के लिए आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा हिंदी में अधिक कार्य करने वाले कर्मचारियों व अनुभागों को पुरस्कृत किया गया।

समारोह में प्रारम्भ में बैंक के मंडल प्रबंधक श्री देवव्रत चटर्जी ने सभी का स्वागत करते हुए राजभाषा-हिंदी के क्षेत्र में केनरा बैंक के कोलकाता अंचल द्वारा उठाए गए कदमों की जानकारी दी। श्री यू जे भट के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

हैदराबाद विश्वविद्यालय
पो.ऑ. केंद्रीय विश्वविद्यालय/गचीबाउली/ हैदराबाद-500 046

हैदराबाद विश्वविद्यालय में हिंदी पखवाड़ा समारोह भव्य रूप से मनाया गया। इस अवसर पर 15 सितंबर को विश्वविद्यालय परिसर में स्थित सर सी वी रमण प्रेक्षागृह में आयोजित विशिष्ट व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें प्रो. इन्द्रनाथ चौधरी, पूर्व सचिव, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, पूर्व निदेशक, नेहरु भाषा केंद्र, लंदन एवं संप्रति प्रधान संपादक लघु विश्वकोश परियोजना, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया और हिंदी पखवाड़ा-2008 के अवसर पर विश्वविद्यालय के अधिकारियों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों/शोधार्थियों एवं कैंपस स्कूल के छात्रों के लिए आयोजित विभिन्न साहित्यक प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया। इस अवसर पर प्रो. इन्द्रनाथ चौधरी ने अपने विशिष्ट व्याख्यान में कहा कि राजभाषा हिंदी आरंभ से ही संघर्षरत एवं विवादों से घिरी रही, यह संघर्षशीलता ही इस भाषा की जीवंतता का प्रमाण है, क्योंकि जो भाषाएं संघर्ष नहीं करती वे मृत हो जाती हैं। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति ने कहा कि अक्सर हिंदी की भाषा की शुद्धता के विषय में शुद्धतावादियों द्वारा अनेक प्रकार की बातें की जाती हैं, किंतु वे लोग हिंदी सिनेमा एवं विज्ञापनों में आज-कल जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया जा रहा है, उस पर कुछ नहीं कहते क्योंकि वहाँ भाषा का संबंध रोजगार एवं संप्रेषणीयता से जुड़ा हुआ होता है। सरकारी कामकाज की भाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए कार्यालयों में प्रयोग की जाने वाली हिंदी भाषा का स्वरूप भी लचीला होना चाहिए। जिसमें प्रचलित अंग्रेजी शब्दों को प्रयोग करने की छूट होनी चाहिए, इससे हिंदी भाषा सरल एवं प्रवाहमयी बनी रहेगी।

दूरदर्शन केंद्र : नागपुर

दूरदर्शन केंद्र, नागपुर में दिनांक 1 से 15 सितम्बर, 2008 तक हिंदी पखवाड़ा अत्यंत उत्साह के साथ मनाया गया। दिनांक 1-09-2008 को सहायक केंद्र निदेशक श्री सुधीर पाटणकर ने दीप प्रज्वलित कर हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ किया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने उपस्थित स्टाफ से अपील करते हुए कहा कि हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है तथा हमें अपनी भाषा में कार्य करने में गर्व महसूस करना चाहिए। श्रीमती प्रतिभा पांडे, सहायक केंद्र निदेशक ने भी इस अवसर पर अपने उद्‌गार व्यक्त किए। पखवाड़े के दौरान कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गई थी।

दिनांक 12 सितम्बर को अभियांत्रिकी स्टाफ के लिए हिंदी की एक अर्धदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें प्रमुख अतिथि एवं वक्ता के रूप में प्रादेशिक दूरसंचार प्रशिक्षण केंद्र, नागपुर के प्राचार्य श्री विजयभूषण प्रसाद पांडेय को आमंत्रित किया गया था। अपने दैनंदिन कार्य में हिंदी के उपयोग के विषय में उन्होंने कहा कि भाषा को चहारदीवारी में बांधा नहीं जा सकता, अतः इसका

विकास करने के लिए हमें उदार हृदय से कार्य करना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि तकनीकी शब्दों को देवनागरी में आसानी से लिखा जा सकता है । इस अवसर पर उन्होंने "ब्रॉडबैण्ड तथा संचार के आधुनिक रूझान" विषय पर सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया । इस कार्यशाला में केंद्र अभियंता श्रीमती सुनीता भिशीकर सहित अभियांत्रिकी अनुभाग के अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित थे । श्री सुधीर पाटणकर, सहायक केंद्र निदेशक ने कार्यशाला की प्रस्तावना रखी तथा श्री रवीन्द्र मिश्रा, हिंदी अनुवादक ने संचालन किया ।

दिनांक 15 सितम्बर की हिंदी दिवस तथा दूरदर्शन दिवस का संयुक्त रूप से आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिंदी में एक विशेष परिचर्चा का आयोजन किया गया जिसका विषय था, हिंदी का राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा स्वरूप। परिचर्चा में वरिष्ठ पत्रकार एवं दैनिक भास्कर, नागपुर के संपादक श्री प्रकाश दूबे, राष्ट्रीय बचत संस्था के संयुक्त निदेशक श्री शिवकिशोर त्रिपाठी, एल.ए.डी. कालेज, नागपुर की हिंदी विभाग प्रमुख डॉ. करुणा उमरे तथा हिंदी शिक्षण योजना, नागपुर के प्राध्यापक श्री प्रदीप कुमार शर्मा ने भाग लिया। आमंत्रित दशकों के समक्ष आयोजित इस परिचर्चा की रिकॉर्डिंग की गई तथा उसका प्रसारण किया गया।

दिनांक 17 सितम्बर, 2008 को समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में जे.एम. पटेल कॉलेज, भंडारा की हिंदी विभागध्यक्षा डॉ. मीनाक्षी जोशी उपस्थित थी। उनके शुभ हस्ते से हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया । केंद्र अभियंता श्रीमती सुनीता भिशीकर ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा उपस्थित स्टाफ का मार्गदर्शन किया। हिंदी दिवस, वर्ष 2008 के शुभ अवसर पर प्राप्त माननीय गृह मंत्रीजी, प्रसार भारती के मुख्य कार्यकारी अधिकारी तथा दूरदर्शन के महानिदेशक के संदेश को क्रमश: श्रीमती सुनीता भिशीकर, केंद्र अभियंता, श्री सुधीर पाटणकर, सहायक केंद्र निदेशक तथा श्रीमती प्रतिभा पांडे, सहायक केंद्र निदेशक ने उपस्थित स्टाफ के समक्ष पढ़ कर सुनाया तथा राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन को गंभीरता से लेने की अपील की। समारोह का संचालन श्री रवीन्द्र मिश्रा, हिंदी अनुवादक ने किया तथा श्री अतुल भुसारी, कार्यक्रम निष्पादक (समन्वय) ने आभार प्रदर्शन किया।

कार्यालय, रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक (पश्चिमी कमान), चंडीगढ़

रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक (पश्चिमी कमान), चंडीगढ़ के मुख्य कार्यालय में दिनांक 2-9-2008 से 15-9-2008 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । इस दौरान कार्यालय में अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिंदी के प्रति रूचि बढ़ाने के लिए तीन प्रतियोगिताओं-हिंदी निबन्ध लेखन, हिंदी पत्र एवं टिप्पण लेखन और हिंदी कविता पाठ का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य समारोह दिनांक 15-9-2008 को श्रीमती नीता कपूर, रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस अवसर पर कार्यालय में कार्यरत सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे ।

इस अवसर पर श्रीमती बुलबुल घोष, रक्षा लेखा महानियंत्रक की ओर से हिंदी दिवस पर भेजा गया संदेश श्री रतन लाल गौतम, रक्षा लेखा सहायक नियंत्रक द्वारा पढ़कर सुनाया गया। इस संदेश में राजभाषा हिंदी का महत्व बताते हुए विचार व्यक्त किए गए हैं । कि हिंदी भाषा बहुत सरल, सहज और मधुर है। इसे आगे बढ़ाने का दायित्व हम सभी का है। हिंदी में कार्य करना बहुत आसान है। हम सभी का कर्तव्य है कि राजभाषा हिंदी के बारे में संविधान में निहित मूल संकल्पना को आत्मसात करते हुए निष्ठापूर्वक राजभााषा हिंदी को अपनाएं तथा अपना अधिकाधिक कार्यालय का कार्य हिंदी में करें ।

हिंदी कविता मंच का संचालन श्री गंगादास बासिया, हिंदी अधिकारी ने किया। उन्होंने इस अवसर पर बताया कि हिंदी विश्व में दूसरी ऐसी भाषा है जिसे सबसे अधिक लोग बोलते हैं । इस प्रतियोगिता में प्रतियोगियों ने हिंदी संबंधी कविताएं तथा देश भक्ति के गीत प्रस्तुत किए। हिंदी पखवाड़े के दौरान कार्यालय में निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था जिसमें सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग, बीजिंग में खेले गए ओलंपिक 2008 के खेलों में भारत की भूमिका तथा सूचना का अधिकार-कितना सार्थक एवं व्यावहारिक विषयों पर निबंध लिखे गए। हिंदी पत्र व कार्यालय टिप्पणी लेखन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया

गया जिसमें कार्यालयीन विषयों में पत्र एवं कार्यालय टिप्पणी लिखी गई। उक्त सभी प्रतियोगिताओं में कार्यालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यालय में सितम्बर माह की पूरी अवधि में विशेष रूप से हिंदी में कार्य करने का प्रयास किया जाता है।

इलाहाबाद बैंक, मंडलीय कार्यालय, 17, संसद मार्ग, नई दिल्ली

इलाहाबाद बैंक द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन अपने संसद मार्ग स्थित कार्यालय परिसर में किया गया। अपने स्वागत भाषण में नई दिल्ली मंडल के महाप्रबंधक, श्री नरेंद्र सिंह ने कहा कि इलाहाबाद बैंक में हिंदी का प्रयोग बीसवीं शताब्दी के आरम्भ से ही किया जा रहा है। जब हिंदी का प्रयोग वैधानिक दायित्व नहीं था तब भी हम अपनी बहियों में हिंदी का प्रयोग करते थे। हिंदी देश के आम आदमी की भाषा है और इसका प्रयोग सार्वजनिक क्षेत्र के कार्यालयों में अधिक-से-अधिक होना चाहिए। हिंदी के प्रयोग से ग्राहक सेवा में सुधार होगा, जिसका लाभ व्यवसाय वृद्धि के रूप में सामने आएगा। उन्होंने यह भी विश्वास दिलाया कि इलाहाबाद बैंक हिंदी में अधिक-से-अधिक काम करने के लिए कृतसंकल्प है।

मुख्य अतिथि, श्री रमेश बाबू अणियेरी, संयुक्त निदेशक (राजभाषा) वित्त मंत्रालय, भारत सरकार ने इस अवसर पर कहा कि इलाहाबाद बैंक में हिंदी प्रयोग की सुदीर्घ परंपरा है। बैंक को भारत सरकार द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य हेतु निरंतर पुरस्कृत किया जाता रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि इस समय बैंक अपनी शाखाओं में सी.बी.एस. की सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं और यह हिंदी के प्रयोग के लिए चुनौती का समय है, क्योंकि सॉफ्टवेयर के स्तर पर इस तरह की व्यवस्थाएं किए जाने हेतु प्रयास जारी है।

परमाणु ऊर्जा विभाग परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय पश्चिमी क्षेत्र ए.एम.डी. काम्प्लैक्स, प्रताप नगर, सेक्टर-V विस्तार बंबाला सांगानेर, जयपुर

दिनांक 15-9-2008 से 19-9-2008 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया जिनके अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, उद्घाटन भाषण में अपने विचार व्यक्त करते हुए मुख्य अतिथि श्री आर. के. सिंह ने हिंदी के महत्व एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला, अपने उद्बोधन में श्री सिंह ने कहा कि आज जबकि हिंदी एक विश्व भाषा का स्थान ग्रहण कर चुकी है, ऐसे समय में अकारण ही अंग्रेजी का अंधानुकरण अनावश्यक है। श्री आर. के. सिंह के पश्चात् पखनि/प.क्षेत्र के उप-क्षेत्रीय निदेशक ने कार्यालय में हिंदी में किए जा रहे कार्यों की प्रगति पर अपना संतोष व्यक्त किया साथ ही इस दिशा में और प्रगति करने के लिए सभी कर्मिकों को प्रोत्साहित भी किया एवं अपने सुझाव भी प्रस्तुत किए व हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित की जा रही प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएँ भी दीं।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, केंद्रीय रेशम बोर्ड, सहासपुर, देहरादून

15-9-2008 को हिंदी दिवस समारोह भारतीय भाषाओं के सौहार्द दिवस के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए केंद्र के प्रभारी श्री मदन मोहन भट्ट, वैज्ञानिक डी ने कहा कि हिंदी आज पुरानी हिंदी नहीं रही आज हम काफी आगे बढ़ चुके है। कुछ वर्ष पूर्व औपचारिकतावश हिंदी का प्रयोग किया जाता था किन्तु अब स्थितियां बदल चुकी है। आज हिंदी को किसी सहारे की आवश्यकता नहीं है बल्कि आज हिंदी सबकी अनिवार्यता बनती जा रही रही। हमारे देश में जितनी विभिन्नताएं हैं उनमें एकता के लिए एक भाषा होनी आवश्यक है जो कि हिंदी ही हो सकती है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि हिंदी में सरलता हो ताकि जनसाधारण व गैर हिंदी भाषी उसे सहजता से ग्रहण कर सके और हिंदी और अधिक गति से आगे बढ़े। हमारे वैज्ञानिकों को शोध पत्र एवं पुस्तकें हिंदी में लिखने का प्रयास करना चाहिए। यदि हम ऐसी प्रथा प्रचलित करते हैं तो संभवतया यह प्रचलन में ही आ जाए। अब हम एक नई दिशा व नई सोच के साथ हिंदी दिवस मनाएं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोटा

दिनांक 8-9-08 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सौजन्य से सदस्य कार्यालयों के लिए हिंदी निबंध एवं

टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता से सदस्य कार्यालय के कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। दिनांक 18-9-2008 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक का आयोजन किया गया। इस दौरान मंडल रेल प्रबंधक महोदय श्री अरूण सक्सेना ने सदस्य कार्यालयों से पधारे विभागाध्यक्षों से विस्तृत चर्चा की। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में हिंदी निबंध एवं टिप्पण आलेखन प्रतियोगिताओं के आयोजन के दैरान प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया एवं हिंदी में सराहनीय कार्य करने के लिए अन्य 10 कार्यालयों को भी पुरस्कृत किया गया। इस दौरान प्रॉजेक्टर के माध्यम से हिंदी प्रश्नमंच का आयोजन किया गया जिसमें सदस्य कार्यालयों से पधारे अधिकारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर

पूर्व मध्य रेल मुख्यालय, हाजीपुर में दिनांक 15-9-08 से 19-9-2008 तक हिंदी सप्ताह का भव्य आयोजन किया गया।

दिनांक 15-9-2008 को 11.00 बजे महाप्रबंधक, पूर्व मध्य रेल श्री गिरीश भटनागर ने दीप प्रज्वलित तथा माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर हिंदी सप्ताह का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने सभी से अपना सरकारी कामकाज हिंदी में ही करने का आह्वान किया। मुख्य राजभाषा अधिकारी व मुख्य कार्मिक अधिकारी श्री जे. एस.पी. सिंह ने उपस्थित अधिकारियों व कर्मचारियों को सप्ताह के दौरान आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों की व्यापक जानकारी दी तथा सभी से अपना सरकारी कामकाज हिंदी में ही करने का आह्वान किया।

पश्चिम रेलवे, कार्यालय मुख्य प्रबंधक, दाहोद

हिंदी सप्ताह दिनांक 15-9-08 से 19-9-08 तक हर्षोल्लास से मनाया गया।

हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, हिंदी निबंध एवं वाक् प्रतियोगिताएं आयोजित कीं। दिनांक 19-9-08 को दाहोद के जूनियर रेलवे इन्स्टीट्यूट में सांयकालीन 6.00 बजे से हिंदी सप्ताह समारोह के समापन के उपलक्ष में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के अन्त में मुख्य कारखाना प्रबंधक श्री अशोक कुमार जी ने हिंदी में सराहनीय एवं प्रशंसनीय कार्य करने वाले अधिकारियों एवं विभिन्न प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय तृतीय एवं सांत्वना स्थान प्राप्त कर्मचारियों को नकद पुरस्कार प्रदान किए तथा कार्यक्रम में आमंत्रित कलाकारों को उनकी प्रस्तुतियों के लिए नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

आकाशवाणी: सागर

15 सितम्बर 2008 को हिंदी दिवस मनाया गया एवं तदोपरांत दिनांक 15-9-2008 से दिनाँक 29-9-2008 का पखवाड़ा हिंदी राजभाषा पखवाड़े के रूप में मनाया गया।

मुख्य अतिथि सागर कलेक्टर श्री हीरालाल त्रिवेदी द्वारा अपने संबोधन में यह बताया गया कि आकाशवाणी का हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने यह भी कहा कि न सिर्फ भारत में बल्कि देश-विदेश में भी हिंदी पाठकों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है।

राजभाषा पखवाड़े के उद्घाटन के पश्चात् कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों के लिए पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। प्रतियोगिताओं का शुभारम्भ भारत संचार निगम लिमिटेड के टीडीएम श्री पंकज गुप्ता द्वारा किया गया जिसमें कार्यालय के तकरीबन सभी सदस्यों ने बड़े उत्साह से हिस्सा लिया।

दिनांक 30 सितम्बर 2008 को राजभाषा पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि श्री ललित मोहन, विभागाध्यक्ष गौर विश्वविद्यालय सागर द्वारा बताया गया कि हिंदी के प्रचलन एवं हिंदी भाषा के उपयोग में आकाशवाणी का भरपूर योगदान प्रारम्भ से ही रहा है एवं समय के साथ बढ़ता ही जा रहा है। आकाशवाणी के द्वारा हिंदी में प्रसारित किए जाने वाले कार्यक्रम एवं बुन्देली भाषा में प्रसारित कार्यक्रमों के बारे में भी उन्होंने प्रकाश डाला, साथ ही आकाशवाणी की प्रतियोगिताओं में इतने सारे प्रतिभागिओं द्वारा भाग लेने पर हर्ष व्यक्त किया।

आकाशवाणी: पटना

15 से 29 सितम्बर, 2008 तक की अवधि को हिंदी पखवाड़ा के रूप में मनाया गया। इस दौरान कार्यालीन काम-काज राजभाषा हिंदी में करने की मानसिकता और

वातावरण तैयार करने के उद्देश्य से कतिपय प्रेरणादायक एवं प्रतिस्पर्धात्मक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया ।

हिंदी पखवाड़ा के समापन के अवसर पर 29 सितम्बर, 2008 को कार्यालय के क्लब भवन में एक भव्य पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया । इसमें उपर्युक्त सभी प्रतियोगिताओं के सफल प्रतिभागियों को समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. जगदीश नारायण चौबे, पूर्व प्राध्यापक, हिंदी विभाग, पटना विश्वविद्यालय तथा विशेष अतिथि श्री बीरेन्द्र कुमार यादव, सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति, स्वास्थ्य एवं विदेश मंत्रालय द्वारा पुरस्कार राशि एवं प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया गया ।

विशेष अतिथि हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य श्री बीरेंद्र कुमार यादव ने कार्यालीन कामकाज में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया तथा संघ की राजभाषा नीति के विभिन्न प्रावधानों पर विस्तार से प्रकाश डाला। अधीक्षण अभियंता श्री एच.के. सिंहा ने अपने सम्बोधन में संघ की राजभाषा नीति पर प्रकाश डालते हुए हिंदी में अधिकाधिक कार्यालीन कामकाज को सम्पादित करने का संकल्प लेने का आग्रह किया ।

उप क्षेत्रीय कार्यालय कर्मचारी राज्य बीमा निगम, सी-22/12, सेक्टर-57, नौएडा (गौतमबुद्ध नगर)

उप क्षेत्रीय कार्यालय कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नौएडा में दिनांक 15-9-08 को हिंदी दिवस समरोह का आयोजन किया गया ।

श्री संजय सिन्हा, संयुक्त निदेशक (प्रभारी) ने कर्मचारियों से अनुरोध किया कि वे राजभाषा के प्रति सम्मान की भावना रखें । यह राष्ट्रीय महत्व का पर्व है, ऐसे आयोजन में विशेष धैर्य और शालीनता का परिचय दें। उन्होंने कहा कि इस अर्थ प्रधान युग में अंग्रेजी तरक्की की भाषा बन गई है, आभिजात्य की भाषा बन गई है । इसके समानान्तर हिंदी को स्थापित करने के लिए हमें सच्ची निष्ठा और देशप्रेम का परिचय देना होगा । हमें औपचारिक अवसरों पर भले ही अंग्रेजी का प्रयोग करने की विवशता हो किंतु परिवार में हमें सदैव अपनी ही भाषा का हिंदी का प्रयोग करना चाहिए ।

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, सेक्टर-16, फरीदाबाद

01-09-2008 से 15-09-2008 तक राजभाषा पखवाड़ा तथा दिनांक 15-09-2008 को हिंदी दिवस समारोह बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया ।

हिंदी दिवस समारोह: दिनांक 15-09-2008 को क्षेत्रीय कार्यालय के सभाकक्ष में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया । इस समारोह की अध्यक्षता क्षेत्रीय निदेशक, श्री ए.के. श्रीवास्तव ने की ।

सहायक निदेशक (राजभाषा), श्री रमेश लाल वर्मा ने हिंदी दिवस की पृष्ठभूमि पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी को संघ की राजभाषा इसलिए स्वीकार किया गया था कि यह देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हमारी राष्ट्र भाषा है । उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा ने देश की विविध संस्कृति को एकजुट करने का कार्य किया है। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किए गए संघर्ष के दौरान हिंदी की विशेष भूमिका रही है और इसने सभी प्रान्तों के भारत-वासियों को एक मंच पर एकत्र करने का कार्य किया है ।

जयपुर हवाई अड्डा

हिंदी दिवस दिनांक 14 सितंबर, 2008 के उपलक्ष्य में दिनांक 15 सितंबर, 2008 को जयपुर हवाई अड्डे के निदेशक श्री अनुज अग्रवाल एवं मंच उपस्थित वरिष्ठ अधिकारियों के द्वारा दीप प्रज्जवलित कर हिंदी पखवाड़े का शुभारम्भ किया गया ।

निदेशक, विमानपत्तन श्री अनुज अग्रवाल ने उपस्थित सभी कार्मिकों को हिंदी पखवाड़े की शुभकामनाएं देते हुए कार्मिकों को सूचित किया कि जयपुर विमानपत्तन पर पूरी तौर से हिंदी में काम करने में कुछ तकनीकी कठिनाईयां आ रही थीं पर उसे भी धारे-धीरे दूर कर लिया गया है। उन्होंने हिंदी के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पूर्ण रूप से आशांवित रहते हुए उपस्थितजनों से आग्रह किया कि हिंदी में काम करने के प्रति समर्पित एवं वचनबद्ध रहें। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि जिस प्रकार अहिंदी भाषी बड़ी गंभीरता-पूर्वक हिंदी सीखते है उसी तरह हिंदी भाषियों को भी अन्य भाषाएं

अपनानी चाहिएं तभी हम हिंदी के विकास में अपना योगदान सार्थक कर पायेंगे ।

क्षेत्रीय कार्यालय, केंद्रीय रेशम बोर्ड, 342-347 (दूसरा तल) ए-विंग, अगस्त क्रान्ति भवन, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली-110 066

15 से 29 सितम्बर, 2008 को हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया ।

श्री राजीव कुमार, सहायक निदेशक (आर्थिक) द्वारा कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति का विवरण दिया गया । इस अवसर पर श्री हाविल तिर्की ने भारतवर्ष में हिंदी भाषा के महत्व को समझाया तथा मनुष्य के विकास तथा विचारों के आदान-प्रदान में मातृभाषा के योगदान पर बल दिया तथा बताया कि हिंदी ने बखूबी मातृभाषा के रूप में कार्य करके इस चुनौती को सफलता-पूर्वक निभाया है।

शब्दावली, टिप्पण, आलेखन, निबंध तथा चुटकले प्रतियोगिताओं में क्रमशः 10, 6, 7 तथा 8 प्रतियोगियों ने हिस्सा लिया। इन प्रतियोगिताओं में चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों ने भी पूर्ण उत्साह से भाग लिया ।

समापन समारोह के अवसर पर अध्यक्षीय भाषण में भी श्री आर.डी. सिंह ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी सप्ताह में बढ़ चढ़ कर भाग लेकर हिंदी सप्ताह को सफल बनाने के लिए बधाई दी तथा उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे हिंदी के प्रति अपना उत्साह वर्ष भर बनाए रखेंगे । उन्होंने आशा व्यक्त की, कि सभी अधिकारी उवं कर्मचारी अपने हिंदी प्रेम को कार्यालय में अपने काम द्वारा दर्शाएंगे तथा हिंदी कामकाज में अपनी प्रगति को जारी रखेंगे ।

केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड, बी-12, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110 063

15–30 सितंबर, 2008 को हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस दौरान अधिकारियों और कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति अभिरूचि बढ़ाने के उद्देश्य से तीन प्रतियोगिताएं आयोजित की गई-प्रश्नोत्तरी, निबंध और वाद-विवाद ।

हिंदी पखवाड़े के दौरान पूरे बोर्ड में उत्साह और उल्लास का वातावरण बना रहा। इस दौरान एक ओर कार्यालय में हिंदी के कामकाज में आशातीत वृद्धि हुई, वहीं दूसरी ओर अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी की प्रतियोगिताओं के प्रति अभूतपूर्व आकर्षण भी देखा गया ।

हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह 30 सितंबर, 2008 को आयोजित किया गया, समारोह में पहले वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई तथा उसके बाद पुरस्कार वितरण हुआ। बोर्ड की अध्यक्षा श्रीमती प्रेमा करियप्पा ने विजेताओं को अपने कर-कमलों से नकद पुरस्कार प्रदान किए। अध्यक्ष महोदया ने समस्त स्टाफ को हिंदी में संबोधित करते हुए पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी तथा इनमें भाग लेने वाले सभी प्रतियोगियों को भी शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी राष्ट्रीय भाषा है और हमें इस पर गर्व है ।

भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई

भिलाई इस्पात संयंत्र के राजभाषा विभाग द्वारा 14 सितंबर, 2008 को भिलाई निवास के बहुउद्देशीय सभागार में हिंदी दिवस का भव्य समारोह सम्पन्न हुआ। इस गरिमामय समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सुविख्यात साहित्यकार, कानूनविद् व गाँधी दर्शन के भाष्यकार श्री कनक तिवारी ने अपने सारगर्भित संबोधन में कहा कि भिलाई देश का महान औद्योगिक तीर्थ है और यहाँ की सरगर्मियों का संदेश देश के समूचे औद्योगिक क्षेत्र में जाता है। उन्होंने कहा कि गाँधीजी अंग्रेजी और अंग्रेजों के नहीं, दरअसल अंग्रेजियत के खिलाफ थे। मनुष्य की गुलामी के खिलाफ थे। भाषा मात्र अभिव्यक्ति का माध्यम, रोटी का प्रश्न ही नहीं है बल्कि यह संस्कारों और संस्कृति का माध्यम होती है। भाषा. वैचारिकता और नेतृत्व-विकास का स्रोत होती है। आज के समय में हिंदी हमारे देश के पुनर्निर्माण की भाषा है। यह सीधे और बेहतर संवाद की प्रभावी भाषा है ।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में संयंत्र के कार्यपालक निदेशक (खदान) श्री मानस कुमार बिंदु ने भिलाई इस्पात संयंत्र में दैनिक कार्यों में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा कि सार्वजनिक क्षेत्र के संयंत्र होने के नाते हमारा दायित्व है कि हम संविधान का अक्षरशः पालन करें ।

(ङ) विश्व हिंदी दिवस

भारत सरकार, परमाणु ऊर्जा विभाग, नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र, हैदराबाद

एनएफसी में विश्व हिंदी-दिवस का आयोजन

नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र, हैदराबाद में दिनांक 10-01-2009 को विश्व हिंदी-दिवस का आयोजन किया गया । श्रीमती गिरिजा मानिक द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ । श्री प्रणव कुमार बनर्जी, महाप्रबंधक (सीईडी एवं यू) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने अपने स्वागत संबोधन में कहा कि 'संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की भूमिका निर्विवादित है और अब तो हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं । .... आपने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को अपना सरकारी कामकाज हिंदी में करने का आह्वान किया ।' एनएफसी के मुख्य कार्यपालक श्री आर एन जयराज ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि 'भाषा विचारों के आदान-प्रदान का सशक्त माध्यम है । आज हिंदी आम बोलचाल की भाषा के अलावा बाजार और मीडिया की भाषा भी बन गई है । चूँकि हिंदी संघ सरकार की राजभाषा है इसलिए हमने एनएफसी में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रयास किए हैं । हिंदी को तकनीकी कार्यों के साथ जोड़ने के लिए तकनीकी बैठकों में हिंदी की मद को जोड़ा गया है । आपने इस अवसर पर जारी संदेश में कर्मचारियों को अपने दैनिक कामकाज में हिंदी का प्रयोग करने का आह्वान किया ।' इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ आनंद राज वर्मा, प्रमुख इतिहासकार एवं पूर्व प्राचार्य अनवर उलूम कॉलेज, हैदराबाद उपस्थित थे । आपने 'हैदराबाद (भाग्यनगर) का इतिहास' विषय पर व्याख्यान देते हुए कुतुबशाही और आसफ़जाही शासन काल की उपलब्धियों के अलावा हैदराबाद के स्वर्णिम अतीत के संबंध में प्रमाणिक जानकारी प्रस्तुत की । रोचक शैली में प्रस्तुत उनके व्याख्यान को काफी पसंद किया गया । अंत में श्री सैयद इरफान अली, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने धन्यवाद ज्ञापित किया । कार्यक्रम का संचालन श्री गजानन पाण्डेय, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने किया । नाईस की केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल इकाई के कमांडेण्ट सहित प्रशिक्षणार्थी उप निरीक्षकों ने बड़ी संख्या में कार्यक्रम में भाग लिया । इस कार्यक्रम के सफल आयोजन में श्री संतोष कुमार, आशुलिपिक, श्री मोहम्मद अख्तर पाशा, अवर श्रेणी लिपिक और श्रीमती जी. अनुराधा ने महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

प्रस्तुति :

(गजानन पाण्डेय)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन-628 007

छठवीं राजभाषा वैज्ञानिक संगोष्ठी

दिनांक 17 मार्च, 2009 को भारी पानी संयंत्र के अतिथि गृह स्थित सभागृह में एक दिवसीय राजभाषा वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया । जिसमें 07 व्याख्यान हिंदी तकनीकी विषयों पर दिए गए ।

1. नमक संबंधी वैज्ञानिक ज्ञान
2. भवनों को दीमकों से बचाव के प्रतिपादन
3. अग्निशामक संबंधी जानकारी
4. व्यक्तिक बचाव यंत्रों का महत्व
5. संरक्षा विवेचन
6. साँप डंक
7. ऊँची मंजिलों में अग्नि से बचाव हेतु प्रबन्ध ।

अपने उद्घाटन संबोधन में मुख्य अतिथि डॉ लक्ष्मी, सहायक नमक आयुक्त ने कहा कि तूतीकोरिन नगर तमिलनाडु के आखिरी छोर पर बसने के बावजूद यहाँ के लोग हिंदी प्रेमी हैं यहाँ के बच्चे अधिकांशत: किसी न किसी प्रकार से हिंदी की पढ़ाई कर रहे हैं । उन्होंने हिंदी प्रेमियों के विवरण देते हुए कहा कि हिंदी को केवल भारत में ही नहीं पूरे विश्व के नागरिक भी पढ़ने और सीखने लगे हैं । उन्होंने कहा कि हिंदीतर प्रदेश में तकनीकी विषय पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन एक अच्छा प्रयास है, इतने सारे विषयों पर व्याख्यान एक स्थान पर हिंदी में आयोजित करने हेतु मैं भारी पानी संयंत्र को बधाई देती हूँ ।

भारी पानी संयंत्र के विशेष कार्याधिकारी एवं अध्यक्ष नराकास श्री एस. परमसिवम ने कहा कि हिंदी एक सरल और सहजता से समझ में आनेवाली भाषाओं में सर्वोपरि है । इसकी लिपि भी सरल है । हिंदी में अन्य भाषाओं के शब्द ग्रहण करने की शक्ति भी है इसलिए इसे देश के संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया है । उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक संगोष्ठयों में हमारे वैज्ञानिकों, अभियंताओं व अन्य कर्मचारियों द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले व्याख्यान, प्रत्येक सदस्य के हिंदी प्रेम व विशुद्ध वैज्ञानिक विषयों को हिंदी में व्यक्त करने की क्षमता को सिद्ध करते हैं । उन्होंने कहा कि तकनीकी संगोष्ठी का आयोजित करना भी एक महत्वपूर्ण कदम है । इस अवसर पर भारी पानी संयंत्र के कार्मिकों के कक्षा पहली से 12वीं तक के उन बच्चों को भी पुरस्कृत किया गया जिन्होंने सबसे ज्यादा अंक हिंदी विषय में प्राप्त किए ।

हिंदुस्तान लैटेक्स लिमिटेड, लैटेक्स भवन, पूजापूरा, तिरूवनन्तपुरम-695 012

25-03-2009 को पेरूरकड़ा फैक्टरी के जवाहरलाल नेहरू जन्मशताब्दी स्मारक कल्याण केंद्र में आयोजित राजभाषा संगोष्ठी का शुभारंभ ईश्वर स्तुति से हुआ । समारोह का उद्घाटन कंपनी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री एम. अयप्पन जी ने किया । उन्होंने अपने भाषण में बताया कि तिरूवनंतपुरम के अधिकतम कॉलेजों से इस सेमिनार के लिए नामांकन हुआ है जिससे यह समझना चाहिए कि हिंदी सबकी लोकप्रिय भाषा बन चुकी है । भारत की राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा की हैसियत से विराजित हिंदी भाषा को अब विश्वभाषा की हैसियत भी मिल चुकी है और ऐसी एक भाषा प्रचार-प्रसार करना हम भारतीयों का कर्तव्य हैं । उन्होंने जोड़ा कि राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार युवा पीढ़ियों को सौंपने की दृष्टि से उनको अपना कर्तव्य निभाने के लिए मौका देना इस कार्यक्रम का उद्देश्य है । उन्होंने अपने भाषण में कहा कि "एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड का आदर्श वाक्य ही स्वस्थ पीढ़ियों के लिए नवान्वेषण है" और किसी देश या परिवार का आधार स्वस्थ स्वास्थ्य है । दुनिया

के सभी स्तर के लोगों को स्वस्थ और सुखी जीवन प्रदान करना हमारी जिम्मेदारी है । इसलिए सेमिनार के लिए हमने ऐसा विषय चुना है ।

सेमिनार में मुख्य भाषण दिया था श्री के.के. सुरेश कुमार, निदेशक (विपणन) । उन्होंने अपने भाषण में बताया कि मानव के जीवन का आधार उनके अच्छी सेहत है । एचएलएल लोगों को स्वस्थ एवं सुखी जीवन प्रदान करने के लिए गुणवत्ता युक्त उत्पाद एवं सेवाएँ प्रदान करती है और इसके लाइफस्प्रिंग अस्पताल द्वारा आम लोगों को वहन करने योग्य दर पर गुणवत्ता सेवाएँ प्रदान की जाती है । उन्होंने जोड़ा कि इस कार्यक्रम से हमारा उद्देश्य है सरकार की राजभाषा नीति का पालन करने के साथ-साथ युवापीढ़ियों को राजभाषा में श्रीवृद्धि लाने में प्रेरित करना ।

डॉ. वी. वी. विश्वम, प्राचार्य, हिंदी विद्यापीठ ने अपने आर्शीवाद भाषण में आज के जमाने में स्वस्थ सेहत की आवश्यकता और इसको बनाए रखने में तथा राजभाषा हिंदी की प्रगति करने में युवापीढ़ी को क्या-क्या करना है इसको विस्तृत रूप से व्याख्यान दिया । इस संगोष्ठी में निर्णायक को काम भी उन्होंने निभाया ।

श्री एम. डी. श्रीकुमार, निदेशक (तकनीकी एवं प्रचालन) और श्री एस. आर. पणिक्कर, कार्यपालक निदेशक (प्रचालन) ने समारोह में उपस्थित सभी सज्जनों को क्रमश: स्वागत एवं कृतज्ञता व्यक्त किया । समारोह में कंपनी के वरिष्ठ अधिकारी, कर्मचारी एवं संघ नेताओं की सक्रिय भागीदारी हुई ।

आगे हिंदी प्रचार सभा, मार इवानियस कॉलेज, सरकारी महिला कॉलेज, केरल विश्वविद्यालय, कार्यवट्टम कैंपस से आए अनेक छात्र-छात्राओं ने लेख प्रस्तुत किए । हरेक विद्यार्थी ने प्रतियोगी-मनोभाव के साथ इस सेमिनार में भाग लिया । संगोष्ठी में उपस्थित विद्यार्थियों से लिए पुनर्निवेशन से यह मालूम हुआ कि इस कार्यक्रम से वे लोग लाभान्वित हुए हैं ।

अपराह्न 4 बजे को आयोजित समापन समारोह के अवसर पर श्रीमती सरस्वती देवी, उप महा प्रबंधक (मानव संसाधन) ने कहा कि राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए इस तरह के सेमिनारों की अहम भूमिका है । ऐसे कार्यक्रमों के द्वारा युवा पीढ़ियों के मन में हिंदी के प्रति रुचि पैदा होती है और हम अपने मंजिल तक पहुँचते हैं । इस प्रकार हिंदी में लेख प्रस्तुत करना, हिंदी में कार्य करना आदि राष्ट्रीय महत्व का कार्य है । आप सबको हिंदी के विकास के लिए लगातार प्रयास करते रहना चाहिए । उन्होंने संगोष्ठी में उपस्थित सभी विद्यार्थियों को स्मृतिचिह्न और हिंदी - अंग्रेजी शब्द कोश वितरित किए । डॉ वी. वी. विश्वम ने विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किए हरेक लेख की कमियों एवं खूबियों को व्यक्त कर उन्हें सुधारने की सलाह दी ।

लेख प्रस्तुतीकरण में मास्टर श्री प्रदीप पी. एस., मार इवानियस कॉलेज (विषय : जीवन शैली रोग और स्वास्थ्य रक्षा के महत्व) और कुमारी पार्वती चंद्रन, सरकारी महिला कॉलेज (विषय : परिवार में मातृ-शिशु स्वास्थ्य के महत्व) ने क्रमश पहला और दूसरा स्थान हासिल किया ।

राष्ट्रगीत के साथ समारोह का शुभांत हुआ ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति गान्तोक, सिक्किम, पोस्ट राजभवन, बालुवाखानी, पिन-737103

दिनांक 26-02-2009 एवं 27-02-2009 को दो दिवसीय हिंदी सम्मेलन केंद्रीय लोक निर्माण विभाग के सेमिनार हॉल में गान्तोक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा सम्पन्न हुआ । बैठक में लगभग 40 केंद्रीय सरकारी, उपक्रमों, बैंक अधिकारियों के साथ अन्य प्रतिभागी तथा सरकारी अधिगृहीत संस्था भी उपस्थित थे । मुख्य अतिथि के रूप में श्री अजय कुमार श्रीवास्तव, उप निदेशक, क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन, गुवाहाटी उपस्थित थे । मंच संचालन की भूमिका श्रीमती उषा शर्मा, समाचार वाचक, आकाशवाणी, गान्तोक ने निभाई ।

सर्वप्रथम माननीय अध्यक्ष महोदय के पद पर श्री एम. डी. भुटिया वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी, महालेखाकार, सिक्किम ने उपस्थित सदस्यों का स्वागत किया । माननीय अध्यक्ष महोदय की अनुमति से श्री आर. एन. सिंह ने सचिव महोदय का भाषण प्रस्तुत किया । सचिव महोदय ने नराकास के वर्ष 2009 के सम्मेलन में सभी दफ्तरों के उपस्थित सभी सदस्यों का उत्साहपूर्ण अंशग्रहण के लिए स्वागत किया । हिंदी भाषा सरकारी काम में अधिक सार्थक बनाने के लिए कुछ सुझाव भी

व्यक्त किए । इसके पश्चात् माननीय अन्य अतिथि तथा निदेशक भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण डॉ. ए. ए. अन्सारी ने हिंदी भाषा के प्रयोग पर व्याख्यान तथा कुछ प्रतिभागियों ने अपना अपना-विचार व्यक्त किया । इसके बाद मंचासीन अधिकारियों को पुष्प गुच्छ द्वारा स्वागत एवं द्वीप प्रज्वलन कर सम्मेलन का उद्घाटन किया ।

सम्मेलन में 26-2-09 को शुरुआत में नराकास पुस्तकालय का उद्घाटन एवं सरकारी कार्यालय में हिंदी प्रकाशन द्वारा हिंदी पुस्तकों की जानकारी दी गई । इसके बारे में सुझाव व परिचर्चा श्री प्रणव कुमार दास, मुख्य लिपिक, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग तथा नराकास कार्यालय सम्पर्क अधिकारी ने दिए । इसके पश्चात् एल. सी. प्रोजेक्टर द्वारा कम्प्यूटर में हिंदी साफ्टवेयर का प्रचलन तथा तिमाही प्रगति प्रतिवेदन भरना व हिंदी कम्प्यूटर शिक्षण के बारे में जानकारी श्री अजय कुमार श्रीवास्तव, उपनिदेशक, कार्यान्वयन गुवाहाटी ने दी । दोपहर तीन बजे से स्वरचित व अन्य कवियों द्वारा रचित कविता पाठ प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया था ।

27-02-09 को 10 बजे सम्मेलन का द्वितीय तथा अंतिम चरण का शुभारम्भ हुआ, जिसमें कार्यालयीन हिंदी में टिप्पणी, पत्र लेखन व कामकाज के बारे में कार्यशाला भी सम्पन्न हुई । अंतिम दिन का प्रधान आकर्षण था वाक् प्रतियोगिता जिसमें सभी सरकारी कार्यालयों में हिंदी भाषा के प्रयोग व उपयोगिता के बारे में चर्चा हुई ।

महानदी कोलफील्ड्स लिमिटेड

दिनांक 25 एवं 26 फरवरी, 09 को महानदी कोलफील्ड्स लिमिटेड में दो-दिवसीय कोल इंडिया स्तरीय राजभाषा सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमें कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में एमसीएल के निदेशक (कार्मिक) श्री जी.डी. गुलाब एवं श्री बी. महापात्रा, निदेशक (वित्त) तथा सम्मानित अतिथि के रूप में श्री ए. के. तिवारी, निदेशक (तकनीकी/ऑपरेशन) महोदय उपस्थित हुए । इनके अतिरिक्त देश के विभिन्न राज्यों से आमंत्रित विशिष्ट वक्ताओं, विद्वानों सहित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, संबलपुर के सदस्य तथा सीआईएल की अनुषंगी कंपनियों के प्रतिभागीगण उपस्थित थे ।

उद्घाटन सत्र के दौरान दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात् अतिथियों/वक्ताओं को पुष्प गुच्छ एवं अंगवस्त्र से सम्मानित किया गया । प्रारंभ में एमसीएल के श्री केशव गुप्ता, महाप्रबंधक (प्रबंधन प्रशिक्षण संस्थान एवं राजभाषा) द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया एवं श्री उदय नाथ बेहेरा, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने पावर प्वाइंट के माध्यम से एमसीएल में राजभाषा कार्यान्वयन के बढ़ते चरणों की आँकड़ो सहित व्याख्या की ।

बतौर मुख्य अतिथि पहले दिन श्री बी. महापात्रा एवं दूसरे दिन श्री जी.डी. गुलाब ने अपील के साथ अपने उद्गार व्यक्त करते हुए राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एमसीएल में काफी बेहतर है एवं इसे और त्वरान्वित करने की कोशिश करनी है ।

उद्घाटन समारोह में सम्मानित अतिथि श्री तिवारी ने अपने बहुमूल्य वक्तव्य में कहा कि हिंदी को हम अपनी अंतरात्मा से अपनाएं, ये हमारी संस्कृति एवं राष्ट्रीयता से जुड़ी हुई भाषा है । राष्ट्रभाषा हिंदी को अपना उचित स्थान देने के लिए यह आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य है कि हर व्यक्ति अपना कार्यालयीन कार्य पूरी तरह राजभाषा हिंदी में करें । उन्होंने अपील करते हुए कहा कि राजभाषा के प्रयोग में क्लिष्ट या भारी भरकम शब्दों का इस्तेमाल न कर जितना हो सके सरल एवं सहज भाषा का प्रयोग करें ताकि राजभाषा हिंदी को विकसित और समुन्नत बनाया जा सके ।

मुख्य वक्ता डॉ. अर्जुन शतपथी ने अपने सारगर्भित वक्तव्य में कहा कि हिंदी हमारी संस्कृति, एकता एवं राष्ट्रीयता का प्रतीक है । इसके अतिरिक्त अन्य प्रबुद्ध वक्ताओं यथा - डॉ. चंद्र गोपाल शर्मा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), पूर्व रेलपथ मुख्यालय, कोलकाता, श्री प्रवीण कुमार, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), इलाहाबाद बैंक, कोलकाता, डॉ. दामोदर मिश्र, विभागाध्यक्ष (हिंदी), आसनसोल तथा श्री पी के सिंह, सहायक निदेशक (राजभाषा), आयकर आयुक्त कार्यालय, भुवनेश्वर, प्रबंधक (राजभाषा), श्री एम पी पाण्डेय, सीसीएल एवं श्री आर पी पाण्डेय, ईसीएल तथा वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी श्री के बी मिश्रा, सीआईएल आदि ने अपने बहुमूल्य विचार रखे ।

दि न्यू इन्डिया एश्योरेन्स कंपनी लिमिटेड क्षेत्रीय कार्यालय, 4, मेंगो लेन, कोलकाता-700 001

दि न्यू इंडिया एश्योरेन्स कंपनी लिमिटेड द्वारा भारतीय भाषा परिषद् सभागार में शुक्रवार के दिन हिंदी के प्रचार-प्रसार में मीडिया की भूमिका विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन कंपनी के क्षेत्रीय प्रबंधक, डॉ. सी. आर. मंडल ने किया । अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने उम्मीद जताई कि इस संगोष्ठी में मीडिया और हिंदी विषय पर विचारोत्तेजक बहस होगी जिससे हिंदी के प्रचार-प्रसार को एक नई दिशा मिलेगी । इस अवसर पर श्री रवीन्द्र सिंह, महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशा.), सेल तथा सचिव, नराकास (उपक्रम) ने हिंदी की प्रगति में कोलकाता के योगदान की सराहना करते हुए प्रथम हिंदी समाचार पत्र उदंत मार्तण्ड तथा विलियम कोर्ट कॉलेज का स्मरण कराया । सन्मार्ग के वरिष्ठ उपसंपादक, लेखक एवं पत्रकार श्री अभिज्ञात का कहना था कि मीडिया जीवित और टटके भाषा का प्रयोग की नहीं करती बल्कि उसे गढ़ती भी है । भारतीय भाषा परिषद् के निदेशक तथा लेखक डॉ. विजय बहादुर सिंह का मानना था कि भाषा हर कोई पढ़ता है । उदाहरणस्वरूप उन्होंने हलवाहे का जिक्र किया जो अपने बैलों से संवाद के लिए एक नई भाषा का अविष्कार कर लेता है । राष्ट्रीय सहारा के पत्रकार तथा प्रमुख संवाददाता, श्री दीपक सान्याल ने अपने संबोधन में मीडिया की भूमिका पर चर्चा की और हिंदी को राष्ट्रीय अस्मिता के साथ जोड़ा । श्री कैलाश नाथ यादव, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), सेल तथा सह-सचिव, नराकास (उपक्रम) ने विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम को पूर्णत: सफल बताया । न्यू इंडिया एश्योरेंस के सहायक प्रबंधक, श्री देवेन्द्र कुमार मिश्र ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा श्री अपूर्व शील, प्रबंधक ने सभी अतिथियों तथा प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया ।

कैगा बिजली उत्पादन केंद्र

कैगा बिजली उत्पादन केंद्र 1 से 4 में 16 जनवरी, 2009 को एक दिवसीय पंचम हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें तकनीकी क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने तथा संयंत्र से संबंधित वैज्ञानिक व तकनीकी, स्वास्थ्य तथा मानव संसाधन प्रबंधन से संबंधित विषयों से लोगों को अवगत कराने के उद्देश्य से राजस्थान परमाणु बिजलीघर, नरौरा परमाणु बिजलीघर से आए प्रतिभागियों तथा कैगा के अधिकारी व कर्मचारियों ने हिंदी में शोध प्रबंध प्रस्तुत किए ।

अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन) श्री रमेश र. थोरात ने सभा को संबोधित किया और अपने वक्तव्य में सबसे पहले सभी प्रतिभागियों को अपनी शुभकामनाएँ दी और कहा कि कैगा में हिंदी की प्रगति बहुत तेजी से हो रही है, अधिकारी और कर्मचारी भी काफी रूचि और लगन से कार्य कर रहे हैं इसी का परिणाम है कि कैगा को पिछले दस वर्षों से अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक शील्ड प्राप्त हो रही है । उन्होंने सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से आहवान किया कि सभी ऐसे ही रुचि, लगन व मेहनत से कार्य करते रहें तथा हिंदी की प्रगति में अपना योगदान देते रहें । राष्ट्र तथा राजभाषा के प्रति सम्मान व गौरव बनाए रखें ।

तदोपरांत मुख्य अतिथि श्री जे. पी. गुप्ता केंद्र निदेशक, कैगा 1 व 2 ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि कैगा में पिछले कुछ वर्षों से गैर-तकनीकी अनुभागों के साथ-साथ तकनीकी अनुभागों में भी हिंदी में कार्य में कार्य की स्थिति बढ़ रही है । ऐसे कार्यक्रम तकनीकी क्षेत्र में हिंदी प्रयोग के लिए काफी सहायक होते हैं । आलेख प्रस्तुत करने वालों को बधाई देते हुए उन्होंने खुशी व्यक्त की कि कैगा से इतने हिंदीतरभाषी कर्मचारी इसमें प्रस्तुति दे रहे हैं ।

भारी पानी संयंत्र, कोटा

भारी पानी संयंत्र, कोटा में दिनांक 25 एवं 26 मार्च, 2009 को भारी पानी कॉलोनी स्थित अतिथि गृह में वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों से संबंधित दो दिवसीय राजभाषा वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया ।

संयंत्र के प्रशासन अधिकारी ने अपने स्वागत भाषण में व्यक्त किया कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में हिंदी में अधिकाधिक कार्य करना ही वैज्ञानिक संगोष्ठी के आयोजन का एकमात्र उद्देश्य है । श्री मनोज शर्मा ने प्राचीन एवं आधुनिक विज्ञान की तुलनात्मक विवेचना प्रस्तुत करते हुए कहा कि ज्ञान विज्ञान अपनी भाषा में हो तो आमजन तक अच्छी तरह से पहुँच सकता है । तत्पश्चात् संयंत्र के

महाप्रबंधक ए. एन. वर्मा जी ने अपने संबोधन भाषण के दौरान ही भारी पानी संयंत्र स्वाभिमान एवं आत्मनिर्भरता की गौरवगाथा की सारगर्भित ढंग से प्रस्तुति दी । मुख्य अतिथि श्री हरिशंकर शर्मा, बीएसएनएल ने बीएसएनएल की संक्षिप्त जानकारी देते हुए इसकी नवीन प्रौद्योगिकी के बारे में बहुमूल्य जानकारी दी । इस दो दिवसीय राजभाषा वैज्ञानिक संगोष्ठी में चार सत्रों के अन्तर्गत परिशिष्ट-क के कार्यक्रम के अनुसार 15 व्याख्यानों का आयोजन किया गया ।

इस संगोष्ठी में कुल 45 प्रतिभागी उपस्थित थे । कार्यक्रम का संचालन श्री प्रभात शर्मा ने किया व धन्यवाद ज्ञापन श्री विनायक कुमार, हिंदी अनुवादक ने दिया ।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून-248005

आंतरिक हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठियों के क्रम में "24वीं आंतरिक हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी" का आयोजन गत दिवस संस्थान के सर सी वी रमन व्याख्यान-कक्ष में किया गया । समारोह का उद्‌घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. मधुकर ओंकारनाथ गर्ग ने संगोष्ठियों के अनवरत आयोजन की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि निसंदेह ही इस प्रकार के प्रयास विज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए महत्वपूर्ण कदम है । उन्होंने कहा कि संस्थान के स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में यह हमारा सौभाग्य होगा कि हम इन संगोष्ठियों में पढ़े गए आलेखों को पुस्तक रूप में सामने लाएं । तेल उद्योग के लिए निश्चित रूप से हिंदी में संकलित यह पुस्तक देशभर में उत्प्रेरक का कार्य करेगी । उन्होंने यह भी कहा कि इन संगोष्ठियों में पढ़े गए, सर्वप्रथम प्राप्त, हिंदी आलेख को इसी तिमाही से नियमित संस्थान के न्यूजलेटर 'संकल्प' में प्रकाशित किया जाएगा । ऐसे सद्‌प्रयासों के लिए उन्होंने राजभाषा अनुभाग को बधाई दी ।

संगोष्ठी के संयोजक व संस्थान के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी डॉ. दिनेश चमोला ने संगोष्ठी की अनवरतता, उपयोगिता व शब्द की अनेकार्थकता पर प्रकाश डाला । वैज्ञानिक चेतना, जागरूकता व इसके समुचित प्रचार-प्रसार के बिना किसी राष्ट्र को उन्नत राष्ट्र नहीं कहा जा सकता । उन्होंने कहा कि विषय की स्पष्टता के साथ शब्दावली के प्रयोग की सजगता व उपयुक्तता की भी जानकारी अत्यंत आवश्यक है । ऐसी संगोष्ठियां ही वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, भारत सरकार द्वारा बनाए गए मानक शब्दों पर अनुप्रयोग की मुहर लगा सकती है । हिंदी भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त विज्ञान अधिसंख्य लोगों तक पहुंच कर अपने उद्‌देश्य में सफल हो सकता है ।

एनएचपीसी, निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

निगम मुख्यालय, फरीदाबाद द्वारा दिनांक 17 व 18 मार्च, 2009 को एनपीटीआई सम्मेलन कक्ष में दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया; जिसमें निगम मुख्यालय सहित इसके विभन्न पावर स्टेशनों/परियोजनाओं/कार्यालयों में पदस्थ राजभाषा कैडर व राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े 60 अधिकारी शामिल हुए ।

इस अवसर पर सर्वप्रथम श्री दयाल माथुर, कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन) ने कहा कि इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के संबंध में व्यापक विचार विमर्श करना व नए उत्साह से राजभाषा कार्यान्वयन में अपना योगदान देने का प्रयास करना है ।

इस अवसर पर अपने उद्‌बोधन भाषण में श्री ए.बी. एल. श्रीवास्तव, निदेशक (वित्त) ने कहा कि निगम जिस प्रकार विद्युत उत्पादन के क्षेत्र में नई-नई उपलब्धियां प्राप्त कर रहा है, उसी प्रकार निगम में राजभाषा की प्रगति भी सराहनीय है, जिसके लिए हमें अनेक पुरस्कार भी मिले हैं । हमें न केवल इन पुरस्कारों को सहेजना है बल्कि इस दिशा में प्रगति करते हुए निरंतर आगे बढ़ते रहना है ।

सम्मलेन के प्रथम सत्र के वक्ता एवं मुख्य अतिथि डॉ. गंगा प्रसाद विमल, प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं पूर्व निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने सम्मेलन के सफल आयोजन की कामना करते हुए कहा कि अपनी भाषा में पारंगत होने पर ही विश्व की अन्य भाषाओं में पारंगत होने की क्षमता विकसित होती है । अत: यह आवश्यक है कि हम अपनी सोच बदलें व पहले अपनी भाषा में प्रवीणता प्राप्त करें । डॉ. विमल ने "हिंदी साहित्य के मानव मूल्यों की राजभाषा प्रबंधन में प्रासंगिकता" विषय पर सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि जहां हम रहते हैं वहां

की मिट्टी से हमारे संस्कार निर्मित होते हैं । ये संस्कार साहित्य में दर्शाए गए जीवन मूल्यों से जुड़े होते हैं । उन्होंने कहा कि मातृभाषा में चिंतन होने पर राजभाषा स्वयं प्रस्फुटित होगी ।

सम्मलेन के दूसरे सत्र में व्याख्यान देने के लिए विद्युत मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य, प्रसिद्ध साहित्यकार एवं साहित्य अकादमी के सदस्य डॉ. परमानंद पांचाल ने "राजभाषा कार्यान्वयन की समस्याएं व समाधान" विषय पर बोलते हुए कहा कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा इसलिए दिया गया ताकि यह पूरे राष्ट्र को जोड़े । हिंदी व्यापक स्तर पर बोली व समझी जाती है । यह हमारी अपनी भाषा है । अत: हमें कार्यालयीन कार्यों में इसका प्रयोग गर्व से करना चाहिए । उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी समस्याओं व समाधान के संदर्भ में राजभाषा सम्मेलन का आयोजन निश्चय ही एक महत्वपूर्ण प्रयास सिद्ध होगा ।

सम्मलेन के तीसरे सत्र का संचालन श्रीमती सी. डी . मलिक, संयुक्त निदेशक, विद्युत मंत्रालय ने किया । श्रीमती मलिक ने "राजभाषा कार्यान्वयन-निर्धारित लक्ष्य और प्राप्ति के उपाय" विषय पर बोलते हुए वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित विभिन्न लक्ष्यों और उनकी प्राप्ति के उपायों पर विस्तार से चर्चा की । उन्होंने प्रतिभागियों का आह्वान करते हुए कहा कि हिंदी भाषा में शब्दों को आत्मसात करने की अपार क्षमता विद्यमान है । आप सब अपने-अपने स्तर पर हिंदी में कार्य करने का वातावरण तैयार करें तो हिंदी स्वत: आगे बढ़ेगी व राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निर्धारित लक्ष्य अवश्य प्राप्त होंगे ।

सम्मेलन के चौथे सत्र के दौरान श्री अविनाश कुमार, प्रमुख (मानव संसाधन व राजभाषा) एवं डॉ. राजबीर सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने आंतरिक परिचर्चा के अन्तर्गत सम्मेलन में भाग लेने आए प्रतिभागियों की राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़ी समस्याओं पर चर्चा की । डॉ. राजबीर सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने कम्प्यूटरों पर अधिक से अधिक कार्य करने पर विशेष जोर दिया । उन्होंने तिमाही प्रगति रिपोर्ट विधिवत भरने व निगम में लागू प्रोत्साहन योजनाओं के संबंध में विस्तार से जानकारी दी व प्रतिभागियों की अन्य शंकाओं का भी समाधान किया ।

सम्मलेन के दूसरे दिन श्री अविनाश कुमार, प्रमुख (मानव संसाधन व राजभाषा) एवं डॉ. राजबीर सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने प्रथम सत्र में निगम की विभिन्न परियोजनाओं/क्षेत्रीय कार्यालयों में राजभाषा प्रयोग की स्थिति की विस्तार से समीक्षा की । उन्होंने परियोजनाओं में राजभाषा प्रयोग बढ़ाने पर चर्चा की तथा उत्तरोतर राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने हेतु कारगर उपाए सुझाए । उन्होंने तिमाही प्रगति रिपोर्ट एवं अन्य सूचनाएं सही रूप में और समय पर भिजवाने का आग्रह किया । जिन परियोजनाओं में राजभाषा नीति का पूरा पालन नहीं हो रहा है उन्हें उचित उपाय करने के निर्देश दिए गए । तिमाही रिपोर्टों में दी गई सूचनाओं की विसंगतिओं को दूर करने के भी निर्देश दिए गए ।

सम्मेलन के दूसरे सत्र का संचालन श्री केवल कृष्ण, तकनीकी निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने किया । उन्होंने "सूचना प्रौद्योगिकी व कम्प्यूटर पर हिंदी प्रयोग" के विषय में विस्तार से जानकारी दी । उन्होंने प्रतिभागियों को सारांश, यूनीकोड, मंत्रणा, श्रुतलेखन, लीला-प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ आदि अनेक हिंदी सॉफ्टवेयरों के प्रभावी उपयोग के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी दी ।

सम्मेलन के अगले सत्र के वक्ता डॉ पूरन चंद, टण्डन, वरिष्ठ रीडर, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ने "वैश्वीकरण और हिंदी" विषय पर प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया । उन्होंने कहां कि भाषा की दृष्टि से भारत एक समृद्ध देश है । आज वैश्वीकरण के इस दौर में भाषा और साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं । उन्होंने भारतीय भाषाओं पर पड़ने वाले भू-मण्डलीकरण के प्रभाव के परिप्रेक्ष्य में हिंदी के वर्तमान स्वरुप को रेखांकित करते हुए कहा कि वैश्वीकरण ने हमारे सामने बहुत सी चुनौतियां उत्पन्न की हैं । इन चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें भाषा के तेवर बदलने होंगे । उसे कूप मंडूक स्थिति से निकाल कर समुद्र की तरह सर्वग्राही एवं व्यापक बनाना होगा ।

सम्मेलन के समापन सत्र में मुख्य अतिथि श्री डी. के. पाण्डेय ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि एनएचपीसी जल विद्युत उत्पादन के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रयोग में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है । निगम मुख्यालय में राजभाषा पुस्तकालय की स्थापना व मुख्यालय

द्वारा समय-समय पर कवि सम्मेलनों आदि का आयोजन निश्चित रूप से सराहनीय उपलब्धियां हैं और इसके लिए राजभाषा विभाग बधाई का पात्र है । उन्होंने राजभाषा संवर्धन के लिए इसी निष्ठा व लगन से कार्य करने तथा नए-नए कीर्तिमान हासिल करने की शुभकामनाएं व्यक्त कीं । सम्मेलन में भाग लेने आए सभी 60 प्रतिभागियों को संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग व निदेशक (वित्त) के कर-कमलों से प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए ।

इस अवसर पर संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने सभी प्रतिभागियों को राजभाषा विभाग की ओर से एक-एक हिंदी पुस्तक भी भेंट की, जिसे प्रतिभागियों ने काफी पसंद किया । इसके उपरांत अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्री ए. बी. एल. श्रीवास्तव (वित्त) ने माननीय श्री डी. के. पाण्डेय जी का उनकी गौरवमयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए आभार व्यक्त किया । उन्होंने सभी प्रतिभागियों का आह्वान करते हुए कहा कि आप सब क्षेत्रिय स्तर पर भी राजभाषा की प्रगति के लिए प्रयासरत रहें व नई-नई उपलब्धियां प्राप्त करें । उन्होंने सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए राजभाषा विभाग को बधाई दी तथा आशा व्यक्त की कि सभी प्रतिभागी इस सम्मेलन से एक नई ऊर्जा और नया उत्साह लेकर अपने-अपने स्तर पर राजभाषा कार्यान्वयन को एक नई दशा व दिशा प्रदान करेंगे ।

बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, जीवन भारती, 124, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली

26-2-2009 को आंचलिक कार्यालय के सभाकक्ष में अंचल के वरिष्ठ प्रबंधकों हेतु 'राजभाषा संगोष्ठी' का आयोजन किया था, इस संगोष्ठी में श्री बी. आर. शर्मा, निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार उपस्थित रहे, श्री शर्मा ने वरिष्ठ प्रबंधकों को भारत सरकार की राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी अपेक्षाओं, नीति एवं सांविधिक अपेक्षाओं के अनुपालन को सुनिश्चित करने बाबत् सूचित किया, उन्होंने बैंक ऑफ इंडिया द्वारा वरिष्ठ प्रबंधकों हेतु आयोजित ऐसी राजभाषा संगोष्ठी की सराहना करते हुए कहा कि इससे उच्च स्तर से ही राजभाषा में कार्य करने का सकारात्मक संदेश जाएगा । श्री शर्मा ने बैंक ऑफ इंडिया, नई दिल्ली अंचल को क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रथम पुरस्कार प्रदान किए जने पर बधाई एवं शुभकामनाएं दी ।

संगोष्ठी के उपरांत अंचल के वरिष्ठ प्रबंधकों के बीच 'हिंदी टिप्पण एवं नोटिंग प्रतियोगिता' का आयोजन भी किया गया था, प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को हिन्दी दिवस पर पुरस्कृत किया जाएगा ।

भारतीय कृषि अनुसंधान समिति, 1130 सदर, करनाल-132001

कृषि एवं पशुपालन के क्षेत्र में अनुसंधान स्तर पर राष्ट्रभाषा हिंदी को सम्मान दिलाने वाली एकमात्र राष्ट्रीय स्तर की पंजीकृत संस्था "भारतीय कृषि अनुसंधान समिति," करनाल तथा देश के सबसे बड़े कृषि शोध संस्थान "भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान," पूसा नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में समिति की ग्यारवीं "राष्ट्रीय कृषि विज्ञान संगोष्ठी" हिंदी भाषा में "सतरंगी क्राति हेतु कृषि एवं पशु पालन की समेकित प्रणाली : अनुसंधान, उपलब्धियां एवं रणनीति" विषय पर संस्थान के डॉ. बी. पी. पाल सभागार में 13 से 15 अप्रैल, 2009 को सफलाता पूर्वक आयोजित की गई । इसमें भारत के विभिन्न कृषि एवं पशु शोध संस्थानों व कृषि विश्वविद्यालयों के लगभग 250 वैज्ञानिकों तथा विदीशा (म. प्र.) के दो प्रगतिशील कृषकों ने भाग लिया ।

13 अप्रैल, 2009 को प्रात: 10 बजे संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र प्रारम्भ हुआ । श्रीमती करूणा दीक्षित जी ने मंच संचालन का सुमधुर साहित्यिक शब्दों के साथ भार संभाला और सर्व प्रथम "कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल" के अध्यक्ष डॉ. सी. डी. मायी जी से मुख्य अतिथि के रूप में दीप प्रज्जवलित करने हेतु निवेदन किया । तत्पश्चात् माँ सरस्वती की वंदना की गई और मंचासीन महानुभावों का पुष्प बुकेट भेट कर सम्मान किया गया तथा मुख्य अतिथि द्वारा संगोष्ठी की स्मारिका तथा समिति की तृमासिक "भारतीय कृषि अनुसंधान पत्रिका" के मार्च, 2009 के

अंक का विमोचन किया । इसके पश्चात् समिति के संरक्षक तथा उ. प्र. गन्ना शोध परिषद्, शाहजहाँपुर के पूर्व निदेशक डॉ. एम. एल. अग्रवाल जी ने संगोष्ठी में उपस्थित सभी सहभागियों का स्वागत अभिनंदन भाषण पढ़ा । तत्पश्चात् समिति संस्थापक श्री आर. डी. गोयल जी ने समिति के उद्देश्यों एवं कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यदि देश को विकसित राष्ट्र बनाना चाहते हो तो राष्ट्रभाषा हिंदी को शिक्षा व विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में सम्मान देना होगा । विश्व में ऐसा कोई भी विकसित राष्ट्र नहीं है जिसने किसी विदेशी भाषा के आधार पर विकास किया हो, परन्तु भारत के राजनेता अंग्रेजी द्वारा इस देश को विकसित राष्ट्र बनाने का नाकामं प्रयास कर रहे हैं । आपने डॉ. मायी जी से विनम्र निवेदन किया कि हिंदी में लिखने वाल वैज्ञानिकों को पदोन्नति के समय हिंदी में छापे शोधपत्रों को वरीयता देने की कृपा करें ।

तत्पश्चात् समिति के उपाध्यक्ष तथा कृषि महाविद्यालय के पूर्व अधिष्ठाता डॉ. हरी सिंह कुशवाह जी ने समिति का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया । इसके पश्चात् संगोष्ठी के विशिष्ठ अतिथि तथा विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलपति डॉ. एस. पी. एस. अहलावत जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि राष्ट्रभाषा हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो देश को प्रगति के पथ पर तेजी से दौड़ा सकती है । उन्होंने चीन, जर्मनी, जापान, फ्रांस तथा ग्रीक आदि देशों का उदाहरण देते हुए हिंदी को प्रत्येक क्षेत्र में लाने पर बल दिया ।

तत्पश्चात् संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ. सी. डी. मायी जी ने कहा कि हिंदी में छपे शोध-पत्रों के भी कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल के सदस्य अन्य शोध-पत्रों की भांति परखते हैं तथा उचित अंक देते हैं । संगोष्ठी के अध्यक्ष तथा संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. एस. ए. पाटिल जी ने अपने उद्बोधन में कृषि विज्ञान में राष्ट्र भाषा की आवश्यकता पर बल दिया और हिंदी में राष्ट्रीय स्तर की हिंदी कृषि संगोष्ठी को एक अच्छी पहल व प्रचार का सफल माध्यम बताया । समिति के अध्यक्ष डॉ. गजेन्द्र गिरि जी ने कृषि वैज्ञानिकों तथा किसानों को हिंदी भाषा द्वारा आपसी तालमेल बनाकर खेतों तथा पशुओं की उपज बढ़ाने पर जोर दिया ।

31वाँ अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन, अहमदाबाद (गुजरात) में सम्पन्न

नागरी लिपि परिषद्, नई दिल्ली का 31वाँ अखिल भारतीय सम्मेलन 14 तथा 15 फरवरी, 2009 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा स्थापित गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के सहयोग से गुजरात विद्यापीठ के परिसर में सम्पन्न हुआ । देश के प्रमुख विद्वानों, भाषाविदों तथा नागरी लिपि प्रेमियों ने इसमें बड़े उत्साह से भाग लिया और अपनी सक्रिय सहभागिता दर्शाई ।

गुजरात विद्यापीठ के कुलनायक डॉ. सुदर्शन आयंगर ने सम्मेलन का उदघाटन किया तथा नागरी लिपि परिषद्, नई दिल्ली के अध्यक्ष श्री सी. वी. चारी ने अध्यक्षता की । श्री नरेन्द्र शास्त्री तथा बाबा कानपुरी की प्रार्थना से समारोह का शुभारंभ हुआ । नागरी लिपि परिषद्, नई दिल्ली के महामंत्री डॉ. परमानंद पांचाल ने अपने भाषण में नागरी लिपि परिषद् के उद्देश्यों एवं कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि नागरी लिपि से किसी भी भाषा को खतरा नहीं है । नागरी लिपि राष्ट्रीय एकता और भाषाई सौहार्द बढ़ाने में सहायक है। जिन बोलियों और भाषाओं की कोई लिपि नहीं है उन्हें नागरी लिपि से ही बचाया जा सकता है ।

भारतीय भाषा संस्कृति संस्थान, गुजरात विद्यापीठ के निदेशक श्री अंबाशंकर नागर ने अपने गंतव्य में कहा कि विश्व में भाषाओं का निधन हो रहा है, भाषा कालकवलित हो रही है। पिछले पांच वर्षों में हजारों भाषाएं समाप्त हो चुकी हैं। 2008 ई. में 6000 भाषाएं बची थी अब 2010 में केवल 600 भाषाएं बचने को हैं। सारे विश्व में मातृभाषा बचाओ आंदोलन चल रहा है। दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात् गुजरात विद्यापीठ के कुलनायक डॉ. सुदर्शन आयंगर ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि समस्त भारतीय लिपियों का आधार ब्राह्मी लिपि है। आज अंग्रेजी भाषा उतनी खतरनाक नहीं है, जितना उसका माध्यम होना खतरनाक है। वस्तुतः अंग्रेजी भाषा की शिक्षा भी नागरी लिपि में होनी चाहिए। भारतीय संस्कृति व भारतीय भाषाओं की सुरक्षा के लिए

सर्वश्रेष्ठ लिपि नागरी का प्रयोग व्यापक स्तर पर होना आवश्यक है।

नागरी लिपि परिषद्, नई दिल्ली के अध्यक्ष श्री सी. वी. चारी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि गांधी जी के आध्यात्मिक वारिस आचार्य विनोबा भावे अंत तक गांधी जी के मार्ग पर चलते रहे। 540 लिपियों में आज वैश्विक स्तर पर चार लिपि परिचारों का प्रचलन है--रोमन, सेमेटिक अरबी, ब्राह्मी और चीनी। उर्दू को छोड़कर सभी भारतीय भाषाओं की वर्णमाला एक है। चीनी, जापानी भाषाओं के लिए नागरी लिपि की स्वीकार्यता पर विचार होता रहा है। देवनागरी लिपि केवल भारतीय भाषाओं के लिए नहीं विश्व की किसी भी भाषा के लिए श्रेष्ठ लिपि है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल

विश्व भाषा वर्ष 2008 मनाए जाने के उपलक्ष्य में संग्रहालय में दिनांक 30 सितम्बर, 2008 को एक विशेष संगोष्ठी/परिचर्चा का आयोजन सम्पन्न हुआ। विश्व भाषा एवं हिंदी की स्थिति तथा महत्व पर आधारित इस संगोष्ठी ने भोपाल शहर के हिंदी साहित्यकारों, लेखकों, प्राध्यापकों, हिंदी सेवी/राजभाषा से जुड़े मनीषियों ने प्रतिभागिता की ।

डॉ. कैलाश चंद्र पंत, मंत्री एवं संचालक म. प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति को मुख्य अतिथि तथा डॉ. वैंकटशैया, अधीक्षण पुरातत्वविद भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण भोपाल को विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। संगोष्ठी में उपस्थिति प्रवकताओं में डॉ. लता अग्रवाल, हिंदी व्याख्याता, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भाषा की श्रेष्ठता की कसौटी भौगोलिक नहीं बल्कि ऐतिहासिक है। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं कि हिंदी का इतिहास अति समृद्ध है। वास्तव में इसके विकास को यदि खतरा है तो वो अतिशुद्धतावादियों से परिवर्तन के नाम पर इसके स्वरूप को विखण्डित करने वालों और गुलाम मानसिकता वाले समाज से है ।

डॉ. विनय राजाराम, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, सत्यसाई महाविद्यालय ने परिचर्चा में भाग लेते हुए कहा कि राजकीय इच्छाशक्ति की कमी ही हिंदी को विश्व स्तर पर स्थापित करने में बाधित हैं। पाणिनी की व्याकरण अनेक भाषाओं का आधार है इसलिए हिंदी की सहजता ही विश्व में ग्राह्य है। अतिथि प्रवक्ता के रूप में आमंत्रित डॉ. कमला सक्सेना ने उद्बोधन में हिंदी के वैश्वीकरण या हिंदी की विश्वस्तरीय मान्यता के संबंध में कहा कि हमें हीन भावना से ग्रस्त नहीं होना चाहिए बल्कि गौरव महसूस करना चाहिए क्योंकि यह कतई आवश्यक नहीं कि जो भाषा विश्वस्तर पर बोली जाए, वही श्रेष्ठ हो किसी भी देश की अस्मिता उसकी भाषा में ही निहित होती है।

मुख्य अतिथि डॉ. पंत ने विचार अभिव्यक्ति में हिंदी के विपरीत अंग्रेजी के विकास का कारण लोगों की मानसिक गुलामी तथा पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण बताया। लोग प्रभावशाली एवं समृद्धशाली देश समाज एवं व्यक्ति का ही अनुसरण करते हैं। इसी मानसिकता को भांपते हुए अंग्रेजी हम पर थोपी जा रही है। अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के साथ हिंदी विश्व को अनुकरणीय संदेश देने में सक्षम है। स्वतत्रंता को आचार-विचार भाषा के माध्यम से भी प्रस्तुत किया जा सकता है। गुलाम भारत का परिदृश्य प्रस्तुत करते हुए उन्होंने बताया कि अंग्रेजों द्वारा दिया गया नौकरशाही का ढांचा आज भी देश में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में विकास के लिए उत्तरदायी है ।

संग्रहालय के निदेशक डॉ. के. के. बासा ने अपने उद्बोधन में हिंदी की वर्तमान स्थिति पर अनुभव जन्य प्रकाश डालते हुए उड़िया भाषियों के विशेष संदर्भ में कहा है कि वे आज परस्पर हिंदी भाषा के माध्यम से विचार अभिव्यक्ति में ज्यादा सहज महसूस करते हैं। संगोष्ठी में आमंत्रित प्रवक्ताओं में डॉ. चन्द्रप्रकाश जायसवाल, उपमंत्री म. प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल, डॉ. महावीर सिंह प्राध्यापक एवं डॉ. कमला सक्सेना, सेवानिवृत प्राचार्या एवं म.प्र. प्रसार भारती की प्रथम महिला उदघोषिका डॉ. ऊषा जायसवाल, म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, श्री दुर्गेश गोरख, सेवानिवृत हिंदी अधिकारी, बैंक ऑफ इंडिया एवं क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन कार्यालय, भोपाल से सहायक निदेशक एवं अनुसंधान अधिकारी श्री सुरेन्द्र पांडे इत्यादि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

पुरस्कार/प्रतियोगिताएं

बैंक ऑफ बड़ौदा क्षेत्रीय कार्यालय (गोवा और प. म. क्षेत्र): प्लाझा चेंबर्स, चौथी मंजिल, डॉ. आत्माराम बोरकर रोड, पणजी-गोवा 403 001.

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा 28 फरवरी, 2009 को बड़ौदा, गुजरात में मध्य एवं पश्चिम क्षेत्र के लिए आयोजित संयुक्त राजभाषा सम्मेलन में पश्चिम क्षेत्र में "ग" क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले बैंकों में बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी, गोवा को राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया ।

इस सम्मेलन में सयाजीराव गायकवाड़ विश्वविद्यालय, बड़ौदा के प्रो. रमेश के. गोयल जी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था । इस अवसर पर बैंक ऑफ बड़ौदा, प्रधान कार्यालय के महाप्रबंधक महोदय श्री के. वी. वच्छराजानी, इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लि., के कार्यकारी निदेशक श्री वासू जी, राजभाषा विभाग के सचिव डा. प्रदीप कुमार जी, आई.ए.एस., संयुक्त सचिव श्री डी. के. पाण्डेय जी मंचासीन थे । इस सम्मेलन में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की ओर से बैंक ऑफ बड़ौदा क्षेत्रीय कार्यालय गोवा के सहायक महाप्रबंधक महोदय श्री एस. डी. इनामदार जी को राजभाषा शील्ड प्रदान की गई । इस सम्मान के लिए बैंक ऑफ बड़ौदा क्षेत्रीय कार्यालय, गोवा आपका हृदय से आभार प्रकट करता है । महोदय, हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि हम अपने बैंक में हिंदी के प्रयोग को लगातार बढ़ाते रहेंगे और अपने स्टाफ सदस्यों को हिंदी के प्रति प्रोत्साहित करते रहेंगे ।

इस सम्मेलन में भारत सरकार की राजभाषा नीति पर विस्तृत विचार-विमर्श हुआ और इसका अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार, राजभाषा सचिव डा. प्रदीप कुमार जी ने सभी कार्यालय प्रमुखों एवं राजभाषा अधिकारियों से अपील की । उन्होंने उपस्थित सभी कार्यालय प्रमुखों से यूनिकोड एनकोडिंग शीघ्र लागू करने का भी अनुरोध किया । साथ ही, राजभाषा विभाग के लीला साफ्टवेयर के माध्यम से अहिंदीतर राज्यों के अधिकारी एवं कर्मचारी आसानी से हिंदी सीख सकते हैं ।

बैंक को राष्ट्रीय स्तर पर भी लगातार तीसरी बार गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की ओर से इंदिरा गांधी शील्ड प्राप्त हुई है जो यह प्रमाण है कि बैंक ऑफ बड़ौदा में राजभाषा हिंदी का अनुपालन किया जा रहा है । इस पुरस्कार को प्राप्त करने में हमारी शाखाओं एवं कार्यालयों में कार्यरत प्रत्येक स्टाफ सदस्य का सक्रिय योगदान है ।

सहायक महाप्रबंधक महोदय श्री इनामदार जी ने बड़ौदा से लौटने पर अपने क्षेत्रीय कार्यालय में सभी स्टाफ सदस्यों की एक बैठक बुलाई और उन्हें इस सम्मान से अवगत कराया । साथ ही, उन्होंने अपने स्तर पर सभी स्टाफ सदस्यों से यह भी अनुरोध किया कि हम हिंदी में अच्छा कार्य कर रहे हैं किंतु यह पुरस्कार हमें फिर से मिले इसके लिए हमें हिंदी के क्षेत्र में और भी बेहतर प्रदर्शन करना होगा ।

इण्डियन ओवरसीज बैंक क्षेत्रीय कार्यालय कोयंबत्तूर 11/952 क्रासकट रोड गांधीपुरम कोयंबत्तूर : 641 012

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोयंबत्तूर ने, इंडियन ओवरसीज बैंक को, कोयंबत्तूर में वर्ष 2007-08 के दौरान राजभाषा नीति कार्यान्वयन के उत्तम कार्य निष्पादन के लिए प्रथम पुरस्कार दिया है। श्री एस. चन्द्रशेखरन,

महाप्रबंधक, कोयंबत्तूर ने, टॉलिक की, दि. 23-3-2009 को कोयंबत्तूर में हुई अर्ध-वार्षिक बैठक में, डॉ. श्री वी. बालकृष्णन, उप निदेशक (कार्यान्वयन) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दक्षिण-पश्चिम), गृह मंत्रालय, भारत सरकार, कोच्चि, से शील्ड प्राप्त की।

बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय रेशम बोर्ड (वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार) पोस्ट बॉक्स सं. : 11 भंडारा 441 904 (महाराष्ट्र)

डॉ. एस. के. माथुर, वैज्ञानिक-डी, बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र, (केंद्रीय रेशम बोर्ड) भंडारा एवं सदस्य-सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भंडारा को राष्ट्रीय हिंदी सप्ताह (दिनांक 8 सितम्बर, 2008 से 14 सितम्बर, 2008) के उपलक्ष में भंडारा नगर हिंदी गौरव समिति द्वारा राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार, उत्थान एवं इसे लोकप्रिय बनाने में बहुमूल्य योगदान के लिए उन्हें हिंदी दिवस (दिनांक 14-9-2008) के शुभ अवसर पर एक भव्य कार्यक्रम में आदरणीय श्री शिशुपाल पटले, सांसद के कर-कमलों द्वारा एक सम्मान-पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

डॉ. एस. के. माथुर द्वारा हिंदी में 9 तकनीकी पुस्तकें/पुस्तिकाएं एवं 28 तकनीकी लेख/शोध पत्र राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इसके पहले डॉ. एस. के.माथुर को राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए जिला, केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची तथा केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलोर (राष्ट्रीय) स्तर पर भी सम्मानित किया जा चुका है।

भारी पानी संयंत्र में हिंदी कवि गोष्ठी एवं राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन के अतिथि गृह के सभागृह में दिनांक 05 जनवरी, 2009 को हिंदी सप्ताह के दौरान कार्मिकों, गृहणियों एवं बच्चों के लिए आयोजित की गई विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण के साथ-साथ हिंदी कवि गोष्ठी कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर संयंत्र के कुछ कार्मिकों ने अपनी हिंदी कविताएँ एवं दो कार्मिकों ने कैशिओ यंत्र पर हिंदी गीत बजाकर सबका मनोरंजन किया। सभी प्रतिभागियों को स्मृति चिन्ह भी प्रदान किए गए।

भारी पानी संयंत्र में हिंदी सप्ताह के दौरान माह सितंबर में संयंत्र के कार्मिकों हेतु 11 विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था, उनमें हिंदी पत्र लेखन, हिंदी अनुवाद, हिंदी सुलेख, हिंदी टिप्पण लेखन हिंदी गीत, हिंदी पठन, हिंदी भाषण, हिंदी मेमोरी टेस्ट, हिंदी नारा, मौखिक प्रश्नोत्तरी, हिंदी निबंध लेखन आदि प्रतियोगिताएँ शामिल थीं। साथ ही संयंत्र की आवासीय कॉलोनी में बच्चों एवं गृहणियों के लिए भी सात विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। बच्चों के लिए कविता लेखन, कहानी लेखन, हिंदी एवं अंग्रेजी वाक्यों का अनुवाद, हिंदी सुलेख, हिंदी निबंध लेखन, हिंदी श्रुतलेख इत्यादि प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थी, गृहणियों हेतु हिंदी सुलेख एवं हिंदी मेमोरी टेस्ट प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इन सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि द्वय श्री एस. परमसिवम, विशेष कार्याधिकारी और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं श्रीमती चेल्लमा, विशेष अतिथि श्री आई. सेनगुप्ता, तकनीकी सेवाएँ प्रबंधक एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष ने पुरस्कार वितरित किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री मनोज शर्मा, सहायक निदेशक (राभा) ने सभी का स्वागत एवं हार्दिक अभिनंदन किया तत्पश्चात् श्रीमती वेल्लुताई ने प्रार्थना गीत गाकर समारोह का शुभारंभ किया।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री एस. परमसिवम ने अपने उद्‌बोधन भाषण में कहा कि सरकार द्वारा राजभाषा हिंदी को बढ़ाने हेतु विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएँ लागू हैं, फिर भी कर्मचारी उचित उत्साह नहीं दिखाते हैं। उन्होंने कहा कि हमारे कार्यालय द्वारा जारी किए जाने वाली द्विभाषिक कागज पत्रों से हमें हिंदी सीखने का मौका मिलता है। उन्होंने यह भी कहा कि बिना हिंदी पढ़े आजकल नौकरी मिलना आसान नहीं है। अत: हम अपने साथ-साथ अपने

बच्चों को भी हिंदी सिखाएं ताकि भविष्य में उनको कोई कष्ट न हो। उन्होंने ने कहा कि भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन राजभाषा के कार्यान्वयन हेतु बेजोड़ प्रयत्न कर रहा है एवं इसके परिणाम स्वरूप हमें दो बार राजभाषा शील्ड भी प्राप्त हुआ है। जो भविष्य में भी बरकरार रहेगा। उन्होने कहा कि हिंदी प्रतियोगिताओं के माध्यम से हमें पता चलता है कि कार्मिकों एवं बच्चों के हिंदी के ज्ञान का स्तर क्या है इसे हमें प्रतियोगिताओं तक ही सीमित न रख कर, कार्यालय एवं अपने दैनिक जीवन में भी उपयोग में लाना है एवं हिंदी ज्ञान निरंतर बढ़ाते रहना है।

श्री आई. सेनगुप्ता, तकनीकी सेवाएँ प्रबंधक एवं अध्यक्ष-राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन ने कहा कि 1949 में संविधान में दिए गए नियमों के अनुसार सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का कर्तव्य बनता है कि वे सभी कार्य हिंदी में करें। उन्होंने आगे कहा कि राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्य हिंदी के कार्यक्रम को आगे बढ़ाने की कोशिश में हैं। राजभाषा शील्ड को प्राप्त करना भी हमारे लिए एक गौरव की बात है उन्होंने कहा कि यह हमारा कर्तव्य है कि राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देते हुए देश का भी विकास करें। हिंदी को संयंत्र एवं नगर में आगे बढ़ाने के लिए हिंदी कक्ष द्वारा किए जाने वाले कार्यों की भी उन्होंने सराहना की।

अतिथियों को स्मृति चिन्ह प्रदान किए गए। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती भाग्यवती एवं श्री मनोज शर्मा ने किया कार्यक्रम के अंत में श्रीमती श्यामलता ने सभी का आभार व्यक्त किया। ■

पृष्ठ 37 का शेष

न स धर्मः कुधर्म तत'–जो धर्म अन्य धर्मों में बाधा डाले, वह धर्म है ही नहीं, कुधर्म है। इस पर पूरा ध्यान रहना चाहिए।

डॉ. गिरिजाशंकर त्रिवेदी (साहित्यिक पत्रकारिता) पत्रकारिता को पाँचवां वेद मानते हैं और संस्कृति, सभ्यता, विचारों की स्वतंत्रता को वाणी देने के साथ ही जीवन में अभूतपूर्व क्रांति लाने का सशक्त माध्यम भी। उन्होंने साहित्यिक पत्रकारिता की यात्रा का विकास 'उदंत मार्तंड' (1826 मई) से नवभारत टाइम्स तक रेखांकित किया है। वे साहित्य में व्याप्त बढ़ते प्रदूषण के मध्य भी साहित्यिक पत्रकारिता के स्वस्थ चिंतन और विचारपूर्ण संस्कारों के प्रति आश्वस्त हैं। सामाजिक जीवन की समस्याओं से आँख मिलाना और उससे निपटने के लिए जूझना, डटना हिंदी पत्रकारिता का स्वभाव रहा है। चंदेश्वर प्रसाद के ये विचार हैं 'सामाजिक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी पत्रकारिता' में। उन्होंने सामाजिक समस्याएं गिनाई हैं और उनके समाधान में पत्रकारों को जागरूक और निष्ठावान होने का आह्वान किया है।

डॉ वेद प्रताप वैदिक ने हिंदी पत्रकारिता को कुछ तथाकथित अंग्रेजी प्रेमी लोगों द्वारा द्वितीय दर्जा देने का विरोध किया है और हिंदी अखबारों की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों का प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत किया है। पूरा लेख इस पर आधारित है कि संपूर्ण समाचारपत्र का स्वरूप, आकार और कथ्य क्या हो। उनका मानना है "अगर संपूर्ण अखबार कोई हो सकता है तो वह स्वभाषा का ही अखबार हो सकता है। इसमें हिंदी का एकाधिकार नहीं है। वह बांग्ला या तमिल, मराठी या मलयालम या अन्य किसी भी लोकभाषा का अखबार हो सकता है। जब साधारण और भद्रलोक के लिए जो समान रूप से उपयोगी हो और जो उनकी आशाओं, आकांक्षाओं और अपेक्षाओं का प्रामाणिक प्रतिबिंबन करे, वही अखबार संपूर्ण समाचारपत्र कहला सकता है। (हिंदी का संपूर्ण समाचारपत्र कैसा हो) यहां भारतेंदु हरिश्चंद्र की ये पंक्तियाँ स्मरणीय व प्रासंगिक हैं :

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञानक के, मिटै न हिय को शूल ॥

महात्मा गांधी ने लिखा है कि यदि समाज के लिए कोई वस्तु उपयोगी है, तो समाचारपत्र संपादक को उसके फायदों के बारे में लिखना चाहिए न कि अपने वित्तीय फायदों के लिए। अधिकांश विज्ञापन विलासिता की वस्तुओं के प्रतिस्पर्धात्मक विज्ञापन होते हैं, जो आम जनता नहीं खरीद सकती तथा उनका विज्ञापन करने का उनके विज्ञापन के खर्च अप्रत्यक्ष करों के रूप में उपभोक्ताओं पर पड़ेंगे, जो प्रजातंत्र के लिए बड़ा खतरा है। गाँधी जी के लिए समाचारपत्र एक सामाजिक संस्थान है। उसकी सफलता इस बात पर निर्भर है कि किस हद तक यह पाठकों के दिमाग को शिक्षित करता है। भारत के एक-एक व्यक्ति को जगने, बढ़ने और अपने उद्देश्य में सफल होने की प्रेरणा और शक्ति पत्रकारिता से मिले, तभी पत्रकारिता को सफल और जनतंत्र के लिए हितकर माना जा सकता है। ■

प्रशिक्षण

केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, फरीदाबाद हिंदी कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 20-04-2009 से 24-04-2009 तक केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, मुख्यालय, फरीदाबाद में राजभाषा विभाग के सौजन्य से पाँच दिवसीय हिंदी कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में बोर्ड के 32 अधिकारियों-कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ. वीरेन्द्र कुमार सिंह, उपनिदेशक (रा.भा.) ने कहा कि हिंदी ने ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भी अपना सामर्थ्य सिद्ध किया है। आरंभिक अवरोधों को दूर कर हिंदी अब कंप्यूटर, इंटरनेट के राजपथ पर सरपट दौड़ रही है। अनेक जाल पत्रिकाएं, बलॉग एवं लाखों हिंदी वेबसाइट इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। तकनीकी रूप से समर्थ बनकर ही हिंदी वर्तमान चुनौतियों से मुकाबला कर सकती है। श्री सिंह ने आशा व्यक्त की कि हिंदी कंप्यूटर प्रशिक्षण प्राप्त कर अधिकारी-कर्मचारी अपने-अपने अनुभागों और विभागों में हिंदी में अधिकाधिक कार्य कर राजभाषा-राष्ट्रभाषा की सेवा करेंगें। एन.पी.टी.आई. की ओर से प्रशिक्षक के रूप में आमंत्रित श्री प्रशांत कुमार शर्मा ने प्रतिभागियों को कंप्यूटर के आधारभूत सिद्धांतों, विंडोज वातावरण परिचय, नोटपैड, माइक्रोसॉफ्ट वर्ड, मंत्र राजभाषा, लीला प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ, श्रुतलेखन, माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल, माइक्रोसाफ्ट पॉवर प्वाइंट, इंटरनेट, ई-मेल आदि की जानकारी और अभ्यास करवाया। दिनांक 24-4-2009 को कार्यक्रम का समापन करते हुए डॉ. बीरेन्द्र कुमार सिंह, उपनिदेशक (रा.भा.), ने राजाभाषा विभाग, एन.पी.टी.आई. और प्रशिक्षक श्री प्रशांत कुमार शर्मा को हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया।

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति पंजाब नैशनल बैंक, आत्माराम हाउस, 1, टालस्टाय मार्ग, नई दिल्ली

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वाधान में कृषि बैंकिंग महाविद्यालय, पुणे द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक, नई दिल्ली में नराकास के सदस्य बैंकों/वित्तीय संस्थानों के राजभाषा अधिकारियों के लिये दिनांक 8 अप्रैल, 2009 को एक दिवसीय युनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय श्री.ए. उदगाता, क्षेत्रीय निदेशक, भारतीय रिजर्व बैंक, नई दिल्ली ने किया। अपने संबोधन में उन्होंने युनिकोड के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित प्रतिभागियों से कहा कि वे अपने बैंकों में इसे लगवाएं तथा इसका प्रयोग सुनिश्चित कराएं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह प्रशिक्षण राजभाषा अधिकारियों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

कार्यक्रम में दिल्ली बैंक नारकास के सदस्य बैंकों/ वित्तीय संस्थानों, यथा आंध्रा बैंक, इंडियन बैंक, केनरा बैंक, देना बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक, बैंक ऑफ इंडिया, यूको बैंक, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक, स्टेट बैंक ऑफ ट्रावनकोर, भारतीय निर्यात आयात बैंक, राष्ट्रीय आवास बैंक तथा पंजाब नैशनल बैंक से 14 राजभाषा अधिकारी उपस्थित थे। श्री सूरज प्रकाश तथा श्री नितिन देसाई ने प्रतिभागियों को युनिकोड फोंट डाउनलोड करने तथा इस पर कार्य करने संबंधी जानकारी तथा प्रशिक्षण प्रदान किया जिसकी सभी ने काफी सराहना की। प्रतिभागियों ने अपनी फीड बैक में प्रशिक्षण कार्यक्रम को अति उत्तम तथा लाभप्रद बताते हुए कहा कि यह कार्यक्रम कम से कम दो दिनों के लिए होना चाहिए तथा प्रत्येक छः माह में एक बार इसे आयोजित कराया जाना चाहिए।

कार्यक्रम में भारतीय रिजर्व बैंक, नई दिल्ली के राजभाषा विभाग से डॉ. गुप्ता एवं श्रीमती सरला शर्मा एवं पंजाब नैशनल बैंक से श्री एस.पी. कोहली भी उपस्थित थे।

प्रशिक्षण कार्यक्रम अपने उद्देश्य में पूर्णतया सफल रहा।

आदेश-अनुदेश

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, तकनीकी कक्ष, लोकनायक भवन, द्वितीय तल, "बी" विंग, खान मार्किट, नई दिल्ली का दिनांक 09 अप्रैल, 2009 का
परि. सं. 12015/4/2009-रा.भा. (त.क.)

परिपत्र

विषय : राजभाषा विभाग द्वारा राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र, राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण प्रतिष्ठान और सी-डैक के माध्यम से कंप्यूटर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम-वर्ष, 2009-10

राजभाषा विभाग द्वारा राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र, राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण प्रतिष्ठान और सी-डैक के माध्यम से वर्ष, 2009-2010 के दौरान हिंदी में कंप्यूटर प्रशिक्षण के लिए कराए जाने वाले प्रशिक्षण के अंतर्गत 90 कार्यक्रमों की सूची संलग्न है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों, राष्ट्रीयकृत बैंकों और सरकारी उपक्रमों के अधिकारी/कर्मचारी भाग ले सकते हैं। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कंप्यूटर पर सामान्यत: प्रयोग होने वाले सॉफ्टवेयरों (एमएस वर्ड, एमएस एक्सेल, पावर प्वाइंट आदि) के प्रयोग द्वारा कुशलतापूर्वक हिंदी में कार्य करने संबंधी जानकारी देने के अतिरिक्त कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग में आने वाली सामान्य समस्याओं के हल एवं अन्य उपयोगी जानकारी दी जाती है। यह देखते हुए कि आजकल काफी कर्मचारी/अधिकारी पहले ही कंप्यूटर पर कार्य कर रहे हैं, वर्ष 2008-09 में प्रशिक्षण कार्यक्रम को निम्न दो स्तरों पर उपलब्ध कराया गया था:

(क) *'कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग'* में कंप्यूटर पर कार्य का ज्ञान न रखने वालों को कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग सिखाया जाता है।

(ख) *'कंप्यूटर पर कुशल हिंदी प्रयोग'* उन कर्मचारियों/अधिकारियों के लिए है जो कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग का कुछ ज्ञान/अनुभव रखते हैं।

2. ऐसे कर्मचारियों/अधिकारियों के लिए जो पहले ही कंप्यूटर प्रयोग की अच्छी जानकारी रखते हैं तथा जिनको कंप्यूटर पर कुशल हिंदी प्रयोग प्रशिक्षण के उपरांत संबंधित कार्यालय अपने यहाँ बाकी कर्मचारियों/अधिकारियों को प्रशिक्षण देने के लिए उपयोग कर सकते हैं, कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रमों की एक और श्रेणी 'कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग के लिए प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण' वर्ष, 2009-10 से शुरू की जा रही है।

3. इन कार्यक्रमों, नामत: (क) 'कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग' (संलग्नक-I व II), (ख) 'कंप्यूटर पर कुशल हिंदी प्रयोग' (संलग्नक-III व IV), तथा (ग) 'कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग के लिए प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण' (संलग्नक-V) का अलग-अलग विवरण संलग्न है। सामान्यत: प्रशिक्षण कार्यक्रमों का समय प्रात: 9.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक रहेगा एवं कार्यक्रम की अवधि पाँच दिनों की होगी। कार्यक्रमों की संलग्न तालिका (संलग्नक-II, IV व V) में कार्यक्रमों की तिथि, कार्यक्रमों को आयोजित करवाने वाली संस्था का नाम तथा स्थान का विवरण दिया गया है। अनुरोध है कि आवश्यकता एवं उपयुक्तता के अनुसार उपरोक्त कार्यक्रमों में नामांकन भेजे जाएं।

4. प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए नामांकन-प्रपत्र का प्रारूप संलग्न है (संलग्नक-VII)। प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए नामांकन-प्रपत्र भरकर कार्यक्रम के आरम्भ होने से एक माह पूर्व डाक या ई-मेल द्वारा सूची (संलग्नक-VI) में दिखाए गए संस्था के संबंधित प्रतिनिधि को भेज दें। इन संस्थाओं के मुख्यालय के पते इस प्रकार हैं। प्रशिक्षण केंद्र को भेजे गए नामांकन की प्रति निम्न मुख्यालय पर भी भेजी जा सकती है।

क्र.सं	संस्था	पता
1.	राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र	श्री केवल कृष्ण, तकनीकी निदेशक, 2रा तल, बी- विंग, कमरा सं.-बी-7, कंप्यूटर कक्ष, लोकनायक भवन, खान मार्केट, नई दिल्ली-110003 दूरभाष/फैक्स: 011-24619860, ई-मेल : kewal.krishan@nic.in
2.	राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण प्रतिष्ठान	श्री चंदन सिंह, निदेशक (प्रशा.), राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण संस्थान, एन.पी.टी.आई. परिसर, सैक्टर-33, फरीदाबाद-121003 दूरभाष: 0129-2272142 फैक्स: 0129-2275309, ई-मेल : swadeep65@yahoo.in
3.	सी-डैक	श्री. वी.के. शर्मा, प्रोजेक्ट मैनेजर, सी-डेक, अनुसंधान भवन, सी-56, इंडस्ट्रियल एरिया, सेक्टर-62, नोएडा-261307 दूरभाष: 0120-2402551-60 फैक्स: 0120-2402569, ई-मेल : vksharma@cdacnoida.in

5. प्रशिक्षण कार्यक्रम का कैलेण्डर और नामांकन प्रपत्र राजभाषा विभाग की वेबसाइट (www.rajbhasha.gov.in) पर भी उपलब्ध है। कार्यक्रमों से संबंधित अन्य जानकारी/निर्देश नीचे दिए गए हैं:

- आवास एवं यात्रा खर्च की व्यवस्था प्रशिक्षार्थी के विभाग को वहन करनी होगी।
- जहां तक संभव हो कृपया अपने निकटतम प्रशिक्षण केंद्र के लिए ही प्रशिक्षार्थियों को नामित करें।
- संबंधित संस्थान से नामांकन स्वीकार हो जाने का पत्र प्राप्त होने पर ही प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण में भाग के लिए कार्यमुक्त किया जाए।
- आवेदन पत्र प्रशिक्षार्थियों के प्रशासनिक कार्यालय से अग्रेषित होकर संबंधित संस्थान में पहुंचना चाहिए।
- नामांकित प्रशिक्षार्थियों को कार्यालय में काम करने के लिए कंप्यूटर सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए तथा वे कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए इच्छुक हों।
- नामांकन मंजूर होने पर कार्यालय विशिष्ट के प्रशिक्षणार्थी के लिए सीट आरक्षित कर दी जाती है परंतु कार्यमुक्त न होने या अन्य कारण से प्रशिक्षण के प्रथम दिन बिना अग्रिम सूचना के प्रशिक्षणार्थी के न आने से प्रशिक्षणार्थियों की संख्या क्षमता से कम रह जाती है तथा कभी-कभी संख्या बहुत कम होने पर प्रशिक्षण रद्द करने की स्थिति पैदा हो जाती है जिससे अन्य नामांकित प्रशिक्षणार्थियों को बड़ी असुविधा होती है। अतः प्रशिक्षण कार्यक्रम में नामांकन मंजूर होने के पश्चात, प्रशिक्षण अवधि के दौरान यदि नामांकित कर्मचारी/अधिकारी को कार्यमुक्त करने में समस्या आती है तो उसके स्थान पर कृपया किसी दूसरे पात्र कर्मचारी/अधिकारी को प्रशिक्षण के लिए भेजा जाए।

6. सभी मंत्रालयों/विभागों/सरकारी उपक्रमों/राष्ट्रीयकृत बैंकों तथा सभी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों से अनुरोध है कि वह संलग्न हिंदी कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अपने अधीनस्थ कार्यालयों में व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार करवाने का कष्ट करें जिससे अधिक से अधिक अधिकारी/कर्मचारी इन कार्यक्रमों का लाभ उठा सकें। कृपया की गई कार्रवाई से अधोहस्ताक्षरी को सूचित करें।

राकेश कुमार, निदेशक (तकनीकी)
दूरभाष: 24619860/24617695
फैक्स: 24619860/24617695
ई-मेल: techcell-ol@nic.in
rakesh.kr@nic.in

संलग्नक-I

विषय : कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम

अवधि : पांच पूर्ण दिवसीय

पात्रता : केंद्र सरकार, बैंक, सार्वजनिक उपक्रम/उद्यम इत्यादि कार्यालयों में कार्यरत अधिकारी/कर्मचारीगण

क्रमांक	दिन	विषय
1.	प्रथम दिवस	• पंजीकरण • कंप्यूटर परिचय–हार्डवेयर/सॉफ्टवेयर की जानकारी, फाइल प्रबंधन • विंडोज वातावरण परिचय • मानक भाषा एनकोडिंग एवं इसके लाभ–कंप्यूटर पर द्विभाषी सुविधा सक्रिया करना • नोटपैड/वर्डपैड में हिंदी भाषा का प्रयोग • फोंट व टाइपिंग संबंधी समस्याएं व उनका निवारण • अभ्यास
2.	द्वितीय दिवस	• विंडोज वातावरण–जारी • माइक्रोसॉफ्ट वर्ड
3.	तृतीय दिवस	• माइक्रोसॉफ्ट वर्ड • राजभाषा विभाग द्वारा विकसित मंत्र-राजभाषा, लीला-प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ तथा श्रुतलेखन-राजभाषा की जानकारी • लीला, मंत्र एवं श्रुतलेखन-राजभाषा का अभ्यास • हिंदी प्रयोग के लिए अन्य उपलब्ध सॉफ्टवेयरों की जानकारी, विशेषतया सूचना प्रौद्योगिकी विभाग एवं अन्य द्वारा उपलब्ध कराए निःशुल्क सॉफ्टवेयर
4.	चतुर्थ दिवस	• माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल तथा अभ्यास • माइक्रोसॉफ्ट पॉवर प्वाइंट तथा अभ्यास
5.	पंचम दिवस	• इंटरनेट ई-मेल • हिंदी टंकण अभ्यास • प्रशिक्षणार्थियों द्वारा बताई गई सामान्य समस्याओं की चर्चा और निवारण • सामान्य परीक्षा/समापन

कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सूची

क्र. सं.	दिनांक		संस्था	स्थान
	से	तक		
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1.	13-4-2009	17-4-2009	सी-डैक	दिल्ली
2.	20-4-2009	24-4-2009	सी-डैक	दिल्ली
3.	20-4-2009	24-4-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, फ़रीदाबाद
4.	27-4-2009	1-5-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	बदरपुर
5.	27-4-2009	1-5-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	आर. के. पुरम, नई दिल्ली
6.	27-4-2009	1-5-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	दुर्गापुर
7.	27-4-2009	1-5-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	नागपुर
8.	27-4-2009	1-5-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	बंगलुरू
9.	11-5-2009	15-5-2009	सी-डैक	दिल्ली
10.	11-5-2009	15-5-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	कोलकाता
11.	18-5-2009	22-5-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	पार्वती, मण्डी (हि. प्र.)
12.	18-5-2009	22-5-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	नागपुर
13.	18-5-2009	22-5-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	दुर्गापुर
14.	25-5-2009	29-5-2009	सी-डैक	दिल्ली
15.	8-6-2009	12-6-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	आर. के. पुरम, नई दिल्ली
16.	8-6-2009	12-6-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	नागपुर
17.	8-6-2009	12-6-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	दुर्गापुर
18.	8-6-2009	12-6-2009	सी-डैक	दिल्ली
19.	6-7-2009	10-7-2009	सी-डैक	दिल्ली
20.	20-7-2009	24-7-2009	सी-डैक	दिल्ली
21.	20-7-2009	24-7-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	विंध्यनगर, सीधी (म.प्र.)
22.	20-7-2009	24-7-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	दुर्गापुर
23.	20-7-2009	24-7-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	नागपुर
24.	27-7-2009	31-7-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	बदरपुर
25.	27-7-2009	31-7-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	बंगलुरू

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
26.	3-8-2009	7-8-2009	सी-डैक	दिल्ली
27.	17-8-2009	21-8-2009	सी-डैक	दिल्ली
28.	17-8-2009	21-8-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	बदरपुर
29	17-8-2009	21-8-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	बंगलुरू
30.	24-8-2009	28-8-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	दुर्गापुर
31.	24-8-2009	28-8-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	नागपुर
32.	7-9-2009	11-9-2009	सी-डैक	दिल्ली
33.	7-9-2009	11-9-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	पुणे
34.	7-9-2009	11-9-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	दुर्गापुर
35.	7-9-2009	11-9-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	नागपुर
36.	14-9-2009	18-9-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	जनकपुरी, नई दिल्ली
37.	5-10-2009	9-10-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	कठुआ, जम्मू और कश्मीर
38.	5-10-2009	9-10-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	दुर्गापुर
39.	5-10-2009	9-10-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	नागपुर
40	5-10-2009	9-10-2009	सी-डैक	दिल्ली
41.	12-10-2009	16-10-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	बदरपुर
42.	12-10-2009	16-10-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	बंगलुरू
43.	26-10-2009	30-10-2009	सी-डैक	दिल्ली
44.	9-11-2009	13-11-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	आर. के. पुरम, नई दिल्ली
45.	9-11-2009	13-11-2009	सी-डैक	दिल्ली
46.	16-11-2009	20-11-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	टनकपुर, चम्पावत (उत्तरांचल)
47.	16-11-2009	20-11-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	दुर्गापुर
48.	16-11-2009	20-11-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	नागपुर
49.	23-11-2009	27-11-2009	सी-डैक	दिल्ली
50.	7-12-2009	11-12-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	चमेरा, चंबा (हि. प्र.)
51.	14-12-2009	18-12-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	बदरपुर
52.	7-12-2009	11-12-2009	सी-डैक	दिल्ली
53.	21-12-2009	26-12-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	चंबा (हि. प्र.)
54.	21-12-2009	26-12-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	दुर्गापुर
55.	21-12-2009	26-12-2009	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	नागपुर

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
56.	4-1-2010	8-1-2010	सी-डैक	दिल्ली
57.	4-1-2010	8-1-2010	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	दुर्गापुर
58.	4-1-2010	8-1-2010	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	नागपुर
59.	5-1-2010	9-1-2010	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	विंध्यनगर, सीधी (म.प्र.)
60.	18-1-2010	22-1-2010	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	दुर्गापुर
61.	18-1-2010	22-1-2010	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	नागपुर
62.	18-1-2010	22-1-2010	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	बदरपुर
63.	18-1-2010	22-1-2010	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	बंगलुरू
64.	1-2-2010	5-2-2010	सी-डैक	दिल्ली
65.	8-2-2010	12-2-2010	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	आर. के. पुरम, नई दिल्ली
66.	22-2-2010	26-2-2010	सी-डैक	दिल्ली
67.	8-3-2010	12-3-2010	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	दुर्गापुर
68.	8-3-2010	12-3-2010	रा. वि. प्र. प्रतिष्ठान	नागपुर
69.	15-3-2010	19-3-2010	सी-डैक	दिल्ली

संलग्नक-III

राजभाषा विभाग द्वारा प्रायोजित 'कंप्यूटर पर कुशल हिंदी प्रयोग' के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का पाठ्यक्रम

अवधि : 5 पूर्ण दिवसीय ।

पात्रता : केंद्र सरकार, बैंक, सार्वजनिक उपक्रम/उद्यम आदि कार्यालयों में कार्यरत अधिकारी/कर्मचारीगण

उद्देश्य : प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रशिक्षणार्थियों को कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग संबंधी आवश्यक जानकारी एवं हिंदी प्रयोग में आने वाली समस्याओं का समाधान करना है ताकि प्रशिक्षण के फलस्वरूप प्रशिक्षणार्थी कंप्यूटर पर हिंदी का प्रयोग सरलतापूर्वक कुशलता से कर सके ।

पूर्वापेक्षा : कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग का साधारण ज्ञान व अनुभव जिसमें इंटरनेट एवं ई-मेल का प्रयोग शामिल है ।

1. विषय सूची में तथा विषय के अंतर्गत कवरेज में प्रशिक्षणार्थियों की जरूरत एवं नई व बेहतर तकनीक की उपलब्धता को देखते हुए ऐसे जरूरी बदलाव किए जा सकते हैं जो प्रशिक्षणार्थियों की कार्यक्रम से संतुष्टि बढ़ाएं ।

2. इस कार्यक्रम में वे प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहे होंगे जो कंप्यूटर पर पहले से ही कर रहे हैं । अत: पंजीकरण के बाद लगभग 30 मिनट के एक सत्र में इन प्रशिक्षणार्थियों से इनके द्वारा अनुभव की गई समस्याओं की जानकारी ली जायेगी । इस जानकारी के प्रकाश में कार्यक्रम की विषय-वस्तु (content) की समीक्षा करके उसको प्रासंगिक (relevant) एवं समसामयिक/अद्यतित (contemporary/updated) रखा जा सके । सामान्यत: विषय सूची प्रशिक्षणार्थियों द्वारा बताई गई सामान्य समस्याओं में से लगभग 90% के समाधान में सक्षम होनी चाहिए । बची हुई विशिष्ट समस्याओं के समाधान के लिए कार्यक्रम के अंतिम दिन एक सत्र रखा गया है ।

3. कंप्यूटर में पहले से ही हिंदी में काम कर रहे प्रशिक्षणार्थियों में भी एक बड़ी संख्या उन प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षित है जो एम. एस. वर्ड में काम कर रहे हैं एवं जिनको एम. एस. एक्सेल या पावर प्वाइंट में काम करने का पर्याप्त ज्ञान/अनुभव नहीं है । अत: इनके लिए इन सॉफ्टवेयरों के बारे में आधारभूत जानकारी को आवश्यकतानुसार कुछ समय दिया जाए ।

4. भारत सरकार एवं अन्य संगठनों/संघों द्वारा हिंदी प्रयोग के लिए महत्वपूर्ण संसाधन नि:शुल्क (open source) उपलब्ध कराए गए हैं इनमें से जो सॉफ्टवेयर यूनीकोड मानक के अनुकूल है एवं जिनका उपयोग कार्यालयों में वर्तमान में हो रहे कंप्यूटर प्रयोग पर विपरीत असर डालने की संभावना नहीं है उनकी जानकारी दी जायेगी । भारत सरकार (सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, राजभाषा विभाग आदि), सरकारी संस्थान एवं सरकार के अधीन संगठन, स्वायत सोसाइटी (सी-डैक आदि) के द्वारा सरकारी कार्यालयों में हिंदी प्रयोग के लिए विकिसित किए गए सॉफ्टवेयरों जैसे ओपन आफिस, बोस आदि एवं अन्य संसाधनों की जानकारी देना प्रशिक्षण कार्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा होगा । भारत सरकार द्वारा सरकारी कार्यालयों में हिंदी प्रयोग को सरल एवं कुशल बनाने के लिए विक्रय के लिए उपलब्ध कराए गए अन्य उपयोगी सॉफ्टवेयर जैसे श्रुतलेखन की जानकारी भी दी जाए । किसी सॉफ्टवेयर की जानकारी में इनकी उपयोगिता क्षमता, पूर्वापेक्षा (Prerequisite), प्राप्त/इंस्टाल करना, प्रयोग करना एवं अन्य जरूरी जानकारी शामिल होगी ।

5. किसी भी विषय पर नियमित प्राध्यापकों को नवीनतम जानकारी की आवश्यकता होने पर राजभाषा विभाग एवं तकनीकी निदेशक, एन.आई.सी. उनके लिए उपयुक्त प्रशिक्षण की व्यवस्था करेंगे ।

6. यूनीकोड आधारित फोंट्स हिंदी प्रयोग संबंधी एक बड़ी समस्या का समाधान है अत: इनके बारे में जानकारी देने के लिए पर्याप्त समय दिया जायेगा ।

7. इन मार्ग निर्देशों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम की विषय सूची में शामिल किये जाने के लिए कुछ विषय इस प्रकार हैं :

क्रमांक	विषय
1.	प्रशिक्षणार्थियों से कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग में अनुभव की गई समस्याओं का इनपुट लेना
2.	कंप्यूटर पर माइक्रोसाफ्ट वर्ड, एक्सेल, पावर प्वाइंट आदि की जानकारी पर पुनश्चर्या (refreshing)
3.	फोंट एवं टाइपिंग संबंधी समस्याएं, यूनीकोड का प्रयोग कैसे करें, पहले से तैयार डाक्यूमेंट को ओपन टाइप फोंटस में कैसे बदलें ।
4.	हिंदी प्रयोग के लिए भारत सरकार या सरकार से जुड़ी संस्थाओं द्वारा विकसित किए/कराए गए महत्वपूर्ण सॉफ्टवेयरों की उपयोगिता, क्षमता, प्राप्त/इंस्टाल करने का तरीका एवं प्रयोग विधि की जानकारी
5.	सामान्यत: प्रयोग होने वाले सॉफ्टवेयर (एम.एस. वर्ड, एम.एस. एक्सेल, एम.एस. पावर प्वाइंट आदि) का बेहतर प्रयोग करने के लिए उनके प्रयोग संबंधी गहन जानकारी
6.	वेबपेज का प्रबंधन, ई-मेल, खोज आदि

8. प्रशिक्षणार्थियों की समस्याओं, विकास स्वरूप तकनीक में आए बदलाव एवं उन्नत तकनीक की उपलब्धता को ध्यान में रखकर उपरोक्त विषय की सूची के अतिरिक्त अन्य विषय समय-समय पर आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम में अतिरिक्त जानकारी/विषय शामिल किए जाएंगे ।

संलग्नक-IV

कंप्यूटर पर कुशल हिंदी प्रयोग प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सूची

क्र.सं.	दिनांक से	दिनांक तक	संस्था	स्थान
1.	27-04-2009	01-05-2009	सी-डैक	दिल्ली
2.	25-05-2009	29-05-2009	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	पार्वती, मण्डी (हि.प्र.)
3.	18-05-2009	22-05-2009	सी-डैक	दिल्ली
4.	15-06-2009	19-06-2009	सी-डैक	दिल्ली
5.	14-07-2009	18-07-2009	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	आर.के. पुरम, नई दिल्ली
6.	27-07-2009	31-07-2009	सी-डैक	दिल्ली
7.	24-08-2009	28-08-2009	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	विंध्यनगर, सीधी (म.प्र.)
8.	24-08-2009	28-08-2009	सी-डैक	दिल्ली
9.	14-09-2009	18-09-2009	सी-डैक	दिल्ली
10.	16-11-2009	20-11-2009	सी-डैक	दिल्ली
11.	14-12-2009	18-12-2009	सी-डैक	दिल्ली
12.	11-01-2010	15-01-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	विंध्यनगर, सीधी (म.प्र.)
13.	18-01-2010	22-01-2010	सी-डैक	दिल्ली
14.	15-02-2010	19-02-2010	सी-डैक	दिल्ली
15.	08-03-2010	12-03-2010	रा.वि.प्र. प्रतिष्ठान	विंध्यनगर, सीधी (म.प्र.)
16.	22-03-2010	26-03-2010	सी-डैक	दिल्ली

संलग्नक-V

प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सूची

क्र.सं.	दिनांक से	दिनांक तक	संस्था	स्थान
1.	20-07-2009	24-07-2009	रा.सू. विज्ञान-केंद्र	पटना
2.	17-08-2009	21-08-2009	रा.सू. विज्ञान-केंद्र	जयपुर
3.	07-09-2009	11-09-2009	रा.सू. विज्ञान-केंद्र	भोपाल
4.	23-11-2009	27-11-2009	रा.सू. विज्ञान-केंद्र	दिल्ली
5.	07-12-2009	11-12-2009	रा.सू. विज्ञान-केंद्र	चेन्नई

प्रशिक्षण केंद्रों का पता जहां पर नामांकन प्रेषित किया जाना है

1. एन.पी.टी.आई.

	प्रशिक्षण संस्थान	संपर्क पता/विवरण
बदरपुर	एनपीटीआई (उत्तरी क्षेत्र), बदरपुर थर्मल पॉवर स्टेशन, बदरपुर, नई दिल्ली-110044	दूरभाष : 011-26940722, 26944198, 26947043 फैक्स : 011-26940722 ई-मेल : nptinr@vsnl.com
नागपुर	एनपीटीआई (पश्चिमी क्षेत्र), साऊथ अम्बाझरी रोड, नागपुर-440022	दूरभाष : 0712-2231478, 2226176, 2236538 फैक्स : 0712-2220413 ई-मेल : nptinag@nagpur.dot.net.in
दुर्गापुर	एनपीटीआई (पूर्वी क्षेत्र), सिटी सेन्टर, दुर्गापुर-713216	दूरभाष : 0343-2545888, 2546237 फैक्स : 0343-2545888 ई-मेल : dgp_nptier@sancharnet.in, dgp_rccfd@sancharnet.in
फरीदाबाद	निदेशक (प्रशा.), राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण संस्थान, एन.पी.टी.आई. परिसर, सैक्टर-33, फरीदाबाद-121003	दूरभाष : 0129-2272142 फैक्स : 0129-2275309 ई-मेल : npti_rkc@yahoo.co.in
बेंगलूर	विद्युत प्रणाली प्रशिक्षण संस्थान, पोस्ट बाक्स नं. 8201, बेंगलूर-560070	दूरभाष : 080-26713758, 26718186 फैक्स : 080-26713758, ई-मेल : bngpsti@kar.nic.in
फरीदाबाद	उप निदेशक (रा.भा.), केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, जल संसाधन मंत्रालय, भूजल भवन, एनएच-4, फरीदाबाद-121001	
नई दिल्ली	1. सहायक निदेशक (राजभाषा), केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण, सेवा भवन, आर.के. पुरम, नई दिल्ली 2. सहायक निदेशक (राजभाषा), कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, नेशनल अकादमी फॉर ट्रेनिंग एंड रिसर्च इन-सोशल सिक्योरिटी, जनकपुरी, नई दिल्ली	
कोलकाता	वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, दामोदर घाटी निगम, डीवीसी टावर, वीआईपी रोड, कोलकाता-700054	

	प्रशिक्षण संस्थान	संपर्क पता/विवरण
कठुआ	वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन), एनएचपीसी लिमिटेड, सेवा चरण-2, माश्का, जिला-कठुआ (जम्मू और कश्मीर)	
पुणे	निदेशक, राष्ट्रीय जल अकादमी कार्यालय, सीडब्ल्यू एवं पीआरएस कैम्पस, खडगवासला आरएल, पुणे-411024	
मण्डी	प्रबंधक (मानव संसाधन), एनएचपीसी लिमिटेड, पार्वती जल विद्युत परियोजना-2, पीओ-नगवाई, जिला-मण्डी (हि.प्र.)-175121	
सीधी	राजभाषा अधिकारी, एनएचपीसी लिमिटेड, विंध्याचल सुपर थर्मल पावर प्रोजेक्ट, पोस्ट-विंध्यनगर, जिला-सीधी (म.प्र.)	
चम्बा	1. प्रबंधक (मानव संसाधन), एनएचपीसी लिमिटेड, चमेरा पावर स्टेशन नं.-1, पोस्ट-खैरी-176325 जिला-चम्बा (हि.प्र.) 2. उप-प्रबंधक (मानव संसाधन), एनएचपीसी लिमिटेड, बेरास्यूल, पोस्ट-सुरंगानी-176317 जिला-चम्बा (हि.प्र.)	
चम्पावत	प्रबंधक (मानव संसाधन), एनएचपीसी लिमिटेड, टनकपुर हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कैम्पस, पोस्ट-ऑफिस-बनवासा, जिला-चम्पावत (उत्तरांचल)-262310	
2. सी-डेक		
दिल्ली	सीनियर प्रोजेक्ट मैनेजर, सी-डैक, अनुसंधान भवन, सी-56/1, इंस्टीच्यूशनल एरिया, सेक्टर-62, नोएडा-201307	दूरभाष : 0120-2402551-60, 0120-3063371/72/73 फैक्स : 0120-2402569, 0120-3063374 ई-मेल : vksharma@cdacnoida.in

	प्रशिक्षण संस्थान	संपर्क पता/विवरण

3. राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र

भोपाल	सुश्री सुचिता काक, वरिष्ठ प्रणाली विश्लेषक तथा प्रशिक्षण समन्वयक, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र सी विंग बेसमेंट, विंध्याचल भवन, भोपाल-462004	दूरभाष : 0755-2551265 ई-मेल : kak.sucheeta@nic.in
चेन्नई	सुश्री आर. गायत्री, तकनीकी निदेशक एवं प्रशिक्षण समन्वयक, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र, तमिलनाडु राज्य केन्द्र, ई-2ए, राजाजी भवन, बेसंट नगर, चेन्नई-600090	दूरभाष : 044-24917850, 24466495 ई-मेल : r.gayatri@nic.in
दिल्ली	डा. मीनाक्षी महाजन, तकनीकी निदेशक एवं प्रशिक्षण समन्वयक, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र, ट्रेनिंग डिवीजन, ए-ब्लाक, सी.जी.ओ. काम्प्लैक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003	दूरभाष : 011-24361607, 24305807 ई-मेल : meenakshi.mahajan@nic.in
जयपुर	डा. एस.सी. गुप्ता, प्रधान प्रणाली विश्लेषक, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र, राजस्थान राज्य केन्द्र, ट्रेनिंग डिवीजन, फूड बिल्डिंग, टाप फ्लोर, सचिवालय, जयपुर	दूरभाष : 0141-2227091 फैक्स : 0141-2227075 ई-मेल : sc.gupta@nic.in
पटना	श्री अशोक कुमार, प्रधान प्रणाली विश्लेषक, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र, एन.आई.सी. (राज्य केंद्र), प्रथम तल, टेक्नालाजी भवन, बैले रोड, पटना-800015	दूरभाष : 0612-2220964, 2236198, 09431025862 ई-मेल : kumar.ashok@nic.in ashok@bih.nic.in

संलग्नक-7

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

राजभाषा विभाग (तकनीकी कक्ष) द्वितीय तल, लोकनायक भवन, खान मार्किट, नई दिल्ली-110003

(दूरभाष : 24619860, फैक्स : 24619860/24617695) ई-मेल-techcell-@nic.in

नामांकन-प्रपत्र

टिप्पणी :-1. यह कार्यक्रम उन अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए है, जिनके पास कंप्यूटर सुविधा उपलब्ध है, लेकिन उन्हें कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग संबंधी जानकारी कम है।

2. प्रशिक्षण कार्यकाल आरम्भ होने से एक माह पूर्व नामांकन-प्रपत्र सी-डैक/एन.पी.टी.आई./एन.आई. सी. में प्राप्त हो जाने चाहिए।

3. सी. डैक/एन. II पी.टी.आई./एन.आई.सी. से नामांकन स्वीकार किया जाने के संदर्भ में विनिर्दिष्ट सूचना/पुष्टि प्राप्त किए जाने से पूर्व किसी भी अधिकारी को प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए निर्मुक्त नहीं किया जाना चाहिए।

(क) कार्यक्रम

शीर्षक कम्प्यूटर पर हिंदी प्रयोग/कम्प्यूटर पर कुशल हिंदी प्रयोग (जो लागू नहीं हो उसे काट दें)

तिथि : संस्था

स्थान :

(ख) नामांकन

(1) 1. नाम .... (2) पदनाम ....

(3) हिंदी ज्ञान का स्तर (कार्यसाधक) .... (4) ई-मेल ....

(5) टेलीफोन नं. .... (6) मोबाइल नं. ....

(7) उपलब्ध कम्प्यूटर सुविधा का विवरण (आपरेटिंग सिस्टम, इन्टरनेट की उपलब्धता, क्या आपका ई-मेल एकाउंट है आदि) ....

(2) यदि पिछले 3 वर्ष में राजभाषा विभाग द्वारा प्रायोजित कम्प्यूटर प्रशिक्षण या हिंदी प्रयोग संबंधी सॉफ्टवेयरों का प्रशिक्षण प्राप्त किया है तो उसका विवरण (अवधि, सॉफ्टवेयर) दिनांक सहित ....

(3) अभ्यर्थी द्वारा किए जाने वाले कार्यों का संक्षिप्त विवरण ....

(4) प्रयोग किए जा रहे कम्प्यूटर साफ्टवेयरों के नाम व इनमें काम करने या अनुभव ....

(5) क्या मुख्यतया : आप हिंदी में टिप्पणी लिखते हैं ....

(6) क्या हिंदी टाइपिंग जानते हैं ....

अभ्यर्थी के हस्ताक्षर ....

नोट : प्रशिक्षणार्थी कृपया अपना ई-मेल पता और संपर्क फोन नं. आवश्य दें ताकि नामांकन की मंजूरी एवं अन्य आवश्यक सूचना समय से देना सुनिश्चित किया जा सके।

(ग) अभ्यर्थी के कार्यालय द्वारा भरे जाने के लिए

1. पूरा पता (नामांकन की स्वीकृति जिस पर भेजी जानी है)।

नाम/पद ....

मंत्रालय/विभाग/संगठन ....

पता : ....

....

....

पिन .... दूरभाष : .... ई-मेल ....

2. प्रमाणित किया जाता है कि

(1) कार्यालय अभिलेख के अनुसार अभ्यर्थी द्वारा दिया गया ब्यौरा सही है;

(2) नामांकन स्वीकार हो जाने पर अभ्यर्थी को प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिए निर्युक्त कर दिया जाएगा;

(3) अभ्यर्थी कम्प्यूटर पर कार्य कर रहा है।

नामांकन भेजने वाले कार्यालय की संदर्भ संख्या ....

स्थान : ....

तिथि : ....

(अधिकारी के हस्ताक्षर एवं मोहर)

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, द्वितीय तल, लोकनायक भवन, खान मार्केट, नई दिल्ली-110003. दिनांक : 20 मई, 2009. का. का ज्ञा. संख्या : 12011/1/2009-रा.भा.(का.-2)

कार्लालय ज्ञापन

विषय:-हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु वर्ष 2008-09 के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार ।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा चलाई जा रही इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार योजना के अंतर्गत वर्ष 2008-09 के लिए केंद्र सरकार के सेवारत/सेवानिवृत कार्मिकों द्वारा हिंदी में लिखी गई मौलिक पुस्तकों के रूप में प्रविष्टियां आमंत्रित हैं ।

2. पात्रता तथा शर्ते :

(i) योजना के अंतर्गत पुरस्कार के लिए वे पुस्तकें ही स्वीकार्य हैं जो लेखक की हिंदी में मौलिक रचना हों ।

(ii) अनूदित पुस्तकें स्वीकार्य नहीं हैं ।

(iii) पुस्तक 01 अप्रैल, 2008 से 31 मार्च, 2009 के दौरान प्रकाशित की गई हो । पांडुलिपि स्वीकार्य नहीं हैं ।

(iv) पुस्तक के लेखक केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों/विभागों/उनके सम्बद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों, उपक्रमों, बैकों, वित्तीय संस्थानों तथा केंद्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रणाधीन स्वायत्त संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, शैक्षिक व प्रशिक्षण संस्थानों के सेवारत/सेवानिवृत अधिकारी/कर्मचारी हों । इस संबंध में पुस्तक के लेखक द्वारा अनुलग्नक 'ख' पर दिए गए प्रोफार्मा में एक प्रमाण-पत्र दिया जाना अपेक्षित है । सेवारत अधिकारी/कर्मचारी अपनी प्रविष्टि अपने विभाग/कार्यालय के अध्यक्ष द्वारा सत्यापन तथा संस्तुति के साथ (अनुलग्नक 'ग' पर दिए गए प्रोफार्मा में) इस विभाग को भेजें । सेवानिवृत अधिकारी/कर्मचारी अपनी पुस्तकें सीधे राजभाषा विभाग को भेज सकते हैं ।

(v) पुस्तक की विषयवस्तु केंद्रीय सरकार के उक्त कार्यालयों/संगठनों/संस्थानों में कर्मचारियों द्वारा किए गए/किए जा रहे कार्यों से संबंधित हो । मैनुअल, शब्दावलियां, संस्मरण, कविताएं, कहानियां , नाटक, उपन्यास आदि इस योजना के अंतर्गत स्वीकार्य नहीं है ।

(vi) पुस्तक कम से कम 100 पृष्ठ की हो ।

(vii) पुस्तक किसी शैक्षिक या प्रशिक्षण संस्थान के पाठ्यक्रम में शामिल न हो ।

(viii) लेखक इस आशय का प्रमाण-पत्र दें कि यह पुस्तक उनकी मौलिक रचना है और कापीराइट एक्ट (यथासंशोधित) 1997 के तहत किसी अन्य लेखक के कापीराइट का उल्लंघन नहीं करती है ।

(ix) प्रत्येक प्रविष्ट के साथ पुस्तक की तीन प्रतियां अवश्य भेजी जाएं ।

(x) योजना के अंतर्गत प्राप्त पुस्तकें वापिस नहीं की जा सकेंगी और इस संबंध में किसी अंतरिम पूछताछ का उत्तर नहीं दिया जाएगा ।

(xi) योजना के अंतर्गत प्रेषित सभी पुस्तकों पर विशेषज्ञ की राय अनुलग्नक 'क' पर दिए गए प्रोफार्मे में राजभाषा विभाग को भिजवाई जांए । विशेषज्ञों को पुस्तक की विषयवस्तु से संबंधित शब्दावली तथा हिंदी भाषा का

पर्याप्त ज्ञान होना आवश्यक है । विशेषज्ञ कोई गैर सरकारी व्यक्ति जैसे सेवानिवृत अधिकारी या विश्वविद्यालयों/इंजीनियरी/मेडिकल संस्थानों में कार्यरत प्रोफेसर आदि हो सकते हैं । पुस्तकों के मूल्यांकन से संबंधित मानदेय का दावा, यदि कोई हो , राजभाषा विभाग को न भेजकर, संबंधित मंत्रालय/विभाग/संगठन के प्रशासनिक प्रधान के पास भेजा जाए ।

3. इस योजना के अंतर्गत निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं :-

प्रथम पुरस्कार	- 40,000 रुपए
द्वितीय पुरस्कार	- 30,000 रुपए
तृतीय पुरस्कार	- 20,000 रुपए
प्रोत्साहन पुरस्कार	- 10,000 रुपए

4. पुस्तकों का मूल्यांकन एक समिति द्वारा किया जाता है जिसमें राजभाषा विभाग के प्रतिनिधियों के अलावा दो गैर सरकारी सदस्य होते हैं ।

5. प्रविष्टियां इस विभाग में दिनांक 20 अगस्त, 2009 तक अवश्य पहुंच जानी चाहिए । निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त प्रविष्टियों पर विचार नहीं किया जाएगा ।

6. प्रविष्टियां निम्न पते पर भेजी जाएं :-
अनुसंधान अधिकारी (कार्यान्वियन)
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
द्वितीय तल, लोकनायक भवन, ए विंग,
खान मार्केट, नई दिल्ली-110003.

7. मंत्रालयों/विभागों से अनुरोध है कि वे हिंदी में मौलिक पुस्तक लिखने की उपर्युक्त योजना को अपने सभी सम्बद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों, उपक्रमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों, वित्तीय संस्थाओं एवं केंद्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रणाधीन केंद्रीय विश्वविद्यालयों तथा शैक्षणिक/प्रशिक्षण संस्थानों में परिचालित कर दें । इस योजना के बारे में सूचना हमारी वेबसाइट **http:// rajbhasha.gov.in** पर भी उपलब्ध है ।

(चन्द्र प्रकाश)
उप सचिव, भारत सरकार दूरभाष: 24617764

अनुलग्नक "क"

विशेषज्ञों के लिए निर्देश

1. पुस्तकों के संबंध में विशेषज्ञ की राय पूर्णतया गोपनीय होगी । विशेषज्ञ कृपया अपना संस्तुति पत्र मोहरबंद लिफाफे में ही भेजें ।

2. कृपया लिफाफे के बाईं ओर निम्नलिखित सूचनाएं अंकित करें :-
   (i) "इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार-संस्तुति पत्र"
   (ii) लिफाफा राजभाषा विभाग की पुस्तक मूल्यांकन समिति की बैठक में ही खोला जाए ।
   (iii) पुस्तक का नाम ....
   (iv) विशेषज्ञ का नाम ....

3. विशेषज्ञ कृपया पुस्तक के संबंध में नीचे दिए गए संस्तुति पत्र में उल्लिखित बिन्दुओं पर अपनी राय अवश्य दें। यदि जाँच के अन्य मानक बिन्दुओं का समावेश करना चाहें, तो अलग-से कर लें, परन्तु नियत बिन्दुओं पर अपनी निष्पक्ष राय अवश्य दें।

4. सेवारत अधिकारियों/कर्मचारियों आदि के मामले में "संस्तुति पत्र" का लिफाफा संबंधित कार्यालय/विभाग/संगठन के प्रशासनिक प्रधान के माध्यम से राजभाषा विभाग को भेजा जाए तथा सेवानिवृत्त अधिकारियों आदि के संबंध में वह सीधे राजभाषा विभाग को भेजा जाए।

पुस्तक का संस्तुति संबंधी प्रपत्र

1. पुस्तक का नाम ....
2. लेखक का नाम ....
3. क्या पुस्तक की विषय-वस्तु पर हिंदी में यह पहली रचना है? ....
4. क्या पुस्तक में प्रयुक्त तथ्य शुद्ध तथा अद्यतन है ? ....
5. क्या विषयवस्तु में मौलिकता का निर्वाह हुआ है ? ....
6. क्या लेखक की कृति अद्यतन चेतना तथा भविष्यगामी परिकल्पनायुक्त है ? ....
7. क्या पुस्तक सामान्य पाठक के लिए रोचक तथा उपयोगी है? ....
8. कोई अन्य उल्लेखनीय विचार :- ....
9. समेकित रूप में विवेच्य पुस्तक किस श्रेणी में रखी जा सकती है :—

"क" - 85% से ऊपर
"ख" - 60 %से 85% तक
"ग" - 60 %से कम।

विशेषज्ञ के हस्ताक्षर :
नाम व पूरा डाक पता :
दूरभाष :

अनुलग्नक "ख"

हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु
इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार योजना वर्ष 2008-09

1. (क) लेखक का नाम ....
(ख) पदनाम या पूर्व पदनाम ....
(ग) कार्यालय या पूर्व कार्यालय का नाम और पता ....
(घ) मंत्रालय/विभाग का नाम ....
(ड.) लेखक का पूरा डाक पता (पिन कोड सहित) ....
....

(च)दूरभाष नं. (एस.टी.कोड सहित) फैक्स..

(छ) लेखक का ई-मेल पता..

2. पुस्तक का नाम ....

3. पुस्तक का विषय ....

4. प्रकाशक का नाम व पता..

5. प्रकाशन का वर्ष ....माह..............................

6. मैं ....पुत्र/पुत्री श्री ....केंद्रीय सरकार के स्वामित्व में आने वाले..............................(कार्यालय का नाम) में कार्यरत हूँ *या (सेवा निवृत्त व्यक्तियों के संबंध में) दिनांक..............................को सेवानिवृत हुआ हूं, एतद्द्वारा प्रमाणित करता/करती हूं कि उक्त पुस्तक मेरी मौलिक रचना है और कापीराइट एक्ट (यथा संशोधित), 1997 के तहत किसी अन्य लेखक के कापीराइट का उल्लंघन नहीं करती है ।

दिनांक :

लेखक के हस्ताक्षर

*नोट : जो लागू न हो काट दें ।

अनुलग्नक "ग"

मंत्रालय/विभाग/सम्बद्ध/अधीनस्थ कार्यालय द्वारा सत्यापन तथा संस्तुति

1. लेखक द्वारा दिए गए उपर्युक्त तथ्यों तथा सम्बद्ध रिकार्ड के आधार पर उपर्युक्त कृति को हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार, वर्ष 2008-09 के विचार हेतु योग्य पाया गया है, एतदर्थ संस्तुति की जाती है ।

2. इस विभाग/कार्यालय द्वारा अब तक वर्ष 2008-09 के पुरस्कार के लिए सिफारिश की गई यह पहली/दूसरी/तीसरी/चौथी पुस्तक है ।

3. इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार योजना के अन्तर्गत हिंदी में मौलिक पुस्तक-लेखन के पुरस्कार के लिए पूर्व में उक्त पुस्तक की सिफारिश नहीं की गई है ।

अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के मोहर सहित हस्ताक्षर:

नाम :

दिनांक :

पदनाम :

मंत्रालय/विभाग/कार्यालय/संस्थान :

दूरभाष/फैक्स :

पाठकों के पत्र

राजभाषा भारती पत्रिका का 122 वां अंक 'प्रशिक्षण विशेषांक' के रूप में प्राप्त हुआ । पत्रिका में 'राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रमों के साथ-साथ अन्य विभागों/संस्थानों में प्रशिक्षण व्यवस्था की जानकारी मिली । 'प्रबंधकीय दक्षता में हिंदी की भूमिका' तथा 'यूनीकोड विश्वस्नीय मानक' रचनाएं उत्कृष्ट एवं उपयोगी हैं ।

पत्रिका के माध्यम से हिंदी दिवस 2008 के उपलक्ष्य में माननीय गृह मंत्री जी तथा माननीय गृह राज्यमंत्री जी के संदेशों की जानकारी मिली । पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर राजभाषा विभाग की राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में प्रमुख उपलब्धियों की झलक मिलती है ।

–सुनील चोपड़ा
मुख्य आयकर आयुक्त, आयकर भवन, मक्बूल रोड, अमृतसर-143001

प्रशिक्षण विशेषांक पढ़ने को मिला । इससे पूर्व आपका जनवरी-मार्च वाला अंक भी पढ़ा था जो काफी प्रभावपूर्ण था । उपादेयता की अपनी परम्परा को आपने बनाए रखा है । श्री शमीन्द्र शर्मा, श्री के विनोद, श्री केवल कृष्ण, श्री के.सी. श्रीवास्तव, डॉ. एम.एल. गुप्ता, डॉ. माणिक मृगेश, डॉ. शैलेश, डॉ. मुक्ता के लेख सारगर्भित व जानकारी प्रधान हैं । दक्षिण में हिंदी के बढ़ते कदम, विभिन्न समस्याएं आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं । सुन्दर प्रकाशन, मुद्रण,सम्पादन के लिए बधाई ।

–डॉ. बि. रामसं जीवय्या
प्रधान सचिव, मैसूर हिंदी प्रचार परिषद्, राजाजी नगर, बेंगलूर-90

पत्रिका का यह **प्रशिक्षण विशेषांक** अंक ज्ञानप्रद लेखों तथा राजभाषा हिंदी प्रशिक्षण संबंधी दी गई विभिन्न जानकारी समसामयिक होने के कारण काफी रूचिकर है । पत्रिका में राजभाषा विभाग द्वारा कम्प्यूटर प्रशिक्षण संबंधी लेख काफी रोचक बन पाया है ।

आशा करते हैं कि आप अपनी पत्रिका द्वारा भविष्य में भी राजभाषा हिंदी के प्रचार एवं प्रसार संबंधी जानकारी इसी प्रकार अपने आगामी अंकों में छापते रहेंगे जिससे सभी लाभान्वित होते रहेंगे । पत्रिका की रूप सज्जा एवं भाषा काफी मानक के साथ सरल एवं सुगम भी बनी है ।

शुभकामनाओं सहित

–गणेश प्रसोद साहू व.वै.अ-I
कृते मुख्य निवासी निरीक्षक
मुख्य निवासी निरीक्षक का कार्यालय, वै.गु.आ.मनि., रक्षा मंत्रालय ,
भारत सरकार, एच.ए.एल.डाकघर, हैदराबाद- 500 042.

त्रैमासिक पत्रिका "राजभाषा भारती" अंक-120 (जनवरी-मार्च 2008) प्राप्त हुआ । जिसे मैंने अध्ययन किया और हमारे संस्था के कई पाठकगण ने भी इस पत्रिका का अध्ययन किया है । वास्तव में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित एवं देश एवं विदेश के हिंदी की महत्व पर संगोष्ठी सह-परिचर्चा संबंधी बातों की संग्रहित पत्रिका "राजभाषा भारती" वास्तव में काबिलेतारीफ लायक है ।

–सुजीत कुमार
"शान्ति निकेतन" आर.एम.एस. कालोनी, उर्दू बाजार, पोस्ट भागलपुर सिटी, जिला भागलपुर-812002, बिहार.

राजभाषा भारती (त्रैमासिक) पत्रिका का अंक 120 वर्ष जनवरी-मार्च, 2008 एवं अंक 122 वर्ष जुलाई-सित॰ 2008 की एक-एक प्रति प्राप्त हुई । आपके मार्ग निर्देशन में समय-समय पर विशेषांक का प्रकाशन किया जाना पत्रिका को उपयोगी एवं संग्रहणीय बना देता है । वह अनायास पाठकों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है और पढ़ने के लिए ललक जगा देती जाती है । ऐसी विशेषताओं से भरपूर है-राजभाषा भारती ।

यह प्रशिक्षण विशेषांक पाकर हमें अत्यन्त प्रसन्नता हुई । उसमें संग्रहीत प्रशिक्षण विषयक सभी आलेख अपने आप में अनूठे एवे ज्ञानवर्द्धक हैं । यह भी एक संग्रहणीय पत्रिका है । उसके अलावा स्थायी स्तंभ तो अपना अलग विशेष स्थान रखती है ।

–अजय कुमार बक्सी
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
एनएचपीसी लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय क्षेत्र-III, प्लॉट नं-3, ब्लॉक-DP, सेक्टर-V सॅल्ट लेक सिटी
कोलकाता-700091

हिंदी पत्रिका का नवीन जनवरी-मार्च 2008 अंक प्राप्त हुआ । एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में समाहित रचनाएं, रोचक, ज्ञानवर्धक,पठनीय तथा मनोरंजक हैं । पत्रिका का मुख्य पृष्ठ चित्ताकर्षक तथा मोहक है । रचनाओं में विशेषतया अजयेन्द्रनाथ त्रिवेदी की रचना पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग बनाम अनुवाद की दुरूहता डॉ. बैजनाथ प्रसाद का आलेख 'हिंदी भाषा की मानकता' डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव का का दर्शन 'विश्व पटल पर हिंदी का दिशा एवं दशा' एवं प्रेम कुमार की विविधा 'सतर्कता जागरूकता का प्रसार, भ्रष्टाचार निवारण की दिशा में सही कदम' आदि रचनाएं समसामयिक विचारोत्तेजक तथा जन सामान्य के लाभ की हैं । सम्पादक मण्डल का कार्य प्रशंसनीय है तथा पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में पूर्णतया सहायक है । पत्रिका में समाहित सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं । पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हम मंगल कामनाएं प्रेषित करते हैं । वास्तव में पत्रिका अपने सम्पूर्ण रूप में हिंदी के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से हिंदी में प्रयोग की दृष्टि से प्रेरणा का काम करती है तथा ज्ञानवर्धक सामग्री से भरी पड़ी है । साधुवाद ।

–सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सिविल एवं वाणिज्यिक लेखापरीक्षा),
मध्यप्रदेश ऑडिट भवन, ग्वालियर

राजभाषा भारती का अप्रैल-जून, 2008 का अंक मिला जिसे लिए हार्दिक धन्यवाद ।

संपादकीय राष्ट्रभाषा प्रेम से ओतप्रोत है । पत्रिका के सभी स्तंभों के लेख सूचनापरक जानकारियों से युक्त हैं तथा अपने स्तंभों के शीर्षयों के नाम को सार्थक सिद्ध कर रहे हैं ।

ऐसी उपादेय एवं ज्ञानवर्धक सामग्री से सुसज्जित पत्रिका पाटकों को उपलब्ध कराने के लिए संपादक मंडल व रचनाकार समान रूप से साधुवाद एवं बधाई के पात्र हैं ।

–गजानन्द गुप्त
मंत्री
राष्ट्रभाषा प्रचार परिषद्
19-3-946, शमशीरगँज, हैदराबाद-500053 (आं. प्र.)

प्रतिष्ठित पत्रिका 'राजभाषा भारती' का 121वाँ अंक पढ़कर बहुत अच्छा लगा चूंकि इसमें संकलित की गई सभी रचनाएं एवं विषय सामग्री ज्ञानवर्धक, रोचक एवं उच्चकोटि की है ।

विशेष रूप से डॉ.आरसु महोदय का साहित्यिक निबंध 'समकालीन हिंदी साहित्य में लोक-चेतना' (कविता के संदर्भ) एवं श्री अनु गौड़जी का निबंध 'शरद जोशी के साहित्य में धार्मिक विकृतियों पर व्यंग्य' जैसे ज्ञानवर्द्धक निबंधों से न केवल यह अंक संग्रहणीय बन गया है, वरन् आदरणीय लेखकों की साहित्य के प्रति सजग सृजनशीलता एवं समसामयिक सन्दर्भ में एक नूतन दृष्टिकोण से भी पाठक रूबरू होते हैं, जो परोक्ष रूप से श्री शरद जोशी जी के साहित्य को पढ़ने की ओर प्रेरित भी करता है,

पत्रिका के सामग्री संकलन में सम्पादकीय कौशल स्पष्ट झलकता है । चूंकि पत्रिका में विभिन्न विषयों के साथ-साथ भारत के विभिन्न शासकीय/अर्ध-शासकीय कार्यालयों में हिंदी सम्बन्धी प्रगति करने के लिए चलाई जा रही विभिन्न गतिविधियों की झलक भी मिलकर मन गद्‌गद्‌ हो जाता है ।

–ओम प्रकाश वर्मा (हिंदी अनुवादक)
नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण, नर्मदा सदन, सेक्टर 'बी', स्कीम-78, विजय नगर, इन्दौर (म. प्र.)

'राजभाषा भारती' के अंक 121 (अप्रैल-जून 2008) में समाहित लेख अत्यंत ज्ञानवर्धक तथा रोचक हैं । विशेष रूप से "हिंदी की स्थापना से ही राष्ट्र का गौरव बढ़ेगा" तथा "असमिया और नागरी लिपि में सबंधं" सरीखे आलेख रोचक जानकारी प्रदान करने के साथ-साथ सोच के दायरे को भी बढ़ाते हैं ।

पत्रिका की "सादगी में सुंदरता" वास्तव में आकर्षक है । संपादक मंडल इसके लिए बधाई के पात्र हैं ।

आज जहाँ सभी ओर हिंदी की बजाय हिंगलिश दिखाई देती है और हमें स्तरीय हिंदी पत्रिका ढूंढे से नहीं मिलती ऐसे में इस पत्रिका का अपना स्तर बनाए रखकर पाठकों तक पहुंचाना वास्तव में राजभाषा हिंदी की सच्ची सेवा करने सरीखा है।

–डॉ. वी एम. बरेजा
उप प्रबन्धक (रा. भा.)
आयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय दुलियाजान, असम

राजभाषा भारती, अंक-122 (जुलाई-सितम्बर 2008) प्रशिक्षण विशेषांक में विभिन्न संस्थानों में दिए जाने वाले प्रशिक्षण की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है, जहां सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए बहुत ही उपयोगी है । हमें जीवन में आगे बढ़ने एवं अपने कार्य में दक्ष होने में प्रशिक्षण की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण होती है तथा इसकी महत्ता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है । हम अपने लक्ष्य प्रशिक्षण के द्‌वारा ही प्राप्त कर सकते हैं । इसके साथ ही विभिन्न कार्यालयों/बैंकों इत्यादि की राजभाषा संबंधी गतिविधियों से परिचित होने का अवसर मिला ।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि उक्त अंक से सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण अवश्य ही लाभान्वित होंगे ।

दक्षिण में हिंदी के बढ़ते कदम लेख वास्तविकता की झलक दिखलाता है । यह हमारे लिए खुशी की बात है कि वहाँ तमिल समाचार पत्र हिंदी संबंधी रिपोर्ट एवं हिंदी कार्यक्रमों को प्रमुखता से प्रकाशित कर रहे हैं । दक्षिण लोगों की सोच बदल रही है, लोग हिंदी सीखना चाहते हैं एवं इस दिशा में प्रयासरत हैं ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल बधाई का पात्र है ।

धन्यवाद ।

–एस. के. शर्मा
हिंदी अधिकारी कृते वरिष्ठ महाप्रबंधक भारतीय आयुध निर्माणियाँ इण्डियन, ऑर्डनेन्स फैक्टरीज आयुध निर्माणी, भंडारा

"राजभाषा भारती" पत्रिका के 120वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद । पत्रिका में सम्मिलित सभी [illegible] उत्तम और श्रेष्ठ हैं । श्री बैजनाथ प्रसाद द्वारा लिखा हुआ लेख " हिंदी भाषा की मानकता" पढ़ कर अच्छा लगा जिसमें [illegible] प्रकार मानक और इतर शब्दों की सम्पूर्ण जानकारी दी गई जो कि बहुत उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक है । श्री अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी का लिखा हुआ लेख "पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग बनाम अनुवाद की दुरुहता" पढ़ कर यह महसूस हुआ कि वास्तव में किसी शब्द का पारिभाषिक अर्थ न लेने से अर्थ का अनर्थ होता है, उदाहरण के लिए "The Wire was live- तार में विद्युत धारा प्रवाह हो रही थी न कि तार जीवित था" आदि । इसके अलावा संजय चौधरी द्वारा प्रस्तुत लेख "शहरों में बढ़ता यातायात-जनित प्रदूषण" में शहरों में बढ़ती हुई जनसंख्या और वाहनों के कारण बढ़ते प्रदूषण से जुड़ी कुछ महत्पवूर्ण जानकारी दी गई जो कि बहुत उपयोगी है । इस पत्रिका में हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी के लेख भी जोड़ कर द्विभाषी बनाया जा सकता है जिससे हिंदीतर भाषी भी इस पत्रिका की ओर आकर्षित होंगे । मुख पृष्ठ का छायांकन आकर्षनीय एवं अद्भुत है ।

इस संग्रहणीय पत्रिका से संपादक द्वारा किए गए सराहनीय कार्य की झलक मिलती है । आशा है कि आगे भी यही प्रयास जारी रहेगा और इस पत्रिका का प्रकाशन निरंतर होता रहेगा ।

–रवि कुमार
सहायक निदेशक राजभाषा
मुख्य आयकर आयुक्त का कार्यालय हैदराबाद-1 'डी' ब्लॉक, नौंवी मंजिल, आयकर शिखर, ए. सी. गार्ड्स, हैदराबाद-500004.

त्रैमासिक पत्रिका "राजभाषा भारती" का 120, 121 और 122 वां अंक प्राप्त हुआ । धन्यवाद ।

राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित यह एक उत्कृष्ठ पत्रिका है और राजभाषा कार्यान्वियन से जुडे संस्थानों, व्यक्तियों के लिए बहुत ही उपयोगी है । पत्रिका में विभिन्न संस्थानों द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में किए गए कार्यों का विस्तृत विवरण प्राप्त होने के साथ-साथ विद्वानों के मत तथा राजभाषा विभाग के विभिन्न गतिविधियों की अद्यतन जानकारी प्राप्त होती है ।

–एस. एम. सोनार
हिंदी अधिकारी कृते महाप्रबन्धक
भारतीय आयुद्य निर्माणियॉ अति विस्फोटक निर्माणी खडकी, पुणे-411003

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की इस पत्रिका में हिंदी से संबंधित इतनी सामग्री होती है कि उसकी जितनी तारीफ की जाए कम है । मैं इस पत्रिका को पाकर अपने आपको समृद्ध महसूस करता हूँ क्योंकि भारत सरकार के विभिन्न कार्यालयों, उपक्रमों एवं बैंकों की गतिविधियों की जानकारी भी इस पत्रिका के माध्यम से सहज मिल जाती है ।

इस पत्रिका को निरंतर सफलतापूर्वक प्रकाशित करने के लिए पूरे संपादक मंडल को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

–राजीव कुमार
राजभाषा अधिकारी,
बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, प्लाजा चेम्बर्स, तीसरी मंजिल, पणजी, गोवा-403001

MGIPRRND—2787 HA/09—5,000

महानिदेशालय, भा.ति.सी. पुलिस में 16-3-09 से 19-3-09 तक आयोजित हिंदी कार्यशाला के प्रमाणपत्र वितरण समारोह में मुख्य अतिथि श्री श्याम मेहरोत्रा, उप महानिरीक्षक (प्रशासन) प्रशिक्षार्थियों के साथ विचार-विमर्श करते हुए ।

बी.एस.एन.एल., जलगांव एवं सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की संयुक्त हिंदी कार्यशाला के अवसर पर कार्यशाला की भूमिका एवं उद्देश्यों के बारे में संबोधित करते हुए न.रा.का.स., जलगांव के सदस्य सचिव एवं सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, जलगांव के राजभाषा अधिकारी, श्री प्रेम प्रकाश ।

पं.सं. 3.
आई एस एम एन 0970-9.

प्रपत्र-4 (देखिए नियम-8)
प्रैस तथा पुस्तक पंजीकरण अधिनियम
समाचार-पत्रों का पंजीकरण (केंद्रीय) नियम
'राजभाषा भारती' के स्वामित्व तथा विवरणों की सूचना

1. प्रकाशन स्थान	लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110003
2. प्रकाशन अवधि	त्रैमासिक
3. मुद्रक का नाम	प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, मायापुरी, नई दिल्ली
4. क्या भारत का नागरिक है ?	भारतीय नागरिक
5. प्रकाशक का नाम व पता	शान्ति कुमार स्याल, सहायक संपादक राजभाषा विभाग, भारत सरकार, लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110003 दूरभाष : 24698054
6. संपादक (पदेन) का नाम व पता	बिजय चंद्र मंडल, निदेशक (अनुसंधान), राजभाषा विभाग, लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110003 दूरभाष : 24617807
7. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	लागू नहीं

मैं, शान्ति कुमार स्याल घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

ह./-

प्रकाशक के हस्ताक्षर

भारत सरकार, राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय), लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110003 के लिए शान्ति कुमार स्याल, सहायक सं...
प्रकाशित तथा प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, मायापुरी, नई दिल्ली-110064 द्वारा मु...